सत्साहित्य-प्रकाशन

अफ्रीका जागा

—घाना के महान् नेता डा क्वामे एन्क्रूमा का आत्म-चरित—

रूपातरकार

श्यामू संन्यासी

१९६२

सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली

अपनी माताजी को

प्रकाशकीय

हमे इस बात की बडी प्रसन्नता है कि 'मण्डल' से अबतक कई उच्च-कोटि के आत्मचरित प्रकाशित हुए है। उनमे महात्मा गाधी की 'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' तथा प जवाहरलाल नेहरू की 'मेरी कहानी' को तो विश्वव्यापी लोकप्रियता प्राप्त हुई है। ससार की प्राय सभी समुन्नत भापाओ मे उनके अनुवाद हुए है। डा राजेन्द्रप्रसाद की आत्मकथा भी अग्रेजी तथा कुछ भारतीय भाषाओ मे निकल चुकी है।

प्रस्तुत पुस्तक उसी शृखला की एक महत्त्वपूर्ण कडी है। अफ्रीका महाद्वीप के गोल्ड कोस्ट अथवा घाना देश के महान् नेता क्वामे एन्क्रूमा का नाम वहुत-से पाठको ने सुना होगा। पर विदेशी सत्ता की गुलामी से अपने देश को मुक्त करने के लिए उन्हे कितना सघर्प करना पडा, इसकी विशद जानकारी वहुत कम लोगो को होगी। अपनी इस आत्मकथा मे उन्होने अपने जीवन पर सक्षेप मे प्रकाश डालते हुए अपने राष्ट्र की आजादी की लडाई का हाल वडे विस्तार से दिया है। उसे पढकर मालूम होता है कि किसी भी महापुरुष को अपने जीवन मे कितना त्याग और वलिदान करना पडता है और किसी भी राष्ट्र को अपनी स्वतत्रता के लिए कितनी कीमत चुकानी पडती है।

इस आत्मचरित की सवसे वडी विशेपता यह है कि इसमे लेखक ने कही भी अपनी वात को वढा-चढाकर नही कहा है और ऐतिहासिक तथ्यो का वडे ही सरल-सुवोध ढग से वर्णन किया है। भापा की वोधगम्यता, शैली की सजीवता तथा विचारो की स्पष्टता के कारण इस आत्मकथा का अपना स्थान है। अग्रेजी मे 'दि आटोवायग्राफी ऑव क्वामे एन्क्रूमा' टामस नेल्सन एण्ड सस लिमिटेड, एडिनवरा, स्काटलैण्ड द्वारा प्रकाशित हुई है। उसीका यह भावानुवाद है। विस्तार-भय के कारण कही-कही कुछ अश कम कर दिये गए है, लेकिन कोई भी महत्त्वपूर्ण वात छूटने न पावे, इसकी पूरी सावधानी रक्खी गई है।

हमे विश्वास है कि यह पुस्तक पाठको को जहा ज्ञानवर्द्धक सिद्ध होगी, वहा अपने राष्ट्र को प्रेम करने की प्रेरणा भी देगी।

—मत्री

प्राक्कथन

१९३४ मे, जब मैंने लिंकन विश्वविद्यालय के डीन को प्रवेश के लिए आवेदन-पत्र भेजा तो टेनीसन की कविता 'स्मृति मे' से ये पक्तिया उद्धृत की थी

"So many wo1lds, so much to do,
So lıttle done, such things to be."

अर्थात्—"जीवन मे इतने क्षेत्र है, इतना काम करने को पडा है, कुछ भी तो नही हो पाया, अभी कितना-कुछ करना है।"

यह उस समय मेरी प्रेरणा और उत्तेजना का स्रोत था और आज भी है। इसीने मेरे अदर मातृभूमि की सेवा मे अपने-आपको सन्नद्ध करने की वलवती चाह पैदा की।

१९३४ मे, जब मैंने वह पत्र लिखा तो क्या जानता था कि जिस सघर्ष मे अभी तक लगा रहा और जो लगभग आठ वर्षो के बाद प्राय जीता जा चुका है, उसकी तैयारी करने मे मुझे अमरीका मे दस और इग्लैण्ड मे ढाई वर्ष लग जायगे, जहा मुझे एक निर्वासित की-सी अवस्था मे दिन गुजारने पडे।

अमरीका और इग्लैंड के वे दिन उदासी और एकाकीपन तथा गरीबी और कठोर परिश्रम के दिन थे। परतु मुझे कोई पछतावा नही, क्योकि उन्ही दिनो की पृष्ठभूमि पर मेरे जीवन और राजनीति-सबधी विचारो एव सिद्धातो की नीव पडी है। अमरीका मे अपने अध्ययन की समाप्ति के बाद मुझे वहा के अनेक हब्शी विश्वविद्यालयो मे, यहातक कि लिंकन मे भी, अध्यापन-कार्य करने के निमत्रण मिले। वे निमत्रण बडे ही लुभावने थे और यदि किसी एक को भी स्वीकार कर लेता तो जीवन-निर्वाह के मेरे कठोर सघर्षो का अत हो जाता और अपने मनचीते वातावरण मे निश्चित होकर मजे की जिंदगी बिता सकता था। परतु पिछले दसेक वर्षो से मेरे अदर राष्ट्रीयता की जो आग जल रही थी, उसे कैसे भूल जाता!

गोल्ड कोस्ट की स्वाधीनता मेरे जीवन का चरम लक्ष्य था। यह ब्रिटेन का उपनिवेश था, और उपनिवेशवाद को मैंने सदैव एक ऐसी नीति माना है, जिसके द्वारा विदेशी शक्तिया केवल अपने आर्थिक हित-साधन

के लिए उपनिवेशो को अपने राजनैतिक बधनो मे बाधे रखती है। यदि इस दूपित प्रथा के कारण उपनिवेशो मे राजनैतिक तनातनी और कशमकश का वातावरण बना रहता हे तो उसमे आश्चर्य ही क्या ! अपना वस चलते ऐसी दासता से भला कौन मुक्त होना न चाहेगा !

उन दिनो मैंने अपना अधिकतर समय और शक्ति क्रातिकारियो की जीवनियो और उनके सिद्धातो एव कार्य-प्रणालियो के अध्ययन मे लगाई। मेरी सवसे अधिक दिलचस्पी हेनीवाल, क्रामवेल, नेपोलियन, लेनिन, मैजिनी, गाधी, मुसोलिनी और हिटलर मे थी। इन सभीसे मुझे वडी महत्त्वपूर्ण शिक्षाए मिली, जो आगे चलकर साम्राज्यवाद के विरुद्ध मेरे आदोलन मे काफी उपयोगी और सहायक सिद्ध हुई।

आरभ मे तो यह वात मेरी समझ मे ही नही आती थी कि गाधीजी का अहिसा का सिद्धात कारगर भी हो सकता है ! मुझे अहिसा की नीति एकदम कमजोर और असफल प्रतीत होती थी। उस समय तो मुझे यही दिखाई देता था कि औपनिवेगिक समस्या केवल सशस्त्र क्रान्ति से ही हल की जा सकती है। मै अक्सर अपने-आपसे पूछता, "क्राति शस्त्रास्त्रो के विना भी कभी सफल हुई हे ?" लेकिन महीनो तक गाधीवाद का गहन अव्ययन करने और भारत मे उसके परिणामो को देखने के वाद मुझे विश्वास हो चला कि यदि सशक्त राजनैतिक सगठन का सक्रिय समर्थन हो तो अहिसा से भी औपनिवेशिक समस्या को हल किया जा सकता है। जवाहरलाल नेहरू के अभ्युदय ने तो मुझे यह साफ दिखा दिया कि समाजवाद का समर्थक गाधी-नीति को व्यावहारिक रूप भी दे सकता है।

उपनिवेशवाद के खिलाफ गोल्ड कोस्ट की क्राति कोई नई चीज नही। उसकी जडे वहुत गहरी है। इस दिशा मे पहला प्रयत्न १८६८ का कान्फेडरेशन है, जबकि कुछ सरदारो (कवीलो के मुखियाओ) ने केवल अशाटियो से ही नही, जो उनके अपने भाई थे, अपितु विदेशियो के राजनैतिक हस्तक्षेप से भी अपनी सुरक्षा के लिए इस नाम से एक सगठन वनाया था। १८४४ के वाड के द्वारा गोल्ड कोस्ट मे व्यापार करने के अधिकार मिल जाने के वाद देश पर ब्रिटेन का नियत्रण दिनो-दिन वढता ही जा रहा था।

राजनैतिक चेतना और सम्मिलन का दूसरा महान प्रयत्न सरदारो एव शिक्षित अफ्रीकियो द्वारा 'अवारजिनीज राइट्स प्रोटेक्शन सोसाइटी' (मूल निवासियो के अधिकारो की रक्षा-समिति) का निर्माण था, जिसका उद्देश्य गोल्ड कोस्ट की कृपि-योग्य भूमि की रक्षा करना था। लेकिन सर-

दारो और शिक्षितो मे मतभेदो के निरतर गहरे होते जाने के कारण थोड़े ही दिनो मे रक्षा-समिति तितर-बितर हो गई । तब शिक्षित अफ्रीकियों ने पश्चिमी अफ्रीका के अन्य देशो के अपने पढे-लिखे बधुओ का समर्थन प्राप्त कर 'ब्रिटिश वेस्ट अफ्रीकी नेशनल काग्रेस' बनाई । यह काग्रेस जन-सहयोग से वचित रही, इसलिए १९३० मे इसे भग हो जाना पडा ।

काग्रेस के रिक्त स्थान की पूर्ति हुई 'युनाइटेड गोल्ड कोस्ट कनवेशन' के द्वारा, जिसकी स्थापना देश के व्यापारियो और वकीलो ने की । जब मैंने पाया कि जनता के हितो की उपेक्षा करने के कारण यह आदोलन असफल होता जा रहा है तो इससे अपना सबध-विच्छेद कर 'कनवेशन पीपुल्स पार्टी' की स्थापना की ।

इस समस्या का पूरा हल मुझे जनता की राजनैतिक स्वतत्रता मे दिखाई दिया । राजनैतिक स्वतत्रता के बाद ही कोई जनता अन्य जातियो से अपेक्षित सम्मान की अधिकारिणी होती ह । इस बुनियादी शर्त के बगैर जातियो की पारस्परिक समता और बराबरी की सारी बाते बेकार ह । जबतक उनकी अपनी और निजी सरकार न हो, किसी भी देश की जनता स्वतत्र और सार्वभौम देशो की जनता से समानता और बराबरी के व्यवहार की अपेक्षा नही रख सकती । दूसरो के द्वारा शासित होने की अपेक्षा अपना शासन अथवा कुशासन स्वय करने की स्वतत्रता कही श्रेष्ठ है ।

कनवेशन पीपुल्स पार्टी की स्थापना ऐसे सयोगो मे हुई, जब देश के मजदूरो और युवको मे राजनैतिक नव-जागरण की लहर आई हुई थी । दूसरे महायुद्ध से लौटकर घर आये सैनिको मे अपनी दुरवस्था को लेकर भीषण असतोप था, युद्धकाल मे दूसरो से तुलना कर वे अपनी हीनावस्था के प्रति सजग हो गये थे और उन्नत जीवन-स्तर के लिए कुछ भी करने को प्रस्तुत थे । ब्रिटिश औपनिवेशिक नीति के प्रति व्यापक असतोष था, गौण शासन (दुहरे शासन) की नीति प्रत्यक्ष रूप से कबायली सामतवाद को प्रोत्साहित कर रही थी । रूसी क्राति और उसके बाद की घटनाए मजदूर-वर्ग की एकता, ट्रेड यूनियन आदोलन, नागरिक स्वतत्रता और स्वाधीनता के विचारो के व्यापक प्रसार मे सहायक हो रही थी । एशिया की घटनाओ ने भी राजनैतिक जागृति मे काफी योगदान किया ।

कनवेशन पीपुल्स पार्टी केवल एक जन-आदोलन ही नही थी । जन-आदोलन अपनी जगह ठीक है, परतु एक अग्रगामी राजनैतिक दल के नेतृत्व और निर्देशन के बिना वे अपने प्रयोजन मे सफल नही हो

सकते। और फिर अवसर आने पर सत्ताशाली शासक-शक्ति 'किसी क्रांतिकारी राष्ट्रीय आदोलन की अपेक्षा बहुमत द्वारा समर्थित और सुचारु रूप से सगठित पार्टी को सत्ता हस्तातरित करने के लिए अधिक प्रस्तुत रहती है। प्रगति के सच्चे समर्थको को अपने साथ लेकर अवसरवादियो और प्रतिक्रियावादियो, दोनो का ही कडा विरोध करते हुए मैने जनता की आशा-आकाक्षाओ के जनवादी सगठन के रूप मे कनवेशन पीपुल्स पार्टी के निर्माण का प्रयत्न किया। १९५१ के चुनाव मे हम बहुमत से विजयी हुए। उसके तीन वर्ष बाद और फिर १९५६ मे भी देश ने हममे वैसा ही विश्वास प्रदर्शित किया।

तो पहला उद्देश्य है राजनैतिक स्वतत्रता, जिसके लिए, मेरे विचारानुसार, सगठन को दो रूप ग्रहण करने चाहिए। पहला रूप है 'सीधी कार्रवाही' का—अर्थात् अहिसक उपायो से अनुशासनबद्ध एव प्रभावोत्पादक राजनैतिक सघर्ष का। इस दौर मे तत्कालीन औपनिवेशिक शासन से खुली भिडत अनिवार्य है, जिसे सगठन की शक्ति की कसौटी ही समझना चाहिए, क्योकि इस दौर मे सघर्ष का रूप अहिसक होता है और पुलिस एव सेना औपनिवेशिक शासको के नियत्रण मे रहती है, इसलिए पूर्ण सफलता की सभावना नही के बराबर ही समझनी चाहिए।

दूसरा दौर है कार्यनीति-सबधी, जिसे बौद्धिक दाव-पेचो की लडाई भी कह सकते है। इस दौर मे आदोलन की विचारधारा बिल्कुल स्पष्ट और सुसगत होनी चाहिए। मेरी पार्टी की विचारधारा को इन शब्दो मे व्यक्त किया जा सकता है—"बिना राजनैतिक स्वतत्रता के किसी भी जाति, किसी भी जनता और किसी भी राष्ट्र का न तो स्वतत्र अस्तित्व कायम रह सकता है और न वे अपने देश और विदेश मे सम्मान के अधिकारी ही हो पाते है।"

स्वाधीनता की उपलब्धि के बाद तत्काल दूसरे बडे काम सामने आ खडे होते है। सभी उपनिवेश शिक्षा, कृषि और उद्योग के क्षेत्र मे एकदम पिछडे हुए होते है। आर्थिक स्वाधीनता के लिए, जो राजनैतिक स्वाधीनता की उपज होते हुए भी उसका मूलाधार है, देश की जनशक्ति, बुद्धि और साधनो का समग्र समन्वय और नियोजन नितात आवश्यक होता है। दूसरे देशो की तीन-तीन सौ वर्षो की उपलब्धियो तक पराधीन देशो को, यदि उन्हे अपने स्वतत्र अस्तित्व को बनाये रखना है तो एक ही पीढी मे पहुचना होगा। यदि दृढ मनोबलपूर्वक विद्युत् वेग से काम नही किया गया तो पिछड जाने की आशका है और पिछड गये तो जिसके लिए सघर्ष किया,

वही सकट मे पड जायगा ।

नये स्वाधीनता-प्राप्त राष्ट्र के लिए पूजीवाद एक बडी ही जटिल प्रणाली है । समाजवादी समाज-व्यवस्था ही उसके अधिक उपयुक्त होती है । परतु सामाजिक न्याय और जनवादी विधान पर आधारित प्रणाली को भी स्वतत्रता-प्राप्ति के बाद के काल मे सुरक्षा की आवश्यकता होती है । बगैर अनुशासन के वास्तविक स्वतत्रता कभी टिक नही सकती । निष्ठा और आस्थावाले, ईमानदार और स्वामिभक्त, श्रम-सहिष्णु और उत्तरदायी कर्मचारियो का आधार न हो तो सत्ताशाली दल शासक-सचालन के लिए किसपर निर्भर करेगा ? सुरक्षा के लिए सेना को भी शक्तिशाली बनाना आवश्यक है ।

गोल्ड कोस्ट के लिए स्वराज्य इसी प्रकार प्राप्त किया गया । लेकिन जबतक अफ्रीका के अन्य देशो की मुक्ति के साथ सबद्ध नही की जाती, हमारी स्वाधीनता अधूरी ही रहेगी । घाना ने मिस्र, इथोपिया, लाइबेरिया, लिबिया, मोरक्को, सूडान और टयूनीशिया के स्वतत्र राष्ट्रो के बीच स्थान अवश्य ग्रहण किया है, परतु अफ्रीका के शेष भाग अभी भी छ यूरोपीय शक्तियो के अधिकार और शासन मे है ।

हमारा उदाहरण उनके लिए प्रेरणा और मनोबल का कारण बने, जो अभी भी विदेशियो की दासता मे है, इस विश्वास से प्रेरित होकर मैने अभी तक की अपनी यह जीवन-कथा लिखी है । यदि स्वाधीनता के महत् उद्देश्य मे यह किसी भी प्रकार सहायक हुई तो इसे लिखने का प्रयोजन पूरा हुआ समझना चाहिए ।

मै कृतज्ञ हू अपनी निजी सचिव एरिका पावेल का, जिन्हे यह पुस्तक मैने बोलकर लिखाई और जिन्होने अपने अवकाश का अधिकाश समय लगाकर इसकी पाडुलिपि तैयार की । इस पुस्तक को लिखने के लिए, जब भी सभव हो, थोडा-बहुत, यहातक कि कुछ ही मिनट का समय निकालने के लिए वह निरतर आग्रह न करती और उन्होने धैर्य तथा अध्यवसाय से काम न लिया होता तो यह पुस्तक प्रकाशन के लिए इतनी शीघ्र कभी तैयार न हो पाती ।

अकरा —क्वामे एन्क्रूमा
अक्तूबर, १९५६

विषय-सूची

१	जन्म और शैशव	१३
२	अचिमोता और शैक्षणिक कार्य	२६
३	अमरीका	३७
४	कठिन समय	४७
५	लदन मे	६०
६	पुनरागमन	७३
७	गिरफ्तारी और नज़रवदी	८३
८	मत-भेदो मे वृद्धि	८९
९	मेरी पार्टी का जन्म	९७
१०	सीधी कार्रवाही	१०३
११	मुकदमा और जेल	११२
१२	सरकार के सचालन का नेतत्व	१२२
१३	शासन-सचालन की मेरी नीति	१२९
१४	अमरीका-यात्रा	१३५
१५	प्रधान मत्री और सवैधानिक सुधार	१४६
१६	लाइवेरिया की राजकीय यात्रा	१५०
१७	भाग्य-निर्णय का प्रस्ताव	१५८
१८	१९५४ के आम चुनाव	१६६
१९	अशाटी की समस्या	१७२
२०	विश्राति की खोज मे	१७७
२१	'फेडरेशन'-प्रकरण	१९०
२२	जाच-आयोग	१९५
२३	टोगोलैंड ट्रस्टीशिप मे	१९९
२४	अतिम परीक्षा	२०३
२५	विजय की घडी	२१०

अफ्रीका जागा

घाना का राजनैतिक मान-चित्र

: १ :
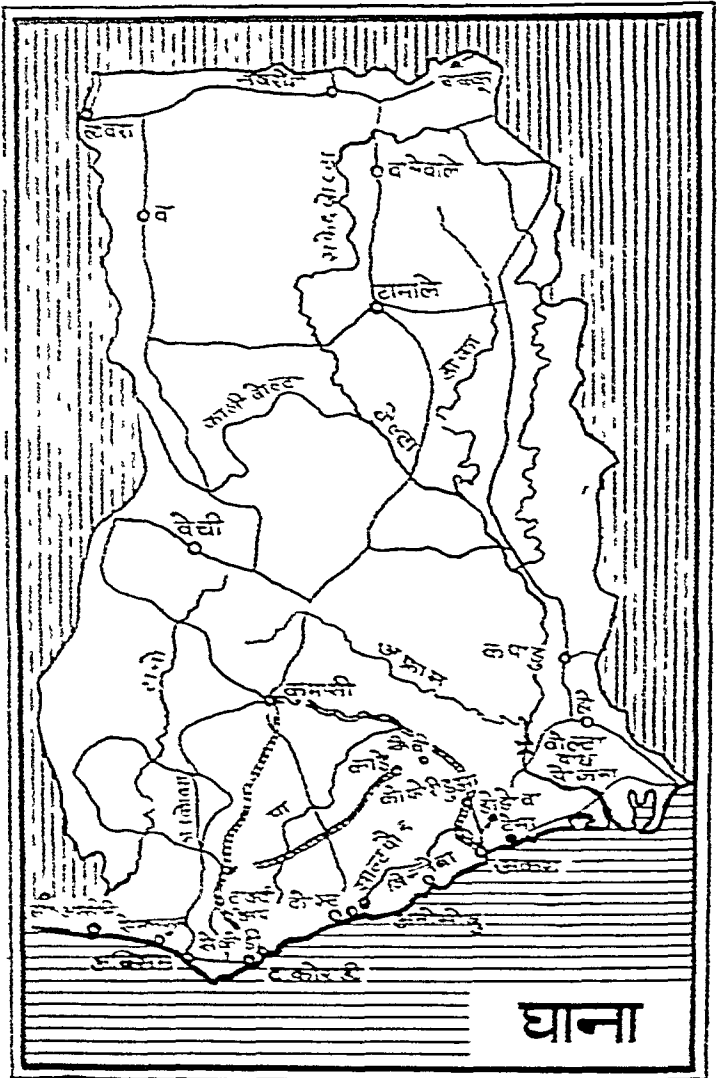
जन्म और शैशव

मेरे जन्म के सबध मे निश्चित रूप से केवल इतना ही कहा जा सकता है कि मै. एन्जिमा के एन्क्रोफुल गाव मे मध्य सितबर के एक शनिवार को लगभग दुपहर के समय पैदा हुआ था।

एन्जिमा का प्रदेश गोल्डकोस्ट के ठेठ दक्षिण-पश्चिम मे, लगभग एक हजार वर्गमील के क्षेत्रफल मे अवस्थित है। पूर्व मे यह अनकोबरा नदी से लेकर पश्चिम मे तानो नदी और उसके दलदलो तक फैला हुआ है। इसकी जनसख्या एक लाख के करीब है। कई वर्ष तक यूरोप-निवासी इसे एपोलोनिया के नाम से जानते रहे, क्योकि सत एपोलो के उत्सव के दिन पहला गोरा आदमी यहा की भूमि पर उतरा था।

गोल्डकोस्ट के सुदूरवर्ती प्रदेशो मे जन्म, विवाह और मृत्यु की तिथियो को याद रखने की न कोई प्रथा है और न कोई इस बारे मे चिता ही करता है। इन घटनाओ का महत्त्व केवल इतना ही है कि इनके द्वारा उत्सव मनाने का अवसर मिल जाता है। हमारे यहा की प्रथा के अनुसार, माताए अपने बालको की उम्र का पता लगाने के लिए गिनती लगाकर देखती है कि बच्चो के जन्म के बाद राष्ट्रीय त्योहार कितनी बार पडा। जितनी बार राष्ट्रीय त्योहार पडता है, बालक की उम्र भी उतनी ही मान ली जाती है। लेकिन इस तरह का हिसाब भी शायद ही कोई लगाता हो, क्योकि यहा उम्र की कोई अधिक फिक्र नही करता। असल मे उन शाति-पूर्ण लोगो के लिए समय का कोई मूल्य और महत्त्व है ही नही।

एन्जिमा का राष्ट्रीय त्योहार कुतुम (कुटुम) कहलाता है। मेरी माताजी की गणना के अनुसार मेरे जन्म के बाद पैतालीस बार कुतुम का त्योहार पडा। इसका अभिप्राय यह हुआ कि मेरा जन्म पैतालीस वर्ष पूर्व अर्थात् सन् १९१२ मे हुआ था।

लेकिन जिस पादरी ने रोमन कैथोलिक चर्च मे मेरा बप्तिस्मा किया, उसने गिरजाघर की पजिका मे मेरी जन्मतिथि २१ सितबर १९०९ दर्ज की है। यह तिथि पादरी महाशय का निरा अनुमान होते हुए भी, मै सभी दफ्तरो और शासकीय दस्तावेजो मे इसीका उपयोग करता आया हू, जिसका एकमात्र कारण यह है कि गिरजाघर मे दर्ज जन्मतिथि का

उपयोग सरकारी कागज-पत्रो और दस्तरो मे अपेक्षाकृत अधिक निरापद और ज्यादा अविकृत माना जाता है।

२१ सितबर १९०९ की तिथि पादरी महाशय का निरा अनुमान होते हुए भी, सन् १९१२ की अपेक्षा सत्य के अधिक निकट प्रतीत होती है। २७ अगस्त १९१३ की रात को 'बकाना' नाम का एक भारवाही जहाज नाइजीरिया से इग्लैड जाते हुए डिक्स्कोव और हाफ-अस्सीनी के बीच दुर्घटनाग्रस्त होकर डूब गया था। इस दुर्घटना को लेकर कई किवदतिया प्रचलित हो गई थी जिन्हे मैं अपने बचपन मे सुना करता था और जिनमे से कई मुझे अब भी याद हैं। मेरी माताजी के कथनानुसार इस दुर्घटना के घटित होने से पहले हम दोनो मा-बेटे एन्क्रोफुल छोड़कर मेरे पिताजी के पास हाफ-अस्सीनी मे रहने के लिए आ गये थे, और जब हम हाफ-अस्सीनी आये उस समय मेरी उम्र तीन वर्ष हो चुकी थी। इस हिसाब से मेरा जन्म-वर्ष १९०९ ठहरता है। कलडर के अनुसार १९०९ के मध्य सितबर का शनिवार १८वी तारीख को पडा था। इन सब बातो से यह अनुमान किया जा सकता है कि मेरा जन्म १८ सितबर १९०९ को हुआ होगा।

जिस दिन मेरा जन्म हुआ, एन्क्रोफुल गाव मे बडा उत्सव हो रहा था और खूब जोर-जोर से ढोल बजाये जा रहे थे। लेकिन वह सब मेरे जन्म की खुशी मे नही हो रहा था। कुछ ही समय पूर्व मेरी दादी की मृत्यु हुई थी और वह सारा उत्सव उन्हीके अतिम सस्कारो के उपलक्ष्य मे मनाया जा रहा था। अफ्रीका की अकान जाति के लोगो में (एन्जिमा के बहुत-से निवासी इसी जाति के है) शव-यात्राओ और अतिम सस्कारो को जन्म और विवाहो की अपेक्षा कही अधिक महत्त्व दिया जाता है और बड़ी धूमधाम एव सम्मान के साथ उन्हे सपन्न किया जाता है। परलोक मे विश्वास के कारण ही इतनी धूमधाम की जाती है। शव का भूमिदाह करते समय साथ मे सोना, कपड़े और रोजमर्रा के उपयोग की अन्य वस्तुए भी गाडी जाती हैं, जिससे परलोकगामी जीव को उस लोक मे इन वस्तुओ से वचित न रहना पडे। मृत्यु के बाद आरभ के कई दिनो तक मृतक के लिए मित्र और सबधी लगातार रुदन करते है। उसके बाद तीसरे सप्ताह मे कबीले के समस्त मृतको की याद में एक स्मृति-समारोह मनाया जाता है। उस दिन पितरो का श्राद्ध करते हैं, उन्हे मदिरा की अजलिया चढाई जाती है और सारी रात खेल-तमाशा, नाच-गान और खाना-पीना होता है, जो सवेरे तक चलता रहता है।

और इसीलिए एन्क्रोफुल के लोगो ने, मरण-उत्सव के उस विशेष

दिन, मेरे जन्म के सबध मे कोई खास उत्सुकता या दिलचस्पी नही दिखाई। लेकिन, जैसा कि मुझे बाद मे बताया गया, प्रसूति-गृह मे अवश्य काफी हलचल थी। मैं पैदा तो हो गया, परतु जीवन का कोई चिह्न मुझमे दिखाई नही दे रहा था—न रोना, न सास लेना, यहातक कि माताजी ने तो मुझे मुर्दा समझकर छुट्टी ही पा ली थी। माताजी का ऐसा आचरण उनकी क्रूरता नही, पीढियो के बद्धमूल सस्कार ही थे। ऐसा विश्वास किया जाता है कि अकान जाति की माता यदि अपनी सतान की मृत्यु का शोक करती है तो वध्या हो जाती है और एक अफ्रीकी नारी के लिए इससे बडा दु ख और दुर्भाग्य दूसरा नही होता।

परतु मेरे नाते-रिश्ते की दूसरी औरते इतनी आसानी से हार माननेवाली नही थी। वे श्राद्ध-समारोह को छोड सौरी मे आ जुटी। उन्होने निश्चय कर लिया था कि मुझमे प्राण-सचार करके ही रहेगी। वे जोर-जोर से झाझ-मजीरे बजाने और थालिया पीटने लगी, साथ ही मुझे हिलाती-डुलाती, उलटती-पलटती और झकझोरती भी जाती थी। इतने से उन्हे सतोप न हुआ तो एक ने मेरे मुह मे केला ठूस दिया कि कम-से-कम खासू और सास तो लेने लगू। अत मे उन्हे सफलता मिली। मै रोने और हाथ-पाव पटकने लगा और उन्होने मुझ शनिवासरीय बच्चे को मेरी चिन्तातुर माताजी के हाथो मे थमाकर अपना काम और कर्त्तव्य पूरा किया।

अकानो मे सप्ताह के उस दिन को बडा महत्त्व दिया जाता है, जिस दिन बच्चे का जन्म होता है, क्योकि सप्ताह के दिन के ही अनुसार जन्म लेनेवाले बच्चे की दैवी आत्मा (उसके ग्रह-नक्षत्र और राशि) का निर्धारण होता है। अकानो मे प्रचलित विश्वास के अनुसार एक मनुष्य की तीन आत्माए होती है—पहली, रक्त की आत्मा अथवा 'मोयगा', नारी के द्वारा प्रदान की जाती है और यही आत्मा उसके कबीले की पर्याय होती है, दूसरी आत्मा 'एन्टोरो' कहलाती है, जो पुरुष के द्वारा प्रदान की जाती है, और तीसरी 'ओक्रा' अथवा दैवी आत्मा होती है। 'ओक्रा' के सबध मे किसी प्रकार की भूल न होने पाये, इसलिए सप्ताह के जिस दिन बच्चा जन्म लेता है, उस दिन के लिए निर्दिष्ट एक विशिष्ट नाम उस बच्चे का रख दिया जाता है। इसके अनुसार रविवार को जन्म लेनेवाला लडका 'क्वेसी' कहलाता है, सोमवार को जन्म लेनेवाला 'कोजो' और शनिवार को पैदा होनेवाला 'क्वामे'। बच्चो के जन्म से सबधित अधविश्वास तो और भी कई है। उदाहरणार्थ, पहला बच्चा अपेक्षाकृत कम प्रतिभावाला, तीसरा दुर्लभ एव सुधार से परे, नवा शुभ और दसवा अशुभ माना जाता है। कई

वार तो सभावित अशुभ और दुर्भाग्य के कारण दसवे बच्चे का जन्म लेते ही अथवा शैशव मे गला घोट दिया जाता है।

शनिवार को जन्म लेने और क्वामे नाम पाने के कारण मै ढर्रे से लगने का दावा तो अवश्य कर सकता हू, लेकिन अनुत्साहित करनेवाली बात यह है कि अपनी माताजी का पहला और इकलौता बच्चा हू और इसीलिये, परपरा के अनुसार, औसत की अपेक्षा कम प्रतिभासपन्न भी।

एन्क्रोफुल को पश्चिमी अफ्रीका का एक औसत गाव ही समझिए। वही गारे-मिट्टी और सरपत के टट्टरो के बने मकान और बास के बाडे-अहाते। पथरीली जमीन की ऊची कुर्सी, जहा से एक ओर नाले तथा दूसरी ओर दलदलवाली झील तक एकदम सीधा ढलान। मै उस गाव मे अपनी माताजी के साथ लगभग तीन वर्ष की उम्र तक रहा और उसके बाद हम दोनो मा-बेटे पिताजी के पास रहने चले गए, जो हाफ-अस्सीनी मे सुनारी का धधा करते थे।

हाफ-अस्सीनी हमारे गाव एन्क्रोफुल से कोई पचास मील दूर, फ्रेंच आइवरी कोस्ट और गोल्डकोस्ट की सीमाओ पर बसा हुआ है। अब तो, खैर, सडके बन गई है और मोटर-बसे भी चलने लगी है, परन्तु मेरे बचपन मे एन्क्रोफुल से हाफ-अस्सीनी तक मोटर-बसो का चलना तो दूर, ढग की सडके भी नही थी। मुझे और माताजी को सारा रास्ता पैदल ही पार करना पडा। करीब तीन दिन लग गये, जिनमे दो राते हमने रास्ते के गावो मे बिताई। हमारा रास्ता समुद्र के किनारे और जगल के बीच से होकर था। एक दिन मजिल पूरी नही हो पाई और हम मा-बेटे को जगल मे ही रात बितानी पडी। मुझे आज भी याद है कि सूखी पत्तिया और टहनिया बटोरने मे मैने माताजी की सहायता की थी, जिससे आग जलाकर जगली जानवरो को दूर रक्खा जा सके। खुद मुझे तो जगली जानवरो का कोई डर नही था, सभी छोटे बच्चो की भाति मुझे भी अपनी माताजी पर पूरा विश्वास था।

और मेरी माताजी थी भी बडी योग्य महिला। मेरी सुरक्षा के सबध मे उनकी सजगता और सतर्कता के क्या कहने! लेकिन इसका यह मतलब नही कि वह मुझे हर तरह से बचाकर या दामन मे छुपाकर रखती थी। नही, उन्होने मुझे काफी स्वतत्रता दे रक्खी थी, लेकिन फिर भी, जब कभी जरूरत पडती, मै उन्हे अपने समीप ही पाता। मेरे बिना कहे ही वह मेरी आवश्यकताओ को जान लेती थी। हुक्म देना तो वह जैसे जानती ही नही थी। उनकी उपस्थिति और दृढ निश्चयात्मक गति-विधि (आचरण) मे

ही ऐसा कुछ था, जो उन्हे सामान्य लोगो से ऊपर उठा देता और स्वाभाविक नेतृत्व प्रदान करता था।

मेरे पिताजी दृढचरित्र और अत्यधिक दयालु व्यक्ति थे। उन्हे अपने सभी बच्चो पर बडा गर्व था, और यद्यपि मै बचपन मे बडा ही हठी और बहुत ही शैतान था, तथापि याद नही पडता कि उन्होने कभी मुझपर हाथ उठाया हो। हा, अपनी माताजी के हाथो एक बार बहुत अच्छी तरह पीटे जाने की मुझे खूब याद है। हुआ यह कि किसी कारण मेरे मन की न हो पाई और तब गुस्सा होकर मैने उस कडाहे मे थूक दिया था, जिसमे सारे परिवार का भोजन पक रहा था।

हमारा परिवार बहुत बडा था। वैसे मै तो अपनी माताजी का अकेला ही बच्चा था, परतु पिताजी के और भी कई बच्चे थे। हमारे यहा की प्रथा के अनुसार, उन्होने बहुत-सी शादिया की थी और मेरी हर एक विमाता के कई-कई बाल-बच्चे थे। उन दिनो बहुपत्नीत्व की प्रथा बिलकुल वैध थी और आज भी कोई रोक नही है। पुरुष जितनी चाहे शादिया कर सकता है, केवल पत्नियो और बच्चो के भरण-पोषण की उसकी सामर्थ्य होनी चाहिए। वास्तव मे हमारे यहा तो जिसके जितनी ही पत्निया होती है, उसकी सामाजिक हैसियत उतनी ही अच्छी और ऊची समझी जाती है।

जो लोग कट्टर एकपत्नी-व्रतधारी है, उन्हे हमारी यह बहुपत्नीत्व प्रथा बुरी, असतोषजनक और अनाचारपूर्ण लग सकती है, लेकिन मै अपने वर्ग की वकालत और पक्षपात न करू, तब भी, बहुमान्य वास्तविकता तो यही है कि पुरुष स्वभावत बहुपत्नीगामी होता है। अफ्रीकियो ने केवल इतना किया कि इस तथ्य को मान्य कर लिया और वैध रूप दे दिया, या यो कह सकते है कि उन्होने पुरुष के एक ऐसे आचरण को सामाजिक मान्यता प्रदान की, जिसे वह (पुरुष) हमेशा से व्यवहार मे लाता रहा और, जबतक उसका अस्तित्व है, लाता रहेगा। यहा इस तथ्य का उल्लेख भी काफी मनोरजक होगा कि हमारे बहुपत्नीगामी समाज मे एकपत्नीगामी देशो की अपेक्षा तलाक के मामले बहुत कम, लगभग नही के बराबर, होते है, यद्यपि हमारे यहा तलाक पाना एकपत्नीगामी उन्नत देशो की तुलना मे बहुत ही आसान है। हमारे यहा दुराचरण या व्यभिचार, बाझपन या नपुसकता, यौन-विरक्ति, शराबखोरी, पत्नी का झगडालू अथवा कर्कशा होना, सास के साथ पटरी न बैठना, और एक ही वश अथवा कबीले मे शादी हो जाने की जानकारी आदि कारणो मे से किसी भी एक को लेकर तलाक प्राप्त किया जा सकता है।

एक कबीले के सभी सदस्य एक ही गोत्र अथवा वंश के होते और आपस में एक ही खून के रिश्तेदार समझे जाते हैं। इसलिए हमारे यहां एक ही गोत्र और एक ही वंश में विवाह वर्जित है, और ऐसा माना जाता है कि यदि एक ही गोत्र के दो सदस्य आपस में विवाह कर लें तो सारे वंश को देवताओं का कोप-भाजन बनना पड़ता है। यही कारण है कि मेरे माता-पिता ने दोनों की जाति तो एक ही थी, परन्तु गोत्र दोनों का अलग-अलग था। पिताजी का गोत्र असोना था और माताजी का अनोना। पाश्चात्य विवाह-प्रणाली के अनुसार तो मेरा भी गोत्र असोना ही होना चाहिए था, परन्तु हमारे यहां वंश-परंपरा मातृक होने के कारण मैं अनोना गोत्रोत्पन्न हुआ और मेरे पिताजी का वंशधर हुआ उनकी बहन का सबसे बड़ा लड़का—मेरा फुफेरा भाई। असोना गोत्रोत्पन्न वही होगा।

हमारे परिवार में, पिताजी उनकी पत्नियां और बच्चों-कच्चों को लेकर कुल चौदह व्यक्ति थे। फिर मेहमानों का आना-जाना और भीड़-भाड़ भी लगी ही रहती थी यहांतक कि हमारे घर का छोटा-सा आंगन और अहाता हमेशा लोगों से भरा-पूरा रहता था। हम अफ्रीकियों के रिवाज के अनुसार कोई भी रिश्तेदार, रिश्ता कितनी ही दूर का क्यों न हो, कभी भी आपके यहां आ सकता है और जबतक उसका जी चाहे आपके घर में ठहर सकता है। उससे यह कोई नहीं पूछता कि वह क्यों आया, कबतक ठहरेगा और कब लौट जायगा? प्रायः इस आतिथ्य का दुरुपयोग भी होता है। अगर एक रिश्तेदार खुशहाल है तो न जाने कहां-कहां के दूर-दराज के रिश्तेदारों से उसका घर भर जायगा, सब उसीके यहां रहेंगे, उसीके मत्थे खायेंगे-पियेंगे और उसका पिंड तभी छोड़ेंगे जब वह पूरी तरह तबाह हो जायगा।

मेरा परिवार आपस में मिल-जुलकर बड़े अमन-चैन से रहता था। किसी झगड़े-टंटे और कलह की मुझे याद नहीं। घर में कई औरतें थीं और खाना पकाने के लिए हर औरत की साप्ताहिक पाली बंधी हुई थी। औरतें अपनी पाली आने पर खाना पकातीं, पिताजी की देखभाल करतीं और साथ-ही-साथ खेतों में काम करके अथवा कोई छोटा-मोटा उद्योग या व्यवसाय करके पारिवारिक आय में अभिवृद्धि करने का प्रयत्न करती रहती थीं।

हम बच्चों के तो बस मजे-ही-मजे थे। कोई काम नहीं, कोई चिंता नहीं, दिन-भर खेलना और कूदते फिरना। जगह की कोई कमी नहीं थी। बड़ा लंबा-चौड़ा, अनंत और अपार था हमारा खेल का मैदान। समुद्र से

लेकर दलदलो तक—हम सब-कही खेल सकते थे और झाडियो मे लुका-छिपी और ढूढ-खोज का तो अपना अलग ही आनद था।

लेकिन हमारे पास खिलौने नही थे। मुझे अपने एक साथी की खूब याद है। उसके पिता ने कुछ पैसे कमा लिये थे और उसे एक बचकानी साइकिल खरीद दी थी, जिसे वह रोज समुद्र के किनारे बडी शान और अकड से दौडाया करता था। देखकर हमे बडी ईर्ष्या होती और साइकिल की सवारी के लिए जी बहुत ललचता, पर वह पट्ठा हमे छूने तक नही देता था। तब मेरे सौतेले भाई कही से लोहे के दो चक्के खोज लाये और उन्हे बाध-बूधकर एक साइकिल-सी बना ली। मुझे यह घटना केवल इसीलिए याद रह गई कि मेरे भाई लोग मेरे साथ बडा ही सम्भ्रमपूर्ण व्यवहार करते थे। अपनी बनाई साइकिल पर सवार होने के लिए यद्यपि सभी उतावले थे और हर कोई यही चाहता था कि उसकी बारी पहली हो, तथापि सबसे पहले उन्होने मुझे ही बिठाया और अन्त तक थामे रहे कि कही गिर-गिराकर चोट न खा लू।

मेरे प्रति उनके ऐसे व्यवहार का कारण शायद यही हो सकता है कि वे मुझे अपनी मा का लाडला और इतराया हुआ बच्चा समझ मन-ही-मन डरते रहे हो कि कही मै रोता हुआ घर जाकर माताजी से उन सबकी शिकायत न कर दू। वे सब माताजी की बड़ी इज्जत करते और उनसे दहशत भी खाते थे और इसीलिए मुझे शिकायत का कोई मौका नही देते थे। यह तो सच ही था कि माताजी मुझे बहुत चाहती थी और उन्होने मेरी किसी भी माग को शायद ही कभी ठुकराया हो। परन्तु वह अपने स्नेह का प्रदर्शन भी कभी नही करती थी। मुझे खूब याद है कि जिस दिन भोजन परोसने की उनकी बारी होती, वह सबको दे चुकने के बाद ही मुझे परोसती थी।

रात मे मै माताजी के साथ ही सोने की ज़िद करता था, परन्तु बाद मे, अपनी ही इच्छा से, अपने सौतेले भाइयो के साथ सोने लग गया था। आज भी मुझे याद है कि जब पिताजी हमारे बिस्तर मे सोने आते थे तो मै किस तरह आगबबूला हो जाया करता और दोनो के बीच मे सोने की हठ ठान लेता था। कई बार पिताजी मुझे यह समझाने की कोशिश करते कि वह माताजी के पति है और उनकी उनसे शादी हुई है, परन्तु मै एक न सुनता और उलटकर यही जवाब देता कि मेरी भी मा से शादी हुई है और उनकी हिफाजत करना मेरा भी कर्तव्य है।

खाना खाने मे मुझे बडी चिढ थी, बडे नखरे करता और बडी मुश्किल से खाने बैठता था। माताजी बेचारी मुझे मनाते-मनाते हार जाती और

परेशान हो उठती थी। प्राय. रात मे मारे भूख के जाग पडता और विल-विलाने लगता था। इसके लिए माताजी ने रात मे मेरे सिरहाने पकाया हुआ केला रखने का नियम बना लिया था। रात मे जैसे ही भूख सताने लगती, मै उठता, सिरहाने रखा केला खा लेता और फिर सो जाया करता था। दिन मे मै बहुत ही कम खाता था। खेल के आगे फ़ुरसत ही नही मिल पाती थी। सुवह का निकला शाम को भोजन के समय लौटता और घर मे जो कुछ वना होता, थोडा-वहुत खा-पीकर छुट्टी कर लेता था। शुरू-शुरू मे तो मेरी इस आदत के कारण माताजी और पिताजी, दोनो को ही वडी चिता लगी रहती थी, लेकिन उन्होने कभी शिकायत नही की। आगे चलकर जब उन्होने देखा कि कम और अनियमित खाने से मेरे शारीरिक विकास और स्वास्थ्य को कोई क्षति नही पहुच रही है और बढोतरी निरतर होती जा रही है तो उन्होने चिता करना छोड दिया।

खेलने के लिए दोस्तो और सगी-साथियो की कमी नही थी, परन्तु मुझे सबसे अलग और अकेला रहना ही अच्छा लगता था। मै अकेला जगल मे निकल जाता और घटो चुप बैठा चिडियो, अन्य जीवो तथा कीट-पतगो को देखा करता और उनकी तरह-तरह की बोलियो को सुनता रहता था। कई बार ऐसा भी होता कि केवल देख-सुनकर जी न भरता और मै उन्हे छूने और थपथपाने के लिए व्यग्र हो उठता था। शीघ्र ही मैने उन्हे फसाने की तरकीवे ढूढ निकाली और मै उन्हे पकडने लगा—मारने के लिए नही, केवल पालने के लिए। अब मै दिन-भर की मटरगश्ती के बाद जब जगल से घर लौटता तो अकसर मेरे हाथो मे कभी कोई गिलहरी होती तो कभी कोई चूहा, कभी कोई चिडिया रहती तो कभी कोई केकडा। मेरा यह शौक यहातक बढा कि अगर कही जाना होता तब भी मै किसी पालतू जीव-जतु या परिंदे को अपने साथ लेकर ही चलता।

एक बार की बात है। माताजी के साथ कही जाना था। मैने साफ कह दिया कि अगर चिडिया का पिजरा साथ नही लेने दोगी तो मै हर्गिज नही चलूगा। माताजी को इजाजत देनी पडी। उस छोटे-से पिजरे को अपनी वगल मे दवाये मै वडी शान से चल पडा। लेकिन थोडी ही दूर जाने पर चिडिया मर गई—या तो उसका दम घुट गया था, या वह डर गई थी। हम घर से पाच मील दूर आ चुके थे तब मुझे इस बात का पता चला। अब तो मै लगा सिसक-सिसककर रोने। माताजी ने बहुत समझाया, बहुत दिलासा दिया, पर मै था कि रोता ही रहा, चुप होने का नाम न लिया। अत मे माताजी को आधे रास्ते से ही घर लौटना पडा।

भूत-प्रेत के किस्से भी मैंने वहुत सुने थे। आदिम जातियो के लिए भूतो का अस्तित्व निरी कल्पना नही, एक प्रकार की वास्तविकता होती है। मुझे भूतो की कहानियो से डर नही लगता था, वल्कि मै स्वय मरकर भूत वनना चाहता था और इसके लिए घटो बैठा मरने का इतजार किया करता। मै सोचा करता कि अगर किसी तरह भूत वना जा सके तो कितना मजा रहेगा! तव दीवारो को भेद उनके आरपार जा सकता था, सात तालो के अदर और चारो ओर से वद कमरो मे भी पहुच सकता था। सवसे वढिया वात तो यह रहती कि लोगो के वीच अदृश्य रूप से बैठ तरह-तरह की छेडखानिया कर उन्हे तग भी कर सकता था।

अगर कोई अजनवी देखता तो मैं उसे वडा ही अजीब और घुन्ना-सा दिखाई देता और मुझे देखकर शायद ही कोई विश्वास कर पाता कि मुह मे अगुली डालकर सवसे अलग-अलग रहनेवाला यह गुमसुम-सा वालक उत्तेजित किये जाने पर एक मशीनगन की तरह शब्दो की वौछार कर सकता है और जिस वात को उचित एव न्यायपूर्ण समझता है उसकी रक्षा के लिए केवल हाथ-पाव का ही नही, शरीर के प्रत्येक अवयव का धडल्ले से उपयोग भी कर सकता है। ऐसे अवसर पर दो आदमियो को तो खास तौर पर मुझसे डरकर भाग ही जाना पडा था।

पहला पुलिसमैन था। उसने मेरे एक सौतेले भाई को, समुद्र-तट पर शैतानी करने के अपराध मे, पकड लिया था और सजा देने जा रहा था। लेकिन जैसे ही उसने भाई का हाथ पकडा, मैं कुपित होकर उसपर वालू फेकने लगा। उस समय मैंने दोनो हाथो से इतनी तेजी और इतने जोर से वालू फेकी कि भाई को छोडकर पुलिस राम को भागते ही वना। वाद मे उसने पिताजी से शिकायत की और मुझे डाट भी सुननी पडी, लेकिन साथ ही मुझे याद है कि पिताजी की आखो मे आनद और विनोद की चमक भी थी।

दूसरा आदमी मेरी एक सौतेली वहन का प्रेमी था। वह वेचारा हमारे यहा वहन की मगनी के लिए आया था। पहले तो मेरी समझ मे नही आया कि वह कौन है और क्यो आया है, फिर किसीने मुझे वताया कि वह मेरी वहन को विवाह कर ले जाने के लिए आया है। यह वात मुझे वहुत वुरी और उसकी हिमाकत मालूम हुई। फिर क्या था, मै चीखता-चिल्लाता उसपर टूट पडा और चारो हाथो-पावो से लगा उस प्रेमी जीव की मरम्मत करने, यहातक कि अत में उस वेचारे को हमारे घर से भागना ही पडा।

लेकिन शीघ्र ही मुझे यह तथ्य हृदयगम करना पडा कि जिन बच्चो के माता-पिता मेरे माता-पिता की कोटि के होते है, खास तौर पर उनका जीवन निरा खेल-कूद और मौज का नही होता। मेरी माताजी को यद्यपि ढग से शिक्षा प्राप्त करने का सुयोग नही मिल पाया था, तथापि मेरी शिक्षा-दीक्षा के सबध मे उन्होने बहुत पहले ही निश्चय कर लिया था और जैसे ही मेरी उम्र हुई मुझे पाठशाला मे बिठाने का उन्होने प्रबध कर दिया। सभवत माताजी की प्रेरणा के कारण पिताजी भी इसी विचार के थे। यदि अकेले पिताजी की ही बात होती तो मै उन्हे अवश्य मना लेता और वह पिघल भी जाते, परतु माताजी को उनके किसी भी निश्चय से डिगाना असभव ही था। इसलिए मुझे मन मारकर रह जाना पडा।

पाठशाला मे मेरा पहला दिन इतना निराशाजनक बीता कि मै अधबीच ही भाग आया और यह निश्चय कर लिया कि अब वहा कभी नही जाऊगा। परतु माताजी ने मेरी एक न सुनी। रोज सवेरे चुपचाप मेरा हाथ पकडकर घसीटती हुई वह मुझे पाठशाला ले जाती और वहा छोड आती थी। जब मैने कोई बस चलते न देखा तो हार मान ली और मन-ही-मन तय किया कि जब यहा रहना ही है तो क्यो न मन लगाकर रहा जाय और साथ ही पढने-लिखने का कुछ प्रयत्न भी क्यो न किया जाय। और यह बडे आश्चर्य की बात है कि जल्दी ही मुझे अपनी पढाई मे मजा आने लगा और पाठशाला जाने के लिए मै उत्सुक भी रहने लगा, यद्यपि शिक्षक के आतक के मारे जान भी सूखती थी, क्योकि वह 'छडिया बाजे छम-छम और विद्या आवे धम-धम' सिद्धात के समर्थक थे। अपनी इच्छा के विरुद्ध काम करने को बाध्य किया जाना मुझे जरा भी नही सुहाता था, यह अपनी आदत मे ही नही था, इसलिए मै अक्सर सोचता कि यदि पाठशाला मे शिक्षक रहे ही नही और सारी पढाई-लिखाई हमपर ही छोड दी जाय तो कितना अच्छा रहे।

पाठशाला की सभी कक्षाए एक ही कमरे मे लगती थी और शिक्षक महोदय हर एक कक्षा को बारी-बारी से पढाया करते थे। इस तरह पढाना कोई हँसी-खेल नही, बेचारो को अवश्य कठिनाई होती रही होगी और हम उनकी उस कठिनाई को कम तो क्या करते, उलटा और बढाते ही थे। पर यह अच्छी बात थी कि मै मन लगाकर पढने लगा था और पढाई मे मुझे रस भी आने लगा था। जैसे-जैसे मेरा यह रस बढता गया, मन-ही-मन, यह डर भी सताने लगा कि कही पिताजी को मेरी पढाई का शुल्क भारी न पडने लगे। उन दिनो महीने का पूरी तीन पेनी शुल्क देना पडता था। इसके

लिए मैंने शीघ्र ही चूजे पालना शुरू कर दिया और एक-एक चूजा मजे मे छ-छ पेनी मे बिक भी जाता था। इससे पाठशाला का शुल्क देने मे तो मदद मिलती ही थी, किताबे खरीदने के लिए भी हाथ मे पैसा हो जाता था। फिर, मेरा यह भय कि गरीबी के कारण पिताजी मेरी पढाई का शुल्क नही दे सकेगे, निरा भ्रम ही था। मुझे अच्छी तरह याद है कि हम भाइयो को उन्होने कभी कोई भी चीज देने से इकार नही किया और खास तौर पर मेरे मामले मे तो वह बहुत ही उदार थे।

अपने प्रारभिक विद्यार्थी-जीवन की एक घटना मुझे बहुत अच्छी तरह याद है। वह मेरे मन पर सदा के लिए अकित हो गई है। इसका कारण शायद यह हो कि वह अनुशासन के सबध मे मेरा पहला पाठ था। हम अपने शिक्षक को जरा भी नही चाहते थे, क्योकि वह जब देखो तब बेत चलाते रहते थे, जो हमारे खयाल मे प्राय अकारण ही होता था। एक दिन हमे पता चला कि पाठशाला मे निरीक्षक आनेवाला है। हमने सोचा, शिक्षक से बदला चुकाने का यह बहुत अच्छा अवसर हाथ आया है। हम सबने मिलकर फैसला किया कि निरीक्षण होनेवाले दिन पाठशाला से रफू चक्कर हो जाय। निरीक्षक महोदय आये तो सारी कक्षा खाली पडी थी। काश, मैं देख पाता कि निरीक्षक महोदय को कितना ताव आया, किस तरह गुस्सा हुए और कैसे उनका चेहरा तमतमा गया। और काश यह भी देख पाता कि हमारे शिक्षक का चेहरा कैसे फक्-से रह गया। बेचारे जरूर झेंपे और झुझलाये होगे और मारे शर्म के गर्दन ही नही उठने पाई होगी। लेकिन दूसरे दिन उन्होने खूब कसर निकाली। हम पाठशाला पहुचे तो वह छडी लिये स्वागत को तैयार थे। एक-एक की वह धुनाई हुई कि छटी का दूध याद आ गया। हर एक के नितबो पर दो-दो दर्जन से तो क्या कम छडिया पडी होगी और वह भी बिलकुल नगा करके! पूरे तीन दिन मुझसे बेच पर बैठा नही गया। उस दिन शरीर और मन दोनो को ही कष्ट हुआ था, स्वाभिमान को भी ठेस पहुची थी, परतु साथ ही यह भी समझ रहा था कि दड उचित ही था। मै सर्वथा निर्दोष नही था, मैंने अपराध ही ऐसा किया था।

और उसी दिन से मैंने उस दड को सहर्ष स्वीकार करना सीखा है, जिसे मेरा मन उचित समझता है, फिर वह दड कितना ही कठोर और अपमानित करनेवाला क्यो न हो!

इन्ही दिनो मैं एक रोमन कैथोलिक पादरी के सपर्क मे आया, जिनका मुझपर बडा गहरा प्रभाव पडा। यह सज्जन जर्मन थे और नाम था जार्ज

फिशर। वडे ही विशालकाय और अनुशासित ढग से काम करनेवाले व्यक्ति थे। शीघ्र ही मै इनका कृपा-पात्र हो गया और अपने अध्ययन मे मुझे इनसे वडी सहायता मिलने लगी। आगे चलकर तो वह मेरे अभिभावक ही वन गये और उन्होने मेरे माता-पिता को मेरी प्राथमिक शिक्षा के दायित्वो से लगभग मुक्त ही कर दिया।

पिताजी ज़रा भी धार्मिक नही थे। हा, माताजी की अवश्य धर्म पर वडी आस्था थी। उन्होने ईसाइयो के कैथोलिक सप्रदाय को अगीकार किया था। माताजी और फादर फिशर की ही वदौलत मेरा वप्तिस्मा भी रोमन कैथोलिक गिरजा मे हुआ। उन दिनो मै धर्म के वाह्याडवर का पूरी आस्था से पालन करता था। गिरजाघर की प्राय सभी पूजाओ (मॉस) मे नियमित रूप से भाग लिया करता था। लेकिन जैसे-जैसे उम्र वढती गई, रोमन कैथोलिक सप्रदाय के कठोर अनुशासन से मन ऊवने लगा और एक प्रकार की घुटन-सी होने लगी। इसका यह अर्थ नही कि मेरी धार्मिकता कम हो गई थी, उलटे अपने प्रभु की उपासना और उसके सान्निध्य मे ही अव मुझे वास्तविक शाति और स्वतत्रता का वोध होने लगा था। यहा यह वता देना आवश्यक है कि मेरा ईश्वर केवल मेरा ही अपना और निजी ईश्वर है और मै उसतक स्वय अपने-आप और सीधे-सीधे पहुचना पसद करता हू। धर्म और ईश्वर मेरे निकट विलकुल निजी और व्यक्तिगत मामले है। इनमे किसीका जरा-सा भी हस्तक्षेप मै सह नही सकता और न किसीको माध्यम वनाना ही मुझे सुहाता है। अव तो मै एक सप्रदाय-विहीन ईसाई और मार्क्सवादी सोशलिस्ट हू और दोनो मे मुझे कोई भी विरोध नही दिखाई पडता।

नारी के वधन से मै जो डरने और घवराने लगा, उसका कारण सभवत रोमन कैथोलिक सप्रदाय के आचरण-सवधी कठोर विधि-निषेध ही होने चाहिए, क्योकि मुझे हमेशा यह आशका लगी रहती थी कि 'चर्च' के द्वारा मेरी अभिलाषाओ पर अकुश लगाया जा सकता है। उन दिनो तो मै औरतो से वहुत ही अधिक डरता था। मुझे एक लडकी की खूब याद है। वह हमारे पडोस मे ही रहती थी और जो गली हमारे और पडोस के घर के वीच मे पडती थी उसमे घटो खडी मेरी प्रतीक्षा किया करती थी। अगर मै कभी उस गली मे निकल जाता तो वह लपककर मेरे पास आ जाती और मुझे वातचीत मे लगाने का प्रयत्न करने लगती। लेकिन मै एकदम सकपका जाता और मारे घवराहट के उसके चेहरे की ओर ताकने लगता। उस समय मेरी दशा विलकुल एक डरे हुए जानवर के-जैसी हो

जाती थी । वह इसे मेरा सकोच और भीरुता ही समझती रही और तब उसने एक दिन दुस्साहस की पराकाष्ठा कर डाली । मेरे कान के पास अपना मुह लाकर वह बडे ही रहस्यपूर्ण स्वर मे फुसफुसाई, "मै तुम्हे प्यार करती हू ।" सुनकर मै बौखला उठा और लगा उसे झिडकने और गालिया देने, मानो उसने मेरा कोई बहुत बडा अनिष्ट कर डाला हो । उसे जी भरकर कोसने-झिडकने के बाद मै भागा-भागा माताजी के पास पहुचा और उन्हे उस लडकी की दुष्टता की बात बताई । माताजी ने सुना तो हँस दी और बोली, "इसमे इतना गुस्सा होने की क्या बात है, बेटे ? तुम्हे तो उलटे खुश होना चाहिए । अगर कोई तुम्हे चाहता है तो उसमे बुराई क्या है ।"

लेकिन वह लडकी भी एक ही ढीठ थी । उसने आसानी से मेरा पिंड नही छोडा और बराबर डोरे डालती रही । बाद मे वह मेरे लिए अच्छे-अच्छे खाने पकाकर लाने लगी । चुपके से आती और माताजी को देकर चली जाती कि वह किसी तरह मुझे खिला दिया करे । जब मुझे मालूम हुआ तो मैने खाना ही बद कर दिया । कई-कई दिन तक खाना छूता ही नही था और खिलाने के लिए माताजी को बडा आग्रह, बडी मनुहारे और मनावने करनी पडती थी ।

नारियो के सबध मे अपनी उस भावना से मै अबतक उबर नही सका हू । आज उसे 'भय' कहना तो ठीक नही होगा, बद्धमूल सस्कार कहना ही अधिक उचित है । सभवत मन मे कही यह आशका जमकर बैठ गई है कि कोई मुझपर हावी हो जायगा, अपने चगुल मे फसा लेगा और मेरी आजादी छिन जायगी । केवल नारियो के सबध मे ही नही, रुपये-पैसे और सगठित (मताग्रही) एव ऊपर से लादे हुए धर्म के सबध मे भी मेरी ऐसी ही भावनाए है । मेरे विचार मे इन तीनो वस्तुओ का मनुष्य के जीवन मे बडा ही नगण्य स्थान होना चाहिए, क्योकि यदि इन तीनो मे से कोई भी प्रमुख हुआ तो मनुष्य उसका दास बन जाता है और उसका व्यक्तित्व सदा के लिए पगु हो जाता है ।

अगर मै उन दिनो उस लडकी के प्रेमाग्रह और अनुनय को स्वीकार कर लेता तो आज हाफ-अस्सीनी की पाठशाला मे लडको को पढा रहा होता या अपने पिताजी के सुनारी के धधे मे ही अपनी जिदगी के दिन काट रहा होता ।

लेकिन ऐसा तो होने को था नही ।

२
अचिमोता और शैक्षणिक कार्य

आरभिक पाठशाला मे आठ वर्ष पढने के बाद मै हाफ-अस्सीनी मे, एक वर्ष के लिए, उम्मीदवार शिक्षक नियुक्त हो गया। उस समय मेरी उम्र सत्रह वर्ष के लगभग रही होगी, लेकिन कद अभी बहुत छोटा था। आज भी याद है कि काले तखते पर लिखने के लिए मुझे एक बकसे पर चढकर खडा होना पडता था।

१९२६ मे, राजकीय प्रशिक्षण महाविद्यालय, अकरा के आचार्य मेरी पाठशाला का निरीक्षण करने के लिए आये। वह मेरा काम देखकर बहुत प्रसन्न हुए और जाते समय यह सिफारिश करते गए कि मुझे उनके महाविद्यालय मे शिक्षक-प्रशिक्षण के लिए भेजा जाय।

यह मेरी जीवन-यात्रा मे एक महत्त्वपूर्ण मोड सिद्ध हुआ। अगले वर्ष जब मै शहर के इस महाविद्यालय मे पढने के लिए आया तो गाव से शहर आनेवाले छात्रो की भाति नितात अनुभवहीन और निपट देहाती था। पहली बार घर छोडकर शहर के छात्रावास मे रहनेवाले सभी विद्यार्थियो की भाति मुझे भी घर की खूब-खूब याद आती थी। हाफ-अस्सीनी की शात रेतीली सडको का अभ्यस्त मन अकरा के शोर-गुल, भीड-भडक्के और यातायात की धमा-चौकडी से उकता उठता था। उधर महाविद्यालय के पुराने छात्र मुझ नवागतुक की नाक मे दम किये रहते—उनके द्वारा मेरा मजाक बनाये जाने, खिल्लिया उडाने, दिक और परेशान किये जाने आदि का कोई अत न था। लेकिन सहसा एक दिन उन्होने मुझे अपना समकक्ष मान लिया और उस दिन से मेरा मजाक बनाने के बदले दूसरे नवागतुको को छेडने-परेशान करने मे अपने साथ रखने लगे। इसका यह अर्थ हुआ कि विद्यार्थियो के समाज मे मेरा दीक्षा-सस्कार सपन्न हो चुका था।

लेकिन नये अनुभवो और नये आनदो के साथ-साथ यह वर्ष मेरे लिए अपार शोक और दु ख का वर्ष भी सिद्ध हुआ। अकरा मे ही मुझे अपने पिताजी की मृत्यु का समाचार मिला। उनके पाव मे एक घाव हो गया था, जो निरतर बिगडता गया। माताजी उन्हे इलाज के लिए निकट के एक गाव ले गई, लेकिन कोई लाभ न हुआ। दो महीने मे तो घाव

विषैला हो गया, उसका विष पिताजी के सारे शरीर मे फैल गया और अत मे वह उनकी मृत्यु का कारण बना।

प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य से मुझे घर लौटने की अनुमति मिल गई और मै तुरत चल पडा। लेकिन उन दिनो सडके आज-जैसी तो थी नही। यात्रा मे काफी दिन लग गये और जब मै घर पहुचा तो पिताजी का अतिम सस्कार सपन्न हो चुका था।

पिताजी की मृत्यु मेरे लिए बडी करारी चोट थी। हमारे घर का मुखिया और कर्ता-धर्ता ही नही उठ गया था, सारा घर ही बारह-बाट हो गया। हमारे यहा की प्रथा के अनुसार मृतक के बीवी-बच्चे मृतक के उत्तराधिकारी के यहा, जो उसका पहला निकटस्थ सबधी होता है, रहने के लिए चले जाते है। इसीलिए मेरी माताजी भी हाफ-अस्सीनी छोडकर अनकोबरा नदी के मुहाने पर मेरे चाचा के साथ रहने चली गई।

इन्ही दिनो अचिमोता मे, गवर्नर सर गॉरडॉन गुगिसबर्ग के हाथो प्रिस ऑव वेल्स कॉलेज का अधिकृत रूप से उद्‌घाटन हुआ। उस समारोह मे अफ्रीकी सरदार और गण्यमान्य व्यक्ति तो कई थे, परन्तु जिसने वहा उपस्थित लोक-समुदाय का सबसे अधिक ध्यान आकर्षित किया, वह थे महाविद्यालय की शिक्षक-परिषद् के सर्वप्रथम अफ्रीकी सदस्य और उप-प्राचार्य डाक्टर क्वेगीर अग्रे। उनकी कोटि का व्यक्तित्व अभी तक मेरे देखने मे नही आया, और इसीलिए मुझे उनसे अत्यधिक स्नेह हो गया था। उत्साह, उमग और कर्तृत्व-शक्ति के तो मानो वह उत्स ही थे। हँसते भी थे खूब दिल खोलकर—उनका कहकहा इतना बुलद और उन्मुक्त होता कि सुननेवाले बरबस खिलखिला पडते थे। राष्ट्रीयता का पहला सबक मैने उन्हीसे सीखा। उन्हे अपने काले रग पर बडा गर्व था, परतु जातीय पृथक्करण (रगभेद) के वह कट्टर विरोधी थे। उनकी वक्तृत्व-कला और वाग्मिता की बडी धाक थी। मारकस गार्वे के सिद्धात 'अफ्रीका अफ्रीकियो के लिए' को जितना वह समझते थे, शायद ही कोई उतना समझता होगा, परतु जब मौज मे आ जाते तो इस सिद्धात की भी बखिया उधेडकर रख देते थे। असल मे उनकी मान्यता यह थी कि स्थितिया ऐसी होनी चाहिए, जिनमे काले और गोरे साथ मिलकर काम कर सके। काली और गोरी जातियो के सहयोग पर वह हमेशा जोर दिया करते थे और यही उनका मुख्य सदेश था। वह प्राय कहा करते, "आप काले परदो से एक प्रकार का सुर निकाल सकते है और सफेद परदो से एक दूसरे प्रकार का,

लेकिन सवादिता के लिए तो काले और सफेद दोनो ही परदो का उपयोग करना होगा ।"

अग्रे के इस कथन की व्यावहारिकता का मै उन दिनो भी कायल नही हो सका । मेरा तर्क यह हुआ करता था कि काले और गोरे की सुसवादिता तभी सभव है जब काली जाति को गोरी जाति के समकक्ष माना जाय और समान व्यवहार किया जाय। केवल मुक्त और स्वतत्र लोग जिनकी अपनी सरकार और अपना राज्य हो—ऐसे ही लोग अन्य लोगो के साथ जातीय अथवा किसी भी प्रकार की समकक्षता का दावा कर सकते है ।

अप्रैल या मई मे वर्षा ऋतु का आरभ होते ही प्रशिक्षण महाविद्यालय की छुट्टिया हो गई । मै तो अन्य विद्यार्थियो की तरह अपने घर जा न सका, क्योकि अभी तक अर्थ-प्राप्ति की दिशा मे कोई प्रयत्न कर नही पाया था । अब पुन सत्र आरभ होने तक, वही रुका रहकर जीवन-निर्वाह के लिए कोई उद्योग कर लेना चाहता था । छुट्टियो के पहले ही दिन महाविद्यालय के सूने सभाभवन मे खडा अपने ही जैसे दो विद्यार्थियो से बाते कर रहा था कि डॉक्टर अग्रे भी वहा आ निकले । उछाह और जीवनी-शक्ति तो जैसे उनमे से फूटी पड रही थी । वह छुट्टिया बिताने के लिए इग्लैड और अमरीका जा रहे थे । कुछ देर हमसे हँसी-मजाक करते रहने के बाद उन्होने किंचित् गभीर होकर कहा, "अभी तक तो मै आपकी ज्ञान-क्षुधा को भडकाता ही रहा हू, शात नही कर पाया, प्रभु से मेरे लिए प्रार्थना कीजिये कि लौट आकर आपकी ज्ञान-क्षुधा को शात कर सकू ।"

परन्तु वह लौटकर हमारे पास कभी नही आये । मेरे लिए उनके वे ही शब्द अतिम हो गये । इग्लैड की यात्रा समाप्त कर वह अमरीका गये । न्यूयार्क पहुचकर ऐसे बीमार हुए कि फिर उठ न सके । एक सप्ताह बाद अकरा मे समाचार आया कि अग्रे परलोकगामी हो गये ।

सुनकर मै तो स्तभित रह गया । छाती मे एक चोट-सी लगी । इस विचार के आते ही कि मै सदा के लिए उस महापुरुप के सरक्षण से वचित हो गया हू, अवसन्न हो उठा । तीन दिन तक मुझसे कुछ खाया नही गया । लेकिन उन्ही तीन दिनो मे मुझे यह पता भी चल गया कि खाली पेट रहकर भी मै काम कर सकता हू और पढने-लिखने के लिए काफी शक्ति सचित रह जाती है । आगे चलकर यह जानकारी, जब मै अध्ययन के लिए पहले अमरीका और बाद मे इग्लैड गया तो बडे काम की सिद्ध हुई । वहा गरीबी के कारण मुझे प्राय भूखा रहना पडता था और भूखे पेट रहकर

पढाई ही नही करनी होती थी, विश्वविद्यालय का शुल्क चुकाने के लिए छुट्टियो मे काम भी करना पडता था ।

डाक्टर अग्रे विद्वान के रूप मे ही नही, मनुष्य के रूप मे भी महान थे । मैं उनके दोनो ही रूपो का प्रशसक था । उनके प्रति मेरी श्रद्धा और भक्ति ने ही मुझे अमरीका जाकर अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया । मेरी योजना यह थी कि शिक्षक-प्रशिक्षण समाप्त कर पाच वर्ष तक अध्यापन-कार्य करते हुए इतना पैसा बचा लू कि जिससे अमरीका पहुचा जा सके ।

अचिमोता मे शिक्षक-प्रशिक्षण प्राप्त करनेवाले सबसे पहले विद्यार्थी हम ही थे । प्रशिक्षार्थी होने के नाते हम माध्यमिक शाला के विद्यार्थियो के साथ ही रहते थे, इसलिए विचारो के आदान-प्रदान और एक-दूसरे से सीखने के हमे काफी अवसर प्राप्त हो जाया करते थे । मैंने उनसे लैटिन भाषा और उच्च गणित सीखा, क्योकि मैं लन्दन की मैट्रिक (प्रवेशिका) परीक्षा मे बैठना चाहता था । बदले मे मैं उन विद्यार्थियो को शिक्षा-मनोविज्ञान और उनके पाठ्यक्रम से बाहर के और भी कई विषयो के बारे मे बताया करता था ।

उन दिनो जितना भी सीखा-पढा जा सके मैं सीख-पढ लेने के लिए उत्सुक रहता था, परतु इसके लिए रात-दिन किताबें घोटते रहने के ढग का परिश्रम मैंने कभी नही किया और न मैं पुस्तक-कीट ही बना । मिलनसार था, इसलिए दोस्त बहुत जल्दी बना लिया करता था और खेल-कूद मे भी काफी रुचि थी ।

हमारे खेल-शिक्षक एक सिंगाली सज्जन थे, जो अपने विषय के बहुत उत्तम शिक्षक होने के साथ-साथ बहुत बढिया आदमी भी थे । उन्हीके तत्वावधान मे मैंने बडे मनोयोग से कम फासले की दौडो का अभ्यास और तैयारिया की और अतर-महाविद्यालय क्रीडा-प्रतियोगिता होने पर क्रमश १००, २२० और ४४० गज की दौड मे भाग भी लिया । खेल-कूद मे हिस्सा लेकर ही मैंने इस बात को जाना कि खिलाडी वृत्ति मनुष्य-मात्र के चरित्र का एक अतीव महत्वपूर्ण अग है और तभी से जातियो के विकास मे खेल-कूद को प्रोत्साहित करने का महत्त्व भी मेरी समझ मे आया ।

लेकिन कवायद-परेड से मेरी कभी दोस्ती नही हो सकी । सवेरे-सवेरे, ठीक साढे पाच बजे बिस्तर से उठकर मैदान में कवायद करने से मुझे बडी घृणा थी । मैं पाव घसीटता हुआ ही मैदान में पहुचता था । लेकिन [illegible] ही नींद उड जाती थी । मोटे-तगडे शरीरवाले हमारे कवायद-

शिक्षक जोरो से गरजना शुरु कर देते । वह 'सावधान', 'चटक के चलो' आदि आदेश क्या देते, बस बम के गोले ही दागते थे । पूरे तीन सौ पौड वजन रहा होगा उनका । कदम मिलाकर मै कभी चल ही नही पाता था । इससे उन्हे बडी झुझलाहट होती और गुस्से मे आकर वह आदेशो की बौछार करने लगते और मेरी टागे बेचारी लगातार झटके खा-खाकर दुखने लग जाती थी । पूरा एक घटा उत्पीडन किया जाता था और उस दारुण यातना से मुक्ति तभी मिल पाती थी जब बीच-बीच मे हम आराम से खडे होते और वह आदेशो की गोला-बारी कर रहे होते । उनकी तोद भी कमाल की बडी थी । जब-जब वह गरजते हुए अपना मुह खोलते, तोद भी नीचे से ऊपर को उठती और आदेश के दिये जाते ही थर्राती हुई धम्-से नीचे को लटक जाती थी । उनकी तोद की ये कलाबाजिया मुझे बुरी तरह गुदगुदाने लगती और मेरे लिए अपनी हँसी को रोकना मुश्किल हो जाता था ।

लेकिन मेरी सबसे अधिक अगर किसीसे चलती थी तो वह थे हमारे छात्रावास-शिक्षक । न वह मुझसे पेश पा सकते थे और न मै उनसे । असल मे हम दोनो की पटरी कभी बैठ ही नही सकी । वह मुझसे तग आ गये थे और 'मुसीबत का परकाला' कहकर पुकारा करते थे । अनुशासन के मामले मे वह बडे ही सख्त थे और इसीलिए मुझे फूटी आखो भी देखना पसद नही करते थे । नियम-कानून की पाबदी से मै कतराता तो नही था, कोशिश भी अवश्यमेव और पूरी-पूरी करता था, परतु एक ऐब मुझमे जरूर है । जिस काम मे मै तल्लीन हो जाता हू, उससे अपने-आपको हटाकर नियमित बनना मेरे लिए जीवन मे सदैव एक दुष्कर कार्य रहा है । और इसीलिए प्रत्येक रविवार की सायकालीन प्रार्थना के बाद की हाजिरी मेरे लिए एक दु खद मुसीबत हो जाया करती थी । इस सबध मे नियम ऐसा था कि प्रार्थनाघर से लौटते ही प्रत्येक विद्यार्थी को हाजिरी मे उपस्थित होना चाहिए और कोई सबल एव विश्वसनीय कारण बताये बिना अनुपस्थित नही रह सकता था ।

अग्रे-छात्रावास के हमारे गृहपति बडे ही सख्त आदमी थे । ऐसी चुभती बाते कहते और जली-कटी सुनाते थे कि हम तिलमिला कर रह जाते । वह ताने नही देते थे, बल्कि शब्दो के कोडे चलाते, जो मन को ही उधेड कर रख देते थे । मै उनके सामने पडने से बडा घबराता था और उनके शब्द-बाण भी मुझसे सहे नही जाते थे । इसलिए हाजिरी मे उपस्थित होने की हमेशा जी-तोड कोशिश किया करता था । परन्तु एक बार चूक हो ही गई । उस रविवार को किसीसे साइकिल माग मै अकरा गया हुआ था और

लौटाते मे अधाधुध पैडल मारता भागा चला आ रहा था। हठात् एक छोटी-सी लडकी बीच सडक पर ठीक मेरे सामने दौडी आई। मैंने पूरी ताकत से ब्रेक लगाये, साइकिल को मोडा और उसपर से नीचे कूद पडा। उधर वह लडकी भी सडक के एक ढेर मे जा गिरी और मारे दहशत के चीखने लगी। सौभाग्य से उसके कोई चोट नही लगने पाई थी, लेकिन मैं उसे सडक पर चीखती हुई छोडकर तो वहा से जा नही सकता था। उसे उठाया, उसकी मा के पास पहुचाया और अपने अतिम दो शिलिंग उसके हवाले कर किसी तरह मामले को रफा-दफा किया।

यद्यपि मेरा शरीर कई जगह बुरी तरह छिल गया था, हाथ-पाव मे खरोचे लगी थी, घुटने फूट गये थे और उनसे खून बह रहा था, तथापि हाजिरी की याद नगी तलवार की तरह मेरे सिर पर लटकी हुई थी। मैं लगडाता हुआ अपनी साइकिल के पास आया, बडी मुश्किल से उसपर सवार हुआ और अपने चोट खाये और दुखते हुए अगो से जितना तेज़ सभव था उसे दौडाता हुआ ले चला। अचिमोता पहुचा तो छ कभी के बज चुके थे और उस समय सब-के-सब प्रार्थनागृह मे थे। मैं फुर्ती से अपने बिस्तरे मे जा घुसा और कान लगाये लौटनेवालो की आहट लेता रहा। मेरा दिल उस समय सुनार की हथौडी की तरह ठक्-ठक् कर रहा था।

उधर प्रार्थना जैसे ही समाप्त हुई, गृहपति झपटते हुए मेरे कमरे मे आ पहुचे। एक मिनट की भी देर उन्होंने नही की। मैंने चेहरा बीमारो का-सा बनाते हुए अपने सहसा बीमार हो जाने की बात कही, परन्तु इतनी आसानी से माननेवाले जीव तो वह थे नही। उसी समय जाकर डाक्टर को बुला लाये। डाक्टरसाहब ने नब्ज देखी, थरमामीटर लगाया और फैसला सुना दिया कि बुखार-बीमारी कुछ नही है। इसके बाद वह मुझे ढोंगी करार देने जा ही रहे थे कि मैंने फूटे हुए घुटने और छिले हुए अग उनके आगे कर दिये। अब तो उन्हे मेरी बात माननी पडी। परन्तु छात्रावास-निरीक्षक फिर भी नही चूके। व्यग्यमूलक तानो के तीखे तीर चला दिये और मैदान के एक बडे-से टुकडे की घास छीलने की सजा तजवीज कर दी।

किया करते, क्योकि छुट्टियो मे काम करने पर हमे रोजाना एक शिलिंग मजदूरी दी जाती थी ।

अचिमोता के तीसरे वर्ष मे आने पर मै नाटक-मडलियो मे भी भाग लेने लगा और महाविद्यालय मे खेले गए एक नाटक 'कोफी की विदेश-यात्रा' मे मैने नायक का अभिनय किया । यह एक ऐसे विद्यार्थी की कहानी थी, जो डाक्टरी पढने के लिए विलायत जाता है और लौट आने पर जिसे जादू-टोने और ओझे-सयानो के कारण वडी कठिनाइयो का सामना करना पडता है । दोनो की प्रतिद्वद्विता चलती रहती है । तव एक आदमी को बुखार आता है, जिसे ओझा वहुत प्रयत्न करके भी चगा नही कर पाता । अत मे कोफी को बुलाया जाता है कि शायद वह अच्छा कर सके । कोफी अपने इलाज से रोगी को चगा कर देता है और लोगो को मानना पडता है कि अधविश्वासो और ओझागीरी की अपेक्षा वैज्ञानिक ज्ञान श्रेष्ठ है ।

मै ढोल और अन्य आदिवासी वाद्यो के वजाने एव असाफु नृत्य मे भी वडी उमग और रुचि से भाग लिया करता था । महाविद्यालय मे एन्जिमा और फाटी की ओर के जितने विद्यार्थी थे सबने मिलकर अपना एक असाफु सास्कृतिक दल बना लिया था और हम लोग प्राय हर शाम को गा, बजा और नाचकर अपना एव दूसरो का मनोरजन किया करते ।

महाविद्यालय के अतिम वर्ष मे मै प्रिफेक्ट (विद्यार्थियो से नियम आदि पालन करवानेवाला छात्र-प्रतिनिधि) बना दिया गया । मुझे अपने इस उत्तरदायित्व को निवाहने मे कभी कोई कठिनाई नही हुई । मेरे विद्यार्थी साथी खुशी-खुशी मेरा कहना मान लेते थे और प्रसन्नता से मेरे साथ सह-योग करते थे ।

भाषण देने का शौक भी मुझे इन्ही दिनो पैदा हुआ । हमने डाक्टर अग्रे की स्मृति मे 'अग्रे विद्यार्थी समिति' स्थापित की थी । इस समिति के सदस्य विभिन्न विषयो पर भाषण तैयार करते और समिति की वैठको मे उन्हे सुनाते थे । वास्तव मे हमारा यह सगठन एक प्रकार की वाद-विवाद-समिति ही थी । स्वय मुझे उन वाद-विवादो को सुनने और उनमे हिस्सा लेने मे वडा आनद आता था । मै प्राय अल्पमत की ओर से ही वोलने के लिए खडा हुआ करता, चाहे उनके विचारो से सहमत रहू या न रहू । इसमे एक तो वाद-विवाद देर तक चलते रहते और दूसरे, मुझे उन विचारो को व्यक्त करने का अवसर मिल जाता, जिन्हे मै अन्यथा शायद ही सोच पाता । जिस पक्ष का मै समर्थन करने के लिए खडा होता, आरभ

मे वह कितना ही क्यो न पिट रहा हो, अत मे जीत उसीकी होती । और इतना ही नही, मेरे प्रतिपादित तर्कों के कारण कई विपक्षियो का तो मत-परिवर्तन तक हो जाता था । उस समय तो यह मेरे लिए एक प्रकार का क्रीडा-कौतुक ही था, लेकिन आगे चलकर यह गुण मेरे बडा काम आया । वक्तृत्व का यह वरदान न मिला होता तो मझे अपने राजनैतिक जीवन के आरभ से ही पग-पग पर हार खानी पडती और मेरा सारा सघर्ष व्यर्थ हो जाता । वक्तृत्व का मेरा यह शौक यहातक बढा कि मै 'अग्रे विद्यार्थी समिति' के बाहर भी दूसरो से और यहातक कि अपनी कक्षा मे शिक्षको से भी उलझने लगा । आज भी याद है कि इसके लिए हमारे 'प्रणाली'-शिक्षक मिस्टर हर्बर्ट (आजकल लार्ड हेमिगफोर्ड) मुझे कई बार यह कहकर टोका करते थे, "तुम यहा पढने के लिए आये हो, पढाने के लिए नही ।"

१९३० मे मेरा प्रशिक्षण पूरा हुआ और मैने अचिमोता से विदा ली । वह एक तरह से और कम-से-कम उस समय के लिए तो मेरे विद्यार्थी-जीवन का अत ही था । अव सामने नया जीवन और नया सघर्ष था—विद्या-प्राप्ति का भी ओर जीवन-निर्वाह का भी ! और इस नये सघर्ष की सफलता के सबध मे मै पूर्णत आश्वस्त और दृढ सकल्प भी था, परन्तु फिर भी महा-विद्यालय छोडते हुए मेरा जी भर आया । जब मैने अतिम बार महा-विद्यालय की चहारदीवारी की ओर देखा तो आखे बरवस उमड आई और गला रुधने लगा । परन्तु मैने तत्काल अपने-आपपर काबू पा लिया । भावुकता के प्रदर्शन के लिए समय ही कहा था । आगे बहुत-से काम करने को पडे थे और उसी क्षण से जीवन-निर्वाह के उद्योग मे भी लग जाना था ।

मुझे एलमिना के रोमन कैथोलिक जूनियर स्कूल मे प्राथमिक शिक्षक का काम मिल गया और मै वहा पहली कक्षा को पढाने लगा । वैसे किडर-गार्टन मे पढाने का प्रशिक्षण तो मैने प्राप्त किया ही था, परन्तु नन्हे वच्चो को पढाने का यह मेरा पहला ही अवसर था । सभी वच्चे वडी जल्दी मुझसे हिल गये । छुट्टी के वाद भी वे घर जाने का नाम न लेते, मेरे आस-पास ही मडराया करते । कुछ तो रात मे मेरे विस्तर मे ही सो जाते थे । शुरू-शुरू मे तो उनकी माताए वडी चिंता प्रकट करती हुई उन्हे खोजने आती कि वे न जाने कहा रह गये है, परन्तु जव मालूम हो जाता कि मेरे पास है तो उन्हे वही छोडकर निश्चित लौट जाया करती ।

एलमिना मे अपने अवकाश का अधिकाश समय मै शिक्षक-सघ की स्थापना के प्रयत्नो मे लगाता था । मेरा विश्वास था कि यदि शिक्षको का सगठन वन जाय तो उसके द्वारा उनकी स्थिति को सुधारने, प्रतिष्ठा

की वृद्धि करने, शिकायतो को अधिकारियो तक पहुचाने और राहत प्राप्त करने आदि कामो मे वडी मदद मिला करेगी।

एक साल वाद मेरी पदोन्नति कर दी गई और मै अक्सिम के रोमन कैथोलिक जूनियर स्कूल का प्रधान अध्यापक वना दिया गया। यहा रहते हुए मै लदन की मैट्रिक्युलेशन परीक्षा मे वैठा, परन्तु लैटिन और गणित मे अनुत्तीर्ण हो गया। परीक्षा मे वैठने का यह अनुभव आगे लिंकन की प्रवेशिका (Fresh-man's year) उत्तीर्ण करने मे मेरे वडा काम आया। अक्सिम मे रहते हुए पढने और पढाने से जो समय वच पाता था, उसका उपयोग मैने एन्जिमा-साहित्य-समिति की स्थापना मे किया। यह समिति आज भी काम कर रही है और इसके अतिरिक्त अक्सिम सभाग मे और भी कई साहित्यिक समितिया है। एन्जिमा-साहित्य-समिति की स्थापना के दौरान मे ही मेरी भेट श्री एस आर वुड से हुई जो उन दिनो ब्रिटिश वेस्ट अफ्रीका की राष्ट्रीय काग्रेस के मत्री थे। वही मुझे राजनीति मे लाये, वल्कि यह कहना ज्यादा ठीक होगा कि राजनीति से मेरा पहला परिचय उन्होने करवाया। गोल्ड कोस्ट के राजनैतिक इतिहास की जितनी जानकारी उन्हे थी, मेरी जानकारी मे उतनी और किसीको नही थी और हम दोनो इस सवध मे घटो वैठे वाते किया करते थे। जब मैने उन्हे वताया कि मै अमरीका जाना चाहता हू और वहा जाने का पक्का इरादा कर लिया है तो उन्होने वडे उत्साह से मेरे निश्चय का समर्थन किया और उसी समय एक अच्छा-सा प्रमाणपत्र लिख दिया, जिससे मुझे पेनसिलवानिया के लिंकन विश्वविद्यालय मे भर्ती होने मे सहूलियत हो। वह प्रमाणपत्र आज भी मेरे पास है।

अक्सिम मे दो वर्ष रहने के वाद मै एलमिना के निकट अमिस्सानो मे रोमन कैथोलिक सेमिनरी मे शिक्षक वनकर चला गया। हमारे देश मे पादरियो की शिक्षा-दीक्षा के लिए स्थापित की जानेवाली अपने ढग की यह पहली सस्था थी। इस सस्था मे पढाने के लिए गोल्ड कोस्ट के सवसे पहले शिक्षक के रूप मे नियुक्त होना मेरे लिए वडे गौरव और सम्मान की वात थी। रोमन कैथोलिक सप्रदाय की कठोर अनुशासन एव आचरण-सवधी जकडवदी का मै कभी समर्थक नही रहा। अपने विद्यार्थी-जीवन मे मैने हमेशा इसका विरोध किया और वाद मे तो रविवार के दिन गिरजे जाना भी छोड दिया था। मेरे धर्म-सवधी विचार सर्वविदित थे। फिर भी मेरी नियुक्ति इस पद पर हुई, उसके दो ही कारण समझ मे आते है—एक तो यह कि सभवत मेरे धार्मिक विचारो को दरगुजर कर दिया

गया हो या दूसरे यह कि मुझ 'भटके' हुए को 'सही राह' पर लाने का एकमात्र यही ढग सोचा गया हो । मेरे खयाल से यह दूसरी बात ही ज्यादा ठीक मालूम पडती है । क्योकि वहा शिक्षक होने के नाते मुझे भी आचरण-सबधी सभी कठोर नियमो का पालन करना पडता था और धीरे-धीरे मुझे उसमे मजा भी आने लगा । कालातर मे तो वहा का सारा जीवन-क्रम ही मेरे मन को भा गया और मै पादरी बनकर धर्म और कलीसिया की सेवा मे जीवन समर्पित करने की वात सोचने लगा । पूरे सालभर मै सोच-विचार मे पडा रहा । हठात् एक दिन कुछ करने और अमरीका जाकर विद्याध्ययन करने की पुरानी सुप्त अभिलापा पुन जाग पडी और मैने पाया कि यदि आज और अभी निर्णय नही किया तो सेमीनरी की दीवारे मुझे सदा के लिए लील जायगी । मैने उसी समय अमरीका जाने का निर्णय कर लिया ।

मेरी राष्ट्रीयता की भावना भी इन्ही दिनो फिर से सजग हुई । इसके लिए मै 'द अफ्रीकन मॉर्निंग पोस्ट' मे प्रकाशित लेखो का ऋणी हू । यह पत्र ओनिट्शा से एनाम्दी आजिकिवे नामक एक नाइजीरिया-निवासी सज्जन निकालते थे । आजिकिवे स्वय भी किसी अमरीकी विश्वविद्यालय के स्नातक थे । मै उनसे पहले-पहल अकरा मे गोल्ड कोस्ट शिक्षक-सघ की एक सभा मे मिला था, जिसमे वह भापण देने के लिए आये थे । मै उनसे बहुत ही प्रभावित हुआ और अमरीका जाने का मेरा निश्चय उनसे मिलने के बाद बिलकुल पक्का हो गया ।

इधर आज़िकिवे देश मे राष्ट्रीयता की नई भावना का प्रचार कर रहे थे, उधर वैलेस जॉनसन नामक एक दूसरे सज्जन पश्चिमी अफ्रीका मे मजदूरो के सगठन मे लगे हुए थे । उन्होने एक युवक लीग की स्थापना भी की थी । १९३६ मे आजिकिवे के पत्र मे जॉनसन ने एक लेख प्रकाशित किया । उसका शीर्षक था—"क्या अफ्रीकी का भी कोई ईश्वर है ?" इस लेख पर राजद्रोह का मुकदमा चला और वे लोग ठेठ प्रिवी कौसिल तक लडे, परतु हार गये । परिणामस्वरूप दोनो को ही हमारा देश छोडकर अपने-अपने देशो को लौट जाना पडा । लेख के जिन अशो को विद्रोहात्मक समझा गया वे इस प्रकार थे ·

"यूरोप-निवासी का जो ईश्वर है और जिस ईश्वर मे वह विश्वास करता है, उसका नाम है धोखा, और उस ईश्वर का कानून है ओ शक्ति सम्पन्नो, तुम दुर्बलो को दुर्बल बनाओ, ओ 'सभ्य' यूरोपवासियो, तुम 'जगली' अफ्रीकियो को मशीनगनो से 'सभ्यता' सिखाओ, ओ ईसाई

यूरोपवासियो, तुम मूर्तिपूजक अफ्रीकियो का वम, गैस और विषैले शस्त्रास्त्रो से 'ईसाईकरण' करो ।

"उपनिवेशो मे यूरोप-निवासी जिस ईश्वर मे विश्वास करते है, उसका आदेश है ओ शासको, अफ्रीकी का मुह वद रखने के लिए राजद्रोह का कानून वनाओ, और अगर वह तुम्हारी हुकूमत पर एतराज करे तो उसे देश-निकाला देने के लिए निर्वासन आर्डिनेन्स वनाओ ।

"उसका धन छीनने के लिए आर्डिनेन्स वनाओ, जिससे वह आर्थिक दृष्टि से कभी आत्मनिर्भर न हो सके । कर और टैक्स वसूलने का कानून वनाओ, जिससे उसका दोहन किया जा सके और उस धन से यूरोप के वेकारो को यहा लाकर धन्नासेठ वनाया जा सके । जिस किसी भी अफ्रीकी मे राष्ट्रीय चेतना हो और जो भी अफ्रीकी राष्ट्रीय स्वतत्रता के लिए आदोलन करता हो, उसके घर पर गुप्तचरो का पहरा लगा दो और हो सके तो उसे किसी फौजदारी मामले या घृणित अपराध मे फसाकर जेल के सीखचो के पीछे धकेल दो !"

गोल्डकोस्ट के तत्कालीन कानून के अनुसार यह लेख राजद्रोहात्मक होते हुए भी वहा की जनता की राष्ट्रीयता को उभारने की दिशा मे एक छोटा-सा प्रयत्न अवश्य था । इसने यूरोपवासियो को दिखा दिया कि अफ्रीकी जनता उनकी कारगुजारियो की ओर से आखे मूदे हुए नही है । यह केवल दिल का गुबार था, लेकिन चेतावनी के उस धुए की तरह, जो चिल्ला-चिल्लाकर कहता है कि आग जल चुकी है—एक ऐसी आग, जिसे किसी भी तरह वुझाया नही जा सकता !

: ३ :

अमरीका

सन् १९३५ के प्रारभ मे मैने निश्चय किया कि यदि अमरीका जाना है तो उसके लिए खूब कसकर प्रयत्न करना होगा । पैसा तो मै पाई-पाई करके बचा रहा था, परन्तु फिर भी अभी तक अमरीका पहुचने का किराया ही नही जुट पाया था । तब मैने अपने एक रिश्तेदार से मिलने का इरादा किया । इनसे मदद मिलने की काफी आशा थी । यह सज्जन नाइजीरिया के लागोस शहर मे रहते थे ।

मै लागोस के लिए चल पडा । अपनी बचत की एक पाई भी खर्च करना नही चाहता था, इसलिए नजर बचाकर चुपचाप जहाज पर चढ गया । मल्लाहो के बीच घूमता-फिरता नीचे इजन-रूम मे जा पहुचा और सारी यात्रा मैने खलासियो और कोयला झोकनेवालो के साथ रहकर ही पूरी की । उन्हीके साथ खाता-पीता और वही बायलर रूम की कडी और कष्टदायी गर्मी मे पडा रहता । बाहर निकलने की हिम्मत नही होती थी । समुद्री यात्रा का वह मेरा पहला ही अवसर था । उलटियो और उबकाइयो के मारे बुरा हाल हो गया । जब जहाज लागोस के बदरगाह पर लगा तो मेरे हाल बेहाल हो रहे थे—कपडे गदे और फटे हुए, सारे बदन पर कालिख चढी हुई, हजामत बढी हुई । जो देखता, यही समझता कि मै भी कोई खलासी या कोयला झोकनेवाला ही हू । शायद यही समझकर किसी ने मुझसे पूछताछ न की और मै सही-सलामत लागोस मे उतर गया ।

लेकिन उस हुलिये से रिश्तेदार के यहा मिलने जाना मुसीबत को न्यौता देना ही होता । मै सीधा बाजार पहुचा और नया पतलून कमीज खरीदा । वही दुकान की ओट मे मैने फुर्ती से कपडे बदले । लेकिन स्नान और हजामत का सुयोग तो रिश्तेदार के यहा पहुचने पर ही मिला ।

यहा मुझे काफी समय तक रुकना पडा । जिन सज्जन से मिलने आया था उन्होने मेरे मित्रो और सबधियो के बारे मे बहुत-सी बाते पूछी । सब तरह से सतुष्ट हो लेने के बाद उन्होने मुझे इतना पैसा दे दिया कि उसमे अभी तक की अपनी बचत जोडकर मै आसानी से अमरीका पहुच सकता था । उन्होने मेरे अक्सिम लौटने के किराये का भी प्रबध कर दिया । मैने उनका बडा आभार माना और उत्साह के घोडो पर सवार घर लौट

आया। अव मेरे अमरीका पहुचने मे कोई सदेह नही था—जो वात अवतक निरी कल्पना थी, वह वास्तविकता होने जा रही थी।

लिकन विश्वविद्यालय मे प्रवेश के लिए प्रार्थनापत्र मै पहले ही भेज चुका था और वह स्वीकृत हो गया था। लेकिन यह वात मेरे दो-तीन निकटस्थ मित्रो को छोड और किसीको मालूम नही थी। अव मै तैयारिया पूरी करने मे लग गया। उन दिनो गोल्ड कोस्ट मे अमरीकी दूतावास नही था, इसलिए सयुक्त राज्य मे प्रविष्ट होने का प्रवेशपत्र (विजा) प्राप्त करने के लिए पहले मुझे इग्लैड जाना पडा। लागोस के मेरे रिश्तेदार ने मुझे एक सौ पौड दिये थे, पचास पौड मेरे एक दूसरे रिश्तेदार ने, जो एन्सीयुम के सरदार थे, दिये। इस तरह पैसा काफी हो गया था। मैने टाकोराडी से लिवरपुल तक जहाज के तीसरे दर्जे का टिकट खरीद लिया और वडी व्यग्रता से प्रस्थान के दिन की प्रतीक्षा करने लगा।

यह सव तो हो गया, परतु अव सवाल था कि माताजी को अपनी विदेश-यात्रा की वात कैसे वताई जाय। इस दुनिया मे एक मुझे छोड उनके और था ही कौन ? इसलिए सोचता था कि मेरे वियोग को वह कैसे सह पायेगी ! लेकिन वतलाना भी जरूरी था, इसलिए मै घर गया और कुछ दिन वही उनके साथ रहा। रोज इरादा करता कि आज वता दूगा, परन्तु रात होते ही जवान पर ताले पड जाते थे। आखिर एक ही दिन वाकी रह गया और मैने जी कडा करके उन्हे सवकुछ वता दिया। पहले तो वह भौचक रह गई, परन्तु शीघ्र ही अपने-आप पर काबू पा लिया और न दु ख प्रकट किया, न शोक। हम मा-बेटे उस सारी रात बैठे वाते करते रहे। उन्होने बहुत-सी वाते वताई और कई सिखावने भी दी। उसी रात उन्होने मुझे अपने पुरखो का इतिहास भी वताया। उनके कथनानुसार मेरे पूर्व-पुरुष सरदार अदुकु अद्दाई थे, जो शताब्दियो पहले एन्जिमा मे आकर वसे थे और उन्हीकी वहन एन्विया से मेरे मातृवश की उत्पत्ति हुई थी। वास्सा फिआसे के एन्सीयुम और आओविन के दादीसो घरानो से भी हमारा सवध था।

दूसरे दिन सवेरे अपने सरो-सामान के साथ मै अनकोवरा नदी के पार ले जानेवाली डोगी मे सवार हुआ। किनारे पर खडे होकर जव मैने अतिम वार नदी, उसके पानी मे नहा-धो रहे स्त्री-वच्चो और अपने गाव के शात वातावरण की ओर देखा तो इन सवसे विछुडने के विचार-मात्र से जी भर आया। फिर भी मैने मुस्कराने की कोशिश की और अतिम वार विदा लेने के लिए माताजी की ओर मुडा। देखा तो उनकी आखे भी भरी

हुई थी । विदाई के इस अंतिम क्षण मे उनका धैर्य भी छूट गया था । मैंने आसू-भरी आखो से कहा, "अगर आप चाहे तो मै रुक सकता हू ।" वह एक क्षण मेरी ओर देखती रही और बोली, "नही, अब रुकने का तो कोई प्रश्न ही नही उठता । भगवान और पुरखे तुम्हारी रक्षा करे और यात्रा मगलमय हो ।"

उमडते हुए हृदय लेकर हम एक-दूसरे के गले मिले और मै विदा हो गया । उस समय कौन जानता था कि हमारे पुनर्मिलन का अवसर पूरे एक युग के बाद आयेगा !

टाकोराडी से मुझे ले जानेवाले जहाज का नाम 'अपापा' था । मै अपने सामान के साथ तीसरे दर्जे के कैबिन मे जा बैठा । आखो में आसू उमड रहे थे, जी घबरा रहा था और वहा सगी-साथी-विहीन मै नितात अकेला था । सहसा मैंने देखा कि विस्तरे पर मेरे नाम एक लिफाफा पडा हुआ है । फाडकर देखा तो एन्नामदी अजिकिवे का तार था और लिखा था—"अलविदा ! भगवान और अपने-आपपर भरोसा रक्खो !" इन शब्दो ने उस समय मुझपर जादू का-सा असर किया । मेरी सारी उदासी दूर हो गई । मै सोचने लगा कि आखिर इसी दिन के लिए तो मैंने ये सारी तैयारिया की थी और पाई-पाई करके पैसा बचाया था, फिर दु ख किस बात का !

टाकोराडी से लिवरपुल तक मार्ग मे सिर्फ एक उल्लेखनीय घटना हुई । जहाज पर एक भारतीय यात्री से परिचय हो गया था । जब हमारा जहाज कैनेरी द्वीप पहुचा तो मेरे इस भारतीय सहयात्री ने प्रस्ताव किया कि यहा की राजधानी लास पामास को भी क्यो न देख लिया जाय । देश से बाहर जाने का यह मेरा पहला ही अवसर था और विदेशो मे लोग किस तरह रहते और क्या करते है, यह कुछ भी मालूम नही था । मै राजी हो गया और अनभिज्ञ की नाई उनके साथ हो लिया । वह मुझे एक बडे-से होटल मे ले गये । यद्यपि मै पानी छोड और कुछ नही पीता, तथापि वहा मेरे सहयात्री ने बडे आग्रह के साथ शराब मगवाई । एक खूसट-सी बुढिया तुरत बोतल और प्यालिया दे गई । अभी उसने पीठ मोडी ही थी कि दो गौराग सुन्दरिया वहा आ पहुची और उनमे से एक मेरी गोद मे चढ बैठी । मेरे तो देवता ही कूच कर गये । और वह कम्बख्त थी कि कभी मेरे बाल सहलाती और कभी मुझसे लिपट-लिपट जाती ! गोरी औरतो को मैंने अभी तक दूर से ही देखा था और यह तो सपने मे भी नही सोचा था कि कोई गौर वर्णी इस तरह गोद में चढ बैठेगी । मारे बौखलाहट के मेरा बुरा हाल हो गया । मै चीखता हुआ खडा हो गया और गोद मे चढी उस गोरी, मेज और

शराव की वोतल-प्यालियो को उलटता-पलटता वहा से ऐसा भागा कि सीधे जहाज पर पहुचकर ही दम लिया। इस प्रसग को लेकर मेरे भारतीय सहयात्री रास्ते-भर मुझसे छेडछाड करते और चटकिया लेते रहे।

लिवरपूल मे एक सप्ताह ठहरकर मै अमरीका का प्रवेशपत्र लेने के लिए लदन गया। वहा की भीड-भाड और भाग-दौड देखकर मेरे तो होश ही गुम हो गये। ऐसा घबराया कि यात्रा को अधूरी छोड घर लौट जाने का विचार करने लगा। अपने भविष्य के वारे मे अत्यन्त निराश और व्यग्र मै लदन की एक सडक पर चला जा रहा था कि अखबार बेचनेवाले लडके की आवाज कानो मे पडी। मुडकर देखा तो अखवारवाली मोटर पर वडे-वडे अक्षरोवाला एक पोस्टर लगा था—"मुसोलिनी द्वारा इथोपिया पर आक्रमण।" निमिष-भर मे मेरी सारी निराशा और व्यग्रता दूर हो गई और खून खौलने लगा। ऐसा लगा मानो समूचे लदन ने मेरे खिलाफ युद्ध-घोषणा कर दी हो। कुछ देर तो मै सडक चलते उन उत्तेजित चेहरो की ओर देखता हुआ यह सोचता ही रह गया कि उपनिवेशवाद की जघन्य नृशसता को क्या ये लोग समझ भी सकते है! फिर मै मनाने लगा कि वह दिन शीघ्र आये जब इस सत्यानाशी प्रथा का सदा-सर्वदा के लिए अत करने मे मै अपना पूरा योगदान कर सकू। उस समय मेरी राष्ट्रीयता और राष्ट्र-प्रेम ने अन्य सब विचारो तथा भावनाओ को पीछे ढकेल दिया था। यदि अपने लक्ष्य की सिद्धि के लिए मुझे रौरव नरक की यातनाओ को भुगतना पडता तो भी मै खम् ठोककर तैयार हो जाता।

लदन से लिवरपूल लौटा तो एन्जिमा के सुप्रसिद्ध लकडी व्यापारी जार्ज ग्राट के एजेट मुझसे मिलने आये और अपने घर ले गये। यहा जार्ज ग्राट का सक्षिप्त-सा परिचय दे देना अप्रासगिक न होगा। वह सयुक्त गोल्ड कोस्ट कन्वेशन के प्रथम अध्यक्ष थे। हमारे देश की जनता उन्हे 'ग्राट दादा' और 'गोल्ड कोस्ट की राजनीति के जनक' कहकर उनके प्रति अपने स्नेह और सम्मान को व्यक्त करती थी। जीवन के अतिम दिन तक वह सार्वजनिक क्षेत्र मे काम करते रहे। १९५६ के अक्तूबर महीने मे, ७८ वर्ष की उम्र मे, अक्सिम मे घाना के इस महापुरुष का देहावसान हुआ।

एजेट महोदय और उनकी पत्नी के स्नेहपूर्ण व्यवहार और आतिथ्य ने लदन मे उत्पन्न मेरी अधिकाश उत्तेजना और कटुता को शात कर दिया। यही पहली वार पश्चिमी तौर-तरीको से मेरा परिचय हुआ और मैने सीखा कि हमारे देश और पश्चिम के देशो मे कितना अधिक अतर है!

एक शाम की बात है। हम भोजन पर बैठे बातें कर रहे थे कि गृहस्वामिनी ने अपने पति से कहा, "अरे, तुम भी क्या बेवकूफी की बात करते हो!" मारे विस्मय के मैं चकित रह गया और सोचने लगा कि अब पति देवता देवीजी को आड़े हाथों लेंगे और खूब कसकर फटकार सुनायगे, परन्तु ऐसा कुछ भी न हुआ। पति महाशय ने जरा भी बुरा न माना और उसी प्रकार बातें करते रहे। हमारे देश मे उन दिनो भला किसी पत्नी की हिम्मत भी थी कि अपने पति को ऐसी बात कह सके! पति देवता उसी समय कान पकड़कर घर से निकाल बाहर कर देते और हमेशा के लिए संबंध-विच्छेद हो जाता। आज की बात तो खैर दूसरी है। नये विचारों और पाश्चात्य देशो के सपर्क के कारण अब तो हमारी महिलाएं भी खूब बोलना सीख गई है, बेधड़क अपने विचार व्यक्त करने लगी है और पति देवता चुपचाप सुनने भी लगे है।

दो ही दिन का समय था । लिंकन विश्वविद्यालय पहुचने की जल्दी थी । सत्र आरभ हो चुका था और मै दो महीना पिछडकर आया था । वैसे मैने पहले गोल्डकोस्ट से और फिर लिवरपूल से पत्र तो लिख दिये थे कि देर हो जायगी परतु खटका तो मन मे था ही और जवतक वहा पहुचकर दाखिल नही हो जाता मेरा खटका मिट नही सकता था ।

लिंकन विश्वविद्यालय की स्थापना १८५४ म हुई थी । सयुक्त राज्य अमरीका मे हब्शियो को उच्च शिक्षा प्रदान करनेवाली यह पहली सस्था थी । इसकी स्थापना का सारा श्रेय पादरी जॉन मिलर डिकी और उनकी क्वैकर पत्नी सारा क्रेसन डिकी को है ।

जव मै लिंकन पहुचा तो मेरी जेव मे कुल जमा चालीस पौड, दूसरी श्रेणी का शिक्षक-प्रमाणपत्र और श्री एस आर वुड का परिचयपत्र था । मै विश्वविद्यालय के डीन से मिला और उन्हे अपनी स्थिति वताई और यह भी कहा कि मेरे पास केवल चालीस पौड ही है, परतु मै अपना खर्च चलाने के लिए कोई भी काम करने को तैयार हू । उन्होने मेरी वात को कोई विशेष महत्त्व नही दिया, क्योकि इस तरह के वादे वह पहले भी वहुतो से सुन चुके थे । मेरी आर्थिक स्थिति को देखते हुए उनके लिए उचित तो यही था कि वह मुझे उसी समय गोल्ड कोस्ट लौटा देते, पर स्वभाव से दयालु होने के कारण उन्होने मुझे रह जाने दिया ।

लेकिन साथ ही मुझसे साफ-साफ कह दिया गया कि प्रवेशिका परीक्षा पास कर लूगा तभी दाखिल किया जा सकूगा । यह कोई मामूली शर्त नही थी । सत्र आरभ हुए दो महीने हो चुके थे और मै शेप विद्यार्थियो से काफी पिछड चुका था । परतु मै पढाई मे जुट गया और रात-दिन एक कर दिया । परीक्षा मे वैठा तो उत्तीर्ण भी हुआ और छात्रवृत्ति भी पाई । लिंकन मे छात्रवृत्ति पाना हँसी-खेल नही था । मुश्किल से दो सौ जगहे थी और प्रतियोगिता मे सैकडो विद्यार्थी वैठते थे । पर्चे वडे कठिन होते थे । मद वुद्धिवालो, आलसियो और ढीले-ढालो के लिए वहा कोई जगह नही थी । द्वितीय श्रेणी से कम अक पानेवालो को निकाल दिया जाता था और उनके स्थान पर अधिक योग्य और प्रतिभासपन्न उम्मीदवारो को ले लिया जाता था । छात्रवृत्ति भी पहली और दूसरी श्रेणी प्राप्त करनेवालो को ही दी जाती थी । सौभाग्य से मै हमेशा पहली या दूसरी श्रेणी मे उत्तीर्ण होता और छात्रवृत्ति पाता रहा । छात्रवृत्ति का पैसा हर छिमाही पर मिलता और विश्वविद्यालय का शुल्क चुकाने-भर को हो जाया करता था । लिंकन मे इन छात्रवृत्तियो से मुझे वडा सहारा हो गया था ।

परतु इतना ही काफी नही था। गुजर-बसर के लिए और भी धन की आवश्यकता थी। इसके लिए छात्रवृत्ति पानेवालो के सामने दो रास्ते खुले हुए थे। वे पुस्तकालय मे सहायको का या भोजनगृह मे परोसने का काम करके कुछ कमा सकते थे। पुस्तकालय का काम मेरी रुचि का था, लेकिन कोई छोटा और अरुचिकर काम होता तो मै उसे भी अवश्य उठा लेता।

शीघ्र ही मुझे कमाई का एक और बढिया काम मिल गया। हमारे समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र के अध्यापक ने कक्षा के बाहर पढने के लिए बहुत-सी पुस्तको के नाम सुझाते हुए उनसे टिप्पणिया और रिपोर्ट तैयार करने का काम दिया था। कई लडके इसपर बडी नाक-भौ सिकोडते और शिकायत किया करते कि फुर्सत का उनका सारा समय रिपोर्ट तैयार करने मे ही लग जाता है। मुझे काम की तलाश और पैसो की जरूरत रहती ही थी, इसलिए मैने यह काम उठा लिया और प्रति रिपोर्ट एक डालर के हिसाब से रिपोर्टे तैयार करने लगा। इस काम मे भी अच्छी आमदनी हो जाया करती थी।

भाषण और वाद-विवाद का शौक अब भी बना हुआ था। पहले ही वर्ष मैने विश्वविद्यालय की भाषण-प्रतियोगिता में हिस्सा लिया, उसमें द्वितीय आया और एक स्वर्ण पदक प्राप्त किया। वह पदक एक लडकी ने मेरी यादगार के रूप मे अपने पास रख लिया। एक दूसरी लडकी ने मेरी 'फ्रेट पिन' रख ली। यह पिन लिकन के 'फी बेटा सिग्मा भ्रातृत्व सघ' की सदस्यता का चिन्ह थी। उस सघ का उद्देश्य वाक्य था—'सस्कृति सेवा के लिए और सेवा मानवता के लिए।'

अपने सहपाठियो के साथ मेरी अच्छी निभ जाती थी। जब उन्होने मुझे 'सबसे अधिक दिलचस्प' के सम्मान से विभूषित कर इस बात का उल्लेख १९३९ की 'लिकन ईयर बुक' मे किया तो मै कृतज्ञता से गद्गद हो उठा था।

उन्होने मुझे अपने विभाग मे दर्शनशास्त्र के सहायक अध्यापक का कार्य करने के लिए आमन्त्रित किया था। यह मेरे लिए बडे सम्मान की बात थी और यद्यपि मै कुछ और ही चाहता था, फिर भी मैने इस निमत्रण को स्वीकार कर लिया, क्योकि मेरे सामने और कोई चारा नही था। अपने पारपत्र के अनुसार मै सर्दियो मे किसी भी 'स्कूल से बाहर' नही रह सकता था। अपनी घोर निराशा मे सहायता के इस वरदान को मैने नियति का सकेत ही समझा।

काम मेरी पसद का निकला और मुझे उसमे खूब आनद भी आता था, लेकिन इतना अधिक काम नही था कि मै उसीमे अपने-आपको व्यस्त रख सकू। व्यस्तता की मेरी परिभाषा यह है कि काम इतना होना चाहिए, जिसके मारे मुझे दिन-रात के चौबीसो घटे सिर उठाने की फुरसत न मिले। अगर इतना काम न हो तो मुझे ऐसा लगता है मानो समय बेकार चला जा रहा है। अपने अवकाश के समय आधुनिक दर्शनशास्त्र पर जो भी पुस्तके मिल जाती, मै उन्हे पढा करता। इन्ही दिनो मैने काट, हीगेल, डेस्कार्टीस, शॉपनहावर, नित्शे, फ्रायड आदि की कृतिया पढी और मुझपर इस लोकोक्ति की सत्यता असदिग्ध रूप से प्रमाणित हो गई कि कानून, चिकित्साशास्त्र और कलाए ज्ञानरूपी शरीर के केवल हाथ-पाव है, जबकि दर्शन उसका मस्तिष्क।

उसी वर्ष आगे चलकर मै लिकन की थियोलॉजिकल सेमिनरी[1] मे भर्ती हो गया और उधर पेनसिलवानिया के विश्वविद्यालय मे स्नातकोत्तर परीक्षा के लिए दर्शन और शिक्षा-शास्त्र का अध्ययन भी करता रहा। जुलाई के महीने मे मुझे वाशिगटन के प्रेसबिटेरियन पादरियो के सगठन की ओर से एक सौ डालर की छात्रवृत्ति मिल गई। ठीक जरूरत के समय मुझे यह वृत्ति मिली ओर मेरे बडे काम आई। इस धन से पेनसिलवानिया की मेरी पढाई के लिए खर्चे का कुछ प्रबध हो गया।

१९४२ मे लिकन की सेमीनरी से मैने धर्मशास्त्र की स्नातक परीक्षा पास की और अपनी कक्षा मे प्रथम आया। वहा की प्रथा के अनुसार उस वर्ष दीक्षात भाषण देने का कर्त्तव्य मुझे निबाहना पडा। मैने विषय चुना था, 'इथोपिया ईश्वर तक अपने हाथ पसारेगा'। भाषण की मै पहले से

---

[1] ईसाई पादरियो की शिक्षा-दीक्षा की वह सस्था, जहा उन्हे ईसाई-धर्म के दार्शनिक पक्ष, कर्मकांड और आचरण-सबधी नियमो की विधिवत शिक्षा दी जाती है। इन सस्थाओ मे शिक्षक और छात्र दोनो को ही कठोर अनुशासन और मनोनिग्रह का पालन करना पडता है।—अनु०

तैयारिया नही कर पाया था। मच पर जा खडा हुआ और तत्क्षण जो विचार सूझते गए धारा-प्रवाह बोलता चला गया। इसीलिए अपने भाषण की सफलता मे मुझे पूरा-पूरा सदेह था। लेकिन भाषण के अत मे विद्यार्थियो और अध्यापको ने जिस उत्साह से मुबारकबाद दिया, उससे इतना विश्वास तो हो ही गया कि वह उन्हे पसद आया था।

उसी वर्ष मुझे पेनसिलवानिया विश्वविद्यालय से शिक्षा-विज्ञान पर स्नातकोत्तर डिग्री मिली। इधर लिंकन मे भी मेरी तरक्की हुई। अब मैं दर्शन का सहायक नही पूरा अध्यापक था और प्रथम वर्ष मे यूनानी (Greek) और हब्शी इतिहास भी पढाने लगा था। हब्शी इतिहास विद्यार्थियो मे बडा लोकप्रिय था और मेरी कक्षा मे छात्र प्राय ठसे रहते थे। उन्हे इस विषय पर सुनने मे जितना आनद आता था, पढाने मे मुझे भी उतना ही आनद आता। सामाजिक दर्शनशास्त्र भी मेरा इतना ही प्रिय विषय था और मेरी इस कक्षा मे भी विद्यार्थियो की भीड टूटी पडती थी। लेकिन अपनी कक्षाओ मे विद्यार्थियो की इस उपस्थिति से मुझे कभी गर्व या अभिमान नही हुआ। मै अपनेको नौसिखिया ही समझता था। इसलिए १९४५ मे, मेरे अमरीका छोडने पर जब लिंकन विश्वविद्यालय की पत्रिका 'लिंकोनियन' ने 'वर्ष का सर्वश्रेष्ठ अध्यापक' करार देकर मुझे सम्मानित किया तो प्रसन्नता के साथ मुझे आश्चर्य भी हुआ।

१९४३ के फरवरी महीने मे मैंने पेनसिलवानिया विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र मे स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण कर एम० ए० की डिग्री प्राप्त की। अब मैं दर्शनशास्त्र मे डाक्टरेट के लिए शोध-प्रबंध की तैयारियो मे लग गया। यहा यह तथ्य उल्लेखनीय है कि स्वय पढने और विद्यार्थियो को पढाने के साथ ही मुझे सप्ताह मे तीन बार लिंकन विश्वविद्यालय से पेनसिलवानिया विश्वविद्यालय तक, जो पचास मील की दूरी से भी अधिक है, आना-जाना पडता था। यह सब करते हुए अगले दो वर्षों में मैंने डाक्टरेट का अपना कोर्स पूरा किया और उसकी जितनी प्रारम्भिक परीक्षाए थी वे सब भी दे डाली। अब डाक्टरेट की डिग्री लेने के लिए केवल शोध-प्रबंध लिखकर देना ही शेष रह गया था।

करना पडता था। कभी-कभी तो मारे ठड के मेरी अगुलिया ही ठिठुर जाती थी और मै अपने सारे कपडे पहन लेता फिर भी ठड नही जाती थी। आठ वजे लौटता, नाश्ता करता, कुछ देर सोता और फिर शोध-प्रवध के लिए सामग्री जुटाने मे लग जाता था।

एक सवेरे रोज के समय घर लौटा, नाश्ता किया और जो सोया तो दूसरे दिन सवेरे चार वजे जाकर नीद खुली। मै अट्ठारह घटे सोता ही रह गया था। इससे अनुमान किया जा सकता है कि मै कितना थक जाता था और मुझे विश्राम की कितनी अधिक आवश्यकता थी। इस घटना के तुरत वाद ही मुझे निमोनिया हो गया।

उस रात गजव की ठड थी। मुझे रह-रहकर कपकपी आ रही थी। सवेरे चार वजते-वजते तो हालत विलकुल खराव हो गई। काम करना एकदम असभव हो गया। मै कपनी के डाक्टर के पास छुट्टी मागने के लिए गया। मेरा ख्याल था कि घर जाकर सो रहूगा तो सव ठीक हो जायगा। लेकिन डाक्टर ने टेम्परेचर लिया तो हैरान रह गया। उसी समय एवुलेस वुलाकर मुझे चेस्टर के दवाखाने मे भर्ती करवा दिया। वहा मेरे रोग की दगा इतनी विषम समझी गई कि आक्सीजन के तबू मे रक्खा गया। लेकिन इतना सव होते हुए भी मेरा दिमाग एकदम साफ और शात था और मै एक वार भी वेसुध नही हुआ था। वहा विस्तर मे पडे-पडे मैने एक वार अपने सारे जीवन का विहगावलोकन कर लेखा-जोखा निकाला। मुझे इस तरह चौवीसो घटे सघर्ष मे जुटे रहना और काम करते रहना व्यर्थ और परले सिरे की मूर्खता प्रतीत हुई और क्योकि मै मौत का मुह देख चुका था, सभवत इसीलिए मुझे अपनी माताजी की खूव याद आती थी और उनसे मिलने के लिए व्यग्र भी हो उठा था। अच्छा होकर विस्तरे से उठा तो मै मन-ही-मन यह निर्णय कर चुका था कि जैसे ही मौका मिला, अमरीका छोडकर अपने घर लौट जाऊगा।

: ४ :

कठिन समय

अमरीका मे मेरे दस वर्ष यो तो बडे आनद और उल्लास से बीते, परतु साथ ही मुझे उन वर्षो मे जी-तोड परिश्रम भी करना पडा। केवल पढना-ही-पढना रहता तो कोई बात न थी, तब तो समय बडे चैन से गुजरता, परतु मेरी जेब हमेशा खाली रहती थी और गजर-बसर के लिए काफी-कुछ करते रहना पडता था।

लिंकन मे गर्मी की पहली ही छुट्टिया पडी तो पता चला कि मै तो क्या, कोई भी विद्यार्थी छुट्टियो मे युनिवर्सिटी कैम्पस मे रह नही सकता और मेरे जाने के लिए कोई जगह न थी। बहुत सोचने-विचारने के बाद मैने न्यूयार्क जाने का फैसला किया। वहा हार्लेम मे सीरा लिओनिया का वह मेरा पूर्वपरिचित व्यक्ति रहता था। मै उसके पास पहुच गया। लेकिन उसकी हालत भी कोई बहुत अच्छी नही थी। तरह-तरह की योजनाओ पर विचार करने के बाद हमने थोक भाव से मछलिया खरीदकर उन्हे फुटकर भाव से बेचना शुरू किया। लेकिन रोजगार बडे घाटे का साबित हुआ और मछलियो की छूत से मेरे हाथो और सारे बदन मे खुजली हो गई। पद्रह दिन बाद जब सारी मूल पूजी ही डूबती दिखाई दी तो मैने सारा कारोबार समेट लिया। इससे मेरा साथी बडा नाराज हुआ, यहातक कि झगडे की नौबत आ गई और मै बेकार ही नही, बेघर भी हो गया।

मै हार्लेम की सातवी एवेन्यू मे निरुद्देश्य भटक रहा था कि लिंकन के एक सहपाठी से भेट हो गई। वह ब्रिटिश गायना के देमेरारा स्थान का रहने-वाला था। मैने उसे अपना दुखडा सुनाया तो वह बोला, "अरे यार, चिता किस बात की! चल, मेरे साथ। घर का मसला तो मै यो हल किये देता हू।" और वह मुझे एक वेस्ट इडियन परिवार मे ले गया। वे लोग बडे ही भले और दयालु थे। जब मैने अपना हाल सुनाया तो घर की महिलाओ की आखे भर आई और उन्होने मुझे एक कमरा ही नही दे दिया, यह भी कहा कि किराये की चिता न करू, काम-काज जम जाय तब चुका सकता हू।

एडिथ से मेरा परिचय इसी परिवार के एक डाक्टर मित्र के द्वारा हुआ था। वह हार्लेम के दवाखाने मे नर्स (परिचारिका) थी और अमरीका

मे मेरी पहली नारी मित्र भी वही थी । उस वेचारी को मुझसे जरूर वडी निराशा हुई होगी । उन दिनो अपने पास कानी कौडी भी नही थी इसलिए केवल साथ घूमने ले जाने और दुकानो की सजावट को वाहर से दिखाते रहने के अतिरिक्त मै उसका कोई मनोरजन नही कर पाता था । सडको के मोड पर खडे होकर भापण देनेवाले वक्ताओ को सुनना और उनसे उलझना भी उन दिनो मेरा एक अति प्रिय धधा-सा वन गया था । प्राय प्रत्येक शाम को मै उन जमघटो मे पहुच जाया करता था । इधर एडिथ मे सिनेमा और नाचघरो मे जाकर जीवन का सुख लूटने की ललक थी । हम दोनो के स्वभाव और चरित्र के इस मौलिक वैपम्य के ही कारण वह धीरे-धीरे मुझसे दूर चली गई । वेचारी एडिथ !

इन्ही दिनो की वात है । सावुन के एक कारखाने मे मेरी नौकरी लग गई । सावुन का नाम लेते ही सुगध का खयाल आना स्वाभाविक है । मेरा भी यही खयाल था कि शाम को गुलाव और लवेडर की खुशवुओ मे डूवा मै काम से घर लौटा करूगा । लेकिन वात कुछ दूसरी ही निकली । मैने अपनी सारी जिदगी मे इतना गदा और घिनौना काम कभी नही किया था । मोटर-ट्रके दुनिया-भर के जानवरो की सडी-गली अतडियो और चरवी का अहाते मे ढेर लगा जाती । मेरा काम था फावडे से एक ठेलागाडी मे जितना माल भरा जा सके, भरना और उस वदवूदार वोझे को ढकेलते हुए कारखाने के अदर पहुचा देना । पहले मैने सोचा कि जैसे-जैसे दिन वीतते जायगे, इस दुर्गंध और गदगी का अभ्यस्त हो जाऊगा । परतु वात सर्वथा इसके विपरीत ही सिद्ध हुई । समय के साथ मेरी हालत भी विगडती गई यहातक कि मुझे मतलिया आने लगी और वाज वक्त तो उलटी रोक पाना मुश्किल हो जाता था । दो सप्ताह मे तो स्वय मै ही अच्छा-खासा सावुन वन गया । दिन-भर के कडे परिश्रम के वाद शरीर थककर चूर हो जाता था और हाथ-पाव पर दर्द-विनाशक लेप की मालिश किये विना नीद नही आती थी । एक डाक्टर मित्र ने मेरी यह दशा देखी तो उस काम को धता वताने की सलाह दी । उन्होने साफ-साफ कह दिया कि यदि काम न छोडा तो अमरीका मे रहकर पढने-लिखने की वात तो दूर, जीवित रहना भी असभव हो जायगा ।

उनकी सलाह मानकर मैने वह नौकरी छोड दी और नये काम की खोज करने लगा । लेकिन उन दिनो अमरीका मे काम पाना आसान नही था । देश मदी के दौर से अभी निकला ही था । चारो ओर वेकारो की टोलिया घूमती रहती । अनेक लोगो को कूडे के ढेर मे से जूठन वटोरते स्वय मैने

अपनी आखो देखा है । यदि मकान-मालकिन ने उदारतापूर्वक मेरी सहायता न की होती तो पेट की आग बुझाने के लिए मुझे भी निश्चय ही कूडे के ढेरो का सहारा लेना पडता ।

जब कोई काम न मिला तो मैने समुद्र का रुख किया । उधर जहाजो पर काम मिलने की आशा थी । मै एक समुद्री कामगार सघ, नैशनल मेरीटाइम यूनियन, का सदस्य हो गया । लेकिन न्यूयार्क मे तो वही भीडभाड और होडाहोड थी, इसलिए मै फिलाडेलफिया चला गया । वहा भाग्य ने साथ दिया और एक जहाज पर काम मिल गया, जो न्यूयार्क से मेक्सिको के वेरा क्रुज वदर तक चला करता था ।

उसके वाद १९३९ के सितवर महीने तक मै प्रतिवर्ष जहाजो पर काम पा लेता था । फिर लडाई शुरू हो गई और वहा काम मिलना वद हो गया । जब पहले दिन भर्ती होने के लिए गया तो भर्ती अफसर ने पूछा, "ओई टुम वेट करने शकटा ?" उसका अभिप्राय था कि क्या मै वेटर का काम कर सकता हू । लेकिन मै समझा कि वह मुझे कुछ समय रुकने और इन्तजार करने के लिए कह रहा है । मै वडे असमजस मे पड गया और अभी कुछ जवाब देने भी नही पाया था कि उसने पुन पूछा, "ओ मैन, जल्दी वटाओ । मेज के आगे वेट करने शकटा ?" मै घवराया कि कही दरख्वास्त नामजूर न हो जाय, इसलिए फुर्ती से 'हा' कह दिया, और मुझे जहाज पर वेटर (वैरा) की नौकरी मिल गई ।

जहाज पर दाखिल हुआ और लक-दक सफेद नई वर्दी मे सज-सवर कर काम के लिए तैयार हो गया । खाने का समय हुआ और भोजनगृह मे यात्री लोग आने लगे । हेड वेटर ने मुझसे कहा, "चलो, शुरू करो ।" यहा कलेजा काप रहा था और हाथ-पाव फूले जा रहे थे । वडी घवराई दृष्टि से रसोईघर के अदर चारो ओर देखने लगा कि कही से कोई सकेत, कोई सहायता मिल जाय और मै शुरू करू । मुझे वौडम की तरह चारो ओर ताकते देख हेड वेटर ने आखे तरेरकर डाट वताई, "अवे, सूप ले जा, सूप !" "सूप, ओ हो सूप !" भागता हुआ मै सूप को खोजने लगा । समीप ही सूप का देग पडा था । मैने एक वडी-सी छिछली तश्तरी मे उसे उडेला और परोसने के लिए ले चला । जव पहले यात्री के पास पहुचा तो वह तश्तरी करीव-करीव खाली हो चुकी थी, क्योकि काफी शोरवा इधर-उधर लुढक गया था । परतु मारे घवराहट के मेरा ध्यान इस ओर जाने नही पाया और मैने वह तश्तरी भोजन के लिए आतुर यात्री के आगे मेज पर रख दी । फिर झपटकर अदर पहुचा और वैसी ही एक दूसरी तश्तरी

लाकर दूसरे यात्री के सम्मुख रक्खी। अब तो भोजनघर मे शोर मच गया। जब मै तीसरी बार रसोईघर मे पहुचा तो हेड वेटर ने लपककर मेरा गला पकड लिया और झकझोरते हुए बोला, "यह क्या मजाक कर रक्खा है? इसी तरह वेटरगीरी की जाती है, क्यो? नही आता था तो हामी क्यो भर ली?" पहले तो मेरे होश ही गुम हो गये। कुछ सभलने के बाद मैंने उसे अपनी स्थिति से अवगत कराते हुए बताया कि नौकरी की जरूरत थी, इसीलिए ऐसा कहना पडा और यह भी कि मेरे साथ इतनी बेरहमी और सख्ती से पेश नही आना चाहिए। उस आदमी की इस्त्रीबद कडक वर्दी और ऊपरी कठोरता के नीचे एक बडा ही कोमल हृदय था। उसे मुझपर दया आ गई। उसने मेरी वर्दी उतरवाकर दूसरे को पहनाई और मुझे बरतन धोने-माजने के काम पर लगा दिया। उस यात्रा-भर मै वही जान-लेवा काम करता रहा, परतु इतनी खैरियत अवश्य थी कि उसमे किसी अनुभव की जरूरत नही थी। बाद मे मेरी तरक्की तश्तरी धोने की मशीन पर हो गई। यहा मुझे बडा सतर्क रहना पडता था। लेकिन फिर भी एक दिन मशीन की गरमागरम भाप के अदर से निकालते हुए एक तश्तरी टूट ही गई और उससे हाथ मे ऐसा घाव लगा, जिसका निशान अभी तक बना हुआ है।

जहाज का दूसरा फेरा होते-होते तो मै वेटरगीरी के कुछ लटके सीख गया और इस बार अफसरो के भोजनगृह मे तैनात किया गया। अफसर बेचारे सभी भले थे और यात्रियो की तरह ऊचे दिमागवाला तो उनमे एक भी नही था। वह कभी-कभी मेरे नौसिखिएपन की खिल्ली अवश्य उडा लिया करते थे।

फिर शीघ्र ही मै घटी सुनने के काम पर लगा दिया गया। इस ड्यूटी के लिए सभी उत्सुक रहा करते थे, क्योकि इसमे एक तो वर्दी बहुत अच्छी दी जाती थी और बख्शीश भी खूब मिलती थी। अब मेरा काम था घटी बजने पर कैबिनो मे जाना और साहब लोगो या मेम-साहब लोगो का हुक्म बजाना। पर कभी-कभी मुझे बडा सकोच भी हो जाता था। एक बार घटी बजी तो मैंने लपककर दरवाजे पर दस्तक दी। अन्दर से किसी महिला का स्वर सुनाई दिया, "आ जाओ।" किवाड खोलकर देखा तो एक बहुत खूबसूरत औरत पटरे पर प्राय नगी पडी हुई थी। मै ऐसा सकुचाया कि उसी समय उलटे पावो बाहर भाग आया। थोडी देर बाद फिर घटी बजी। मन मारकर लज्जा से लाल होता हुआ फिर गया। दरवाजे पर दस्तक दी। खिलखिलाहट से भरे उसी स्वर ने पुन अदर आने के लिए कहा। चला तो गया, पर आखे उठाने का साहस न हुआ। जब बार-बार उसन

ऊपर देखने के लिए कहा तो मैंने किसी तरह झुकी हुई पलको को उठाया। इस बार उसने अपने सारे शरीर पर चादर ले ली थी।

मल्लाहो के जीवन के बारे मे मैं कुछ भी नही जानता था, इसलिए उनकी बाते सुनकर और जिस तरह का गदा साहित्य वे पढा करते थे, उसे देखकर बडी चोट पहुचती और घिन भी आती थी। जहाज के बदरगाह पर लगते ही वे सैर-सपाटे को निकल जाते और अक्सर मुझे भी अपने साथ घसीट लेते थे। लास पामास के उस अनुभव के बाद मैं प्राय इस तरह के सैर-सपाटे से कतराने लगा था। बाकी कुल मिलाकर काम बढिया था, वेतन भी बुरा नही था और दिन मे तीन बार भरपेट भोजन तो मिलता ही था। इसलिए जब दूसरा महायुद्ध आरभ हुआ और वह काम छूट गया तो मुझे बडा अफसोस हुआ।

अमरीका के शहरो मे रात बिताना भी एक बडी समस्या हुआ करती थी। अफ्रीका मे तारो-भरे आसमान के नीचे कही भी सोया जा सकता था। वहा अधिक-से-अधिक दु ख मच्छरो का था। पर अमरीका के शहरो मे तो रात मे सोने के लिए जगह पाना ही मुहाल हो जाता था। अपने एक सहपाठी के साथ जब मैं पहली बार फिलाडेलफिया गया उस समय की बात है। होटल मे रात काटने लायक पैसा हम दोनो के पास नही था। खूब भटकते रहे और जब कही जगह नही मिली तो रेलवे स्टेशन लौट आये कि वही बेचो पर सोकर रात बिता देगे। मगर आधी रात को पुलिसमैन आ धमका और उसने हमे वहा से खदेड दिया। थके-मादे और उनीदे, नीद मे से जगाये जाने के लिए दुनिया और जमाने को कोसते हुए, हम वहा से एक पार्क मे पहुचे। लदन के पार्कों की तरह इस पार्क के दरवाजे बद नही थे। कुछ बेचो को जोड-बटोरकर हम पड गये। सोचा कि अब रात आराम से कट जायगी। लेकिन सयोग की बात। अभी आखे लगी ही थी कि पानी बरसने लगा। फिर भागना पडा और वह सारी रात हमे दूसरे गृहविहीनो के साथ मकानो की बरसातियो और डचौढियो मे खडे रहकर बितानी पडी।

उसके बाद तो मैंने बरसाती राते बिताने के लिए एक दूसरी ही तरकीब खोज निकाली। यह उपाय मुझे न्यूयार्क मे उस समय सूझा जब मैं अपने कमरे मे से निकाल दिया गया था और जेब मे केवल पच्चीस सेट बचे थे। दिन तो खैर किसी तरह कट गया, परतु रात काटना मुश्किल थी। सहसा मुझे एक तरकीब सूझ गई। मैंने एक निकल[1] मे हार्लेम से

[1] पांच सेंट का एक सिक्का।

ब्रूकलिन तक चलनेवाली भूगर्भ रेल का टिकट खरीदा और सारी रात गाडी मे ही गुजारी। नीद तो जरूर वार-वार टूटती रही और हर वार हार्लेम और ब्रूकलिन पहुचने पर मुझे डिव्वे भी वदलने पडते थे, नही तो गार्ड को मुझपर सन्देह हो जाता, पर रात जरूर वीत गई।

आज सोचता हू तो आश्चर्य होता है कि गरीवी और आवश्यकता आदमी से क्या-क्या नही करवाती। उन दिनो मुफ्त मनोरजन की तलाश मे मै प्राय विभिन्न हब्शी धार्मिक सघो, सम्मेलनो, वैठको और जमघटो के चक्कर लगाया करता था। ऐसे ही एक चक्कर मे मेरा परिचय किसी फादर डिवाइन द्वारा सचालित उस आदोलन से हुआ, जिसका सदस्य वनने की पहली और अतिम शर्त यह थी कि शादी न की जाय। उनका तर्क था कि सभी ईसाई कलीसिया से विवाहित होते है, इसलिए दूसरी शादी व्यर्थ ही नही, पाप भी है। यदि विवाहित पति-पत्नी सदस्य वनना चाहते तो उन्हे अपने विवाह-सवध के विघटन की घोषणा करनी पडती थी। इस आदोलन का वास्तविक उद्देश्य कभी मेरी समझ मे नही आया। उस समय और आज भी मेरी ऐसी धारणा है कि किसी गोरे अमरीकी ने हब्शी जाति के जडोन्मूलन के लिए उस आदोलन को चलाया होगा। परतु फिर भी मै उस आदोलन का सदस्य बन गया, क्योकि उसके सदस्यो को कई प्रकार के आर्थिक लाभ और सहूलियते प्राप्त थी। कुछ खास होटलो मे दो या तीन डालरो के स्थान पर केवल आधे डालर मे मुर्ग मुसल्लम की पूरी प्लेट मिल जाती थी और किन्ही खास हज्जामो के यहा एक डालर के स्थान पर केवल दस सेट मे वाल कटवाये जा सकते थे। और इस सबके लिए मुझे करना क्या पडता था ? अपनी भुजा को केवल सिर से ऊचा उठाकर धीरे से 'शाति' शब्द का उच्चारण कर देना होता था। इस तरह यह बिलकुल नकद लाभ की सदस्यता थी। पैसा तो न मैने कभी दिया और न किसीको देते हुए देखा, परतु फिर भी पैसे की वहा कोई कमी न थी। इसलिए फादर डिवाइन के वास्तविक उद्देश्य जो भी रहे हो, मै तो उनकी कृपा के लिए हृदय से आभारी ही था।

लिकन की सेमिनरी मे धर्मशास्त्र पढते समय मे हब्शियो के अनेक गिरजाघरो मे उपदेश देने और प्रार्थनाए करवाने के लिए भी जाया करता था। उन दिनो मैने कई मित्र वनाये, क्योकि हब्शियो के गिरजाघर केवल पूजा-प्रार्थना के ही नही, सामाजिक मेल-जोल के भी केद्र होते है। फिलाडेलफिया के एक गिरजे मे ऐसे ही प्रार्थना-उपदेश के वाद मेरा परिचय पोर्टिया और उसकी वहन रोमाना से हुआ था। वे लोग मुझे अपने घर

भोजन के लिए भी ले गई। शीघ्र ही हम तीनो अच्छे मित्र वन गये और पोर्टिया से तो मेरी थोडी घनिष्ठता भी हो गई। वह वहुत ही उदार लडकी थी और जब मेरे पास पैसे न होते तो अक्सर दे दिया करती थी। लेकिन मै उस-जैसी अनुरक्त और समर्पणशील लडकी के जरा भी उपयुक्त नही था। हमारे मैत्री-सबध वहुत दिन चलते रहे, परतु मैने उन्हे स्थिरता देने और स्थायी वनाने का कोई प्रयत्न नही किया। फिर भी पोर्टिया के अनुराग मे कोई कमी नही आने पाई। सभवत वह ऐसा समझती थी कि धीरज और लगन तो हठी-से-हठी आदमी को भी झुका देते है। इसी बीच मेरी एक दूसरी लडकी से दोस्ती हो गई। एक दिन इस नई लडकी से मिलने के तुरत बाद ही मुझे पोर्टिया के यहा भोजन करने जाना था। मेरे पहुचते ही पोर्टिया ने मुझे ऊपर से नीचे तक एक निगाह देखा और लगी फटकारने कि एक साथ दो-दो लडकियो से सबध वनाये हुए हू। मैने वहुतेरा इन्कार किया, परतु उसने एक न सुनी और इतना तक कह डाला कि यहा आने से पहले जरूर कोई लडकी मेरी वाहो मे थी। अब तो मुझे स्वीकार करना ही पडा और तव मैने भी वता दिया कि हा, एक लडकी ने मुझे चूमा अवश्य था और अगर उसने चूम ही लिया तो ऐसा क्या गजव हो गया! इसपर वह ऐठकर रह गई और जल-भुनकर वोली, "यह सव तो ठीक है, परतु वहा से चलने के पहले तुमने कम-से-कम अपनी कालर पर लगी लिपस्टिक तो पोछ ली होती!"

नारियो का सहवास सच ही मुझे वहुत अच्छा लगता है, लेकिन इसे मेरा दुर्भाग्य ही कहना होगा कि जो लोग मेरे स्वभाव से पूर्णत परिचित नही, उन्हे इस वात को लेकर प्राय वडी गलतफहमिया हो जाती ह। किसी भी नारी के साथ म वहुत अधिक घनिष्ठ सवध केवल इसीलिए स्थापित नही करना चाहता कि अपनी स्वभावगत विशेषता के कारण उसके प्रति परम निष्ठावान रहना और पूरा-पूरा ध्यान दे पाना मेरे लिए असभव ही है और म वहुत अच्छी तरह जानता हू कि इसीलिए देर-अवेर वह विरक्त होकर मुझे छोड जायगी, चाहे हमारी शादी ही क्यो न हो गई हो। इस सवध मे मेरे मन मे एक भय यह भी वैठा हुआ है कि यदि मैने अपने जीवन मे किसी नारी को वहुत अधिक महत्त्व दे डाला और उसे अपने साथ अत्यधिक घुलमिल जाने दिया तो मेरा ध्यान वटता चला जायगा और मै क्रमश अपने लक्ष्य को ही खो वैठूगा। मेरे स्वभाव के इस पहलू को समझनेवाले लोग वहुत ही थोडे है और इसीलिए अधिकाश व्यक्ति मुझे डॉन जुआन (छैला), नपुसक और यहातक कि हिजडा भी समझते है। लेकिन जो मुझे जानते है, वे विश्वासपूर्वक कह सकते

है कि मै औसत से कुछ अधिक आत्मनिग्रहवाला एक वहुत ही सामान्य पुरुष हू।

फिलाडेलफिया मे पढते समय मैने हब्शियो का धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण से व्यापक सर्वेक्षण भी किया था। यह काम मुझे प्रेसविटेरियन चर्च की ओर से सौपा गया था। इस काम के सिलसिले मे अकेले फिलाडेलफिया मे ही मै छ सौ हब्शी घरो मे गया था और जर्मन टाउन तथा रीडिंग के हब्शियो के यहा गया सो अलग। इस सर्वेक्षण ने मेरी आखे खोल दी। पहली वार पता चला कि सयुक्त राज्य मे और विशेपकर उसके दक्षिणी प्रान्तो मे, रगभेद और जातीय पृथक्करण की समस्या कितनी विपम और उग्र है। जव-जव मैने इस जातीय पृथक्करण की आधुनिकता और अमरीकी प्रगति के साथ तुलना करने का प्रयत्न किया, हर वार मेरी छाती दहल उठी और कलेजा मुह को आने लगा।

रगभेद का पहला अनुभव मुझे मैसन से डिक्सन के वीच यात्रा करते समय हुआ। वह मेरा फिलाडेलफिया से वाशिगटन-व्यापी भाषणो का एक दौरा था। हमारी वस वाल्टीमोर मे जाकर रुकी। मारे प्यास के गला सूख रहा था, इसलिए समीप के एक रेस्ट्रा मे जाकर मैने वहा के गोरे वेटर से पानी मागा। मेरी ओर अत्यत घृणापूर्वक देखते हुए उसने नाक-भौ सिकोड-कर कहा, "तुम-जैसो के लिए पानी वहा वाहर चहवच्चे मे है।" यह कह-कर उसने मुझसे पीठ मोड ली। मै विमूढ-सा खडा रह गया। वहुत प्रयत्न करने के वाद भी यह वात मेरी समझ मे नही आ पाई कि केवल चमडी का रग भिन्न हो जाने से ही कोई व्यक्ति किसी प्यासे को पानी पिलाने से कैसे इन्कार कर सकता है। वसो, होटलो और अन्य सार्वजनिक स्थानो मे रगभेद के अनेक उदाहरण तो मै पहले भी देख और भुगत चुका था, लेकिन यह अनुभव सवसे निराला और कल्पनातीत था। मैने कोई प्रत्युत्तर नही दिया, केवल अपना सिर झुकाया और आत्मगौरव की सपूर्ण गरिमा के साथ लौट आया।

पेनसिलवानिया के विश्वविद्यालय मे रहते हुए मैने वहा एक अफ्रीकी अध्ययन-मडल की स्थापना मे योग दिया और अफ्रीकी छात्र-सघ का सगठन भी करने लगा। यह अमरीका और कैनाडा मे पढनेवाले सभी अफ्रीकी छात्रो का सगठन था। हमने इसका नाम रक्खा था 'दि अफ्रीकन स्टुडेंट्स असोसिएशन ऑव अमरीका एड कैनाडा'। सयुक्त राज्य अमरीका मे मेरी राजनैतिक गतिविधियो का श्रीगणेश भी इसी सगठन मे काम करते हुए हुआ। जव मै अमरीका आया तो यह सघ एक छोटी-सी सभा

इन्ही दिनो अपने विचारो और सिद्धातो को स्थिरता देने के लिए मैंने एक पैम्फलेट लिखना शुरू किया, जिसका पहला मसविदा तो सयुक्त राज्य अमरीका मे ही पूरा हो गया था, लेकिन जिसे छापकर मै प्रकाशित कर सका लदन पहुचने के बाद ही। मैंने इस पैम्फलेट का नाम रक्खा था 'औपनिवेशिक स्वाधीनता की ओर' (Towards Colonial Freedom)।

इस पुस्तिका की भूमिका मे अपने विचारो और दृष्टिकोण को 'समस्त औपनिवेशिक नीतियो का कट्टर विरोधी' बतलाते हुए अपने मत के समर्थन मे मैंने जो तर्क प्रस्तुत किये थे उनका सार था .

"साम्राज्यवादी शासन के अन्तर्गत औपनिवेशिक जनता के अस्तित्व का अर्थ है उनका आर्थिक और राजनैतिक शोषण। उपनिवेशो के कच्चे माल और वहा की सस्ती मजदूरी का साम्राज्यवादी शक्तिया अपने पूजीवादी उद्योगो के लाभ के लिए उपयोग करती है। एकाधिकारी नियत्रण की पद्धति के द्वारा प्रतिस्पर्द्धा का अत कर अतिरिक्त उत्पादन को औपनिवेशिक बाजारो मे पाट दिया जाता है। अपनी उपस्थिति को न्याय्य सिद्ध करने के लिए साम्राज्यवादी औपनिवेशिक जनता की भलाई और विकास का दावा करते है। यह या ऐसे कोई भी दावे शोषण और दोहन के वास्तविक प्रयोजनो पर पर्दा डालने के प्रवचनापूर्ण प्रयत्न ही है, जिन्हे वे अपने आर्थिक लाभ और आवश्यकताओ के हेतु अपनाते है। इन्ही सबसे अपने-आपको मुक्त करने के लिए [illegible] जनता को निरन्तर प्रयत्न करना चाहिए।

'वास्तव मे उपनिवेशवादियो की पूरी-की-पूरी नीति औपनिवेशिक जनता को आर्थिक दृष्टि से परावलम्बी और नितात अविकसित स्थिति मे रखना है। उपनिवेशो के साधनो के सुदक्ष सचालन और सुचारु उपयोग के लिए उपनिवेशवादी ऋण ही नही प्रदान करते वहा की आतरिक यातायात-व्यवस्था को उन्नत करने और समाज-सेवा तथा कल्याण कार्यों मे पूजी भी लगाते है, जिसे वह जनता की स्थिति सुधारने और विकास-कार्यो का नाम देते है। किन्तु व्यावसायिक आर्थिक सस्थान एकाधिकारवादी नियत्रण के द्वारा स्थानीय लोगो को पूजीगत लाभ मे हिस्सा बटाने से रोके रखते है, यद्यपि स्थानीय श्रम-शक्ति के बिना लाभ कभी हो ही नही सकता। उपनिवेशो का इतिहास इस बात का साक्षी है कि सभी उपनिवेश साम्राज्यवादी शक्तियो के युद्धो के कारण रहे है, जिन्हे वे [illegible] और अपने साधनो पर अधिकार प्राप्त करने के अपने स्वाभाविक प्रयत्नो मे [illegible] के लिए [illegible] करते है। साम्राज्यवादियो के इन प्रयत्नो से औपनिवेशिक जनता को

नही रहा। दूसरी विचारधारावालो का कथन था कि नही, सपर्क कभी विच्छिन्न हो ही नही सकता, वह है और वना रहेगा। मै इस दूसरी विचारधारा का समर्थक था और आज भी हू। अमरीका मे रहते हुए तो एक वार अपने इस मत का प्रतिपादन करने के लिए मै हार्वर्ड विश्वविद्यालय भी गया था।

इन सव कार्यो और गतिविधियो के साथ-साथ मै रिपब्लिकन, डेमोक्रेट, कम्यूनिस्ट, त्रात्स्कीपथी आदि विभिन्न अमरीकी राजनैतिक दलो, उनके सगठनो और कार्यप्रणालियो का भी वहुत निकट से अध्ययन करता रहता था। अज्ञातवास मे भूमिगत रहकर अपने आदोलन को चलाते रहने की शिक्षा मुझे त्रात्स्कीपथियो से ही मिली। इसमे मेरा मुख्य उद्देश्य सगठन करने की शैली और तकनीक को आत्मसात् करना था। मै जानता था कि गोल्डकोस्ट पहुचने के वाद सवसे पहले मुझे इसी समस्या—राजनैतिक आदोलन के सगठनात्मक पहलू—से ही निपटना पडेगा। मै यह भी जान चुका था कि औपनिवेशिक प्रश्न के हल के लिए कार्यक्रम कोई भी क्यो न निर्धारित किया जाय, उसकी सफलता पूर्णत सगठन के स्वरूप पर ही निर्भर करती है।

साम्राज्यवाद की समस्या और औपनिवेशिक प्रश्न का कोई हल खोज निकालने के लिए मै हीगेल, कार्ल मार्क्स, एगेल्स, लेनिन और मैज़िनी आदि की कृतियो को वार-वार पढा करता था। मेरे क्रातिकारी विचारो के निर्माण मे इनसव महापुरुषो की कृतियो का वडा हाथ है, लेकिन मुझे सवसे अधिक प्रभावित किया है कार्ल मार्क्स और लेनिन ने। काफी अध्ययन और मनन के वाद मुझे यह विश्वास हो गया कि केवल इन दोनो महापुरुषो के सिद्धात ही इन समस्याओ को हल कर सकते है। लेकिन सवसे अधिक ऋणी हू मै 'फिलासफी एड ओपीनियन ऑव मारकस गार्वे' का। यह पुस्तक १९२३ मे प्रकाशित हुई थी। गार्वे के दो सिद्धातो—'अफ्रीका अफ्रीकियो के लिए' और 'अफ्रीका लौट चलो'—ने उन दिनो अमरीका के समस्त हब्शियो मे जीवन और जागृति का उत्साह भर दिया था। गार्वे के आदोलनो के सवध मे एक मजे की वात यह देखने मे आई कि दक्षिणी अमरीका के गोरो ने भी उनका समर्थन किया, इसलिए नही कि वे हब्शियो की मुक्ति चाहते थे, वल्कि इसलिए कि वे हब्शियो से ही मुक्ति पा लेना चाहते थे। गार्वे से मिलने का सौभाग्य मुझे प्राप्त न हो सका। मेरे अमरीका पहुचने से पहले ही वह निर्वासित कर दिये गए थे। वह इग्लैण्ड चले आये थे और वही १९४० मे उनकी मृत्यु हुई।

इन्ही दिनो अपने विचारो और सिद्धातो को स्थिरता देने के लिए मैंने एक पैम्फलेट लिखना शुरू किया, जिसका पहला मसविदा तो संयुक्त राज्य अमरीका मे ही पूरा हो गया था, लेकिन जिसे छापकर मैं प्रकाशित कर सका लदन पहुचने के वाद ही। मैंने इस पैम्फलेट का नाम रक्खा था 'औपनिवेशिक स्वाधीनता की ओर' (Towards Colonial Freedom)।

इस पुस्तिका की भूमिका मे अपने विचारो और दृष्टिकोण को 'समस्त औपनिवेशिक नीतियो का कट्टर विरोधी' वतलाते हुए अपने मत के समर्थन मे मैंने जो तर्क प्रस्तुत किये थे उनका सार था

"साम्राज्यवादी शासन के अन्तर्गत औपनिवेशिक जनता के अस्तित्व का अर्थ है उनका आर्थिक और राजनैतिक शोषण। उपनिवेशो के कच्चे माल और वहा की सस्ती मजदूरी का साम्राज्यवादी शक्तिया अपने पूजीवादी उद्योगो के लाभ के लिए उपयोग करती है। एकाधिकारी नियत्रण की पद्धति के द्वारा प्रतिस्पर्द्धा का अत कर अतिरिक्त उत्पादन को औपनिवेशिक वाजारो मे पाट दिया जाता है। अपनी उपस्थिति को न्याय्य सिद्ध करने के लिए साम्राज्यवादी औपनिवेशिक जनता की भलाई और विकास का दावा करते है। यह या ऐसे कोई भी दावे शोषण और दोहन के वास्तविक प्रयोजनो पर पर्दा डालने के प्रवचनापूर्ण प्रयत्न ही है, जिन्हे वे अपने आर्थिक लाभ और आवश्यकताओ के हेतु अपनाते है। इन्ही सबसे अपने-आपको मुक्त करने के लिए अफ्रीकी जनता को निरन्तर प्रयत्न करना चाहिए।

"वास्तव मे उपनिवेशवादियो की पूरी-की-पूरी नीति औपनिवेशिक जनता को आर्थिक दृष्टि से परावलवी और नितात अविकसित स्थिति मे रखना है। उपनिवेशो के साधनो के सुदक्ष सचालन और सुचारु उपयोग के लिए उपनिवेशवादी ऋण ही नही प्रदान करते वहा की आतरिक यातायात-व्यवस्था को उन्नत करने और समाज-सेवा तथा कल्याण कार्यो मे पूजी भी लगाते है, जिसे वह जनता की स्थिति सुधारने और विकास-कार्यो का नाम देते है। विशाल व्यावसायिक व्यापारिक सस्थान कठोरतम एकाधिकारी नियत्रण के द्वारा स्थानीय लोगो को पूजीगत लाभ में हिस्सा वटाने से रोके रहते है, यद्यपि स्थानीय श्रम-शक्ति के विना लाभ कभी हो ही नही सकता। उपनिवेशो का इतिहास इस वात का साक्षी है कि सभी उपनिवेश साम्राज्यवादी शक्तियो के हाथो के मुहरे रहे है, जिन्हे वे उपनिवेशो मे उपलब्ध होनेवाले प्रचुर, सम्पन्न और अछूते साधनो पर अधिकार प्राप्त करने के अपने भगीरथ प्रयत्नो मे एक-दूसरे के खिलाफ चलते आये है। साम्राज्यवादियो के इन प्रयत्नो ने औपनिवेशिक जनता को

आर्थिक दासता और पतन की भीषण नागफास मे लपेट दिया है, जिससे मुक्ति पाना उसका अभीष्ट होना चाहिए।

"पराधीन देश के शासन का स्वरूप कोई भी क्यो न हो और उसे कोई भी नाम क्यो न दिया जाय, वास्तव मे वह उस देश का आर्थिक शोषण करनेवाली साम्राज्यवादी योजना का ही एक अग है। उपनिवेशो को पराधीनता से कोई लाभ नही होता। उनकी सामाजिक और तकनीकी प्रगति अवरुद्ध हो जाती है। युद्ध के समय वाहरी आक्रमण से अपनी रक्षा के नाम पर उन्हे शासक देश के लिए सैनिक देने पडते है। उन्हे विना सघर्ष किये स्वाधीनता कभी प्राप्त हो ही नही सकती। ब्रिटेन लाख दावे करता रहे कि वह उपनिवेशो के स्वशासन के योग्य हो जाने तक केवल एक ट्रस्टी के रूप मे है और फिर चला जायगा, परन्तु वह कभी अपना शिकजा ढीला नही करेगा, क्योकि ऐसा करना स्वय उसके अपने हित मे नही ह। गोरे लोगो के आने से पहले अफ्रीकी वडे मजे से अपना शासन आप कर लेते थे, आज भी कर सकते है और उन्हे स्वशासन करने देना चाहिए।

"उपनिवेशो मे भूमि के स्वामित्व का प्रश्न केवल इसीलिए उठ खडा हुआ है कि औपनिवेशिक शक्तियो ने कानूनी और गैर-कानूनी सभी तरीको से वागान और खनिज-सम्बन्धी अधिकारो को हथिया रक्खा है। अन्य साम्राज्यवादी शक्तियो की अपेक्षा अधिक चतुर होने के कारण अग्रेजो ने इस अपहरण को कानूनी रूप दे रक्खा है, परन्तु इससे यह तथ्य छिपाया नही जा सकता कि उन्हे स्थानीय लोगो के जन्मसिद्ध अधिकार का अपहरण करने का कोई अधिकार नही।

"अफ्रीकी उपनिवेशो मे राष्ट्रीय मुक्ति का आदोलन विदेशी उत्पीडको द्वारा किये जानेवाले सतत आर्थिक एव राजनैतिक शोषण की सहज और स्वाभाविक उपज है। इस आदोलन का लक्ष्य स्वतत्रता और स्वराज्य की प्राप्ति है। औपनिवेशिक जनता की राजनैतिक शिक्षा और सगठन के द्वारा ही इसे उपलब्ध किया जा सकता है। इसलिए औपनिवेशिक जनता के सभी वर्गो को श्रमिको एव व्यवसाइयो को देश की आर्थिक प्रगति और औद्योगिक विकास के लिए एक मोर्चे पर समान कार्यक्रम के आधार पर एकतावद्ध होना चाहिए।"

आज भी मेरे इन विचारो मे कोई परिवर्तन नही हुआ है। अभी कुछ ही समय पहले मैने कहा था

"यह सोचना विलकुल ही गलत होगा कि इग्लैण्ड, फ्रास या कोई भी औपनिवेशिक शक्ति उपनिवेशो के स्वशासन के 'योग्य' होने तक वहा

म शीघ्र ही इग्लैण्ड के जीवन का अभ्यस्त हो गया। उस देश की एक वहुत अच्छी वात यह है कि आप कुछ भी क्यो न करे, यहातक कि सारे ब्रिटिश साम्राज्य की निंदा ही क्यो न कर डाले, कोई आपकी ओर ध्यान नही देगा। मै इग्लैण्ड मे रहते हुए प्राय ब्रिटिश साम्यवादी दल के मुखपत्र 'डेली वर्कर' की एक प्रति खरीदकर व्यापारी वर्ग के साथ भूगर्भ रेल के एक ही डिब्बे मे वैठ जाया करता था। मेरे चारो ओर 'दि टाइम्स', 'दि डेली टेलीग्राफ', 'दि मेनचेस्टर गार्जियन' आदि समाचार-पत्र खुले होते थे। मै पूरे आडबर के साथ अपने 'डेली वर्कर' के पन्ने खोलता। सहसा सवकी आखे, मुझपर केद्रित हो जाती, परन्तु उन नेत्रो मे शत्रुता अथवा विरोध का नही, विनोद और कुतूहल का भाव होता था।

इग्लैण्ड मे मै केवल एक व्यक्ति जार्ज पैडमोर को जानता था। यह सज्जन वेस्ट इडियन के रहनेवाले और पेशे से पत्रकार थे। औपनिवेशिक प्रश्न पर उनके लेखो से मै वडा प्रभावित हुआ था। मैने उन्हे प्रशसात्मक पत्र लिखा और हम पत्र-मित्र वन गये। अमरीका से चलते समय मैने उन्हे इग्लैड पहुचने की तिथि लिख दी थी, पर उनका उत्तर मुझे नही मिल पाया था। लदन पहुचकर स्टेशन के प्लेटफार्म पर मै उन्हे खोजने लगा। वह भी मेरी ही तलाश मे खडे थे। हमने एक-दूसरे को लगभग एक साथ ही देखा और देखते ही आदमी मुझे पसद आ गया। शुरू-शुरू मे, लदन मे, उन्होने मेरी वडी सहायता की। वही मुझे वेस्ट अफ्रीकन स्टुडेटस यूनियन होस्टल (पश्चिम अफ्रीकी छात्र-सघ के छात्रावास) मे ले गये थे, जहा मुझे कमरा मिल गया। लेकिन मै वहा अधिक टिक नही सका, क्योकि एक तो वातावरण मनोनुकूल नही था और दूसरे वहा के आने-जाने-सवधी नियमो का पालन मेरे लिए प्राय असभव ही था। मैने उसी दिन से दूसरी जगह की खोज आरभ कर दी। परन्तु युद्ध की समाप्ति के वाद के उन दिनो के लदन मे जगह पाना सवसे टेढी खीर थी। काले लोगो को तो कोई रखने को तैयार नही होता था। एक महिला वेचारी ने तो, जो जरा भली थी, कहा भी कि 'वेटे, मुझे कोई एतराज नही, पर दूसरे किरायेदारो का भी तो खयाल करना पडता है।' वाकी दूसरी मकान-मालकिने तो देखकर ही दरवाजा वद कर लेती थी। एक दिन चलते-चलते पाव दुखने लगे। सहसा गली मे मुडते ही पहले मकान की सामनेवाली खिडकी मे वडा-सा साइन वोर्ड टगा दिखाई दिया। लिखा था—'जगह खाली है।' दुखते पावो और धडकते दिल से मैने छोटा-सा फुटपाथ पार कर दरवाजे पर लगी घटी को वजाया। कुछ देर तो सन्नाटा छाया रहा, उसके वाद किवाडो मे जरा-सी सेंध हुई और दो आखे झाकती दिखाई दी। मै अपनी वात कहने जा

५
लंदन में

१९४५ के मई महीने मे मै न्यूयार्क से लदन के लिए रवाना हुआ। मेरे कई मित्र मुझे वदरगाह पर विदा करने के लिए आये। वडी देर तक तो मुझे विश्वास ही नही हुआ कि अपने इन सव साथियो को और जिस देश मे दस वर्ष बिताये है, उसे छोडकर जा रहा हू। वियोग के दु ख से मै इतना कातर और अभिभूत हो उठा था कि मित्रो से ठीक तरह विदा भी नही ले पाया। जब जहाज चल पडा और मैने स्वाधीनता की प्रतिमा को हाथ उठाये खडे देखा तो मेरी आखे भर आई। ऐसा लगा मानो अपना हाथ ऊचा करके वह प्रतिमा मुझे विदा दे रही थी। मैने उससे मन-ही-मन कहा, "वास्तविक स्वाधीनता का अर्थ तुम्हीने मुझे सिखाया है और तुम्हारे इस सन्देश को जबतक अफ्रीका नही पहुचा दूगा, चैन न लूगा।"

पाच दिन बाद मेरा जहाज लिवरपूल के वदरगाह पर लगा। अव मैं वह दस साल पहले का अनुभवहीन, अद्भुत साहस कार्य के लिए घर से निकला हुआ और पश्चिमी जगत के रग-ढग से चमत्कृत हो जानेवाला नितात अनभिज्ञ युवक नही था। अमरीका के दस वर्षो ने मुझे काफी-कुछ सिखा दिया था।

लेकिन फिर भी अभी वहुत कुछ सीखना शेष था। लदन जानेवाली गाडी की प्रतीक्षा मे लाइम-स्ट्रीट स्टेशन पर खडा था कि सोचा, लाओ अखवार ही खरीद लू। मैं अखबार बेचनेवाले लडके के पास गया और एक या दो पेनी, जो भी कीमत रही हो, देकर उससे अखवार मागा। उसने कहा, "स्वय ही ले लो।" मैने एक प्रति उठा ली और चल दिया। तभी देखा कि लडका 'अरे रुको, रुको' चिल्लाता, पीछे भागा आ रहा था। उसके कहने पर मैने देखा तो सच ही एक प्रति के स्थान पर दस प्रतिया उठा लाया था। यह गलती इसीलिए हुई कि अमरीकी अखवारो मे वहुत सारे पृष्ठ होते थे और मुझे उसीकी आदत पड गई थी। लडाई के कारण इग्लैण्ड मे अखबारी कागज पर नियत्रण था, यह वात मै एकदम भूल ही गया था। मैने लडके को अपनी गलती का कारण वताया, लेकिन उसका चेहरा कह रहा था कि वह इस वात पर कभी विश्वास कर ही नही सकता कि किसी अखबार मे दस-वारह से अधिक पृष्ठ हो भी सकते है। उस वेचारे ने शायद कोई अमरीकी दैनिक पत्र देखा नही था।

म शीघ्र ही इग्लैण्ड के जीवन का अभ्यस्त हो गया। उस देश की एक वहुत अच्छी बात यह है कि आप कुछ भी क्यो न करे, यहातक कि सारे ब्रिटिश साम्राज्य की निंदा ही क्यो न कर डाले, कोई आपकी ओर ध्यान नही देगा। मै इग्लैण्ड मे रहते हुए प्राय ब्रिटिश साम्यवादी दल के मुखपत्र 'डेली वर्कर' की एक प्रति खरीदकर व्यापारी वर्ग के साथ भूगर्भ रेल के एक ही डिब्बे मे वैठ जाया करता था। मेरे चारो ओर 'दि टाइम्स', 'दि डेली टेलीग्राफ', 'दि मेनचेस्टर गार्जियन' आदि समाचार-पत्र खुले होते थे। मै पूरे आडबर के साथ अपने 'डेली वर्कर' के पन्ने खोलता। सहसा सबकी आखे, मुझपर केद्रित हो जाती, परन्तु उन नेत्रो मे शत्रुता अथवा विरोध का नही, विनोद और कुतूहल का भाव होता था।

इग्लैण्ड मे मै केवल एक व्यक्ति जार्ज पैडमोर को जानता था। यह सज्जन वेस्ट इडियन के रहनेवाले और पेशे से पत्रकार थे। औपनिवेशिक प्रश्न पर उनके लेखो से मै वडा प्रभावित हुआ था। मैने उन्हे प्रशसात्मक पत्र लिखा और हम पत्र-मित्र वन गये। अमरीका से चलते समय मैने उन्हे इग्लैड पहुचने की तिथि लिख दी थी, पर उनका उत्तर मुझे नही मिल पाया था। लदन पहुचकर स्टेशन के प्लेटफार्म पर मै उन्हे खोजने लगा। वह भी मेरी ही तलाश मे खडे थे। हमने एक-दूसरे को लगभग एक साथ ही देखा और देखते ही आदमी मुझे पसद आ गया। शुरू-शुरू मे, लदन मे, उन्होने मेरी वडी सहायता की। वही मुझे वेस्ट अफ्रीकन स्टुडेट्स यूनियन होस्टल (पश्चिम अफ्रीकी छात्र-सघ के छात्रावास) मे ले गये थे, जहा मुझे कमरा मिल गया। लेकिन मै वहा अधिक टिक नही सका, क्योकि एक तो वातावरण मनोनुकूल नही था और दूसरे वहा के आने-जाने-सवधी नियमो का पालन मेरे लिए प्राय असभव ही था। मैने उसी दिन से दूसरी जगह की खोज आरभ कर दी। परन्तु युद्ध की समाप्ति के वाद के उन दिनो के लदन मे जगह पाना सवसे टेढी खीर थी। काले लोगो को तो कोई रखने को तैयार नही होता था। एक महिला वेचारी ने तो, जो जरा भली थी, कहा भी कि 'वेटे, मुझे कोई एतराज नही, पर दूसरे किरायेदारो का भी तो खयाल करना पडता है।' वाकी दूसरी मकान-मालकिने तो देखकर ही दरवाजा वद कर लेती थी। एक दिन चलते-चलते पाव दुखने लगे। सहसा गली मे मुडते ही पहले मकान की सामनेवाली खिडकी मे वडा-सा साइन वोर्ड टगा दिखाई दिया। लिखा था—'जगह खाली है।' दुखते पावो और धडकते दिल से मैने छोटा-सा फुटपाथ पार कर दरवाजे पर लगी घटी को वजाया। कुछ देर तो सन्नाटा छाया रहा, उसके वाद किवाडो मे जरा-सी सेध हुई और दो आखे झाकती दिखाई दी। मै अपनी वात कहने जा

ही रहा था कि किवाड धड से वद हो गये। मैने फिर घटी वजाई, पर इस बार कोई झाका तक नही।

कई दिनो की निष्फल भाग-दौड के वाद एक दिन मैने वस से चलने का निश्चय किया। लदन की सडको पर भटकते हुए मेरे जूतो के तले सच ही घिस गये थे, और मै हिसाव लगाने लगा था कि दोनो मे कौन सस्ता पडेगा, जूतो की मरम्मत या वस की सवारी। लेकिन उस दिन वस मे चलना मेरे लिए लाभदायी सिद्ध हुआ। गाडी मे पाव रखते ही अको अज्जी से भेट हो गई। यह भाई अमरीका मे 'अफ्रीकन इटरप्रिटर' मे मेरे सहकर्मी थे। मिलकर वडी प्रसन्नता हुई। उन्होने अपना हाल सुनाया। वह कानून का अध्ययन करने के लिए इग्लैड आये थे और पढाई मजे से चल रही थी। मैने मकानो का अपना दुखडा और लदन की मकान-मालकिनो की पूरी रामायण ही सुना डाली। फिर देर तक हम अमरीका के अपने अनुभवो और भावी योजनाओ के वारे मे वाते करते रहे। अको ने मकान पाने मे मेरी सहायता करने का वचन दिया और उसके वाद हम दोनो मिलकर जगह की खोज मे भटकने लगे। काम अवश्य वहुत कठिन था, क्योकि मुझे सस्ती जगह की तलाश थी।

भटकते-भटकते एक दिन टुफनेल पार्क क्षेत्र के समीप वर्गले रोड के साठ नम्बर के मकान मे हमे जगह मिल गई। दस वर्ग फुट का एक कमरा था। किराया प्रति सप्ताह केवल तीस शिलिग। फर्नीचर साथ मे। मेरे लिए तो वह स्वर्ग था और अगर विना फर्नीचर के होता तो भी मै लेने को तैयार था। लदन का पूरा निवास जून १९४५ से लेकर नवम्बर १९४७ तक, मैने उसी कमरे मे विताया। पति-पत्नी दोनो ही वहुत भले थे। मेरी सुख-सुविधा का पूरा खयाल रखते थे। प्राय रात मे देर से लौटता, क्योकि गुजर-वसर के लिए आधी रात तक काम करना पडता था, लेकिन उन लोगो ने कभी वुरा न माना, न कभी आपत्ति की। जव भी लौटता, मेरे हिस्से का भोजन अगीठी पर रक्खा मिलता। इस कृपा के वदले मैने जिद की कि जूठी प्लेटे मुझे धोने दी जाया करे, जो उन्हे स्वीकार करना पडा। मै रोज सोने से पहले यह काम निपटा दिया करता था।

लदन आने का मेरा उद्देश्य कानून पढना और दर्शनशास्त्र मे डाक्टरेट की डिग्रीवाली थीसिस को पूरा करना था। लदन आते ही कानून की शिक्षा के लिए मै ग्रेज इन मे भर्ती हो गया। वही प्रोफेसर लास्की से पहले-पहल भेट हुई, जो राजनीति-विज्ञान पर भाषण देने आये थे। वाद मे मैने दर्शन-शास्त्र के अध्ययन के लिए यूनिवर्सिटी कालेज मे भी नाम लिखा लिया।

स्वीकृत हुए। एक के लेखक थे डाक्टर डुबोइस और दूसरे का मै।
ी घोपणापत्रो मे औपनिवेशिक जनता के स्वतत्र होने के निश्चय
ष्ट करते हुए केवल निजी लाभ के लिए व्यक्तिगत सपदा और
ा के उपयोग एव पूजी के एकाधिकार की भर्त्सना की गई थी। आर्थिक
ा को ही वास्तविक जनवाद की बुनियाद बताते हुए सभी वर्गो और
के अफ्रीकियो से अपील की गई कि वे अपनी मुक्ति एव विश्व की
ाज्यवाद से रक्षा के महान दायित्वो के प्रति उद्‌बुद्ध हो।

अधिवेशन की सफल समाप्ति के बाद पैडमोर, अब्राहम्स और मै
न लौट आये और मैकोनेन, जोमो केनियाता और डाक्टर मिलिआर्ड
स्त अफ्रीकी सघ की स्थापना के लिए मैनचेस्टर ही रह गये।

अधिवेशन मे स्वीकृत प्रस्तावो और नीति को कार्यान्वित करने के लिए
-क कार्यसमिति भी बनाई गई, जिसके अध्यक्ष थे डाक्टर डुबोइस, और
- उनका महासचिव नियुक्त किया गया। कुछ मित्रो की सलाह से एक
-श्चिम अफ्रीकी राष्ट्रीय सचिवालय की स्थापना भी की गई, जिसका
ुख्य उद्देश्य था पश्चिम अफ्रीका के देशो की एक राष्ट्रीय काग्रेस करना
और पश्चिम अफ्रीकी उपनिवेशो के स्वशासन के कार्यक्रम को सचालित
करना। इस सचिवालय का सचिव-पद भी मुझे ही को सभालना पडा।
हमने लदन मे एक छोटे-से कमरे मे अपना दफ्तर खोला और काम मे जुट
गये। जैसे-जैसे लोगो को पता चलता गया, हमारे दफ्तर मे आने-जाने-
वालो की भीडभाड भी बढती गई और शीघ्र ही वह स्थान सारे लदन मे
सर्वाधिक चहल-पहल और सरगर्मियो की जगह बन गई।

महासचिव के नाते सचिवालय के सगठन का सारा भार मुझपर ही था,
लेकिन हाथ बिलकुल खाली हो तो किसी भी सगठन को चलाना बडा
मुश्किल हो जाता है। फिर लदन की ठड और उससे त्राण पाने के लिए
कोयला जुटाना हमारी सबसे बडी समस्या थी। सभी ऋतुओ मे काम
करते-करते प्राय आधी रात तो हो ही जाया करती थी। कार्यकर्ता कितने
ही उत्साही, आस्थावान और नैष्ठिक क्यो न हो, कडकडाती ठड मे, जब
हाथ-पाव ठड से ऐठकर नीले पड जाय, नाक ठिठुरकर सुन्न होने लगे
और कमरे मे लोगो की सास घुट-घुटकर बिजली के प्रकाश को मद
कर दे तो अच्छे-से-अच्छे आदमी के भी किये क्या हो सकता है।
इसलिए सर्दियो मे तो हमारा अधिकतर समय कोयले की खोज मे ही
बीतता था।

हम लदन नगर के चारो ओर मीलो तक गाडियो से गिरे, गोदामो

दो-दो घटे रखी रह जाती और हमे सिर उठाने का अवकाश न मिलता था। हमने सारे अफ्रीका मे और वेस्ट इडीज मे भी सैकडो की सख्या में अधिवेशन के उद्देश्यो से सबधित और औपनिवेशिक स्वाधीनता की कार्य-नीति का स्पष्टीकरण करनेवाले परिपत्र प्रसारित किये।

अधिवेशन मैनचेस्टर के टाउन हाल मे निर्धारित तिथियो पर बडी धूमधाम से हुआ। दो सौ से अधिक प्रतिनिधियो ने भाग लिया, जो विश्व के कोने-कोने से आये थे। दो सदस्यो का सभापति-मडल बनाया गया। एक थे सुप्रसिद्ध अफ्रो-अमरीकी विद्वान डाक्टर डब्ल्यू० ई० बी० डुबो-इस, जो काले लोगो की उन्नति के लिए स्थापित राष्ट्रीय सगठन के सस्था-पक सदस्यो मे से है और दूसरे थे ब्रिटिश गायना के मैनचेस्टर-निवासी हब्शी चिकित्सक डाक्टर पीटर मिलिआर्ड।

इस पाचवे और इससे पहले के चार अधिवेशनो मे स्पष्ट ही बुनियादी अतर था। पहलेवाले चारो अधिवेशनो का नेतृत्व मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवियो और पूजीवादी हब्शी सुधारको के हाथो मे रहता था और प्रतिनिधियो मे भी ऐसे ही लोगो का बाहुल्य हुआ करता था। ये लोग लबी-चौडी बहसे करना, लच्छेदार भाषण देना और अलकारिक शैली मे सैद्धातिक प्रस्ताव लिखना तो खूब जानते थे, परतु सक्रिय राजनीति और आदोलनो मे भाग लेने से घबराते थे। इस पाचवे अधिवेशन मे प्राय सब-के-सब प्रतिनिधि मजदूर, ट्रेड यूनियन कार्यकर्ता, किसान, सहकारी समितिया और विद्यार्थी आदि थे और हरेक सक्रिय राजनीति मे किसी-न-किसी आदोलन से सबद्ध था। अधिवेशन का नेतृत्व भी इसी कोटि के क्रातिकारी लोगो के हाथो मे था।

यही कारण है कि अधिवेशन मे पहली बार अफ्रीकी राष्ट्रीयता उद्देश्य के रूप मे, मार्क्सवादी अफ्रीकी समाजवाद सिद्धात के रूप मे और सक्रिय अहिसक काररवाई कार्यनीति के रूप मे सर्वसम्मति से स्वीकृत किये गए। अफ्रीकी राष्ट्रीयता की व्याख्या करते हुए उसे अफ्रीका मे साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद और गोरे-काले के जातिगत भेद-भाव के विरुद्ध सक्रिय क्राति कहा गया। सयुक्त राष्ट्रसघ की मानवी अधिकारो की घोषणा मे निहित सिद्धातो का भी अधिवेशन ने समर्थन किया और अफ्रीकी-मात्र को यह परामर्श दिया कि अपनी राजनैतिक स्वाधीनता और आर्थिक उन्नति के सघर्षो की सफलता के लिए वे राजनैतिक दलो, किसान अथवा मजदूर सघो एव सहकारी समितियो के अतर्गत सगठित हो।

अधिवेशन मे विश्व की साम्राज्यवादी शक्तियो के नाम दो घोषणा-

पत्र भी स्वीकृत हुए। एक के लेखक थे डाक्टर डुबोइस और दूसरे का मैं। दोनो ही घोपणापत्रो मे औपनिवेशिक जनता के स्वतत्र होने के निश्चय की पुष्टि करते हुए केवल निजी लाभ के लिए व्यक्तिगत सपदा और उद्योगो के उपयोग एव पूजी के एकाधिकार की भर्त्सना की गई थी। आर्थिक समता को ही वास्तविक जनवाद की बुनियाद बताते हुए सभी वर्गो और पेशो के अफ्रीकियो से अपील की गई कि वे अपनी मुक्ति एव विश्व की साम्राज्यवाद से रक्षा के महान दायित्वो के प्रति उद्‌बुद्ध हो।

अधिवेशन की सफल समाप्ति के बाद पैडमोर, अब्राहम्स और मै लदन लौट आये और मैकोनेन, जोमो केनियाता और डाक्टर मिलिआर्ड समस्त अफ्रीकी सघ की स्थापना के लिए मैनचेस्टर ही रह गये।

अधिवेशन मे स्वीकृत प्रस्तावो और नीति को कार्यान्वित करने के लिए एक कार्यसमिति भी बनाई गई, जिसके अध्यक्ष थे डाक्टर डुबोइस, और मै उनका महासचिव नियुक्त किया गया। कुछ मित्रो की सलाह से एक पश्चिम अफ्रीकी राष्ट्रीय सचिवालय की स्थापना भी की गई, जिसका मुख्य उद्देश्य था पश्चिम अफ्रीका के देशो की एक राष्ट्रीय काग्रेस करना और पश्चिम अफ्रीकी उपनिवेशो के स्वशासन के कार्यक्रम को सचालिन करना। इस सचिवालय का सचिव-पद भी मुझे ही को सभालना पडा। हमने लदन मे एक छोटे-से कमरे मे अपना दफ्तर खोला और काम मे जुट गये। जैसे-जैसे लोगो को पता चलता गया, हमारे दफ्तर मे आने-जाने-वालो की भीडभाड भी बढती गई और शीघ्र ही वह स्थान सारे लदन मे सर्वाधिक चहल-पहल और सरगर्मियो की जगह बन गई।

महासचिव के नाते सचिवालय के सगठन का सारा भार मुझपर ही था, लेकिन हाथ बिलकुल खाली हो तो किसी भी सगठन को चलाना बडा मुश्किल हो जाता है। फिर लदन की ठड और उससे त्राण पाने के लिए कोयला जुटाना हमारी सबसे बडी समस्या थी। सभी ऋतुओ मे काम करते-करते प्राय आधी रात तो हो ही जाया करती थी। कार्यकर्ता कितने ही उत्साही, आस्थावान और नैष्ठिक क्यो न हो, कडकडाती ठड मे, जब हाथ-पाव ठड से ऐठकर नीले पड जाय, नाक ठिठुरकर सुन्न होने लगे और कमरे मे लोगो की सास घुट-घुटकर बिजली के प्रकाश को मद कर दे तो अच्छे-से-अच्छे आदमी के भी किये क्या हो सकता है। इसलिए सर्दियो मे तो हमारा अधिकतर समय कोयले की खोज मे ही बीतता था।

हम लदन नगर के चारो ओर मीलो तक गाडियो से गिरे, गोदामो

के वाहर विखरे और मोटर ट्रको से लुढके हुए कोयले की तलाश मे भटका करते थे ।

लेकिन उन दिनो कई अग्रेज लडकियो ने हमारी जिस तत्परता और लगन से सहायता की, उसके लिए मै उनका चिरऋणी रहूगा । उन्होने हमारे ठड से ठिठुरते शरीरो के अदर की आत्मा और हृदय को अपनी सहयोग-भावना से सदा ही गरमाये रक्खा। उनमे से कई तो अच्छे-अच्छे घरो की लडकिया थी और प्राय सभी शाम को आ जाती और घटो लगातार टाइप किया करती थी। अपने काम का उन्होने कभी एक पैसा भी नही मागा । यदि कभी पैसा रहता तो हम उनके घर लौटने के लिए टैक्सी कर देते, पर पैसा प्राय होता ही नही था। तव हम उनके साथ जाकर भूगर्भ रेल के स्टेशन तक उन्हे पहुचा आते थे। इससे अधिक अपनी कृतज्ञता को प्रदर्शित करने का कोई उपाय हमारे पास नही होता था। उन लडकियो की मनस्विता और स्वाभिमान का भी मै वडा प्रशसक हू। एक वार की वात है। उन्हीमे से किसी एक के साथ मै सिनेमा देखने गया था। जैसे ही अदर जाने को हुए, किसी अग्रेज ने काले आदमी के साथ गोरी लडकी की सोहवत के वारे मे वहुत ही भद्दी और गदी वात वक दी। वस, लडकी ने आव देखा न ताव, उन हजरत के कसकर एक तमाचा रसीद कर दिया, और बोली, "खवरदार, जो दूसरो के मामले मे वोला। आगे कभी ऐसी गदी वात मुह से निकाली तो जवान खीच ली जायगी ! समझ क्या रक्खा है तूने ?" यह सारा काड मेरे ही कारण हुआ था, इसलिए मैने कहा, "चलो, तुम्हे घर पहुचा दू" तो उसने कहा, "नही जी, कही कुत्तो के डर से सैर छोडी जाती है ? हम तस्वीर देखने आये है और देखकर ही जायगे ।"

अपने ऐसे आचरण और व्यवहार के कारण अग्रेज नारियो ने हमे बहुत प्रभावित किया। सचाई, सहानुभूति और उदारता की तो वे जैसे खान ही थी। हमारी जो भी सहायता करती, बिलकुल नि स्वार्थ भाव से और ढिढोरा तो कभी पीटती ही न थी। पारिश्रमिक और पुरस्कार तो दूर उन्होने कभी धन्यवाद के एक छोटे-से शब्द की भी अपेक्षा नही की।

शीघ्र ही पश्चिम अफ्रीकी राष्ट्रीय सचिवालय का काम इतना वढ गया कि हमे एक मासिक पत्र निकालना पडा। नाम रक्खा गया 'नया अफ्रीकी'—(The New African)। किसी तरह पचास पौड जमा करके मैने प्रकाशक के हवाले किये और १९४६ के मार्च महीने मे पहले अक की तीन हजार प्रतिया छापी गई। एक प्रति का मूल्य तीन पेनी रक्खा

कांग्रेस करने और उसमे समूचे अफ्रीका के विभिन्न राजनैतिक सगठनो और आदोलनो को निमत्रित करने का निश्चय किया गया। इसके लिए मै एक बार फिर पेरिस गया और वहा फ्रास की राष्ट्रीय असेबली के सदस्यो से मिला। इस सम्मेलन का सयोजक मुझे ही बनाया गया था। लदन लौटते ही मै पूरी शक्ति से काम मे लग गया। सम्मेलन की सफलता के लिए हम ट्रैफलगार स्क्वेअर और हाईड पार्क मे सभा और प्रदर्शन करने लगे। ब्रिटिश पार्लमेट के एक समाजवादी सदस्य फेनर ब्राकवे इन कामो मे हमारी बडी सहायता करते थे।

मेरी पढाई लगभग छूट चुकी थी। पहले कानून पढना छूटा और फिर शोध-प्रबध भी अधूरा रह गया। एक तो पैसा पास नही था, दूसरे राजनैतिक कामो से दम मारने की भी फुर्सत नही मिल पाती थी, तीसरे अफ्रीकी राष्ट्रवाद के प्रचार और स्वाधीनता की लडाई के तात्कालिक कार्यक्रम के आगे मुझे कानून और दर्शन का अध्ययन बहुत तुच्छ लगने लगे थे।

और मेरी गरीबी मे तो खैर कोई सदेह ही नही था। मै लदन के सबसे सस्ते होटलो मे जाता और चाय की एक प्याली लेकर वहा आनेवालो के साथ राजनैतिक चर्चा करता हुआ पूरा-पूरा दिन बिता दिया करता था। जेब मे पैसा होता तो रोटी का एक-आध टुकडा भी ले लेता था। लेकिन बेचारे होटल-मालिक सभी भले लोग थे। कभी किसीने मुझे 'फालतू' बैठने के लिए नही टोका और न किसीने कभी चले जाने को कहा।

एक दिन मै उसी तरह के होटल मे बैठा पैडमोर के साथ चर्चा कर रहा था। सहसा लगा जैसे कोई घूर रहा हो। देखा तो मेज के पास खडी एक लडकी टकटकी लगाये ताक रही थी। हम फिर बाते करने लगे तो वह उछलकर चिल्ला पडी, "अम्मी, ओ अम्मी! यह तो बोलता है!" मा बेचारी पर तो जैसे घडो पानी पड गया। झपटकर आई कि लडकी को घसीटती हुई ले जाय, पर हम हँस दिये और बोले कि जाने भी दो, अभी बच्चा ही तो है।

पश्चिम अफ्रीकी राष्ट्रीय सचिवालय के समर्थक विद्यार्थियो ने अपने-अपने गुट बना लिये थे और सभी गुट नियमपूर्वक प्रधान कार्यालय में अपनी बैठके करके चर्चा और वाद-विवाद किया करते थे। ऐसे ही एक गुट का मैं अध्यक्ष था। शीघ्र ही यह गुट सचिवालय का हरावल दस्ता बन गया। हम अपने गुट को 'सर्कल' कहने लगे। 'सर्कल' की सदस्यता के लिए सात निश्चित शर्ते रखी गई थी और केवल उन्ही लोगो को सदस्य बनाया जाता था, जो उपनिवेशवाद के विनाश और पश्चिम अफ्रीकी एकता के लिए

अथवा नौकरी न मिलने की स्थिति मे स्वदेश लौटने का प्रवध करवा देना। इस काम के सिलसिले मे मुझे अकसर लिवरपूल, मैनचेस्टर और कार्डिफ की यात्राए करनी पडती थी। मेरे विभिन्न कर्त्तव्यो मे एक यह भी था कि ब्रिटेन मे रहनेवाले अफ्रीकियो के रहन-सहन के ढग और जीवन-स्तर का अध्ययन करता चलू। अपने देशवासियो की दुरवस्था देखकर मेरे रोगटे खडे हो जाते थे। अनेक तो इतना अधम जीवन व्यतीत करने को विवश थे कि वर्णन नही किया जा सकता, विशेषकर लदन के ईस्ट एड की गदी बस्तियो मे रहनेवालो की स्थिति तो वहुत ही शोचनीय थी। अफ्रीकी सभवत दुनिया मे सवसे अधिक सफाई-पसद जाति है। परतु सारे प्रयत्नो के वावजूद इन गदी वस्तियो मे रहनेवाले ज्, चूहो और गदगी से वच नही पाते थे, यहातक कि परिस्थितियो से वाध्य होकर उन्होने साफ-सुथरे और अच्छी तरह रहने के सारे प्रयत्न ही छोड दिये थे।

मै घटो वैठा उनकी समस्याओ और मुसीवतो को सुना करता। कोई किसी अग्रेज लडकी के कारण मुसीवत मे फसा होता, तो कोई छोटी-मोटी चोरी के कारण कानून की गिरफ्त मे जकडा होता। कभी वर्मवुड की जेल मे सजा काट रहे अफ्रीकियो से भी मिलने के लिए जाना पडता था। निश्चय ही जेल का भौतिक जीवन उनके वाहर के भौतिक जीवन से अच्छा होता था, परतु स्वतत्रता का अपहरण कुछ कम आत्मिक कष्ट तो होता नही।

इसीलिए हमने 'कलर्ड वर्कर्स असोसिएशन' की स्थापना की। उससे लाभ भी खूब हुआ। सवसे वडी वात तो यह हुई कि उनमे आशा, साहस और आत्मविश्वास का सचार होने लगा और वे अपनी स्थिति को सुधारने का प्रयत्न भी करने लगे। हमारे निरतर सपर्क, समस्याओ पर चर्चा और ठोस रचनात्मक सुझावो के कारण भी स्थितियो मे काफी परिवर्तन हुआ। काले-गोरो के व्यक्तिगत झगडे-टटो मे, जो सदैव नशे के कारण हो जाते थे, हमारी मध्यस्थता से प्राय सुलह-समझौता हो जाता और मुकदमा, सजा तथा जेल की नौबत न आने पाती।

काम इतना अधिक बडा और भारी था कि कालातर मे पश्चिम अफ्रीकी राष्ट्रीय सचिवालय की सारी शक्ति और पूरा समय अफ्रीकी मजदूरो के सगठन मे ही लगने लगा और अफ्रीकी छात्रो का पूरा सगठन पश्चिम अफ्रीकी छात्र-सघ के जिम्मे कर दिया गया। लेकिन दोनो सस्थाए एक-दूसरे से सवद्ध थी और राजनैतिक कार्य भी करती रहती थी।

१९४८ के अक्तूबर महीने मे, लागोस मे, पश्चिम अफ्रीकी राष्ट्रीय

काफ्रेस करने और उसमे समूचे अफ्रीका के विभिन्न राजनैतिक सगठनो और आदोलनो को निमत्रित करने का निश्चय किया गया। इसके लिए मै एक वार फिर पेरिस गया और वहा फ्रास की राष्ट्रीय असेंबली के सदस्यो से मिला। इस सम्मेलन का सयोजक मुझे ही बनाया गया था। लदन लौटते ही मै पूरी शक्ति से काम मे लग गया। सम्मेलन की सफलता के लिए हम ट्रैफलगार स्क्वेअर और हाईड पार्क मे सभा और प्रदर्शन करने लगे। ब्रिटिश पार्लमेंट के एक समाजवादी सदस्य फेनर ब्राकवे इन कामो मे हमारी बडी सहायता करते थे।

मेरी पढाई लगभग छूट चुकी थी। पहले कानून पढना छूटा और फिर शोध-प्रबध भी अधूरा रह गया। एक तो पैसा पास नही था, दूसरे राजनैतिक कामो से दम मारने की भी फुर्सत नही मिल पाती थी, तीसरे अफ्रीकी राष्ट्रवाद के प्रचार और स्वाधीनता की लडाई के तात्कालिक कार्यक्रम के आगे मुझे कानून और दर्शन का अध्ययन वहुत तुच्छ लगने लगे थे।

और मेरी गरीबी मे तो खैर कोई सदेह ही नही था। मै लदन के सबसे सस्ते होटलो मे जाता और चाय की एक प्याली लेकर वहा आनेवालो के साथ राजनैतिक चर्चा करता हुआ पूरा-पूरा दिन बिता दिया करता था। जेब मे पैसा होता तो रोटी का एक-आध टुकडा भी ले लेता था। लेकिन वेचारे होटल-मालिक सभी भले लोग थे। कभी किसीने मुझे 'फालतू' वैठने के लिए नही टोका और न किसीने कभी चले जाने को कहा।

एक दिन मै इसी तरह के होटल मे वैठा पैडमोर के साथ चर्चा कर रहा था। सहसा लगा जैसे कोई घूर रहा हो। देखा तो मेज के पास खडी एक लडकी टकटकी लगाये ताक रही थी। हम फिर बाते करने लगे तो वह उछलकर चिल्ला पडी, "अम्मी, ओ अम्मी! यह तो बोलता है!" मा वेचारी पर तो जैसे घडो पानी पड गया। झपटकर आई कि लडकी को घसीटती हुई ले जाय, पर हम हँस दिये और वोले कि जाने भी दो, अभी बच्चा ही तो है।

पश्चिम अफ्रीकी राष्ट्रीय सचिवालय के समर्थक विद्यार्थियो ने अपने-अपने गुट बना लिये थे और सभी गुट नियमपूर्वक प्रधान कार्यालय मे अपनी वैठके करके चर्चा और वाद-विवाद किया करते थे। ऐसे ही एक गुट का मै अध्यक्ष था। शीघ्र ही यह गुट सचिवालय का हरावल दस्ता बन गया। हम अपने गुट को 'सर्कल' कहने लगे। 'सर्कल' की सदस्यता के लिए सात गिन्निया देनी पडती थी और केवल उन्ही लोगो को सदस्य बनाया जाता था, जो उपनिवेशवाद के विनाश और पश्चिम अफ्रीकी एकता के लिए

लगन से कार्य कर रहे होते थे। 'सर्कल' के सदस्य अफ्रीका महाद्वीप के अपने-अपने देशो मे पहुचकर वहा क्रातिकारी कार्यो को आरभ करने की शिक्षा भी प्राप्त करते थे। एक तरह से 'सर्कल' के सदस्य ही प्रधान कार्यालय के कर्ता-धर्ता थे। नीति-निर्धारण से लेकर कार्यक्रम बनाने, योजनाओ को कार्यान्वित करने, बैठके, बहस-मुबाहसे और भाषण आयोजित करने एव सम्मेलन बुलाने तक सभी काम वे ही करते थे।

एक दिन मुझे अपने पुराने साथी अको अज्जी का, जो गोल्ड कोस्ट लौट चुके थे, पत्र मिला। उन्होने पूछा था कि क्या मै देश लौटकर युनाइटेड गोल्ड कोस्ट कनवेशन का प्रधान मत्री बन सकता हू ? वहा की परिस्थिति के सबध मे उन्होने लिखा था कि कनवेशन के समक्ष बुद्धिजीवी नेतृत्व और सामान्य जनता के बीच की खाई को पाटकर दोनो मे मेल-मिलाप करवाना एक समस्या बन गई है और अमरीका तथा इग्लैड मे मेरी राजनैतिक कार्रवाइयो के आधार पर उन्होने कार्य-समिति के समक्ष मुझे महासचिव बनाये जाने की सिफारिश की, जो स्वीकार कर ली गई थी। कार्य-समिति ने मुझे प्रति मास डेढ सौ पौड वेतन और एक मोटर देना भी स्वीकार किया था। मोटर और वेतन का तो मुझे कोई मोह नही था, लेकिन महासचिव के पद का मोह अवश्य था। विदेशो मे अर्जित सगठनात्मक ज्ञान को व्यावहारिक रूप देकर अपने देशवासियो की सहायता करने का जो स्वप्न मै देखा करता था, उसे मूर्त रूप देने का चिर-अपेक्षित अवसर मुझे इसमे दिखाई दिया।

लेकिन साथ ही इस निमत्रण की सचाई मे कुछ सदेह भी हुआ और फिर यह जानकारी प्राप्त कर लेना भी आवश्यक था कि कनवेन्शन के सचालक कौन लोग है और उनकी नीति, कार्यक्रम और उद्देश्य क्या है। दूसरे, मै उन दिनो पश्चिम अफ्रीकी राष्ट्रीय सम्मेलन की तैयारियो मे भी अत्यधिक व्यस्त था और उस काम को अधूरा छोडकर जा नही सकता था, यद्यपि वह सम्मेलन हो नही सका। मैने अको अज्जी को उत्तर लिख भेजा कि आपके प्रस्ताव पर विचार कर रहा हू।

उन्ही दिनो ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के एक शिक्षक टोनी मैक्लीन गोल्ड कोस्ट मे कुछ मास व्यतीत कर इग्लैड लौटे। उनसे मुझे कनवेशन के नेताओ और उनकी रीति-नीति के बारे मे पूरी-पूरी जानकारी मिल गई। कनवेशन के सस्थापको मे से कइयो को तो वह स्वय व्यक्तिगत रूप से जानते भी थे। उनके कथनानुसार एक विलियम ओफोरी अत्ता को छोड देश की राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक आवश्यकताओ का ज्ञान किसीको

नही था। मैंने पाया कि कनवेशन और उसके नेताओ की रीति-नीति और सिद्धात मेरे राजनैतिक विचारो और क्रातिकारी सिद्धातो के बिलकुल विपरीत थे। घोर प्रतिक्रियावादियो, मध्यमवर्गी वकीलो और व्यापारियो द्वारा सचालित आदोलन के साथ मै अपनेको जोड ही कैसे सकता था ? मैंने न जाने का फैसला कर लिया। तभी मुझे कनवेशन के सस्थापको मे से एक डाक्टर जे० वी० दानका का पत्र मिला। उन्होने भी आग्रह किया था कि मै उस पद को स्वीकार कर लू।

अब तो मैंने कई लोगो से सलाह की, परतु कोई भी ठीक-ठीक राय न दे सका। अत मे मैंने सारा मामला पश्चिम अफ्रीकी राष्ट्रीय सचिवालय के सम्मुख रख दिया। बहुत वाद-विवाद के बाद यही निर्णय हुआ कि मुझे निमत्रण स्वीकार कर लेना चाहिए। स्वीकृति के पक्ष मे सबसे सबल कारण यह था कि अभी तक जिसके लिए अपने-आपको तैयार कर रहा था, उसे आचरण मे लाने और व्यावहारिक रूप देने का इसके द्वारा बहुत उत्तम अवसर अनायास ही मिल रहा था। मैंने भी इसे अपनी कसौटी समझा। जहातक मेरे विचारो और सिद्धातो का प्रश्न था, मै उनपर पूरी तरह दृढ था और मैंने निश्चय कर लिया था कि यदि कनवेशन की कार्यकारिणी अपनी प्रतिक्रियावादी रीति-नीति को बदलने के लिए तैयार न हुई तो उससे दो-दो हाथ करने ही होगे।

निर्णय होने के बाद मैंने स्वीकृति का पत्र भेज दिया और दानका को यह भी लिख दिया कि देश पहुचने के लिए किराये और मार्ग-व्यय आदि के रूप मे सौ-एक पौड की आवश्यकता होगी। युनाइटेड गोल्ड कोस्ट कनवेशन के अध्यक्ष जार्ज ग्राट ने रुपया भेज दिया और मै चलने की तैयारिया करने लगा। मेरा विचार मार्ग मे फ्री-टाउन और मनरोविया मे रुककर आगामी पश्चिम अफ्रीकी राष्ट्रीय काफ्रेस की तैयारी के सिलसिले मे कार्य-कर्ताओ से व्यक्तिगत सपर्क करते हुए गोल्ड कोस्ट पहुचने का था।

...र्थियो और हब्शी मजदूरो से विदा लेने और उन्हे अपना भावी ...के लिए मैंने एक सभा का आयोजन किया। जब लोगो ...ि मै जा रहा हू तो लगे सब विरोध करने। बडी मुश्किल ...र पाया और आश्वासन दिया कि कही भी क्यो न ...ो और अधिकारो के लिए बराबर काम करता रहूगा।

...७ के दिन मै कोजो वोत्सियो के साथ लदन से लिवर-...रगाह के अधिकारियो के साथ एक मजेदार घटना ...ार्टी की बैठको और सभाओ मे मै जाया करता था,

लगन से कार्य कर रहे होते थे। 'सर्कल' के सदस्य अफ्रीका महाद्वीप के अपने-अपने देशो मे पहुचकर वहा क्रातिकारी कार्यो को आरभ करने की शिक्षा भी प्राप्त करते थे। एक तरह से 'सर्कल' के सदस्य ही प्रधान कार्यालय के कर्ता-धर्ता थे। नीति-निर्धारण से लेकर कार्यक्रम बनाने, योजनाओ को कार्यान्वित करने, बैठके, बहस-मुबाहसे और भाषण आयोजित करने एव सम्मेलन बुलाने तक सभी काम वे ही करते थे।

एक दिन मुझे अपने पुराने साथी अको अज्जी का, जो गोल्ड कोस्ट लौट चुके थे, पत्र मिला। उन्होने पूछा था कि क्या मै देश लौटकर युनाइटेड गोल्ड कोस्ट कनवेशन का प्रधान मत्री बन सकता हू ? वहा की परिस्थिति के सबध मे उन्होने लिखा था कि कनवेशन के समक्ष बुद्धिजीवी नेतृत्व और सामान्य जनता के बीच की खाई को पाटकर दोनो मे मेल-मिलाप करवाना एक समस्या बन गई है और अमरीका तथा इग्लैड मे मेरी राजनैतिक कार्रवाइयो के आधार पर उन्होने कार्य-समिति के समक्ष मुझे महासचिव बनाये जाने की सिफारिश की, जो स्वीकार कर ली गई थी। कार्य-समिति ने मुझे प्रति मास डेढ सौ पौड वेतन और एक मोटर देना भी स्वीकार किया था। मोटर और वेतन का तो मुझे कोई मोह नही था, लेकिन महासचिव के पद का मोह अवश्य था। विदेशो मे अर्जित सगठनात्मक ज्ञान को व्यावहारिक रूप देकर अपने देशवासियो की सहायता करने का जो स्वप्न मै देखा करता था, उसे मूर्त रूप देने का चिर-अपेक्षित अवसर मुझे इसमे दिखाई दिया।

लेकिन साथ ही इस निमत्रण की सचाई मे कुछ सदेह भी हुआ और फिर यह जानकारी प्राप्त कर लेना भी आवश्यक था कि कनवेन्शन के सचालक कौन लोग है और उनकी नीति, कार्यक्रम और उद्देश्य क्या है। दूसरे, मै उन दिनो पश्चिम अफ्रीकी राष्ट्रीय सम्मेलन की तैयारियो मे भी अत्यधिक व्यस्त था और उस काम को अधूरा छोडकर जा नही सकता था, यद्यपि वह सम्मेलन हो नही सका। मैने अको अज्जी को उत्तर लिख भेजा कि आपके प्रस्ताव पर विचार कर रहा हू।

उन्ही दिनो ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के एक शिक्षक टोनी मैक्लीन गोल्ड कोस्ट मे कुछ मास व्यतीत कर इग्लैड लौटे। उनसे मुझे कनवेशन के नेताओ और उनकी रीति-नीति के बारे मे पूरी-पूरी जानकारी मिल गई। कनवेशन के सस्थापको मे से कइयो को तो वह स्वय व्यक्तिगत रूप से जानते भी थे। उनके कथनानुसार एक विलियम ओफोरी अत्ता को छोड देश की राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक आवश्यकताओ का ज्ञान किसीको

: ६ :

पुनरागमन

इग्लैड से चलते समय मैंने सोचा था कि रास्ते मे हर अफ्रीकी बदरगाह पर रुकता हुआ अफ्रीकी राष्ट्रवाद और पश्चिमी अफ्रीका के देशो की आगामी काफ्रेस का प्रचार करता चलूगा, लेकिन हमारा जहाज सीधे आकर रुका सीरा लियोन के बदरगाह फ्री-टाउन पर ।

मैंने अपना सामान, जिसमे अधिकतर किताबे ही थी, कोजो बोत्सियो के हवाले किया, जो अकीम के राजकीय महाविद्यालय मे शिक्षक बनकर जा रहे थे, और स्वय एक छोटा-सा सूटकेस लेकर फ्री-टाउन मे उतर पडा । यहा वैलेस जॉन्सन मुझे लेने आये थे । स्वय उनके पास बहुत छोटी-सी जगह थी, इसलिए उन्होने मेरे रहने का प्रबध एक मित्र के यहा कर दिया । वैलेस उन दिनो पश्चिम अफ्रीकी यूथ लीग के अध्यक्ष थे और उनकी रीति-नीति के सबध मे काफी मत-मतातर, विरोध और असतोष व्याप्त हो चला था । सबसे पहले मैंने इस झगडे को निपटाना आवश्यक समझा । मैंने तत्काल सभी [illegible] नेताओ की एक निजी बैठक बुलाई और सारा मामल[illegible] वाद-विवाद के बाद देश मे सयुक्त मोर्चा बनाने [illegible] लिए मिल-जुलकर काम करने का एक [illegible] । अपनी इस सफलता पर मेरा प्रसन्न

इसलिए पुलिस ने मेरे राजनैतिक आचरण के सबध मे बहुत-से तथ्य एकत्र कर उसकी खासी लबी सूची पारपत्र अधिकारियो को भेज दी थी। बडी लबी जिरह और पूछताछ के बाद काफी भिनभिनाते हुए उन्होने मेरे पारपत्र पर मुहर की और तब कही मझे जहाज मे सवार होने दिया गया। मै सोचता हू, मुझसे पिंड छुडाकर उन्हे प्रसन्नता ही हुई होगी, पर साथ ही यह चिता भी अवश्य रही होगी कि पता नही, गोल्ड कोस्ट क्या करने जा रहा हू। यदि वे पूछते तो मै अवश्य बता देता, पर क्या बताने से भी बात उनकी समझ मे आती ?

जिस जहाज से हम चले, उसका नाम 'अकरा' था। जहाज आगे बढता गया और इग्लैड की धरती पीछे और पीछे छूटती चली गई। मै और बोत्सियो डेक पर खडे थे। इस देश को छोडते हुए बडी पीडा और वेदना हो रही थी। यहा के अपने निवास मे मुझे बडा सुख और आनद मिला था और मै इस देश तथा यहा के लोगो को बहुत अधिक प्यार करने लगा था।

और इग्लैड को फिर से देखने के पहले तो अभी बहुत-कुछ होना और देखना बाकी था।

उद्देश्य बताया। प्राय सभीने यही कहा कि लाइवेरिया एक स्वतत्र देश है और पश्चिमी अफ्रीका के देशो की प्रस्तावित काफ्रेंस मे सारे-के-सारे प्रतिनिधि औपनिवेशिक देशो के ही होगे, इसलिए यहा से प्रतिनिधि भेजना तो जरा मुश्किल होगा, लेकिन दर्शक अथवा निरीक्षक अवश्य भेजे जा सकेगे।

वहा से मै गोल्ड कोस्ट के टाकोराडी बदर के लिए रवाना हुआ। लिवरपूल मे जो छान-बीन हुई थी, वह अभी तक दिमाग मे ताजा थी और मै जानता था कि इग्लैड की पुलिस ने मेरे कथित साम्यवादी सबधो के बारे मे यहा की पुलिस को भी अवश्य लिख भेजा होगा, इसलिए मै काफी सतर्क हो गया। जहाज पर मैने किसीको भी अपना नाम नही बताया। बिना नाम बताये ही यात्रियो और मल्लाहो से मिलता-जुलता और हँसी-मजाक करता रहा।

जहाज बदरगाह पर लगा और मुझे अफसरो के सामने जाना ही पडा। पारपत्र मे सारी कैफियत लिखी हुई थी ही। मैने आखे चुराते हुए अपना पारपत्र एक अधिकारी के हाथ मे थमा दिया। वह सयोग से एक अफ्रीकी ही था। जब काफी देर तक वह पारपत्र को हाथ मे लिये रहा और खोलकर नही देखा तो मै आशकित हो उठा। मैने आखे उठाई तो उसने धीरे-से कहा, "अच्छा, तो तुम्ही हो क्वामे एन्क्रूमा।" मैने सोचा कि अब आई मुसीबत, परतु तभी वह मुझे एक ओर ले गया और जरा एकान्त मे जाकर लगा मेरा स्वागत और स्तुति-गान करने। बडे उत्साह से हाथ मिलाकर उसने कहा कि हम लोगो ने आपका नाम तो खूब सुन रक्खा था और यह जानकर प्रसन्न भी थे कि आप देश की सेवा-सहायता के लिए लौट रहे है। बडी उत्सुकता से आपके आगमन की प्रतीक्षा की जा रही थी। आप निश्चित होकर जाइये। कागजो की खाना-पूरी होती रहेगी। पारपत्र की चिता न कीजिये, वह आपके पते पर लौटा दिया जायगा।

एक बार फिर मै अपनी जन्म देनेवाली भूमि पर खडा था। कितना सुखद था उस क्षण का वह अनुभव! मैने श्री आर० एस० ब्ले को टेलीफोन किया। वह एन्जिमावासी वकील सेकोडी मे रहते थे और युनाइटेड गोल्ड कोस्ट कनवेंशन के सदस्य भी थे। वह तुरत आ पहुचे और अपनी मोटर मे मुझे घर ले गये और वही मेरे ठहरने का प्रबध भी कर दिया।

दूसरे दिन मै अपने मित्र अका वाट्सन से मिलने टार्क्वा के लिए चल पडा। मेरी अनुपस्थिति मे अका ही मेरी माताजी की देख-भाल करते रहे थे। मैने उन्हे लदन से लिख दिया था कि वह माताजी को एन्क्रोफुल से टार्क्वा ले आये। मै स्वय एन्क्रोफुल जाना नही चाहता था, क्योकि वहा

जाने पर सबको मेरे लौट आने की बात मालूम हो जाती। दूसरे, मै कुछ दिन आराम भी करना चाहता था।

पूरे बारह वर्षो के बाद हम मा-बेटे का पुनर्मिलन हुआ। माताजी पहले से बहुत दुबली, कमजोर और बूढी हो गई थी। सिर के सारे बाल पक चुके थे। दुर्बल हो जाने के कारण मुझे वह कद मे भी छोटी लग रही थी। यह सब देखकर मुझे आघात-सा लगा और मै पहले तो स्तभित रह गया। फिर मुस्कराया और तब माताजी का ध्यान मेरे दातो की ओर गया। जब अमरीका के लिए चला था तो मेरे ऊपरवाले दो दात बहुत फैले हुए थे और उनके बीच एक चौडी दरार हो गई थी। इससे मुझे भाषण देने मे बडी असुविधा होती थी, क्योकि मै कई शब्दो का और विशेष रूप से अग्रेजी के 'एस' का ठीक से उच्चारण नही कर पाता था। अमरीका मे मैने उन दातो को निकलवाकर दो नकली दात लगवा लिये थे। मेरी माताजी के लिए तो यह कल्पना ही असभव थी। और अब तो उन्हे यह भी सदेह होने लगा कि मै उनका असली बेटा हू भी या नही। निश्चय करने के लिए उन्होने मेरे हाथो की परीक्षा की, तब कही जाकर उन्हे विश्वास हुआ। मै अपने हाथो के कारण कही भी पहचाना जा सकता हू। मेरे हाथ बडे मुलायम और अगुलिया ऊपर से नीचे तक एक-सी गोलाई लिये हुए है, इसीलिए मै अगूठी नही पहन सकता। विश्वास होने की देर थी कि माताजी ने मुझे गले लगा लिया और फफक उठी। मेरी भी आखे भर आई। फिर हम बैठ गये और बाते करने लगे। बारह वर्षो के बीच जो-जो हुआ, वह सब एक-दूसरे को बताने मे हम तल्लीन हो गये। न उन्होने मेरे लौट आने का कारण पूछा, न मैने उन्हे अपना भावी कार्यक्रम बताया।

मै पूरा एक पखवारा टाक्वां मे विश्राम और देश तथा दुनिया की राजनैतिक स्थिति पर विचार करता रहा। साम्राज्यवाद के विरुद्ध उपनिवेशो का मुक्ति-सग्राम सर्वत्र जोरो पर था—चीन, बर्मा, भारत, श्रीलका, फिलिस्तीन, हिदचीन, इडोनेशिया और फिलिपीन ही नही, पश्चिमी अफ्रीका और विदेशो मे अध्ययन कर रहे अफ्रीकी छात्र भी अपने-अपने मुक्ति-आदोलनो के उभार पर थे। कही आजादी की आग फूट निकली थी और कही लावा अदर-ही-अदर खौल रहा था। उदाहरण के लिए गोल्ड कोस्ट को ही ले। जब मै लौटा तो साम्राज्यवादी हमारे देश को एक आदर्श उपनिवेश कहते और प्रशसा करते नही अघाते थे। लेकिन वही शातिपूर्ण देश देखते-ही-देखते अफ्रीकी पुनर्जागरण और पुनरुत्थान का नेता और सदेशवाहक बन गया।

गवर्नर गुगिसबर्ग (१९१७-२७) और गवर्नर बर्न्स (सर एलन बर्न्स १९४१-४७) के कार्यकालो के बीच की अवधि मे हमारे देश की राजनैतिक जाग्रति मे अभूतपूर्व विकास हुआ। गुगिसबर्ग ने अफ्रीकी सरदारो को अपनी लेजिस्लेटिव कौसिल के सदस्य नियुक्त किया और उनकी एक सूबाई समिति भी बनाई। इसका विरोध किया गया, क्योकि यह देश मे अप्रत्यक्ष शासन की प्रणाली का सूत्रपात था—कहने को ओट सरदारो की थी, पर शासन सारा नौकरशाही के हाथ मे था। इससे देश और जनता के कष्टो मे वृद्धि ही हुई। फिर १९३० और उसके बाद के वर्षो की व्यापक मदी का प्रभाव भी पडा। इन सबके कारण गोल्ड कोस्ट की जनता अपने राजनैतिक और आर्थिक प्रश्नो पर सोचने और कुछ करने के लिए विवश होती चली गई।

गवर्नर बर्न्स ने कुछ राजनैतिक सुधार किये। उन्होने अफ्रीकियो को अपनी एक्जीक्यूटिव कौसिल का सदस्य नियुक्त किया, जिसका बुद्धि-जीवियो के एक हिस्से ने यह कहकर विरोध किया कि व्यवस्थापिका मे सभी नियुक्तिया सरकार के समर्थक लोगो की ही की गई है। विरोध-प्रदर्शन के रूप मे सवैधानिक सुधारो का एक स्मृतिपत्र तैयार करके उपनिवेश-मत्री (सेक्रेटरी ऑव स्टेट फार कालोनीज) को भेजा गया। यह तो स्वीकार नही हुआ, पर बदले मे गवर्नर बर्न्स का नया विधान, जिसे उन्होने लेजिस्लेटिव कौसिल के अफ्रीकी सदस्यो एव सरदारो की सहायता से तैयार किया था, १९४४ के अक्तूबर महीने मे मजूर कर लिया गया। इसका देश मे मिश्रित स्वागत हुआ। कुछने इसे स्व-शासन की दिशा मे महत्वपूर्ण प्रगति बताया, परतु राजनैतिक दृष्टि से जाग्रत तत्वो ने शीघ्र ही इसकी निस्सारता को देख लिया और इसके विरोध मे प्रचार करने लगे। यह विरोधी प्रचार बडा ही सफल रहा और उससे प्रोत्साहित होकर देश का बुद्धिजीवी वर्ग बर्न्स के विधान को विफल करने के लिए राजनैतिक आदोलन छेडने की योजनाए बनाने लगा। लेकिन आदोलन के सचालन के लिए सुसगठित राजनैतिक दल अथवा पार्टी की बात किसीको भी नही सूझी। देश मे मैने ही पहले-पहल एक राजनैतिक दल का सगठन किया, इसीलिए मेरे विरोधी अनेक अन्य अपराधो के साथ देश मे दलगत राजनीति आरभ करने का दोषारोपण भी मुझपर करते आये है।

इन्ही दिनो अर्थात् १९४७ के दिसबर महीने की २९वी तारीख को साल्टपोड मे युनाइटेड गोल्ड कोस्ट कनवेशन (युगोकोक) की स्थापना इसलिए की गई कि 'सभी उचित और वैध उपायो के द्वारा सरकार का

मैंने कनवेशन का विधान पढा तो यह देखकर मुझे बडा आश्चर्य हुआ
समिति ने अपने-आपको केवल कालोनी और कुछ हद तक अशाटी
ीमित रक्खा था। देश के दो बडे भाग—उत्तरी क्षेत्र (नार्दर्न टेरी-
और ट्रासवोल्टा/टोगोलैड का उसमे समावेश नही किया गया था।
आवश्यक समझा कि एक साथ सारे देश मे सयुक्त कार्रवाई होनी
, क्योकि देश के सभी भागो को साथ लेकर चलने पर ही हम अपना
ट लाभ कर सकते थे। मैंने विधान मे चारो भागो के समावेश का
। दिया, जिसे कार्यसमिति ने स्वीकार कर लिया।

फिर कनवेशन के झडे का प्रश्न उठा। इसके निपटारे के लिए अलग से
बैठक करनी पडी। कनवेशन के वकील सदस्यो का कहना था कि किसी
सगठन का अपना झडा रखना और फहराना कानून की दृष्टि मे दडनीय
राध है। इसके लिए उन्होने दडसहिता के उद्धरण-पर-उद्धरण पढकर
ा डाले। पर मै अपनी वात पर अडा रहा और दुनिया के विभिन्न देशो
दलो और उनके झडो का उल्लेख करता रहा। मेरे अकाट्य तर्कों के
ागे वकील-समुदाय को हार माननी पडी। उसी समय झडे के तीन रगो का
ी निर्णय हो गया—लाल, सफेद और सुनहरा। चिह्न के रूप मे मैंने उडता
हुआ गरुड सुझाया, जो दानका और उनके दो साथियो को स्वीकार न
हुआ। दूसरे दिन की बैठक मे उन्होने एक ऐसे प्राणी का सुझाव रक्खा, जिसके
दो सिर और एक पेट होता है और जो अफ्रीकावासियो की धारणा के
अनुसार घोर स्वार्थपरता का प्रतीक माना जाता है। इसपर मत-विभाजन
हो गया और दानका को हारना पडा।

इन सब मामलो से निपटने के वाद मै कनवेशन की शाखाए खोलने के
काम मे जुट गया। यो कहने को तो पहले भी तेरह शाखाए थी, पर एक-दो
को छोड सभी केवल नाम की और निष्क्रिय थी। मैंने शीघ्र ही दौरा करके
ोने के अन्दर अकेले कालोनी मे ही पाच सौ शाखाए स्थापित कर
मैंने सभी सदस्यो को सदस्यता-कार्ड दिये, सदस्यता-शुल्क एकत्र
या और चदा उगाहा और थोडे ही दिनो मे कार्यसमिति की ओर से
क मे खाता भी खोल दिया।

उन दिनो गोल्ड कोस्ट मे राजनैतिक सगठन वनाना और उसके लिए
करना वडा मुश्किल काम था। सडके नही, केवल ऊवड-खावड रास्ते थे,
ो मोटर मुझे दी गई थी वह एकदम खटारा थी। प्राय रास्ते मे विगड
और मुझे शेष यात्रा पैदल या किसी ट्रक के द्वारा करनी पडती और
भी तो वीच रास्ते मे ही रात गुजारनी पड जाती थी। उन दिनो

जनवरी महीने से मैने कनवेशन के महासचिव के रूप म कार्य आरभ किया । दो हफ्ते तो मुझे दफ्तर जमाने मे ही लग गये । वडी मुश्किल से यूनाइटेड अफ्रीका कपनी का एक पुराना दफ्तर किराये पर मिला । यह कपनी पश्चिमी अफ्रीका मे कारवार करनेवाले ब्रिटिश व्यावसायिक प्रतिष्ठानो मे सवसे वडी थी । जल्दी ही एक टाइपिस्ट भी मिल गया । २० जनवरी १९४८ को मैने कनवेगन की कार्यसमिति की पहली वैठक की । इसमे मैने सदस्यो के विचारार्थ आदोलन के सगठन के लिए कार्यक्रम का एक मसविदा पेश किया ।

सवसे पहले तो मैने इस वात पर जोर दिया कि देश के स्वतत्र हो जाने के वाद देशवासियो की प्रगति और विकास के लिए हम जितने भी मत्रालय स्थापित करेगे, उनके कार्यो और दायित्वो को अभी से सीखने-समझने के लिए एक समिति वना लेनी चाहिए और उस समिति के सदस्यो को यह काम सौप देना चाहिए, नही तो स्वाधीनता के वाद की परिस्थितियो का हम पूरी सन्नद्धता से सामना नही कर सकेगे और पहले से तैयारिया न होने के कारण अपने-आपको वडी कठिनाइयो मे फसा हुआ पायगे ।

इसके वाद मैने अपने कार्यक्रम के सगठनात्मक कार्यो को तीन मजिलो मे विभक्त किया । पहली मजिल मे कनवेशन के सदस्य वनाने और अन्य राजनैतिक एव जन-सगठनो को कनवेशन से सवद्ध करने के साथ-साथ कनवेशन की वर्तमान शाखाओ को अधिक सक्रिय और अधिक शक्तिशाली वनाना, देश के प्रत्येक गाव, नगर और कस्वे मे नई शाखाए खोलकर वहा के ओडिकरो (सरदार-मुखिया) को उनका सरक्षक वनाना, और लोक-शिक्षण के लिए कनवेशन की हर शाखा मे राजनैतिक पाठशाला खोलना आदि सगठनात्मक काम रक्खे गए थे । दूसरी मजिल आदोलनात्मक थी, जिसमे वढते हुए राजनैतिक सकट का उपयोग देशव्यापी प्रदर्शनो के आयोजनो मे करना और इस तरह अपनी सगठनात्मक शक्ति को तौलना भी था । तीसरी और अतिम मजिल सघर्षात्मक था । इसमे दो मुख्य काम वताये गए थे । एक तो देश की स्वाधीनता और सार्वभौमत्व का सविधान वनाने के लिए विधान-परिषद् का अधिवेशन और दूसरे, स्वराज्य की प्राप्ति के लिए प्रदर्शन, वायकाट और आम हडताल का व्यापक पैमाने पर सगठन ।

उस समय तो कार्यसमिति ने मेरे कार्यक्रम को सिद्धातत स्वीकार कर लिया और मुझे सगठन को दृढ वनाने के काम मे जुट जाने का आदेश दिया, परतु वाद मे वाट्सन-आयोग के आगे सभी सदस्यो ने इस कार्यक्रम को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया ।

जब मैने कनवेशन का विधान पढा तो यह देखकर मुझे बडा आश्चर्य हुआ कि कार्यसमिति ने अपने-आपको केवल कालोनी और कुछ हद तक अशाटी तक ही सीमित रक्खा था। देश के दो बडे भाग—उत्तरी क्षेत्र (नार्दर्न टेरीटरीज) और ट्रासवोल्टा/टोगोलैड का उसमे समावेश नही किया गया था। मैने यह आवश्यक समझा कि एक साथ सारे देश मे सयुक्त कार्रवाई होनी चाहिए, क्योकि देश के सभी भागो को साथ लेकर चलने पर ही हम अपना अभीष्ट लाभ कर सकते थे। मैने विधान मे चारो भागो के समावेश का सुझाव दिया, जिसे कार्यसमिति ने स्वीकार कर लिया।

फिर कनवेशन के झडे का प्रश्न उठा। इसके निपटारे के लिए अलग से एक बैठक करनी पडी। कनवेशन के वकील सदस्यो का कहना था कि किसी भी सगठन का अपना झडा रखना और फहराना कानून की दृष्टि मे दडनीय अपराध है। इसके लिए उन्होने दडसहिता के उद्धरण-पर-उद्धरण पढकर सुना डाले। पर मै अपनी बात पर अडा रहा और दुनिया के विभिन्न देशो के दलो और उनके झडो का उल्लेख करता रहा। मेरे अकाट्य तर्को के आगे वकील-समुदाय को हार माननी पडी। उसी समय झडे के तीन रगो का भी निर्णय हो गया—लाल, सफेद और सुनहरा। चिह्न के रूप मे मैने उडता हुआ गरुड सुझाया, जो दानका और उनके दो साथियो को स्वीकार न हुआ। दूसरे दिन की बैठक मे उन्होने एक ऐसे प्राणी का सुझाव रक्खा, जिसके दो सिर और एक पेट होता है और जो अफ्रीकावासियो की धारणा के अनुसार घोर स्वार्थपरता का प्रतीक माना जाता है। इसपर मत-विभाजन हो गया और दानका को हारना पडा।

इन सब मामलो से निपटने के बाद मै कनवेशन की शाखाए खोलने के काम मे जुट गया। यो कहने को तो पहले भी तेरह शाखाए थी, पर एक-दो को छोड सभी केवल नाम की और निष्क्रिय थी। मैने शीघ्र ही दौरा करके छ महीने के अन्दर अकेले कालोनी मे ही पाच सौ शाखाए स्थापित कर दी। मैने सभी सदस्यो को सदस्यता-कार्ड दिये, सदस्यता-शुल्क एकत्र किया और चदा उगाहा और थोडे ही दिनो मे कार्यसमिति की ओर से बैक मे खाता भी खोल दिया।

उन दिनो गोल्ड कोस्ट मे राजनैतिक सगठन बनाना और उसके लिए दौरे करना बडा मुश्किल काम था। सडके नही, केवल ऊबड-खाबड रास्ते थे, और जो मोटर मुझे दी गई थी वह एकदम खटारा थी। प्राय रास्ते मे बिगड जाती और मुझे शेष यात्रा पैदल या किसी ट्रक के द्वारा करनी पडती और कभी-कभी तो बीच रास्ते मे ही रात गुजारनी पड जाती थी। उन दिनो

मेरे पास सामान ही इतना-सा था, जो एक छोटे सूटकेस मे आ जाता और मै उसे स्वय उठाकर मीलो चल सकता था। उन आरभिक दिनो मे मैने देश के कोने-कोने की यात्राए की, कनवेशन की शाखाए खोली, राजनैतिक सपर्क बनाये और भाषण तो सैकडो ही दे डाले होगे।

जनता का असतोष बढता जा रहा था। सबसे अधिक बेचैनी और गुस्सा दूसरे महायुद्ध के मोर्चे से लौटे सैनिको मे था। वे अपने अधिकारो और जीवन-स्तर को ऊचा उठाने के सघर्ष मे आते ही जुट गये। लेकिन शिक्षित अफ्रीकियो मे घोर निराशा थी, क्योकि राजनैतिक शक्ति का ज्ञान और अनुभव उन्हे आजतक नही हो पाया था। कुल मिलाकर परिस्थिति राष्ट्र-व्यापी आदोलन के अनुकूल ही थी। राजनैतिक दमन और आर्थिक कठिना-इयो के प्रति जनता सजग हो चली थी। इसका पहला विस्फोट हुआ जनवरी १९४८ मे।

उन दिनो मै विदेश से लौटा ही था और टाक्वी मे अपनी माताजी के पास एक पखवारे की छुट्टी मना रहा था। सहसा मैने सुना कि एक देश-व्यापी बहिष्कार-आदोलन छिड गया है। उस आदोलन का प्रणेता गा राज्य का उप-सरदार नी क्वावेना बोन था। वह आदोलन सीरियाई व्यापारियो और विदेशी दुकानदारो की मुनाफाखोरी और दाम बढाने के विरोध मे आरभ किया गया था। कई सरदार उस आदोलन के समर्थक थे। वास्तव मे देखा जाय तो वह मुद्रास्फीति के विरोध मे जनता की सक्रिय कार्रवाही थी। टाक्वी मे ही एक विशाल सार्वजनिक सभा हुई, जिसमे नी बोन ने भाषण दिया। इच्छा रहते हुए भी किसी कारणवश मै उस सभा मे उपस्थित न हो सका। पूरे एक महीने तक आदोलन चलता रहा और धीरे-धीरे सारे देश मे फैल गया, परतु कही उपद्रव और हिसात्मक कार्रवाही नही हुई। शातिपूर्ण ढग से ही सारा आदोलन सचालित हुआ था।

आदोलन के पूरे महीने-भर मै कनवेशन के महासचिव के नाते अपना दफ्तर सगठित करने और शाखाए खोलने के काम मे लगा रहा। इसीलिए आदोलन के साथ सहानुभूति होते हुए भी मै उसमे सक्रिय रूप से हिस्सा न ले सका। लेकिन आदोलन का आरभ, मेरा स्वदेश लौटना और कनवेशन का महासचिव बनाया जाना, सब साथ-साथ हुए, इसलिए सरकार और मेरे राजनैतिक विरोधियो ने यही माना कि उस आदोलन को छेडने मे मेरा प्रमुख हाथ था।

नी बोन और बहिष्कार-आदोलन के उनके समर्थक कनवेशन के सदस्य नही थे और कनवेशन का भी उनके आदोलन से कोई सबध नही था,

परतु इतना तो मुझे कहना ही होगा कि स्वराज्य के अपने आन्दोलन में हम जनता के किसी भी असतोष और किसी भी शिकायत का, यदि उससे हमारे राजनैतिक उद्देश्यो की पूर्ति होती हो तो, उपयोग करने को स्वतत्र थे और अवसर मिलने पर अवश्य करते ।

२९ फरवरी १९४८ के दिन मैंने अकरा मे अपना पहला भाषण दिया । भाषण देने के लिए मै साल्टपोड से मोटर द्वारा अकरा के लिए चला, परतु नियमानुसार मोटर ने धोखा दिया और पहुचते-पहुचते काफी देर हो गई । मै डर रहा था कि लोग चले गए होगे । परतु गया कोई नही था, मुझे सुनने के लिए हजारो की भीड डटी हुई थी । उस भाषण के बाद तो मुझे और भी विश्वास हो गया कि गोल्ड कोस्ट की जनता की राजनैतिक चेतना पूर्णत परिपक्व हो गई थी और सक्रिय कार्रवाही का समय आ गया था ।

२८ फरवरी १९४८ को, समझौते के परिणामस्वरूप वहिष्कार-आदोलन वद कर दिया गया । उसी दिन भूतपूर्व सैनिको की यूनियन ने अकरा मे गवर्नर के सम्मुख अपनी मागे और शिकायते पेश करने के लिए प्रदर्शन किया । सैनिको के प्रदर्शन का दिन पहले से निश्चित था और उसका बहिष्कार-आदोलन से कोई भी सबध न था ।

निर्धारित समय पर सैनिक जुलूस वनाकर गवर्नर हाउस (राजभवन) की ओर चले । जब वे क्रिश्चियनबोर्ग कैसल को जानेवाली सडक के मुहाने पर आये तो पुलिस ने उन्हे आगे वढने से रोक दिया । सैनिको ने कहा कि हमारा जुलूस शातिपूर्ण है और हमे गवर्नर से मिलने दिया जाय । इसी वात को लेकर कहा-सुनी और छीना-झपटी हो गई और गोरे पुलिस अधिकारी ने गोली चलवा दी । दो भूतपूर्व सैनिक वही मारे गए और पाच अफ्रीकी नागरिक घायल हुए ।

जैसे ही यह खवर अकरा नगर के व्यावसायिक हलको मे पहुची, नागरिको का रोष भडक उठा । वहिष्कार-आदोलन आज ही वद हुआ था और लोग खरीद-फरोख्त के लिए हजारो की सख्या मे बाजारो मे घूम रहे थे । समझौते की शर्तो के अनुसार सीरियाई और अन्य विदेशी दुकानदारो ने अपने माल के दाम भी नही घटाये थे । लोगो मे इससे गुस्सा तो था ही, गोली चलने की खवर ने उसमे तेल का काम किया । लूटपाट और दगा शुरू हो गया और कई दिनो तक चलता रहा ।

दगे की खवर मिलते ही मै साल्टपोड से भागकर अकरा आया । वहा की हालत उससे कही विषम निकली, जो मैने सुन रक्खी थी । लूटपाट

और दगे का वाजार अव भी गर्म था। कई इमारते जला दी गई थी, जिनमे युनाइटेड अफ्रीका कपनी और यूनियन ट्रेडिंग कपनी के वडे-वडे स्टोर्स भी थे। कुल मिलाकर २० आदमी मारे गए और २३७ घायल हुए थे ।

इस सकटापन्न स्थिति पर विचार करने के लिए मैंने तत्काल कनवेशन की कार्यकारिणी समिति की वैठक वुलाई और इग्लैड के उपनिवेश-मत्री को दो तार भेजे गए। दोनो तारो मे जनता और सरदारो की ओर से यह माग की गई थी कि अविलव एक विशेष आयुक्त भेजा जाय, जो जनता और सरदारो की अतरिम सरकार को शासन सौपने और विधान-परिषद् का अधिवेशन आयोजित करने का काम करे। मै जानता था कि केवल तार भेजने से गोल्ड कोस्ट मे ब्रिटिश साम्राज्य को समाप्त नही किया जा सकता, परतु अवसर से लाभ उठाने मे हानि ही क्या थी !

मेरे अकरा मे रहते ही यह अफवाह उडी कि पुलिस युनाइटेड गोल्ड कोस्ट कनवेशन के छ नेताओ की खोज मे है। तभी सौभाग्य से दो महिलाए मुझे आश्रय देने को तैयार हो गई। मै अपने टाइपराइटर के साथ उनके घर मे जा छिपा। वे वेचारी रात-दिन मेरी सुरक्षा के लिए पहरा दिया करती थी। उसी घर मे छिपकर रहते हुए मैंने कनवेशन पीपुल्स पार्टी की सारी योजना और उसका कार्यक्रम वनाया था। जव गवर्नर ने सकटापन्न स्थिति की घोषणा कर दी और मेरे उस घर मे रहने से घरवालो के सकट मे पडने की आशका हो गई तो मै चुपचाप अकरा से साल्टपोड चला आया।

७

गिरफ्तारी और नजरबंदी

लौटकर साल्टपोड आया तो पता चला कि यूनाइटेड अफ्रीका कपनी ने दफ्तर खाली करने का नोटिस दे दिया था। मेरा खयाल है कि नोटिस दिलवाने मे शासन का ही हाथ रहा होगा। उन्हे अवश्य ही यह भ्रम हो गया था कि अकरा के दगो मे मेरा हाथ था।

दूसरे दिन मै नई जगह के लिए दौड-धूप करता रहा और प्रास्पेक्ट हिल मे एक मौके की जगह मिल गई। इस नई जगह दफ्तर जमाने मे करीव-करीब पूरा सप्ताह लग गया। तभी पता चला कि युनाइटेड गोल्ड कोस्ट कनवेशन के छहो बडे नेताओ को गिरफ्तार किया जानेवाला है। इन छ. वडो मे दानका, ओफोरी अत्ता, अकुफो अद्दो, अको अज्जी, ओबेत्सेबी लापटी और मै था।

जिस दिन यह समाचार मिला, उसी रात को दो गोरे पुलिस अफसर और सादे कपडो मे दो अन्य पुलिस अधिकारी मेरे यहा आये और मुझे सोते से जगाया। मै अभी ठीक से जाग भी नही पाया था कि उन्होने मेरी तलाशी भी ले डाली। केवल दो चीजे बरामद हुई, जो उनके खयाल मे आपत्तिजनक थी और जिन्हे पाकर वे बडे प्रसन्न हुए। उनमे एक तो बगैर हस्ताक्षर का कम्यूनिस्ट पार्टी का सदस्यता-कार्ड था और दूसरा 'सर्कल' से सबधित कोई दस्तावेज। उन्होने दोनो चीजो को जब्त कर लिया और लगे मुझसे जिरह करने, "यह कार्ड तुम्हारे पास कहा से आया ?" "तो तुम ब्रिटिश कम्यूनिस्ट पार्टी के मेबर हो ?" आदि-आदि। मैने उन्हे सच-सच वता दिया कि वगैर दस्तखतवाले कार्ड का कोई महत्व नही होता और इग्लैड मे तो प्राय सभी गरम और नरम पार्टियो से मेरा सबध था, क्योकि उनकी कार्य-प्रणालियो का अध्ययन कर स्वदेश आने पर मै अपनी राष्ट्रीय पार्टी का गठन करना चाहता था। इसके वाद उन्होने फिर कुछ नही पूछा, केवल इतना कहा, "टोप पहनकर आगे हो जाओ।" मैने जवाव दिया, "टोप तो मै कभी पहनता ही नही।" जब उन्होने चलने का इशारा किया तो मैने वारट दिखाने को कहा। वे वारट लेकर ही आये थे। कागज तो सडा-सा था, परतु गोल्ड कोस्ट के उस समय के गवर्नर सर जेराल्ड क्रीमी ने स्वय अपने दस्तखतो से उसे जारी किया था। तारीख पडी थी १२ मार्च, १९४८।

मै उनके साथ हो लिया। नीचे उतरकर देखा तो सगीने ताने हथियार-वद पुलिस का एक पूरा दस्ता खडा था। मै घवराकर दो कदम पीछे हट गया। मन मे खयाल आया कि कही गोली मारने को तो नही ले जा रहे है! मैने उनके कप्तान से पूछा कि क्यो भाई, क्या इरादा है ? तो पहले तो उसने दो दस्ती वम हवा मे इस तरह उछाले मानो रवर की गेद हो और फिर वडी फोश जवान मे गालिया वककर वोला, "वडा चला है गोल्ड कोस्ट का गवर्नर वनने! ऐसो के साथ जो सलूक किया जाता है, कहे तो करके दिखा दे !" और वह चुप हो गया, शायद कोई वहुत ही फोश गाली ढूढ रहा था। तव मैने वडी ही शाति से कहा, "आप अपनी वात कह चुके ? अगर कह चुके हो तो आइये, चला जाय।" इसपर उन्होने मुझे घसीटकर एक मोटर-गाडी मे डाल दिया और दो वन्दूकधारी सिपाही मेरे दोनो ओर वैठ गये। मोटर चल दी और मुझे विश्वास हो गया कि जरूर वस्ती से दूर कही गोली मारने के लिए ले जाया जा रहा हू। मन मे चिंता थी, क्रोध था, लेकिन फिर भी झपकिया आने लगी थी।

काफी देर तक चलने के वाद मोटर रुकी और मै वाहर घसीट लिया गया। देखा तो हम अकरा के हवाई अड्डे पर थे! वाकी पाचो साथी भी मेरे ही जैसी हालत मे वहा लाये गए। उन्हे देखकर मन मे कुछ ढाढस वधा। फिर हम 'छहो वडे' वायुयान द्वारा अशाटी प्रदेश के कुमासी जेल मे पहुचा दिये गए।

यह सव इतनी जल्दी हुआ कि वहुत देर तक तो एक दु स्वप्न ही प्रतीत होता रहा। इस जेल मे हम तीन दिन रहे। वहा हमारी चर्चा का मुख्य विपय तो यह होता था कि यदि हाल के दगो पर कोई जाच-आयोग नियुक्त किया जाय तो उसके समक्ष हमे क्या रख अख्तियार करना चाहिए। उसके साथ ही हम वर्न्स-विधान की समाप्ति और देश के स्वराज्य प्राप्त कर लेने पर जो मन्त्रिमडल वनेगा, उसमे नियुक्त किये जानेवाले मन्त्रियो के वारे मे भी सोचा-विचारा करते थे।

मुझमे और मेरे शेष साथियो मे वडे गहरे मतभेद है, इस वात का पता यही आने पर मुझे पहले-पहल हुआ। चर्चा हो या वाद-विवाद, वे पाचो एक ओर हो जाते थे और सव मिलकर मेरी हर वात का खडन करने लगते थे। अपनी गिरफ्तारी का कारण भी वे मुझको ही समझते थे। साफ-साफ कहने भी लगे थे कि मुझे कनवेशन के महासचिव-पद के लिए वुलाकर उन्होने वडी गलती कर डाली। मेरा नाम सुझाने के लिए अको अज्जी को भी जी भर-कर कोसा जाता था।

तीसरे दिन सवेरे-सवेरे कोई तीन बजे के लगभग हमे फिर नीद से जगाया गया और तैयार होने का हुक्म मिला। इसका कारण मुझे बाद मे मालूम हुआ और वह यह था कि जब अशाटी के युवको को हमारे कुमासी जेल मे होने का पता चला तो उन्होने क्रोबो एड्सी (जो आजकल बिना विभाग के मत्री है) के नेतृत्व मे जेल पर आक्रमण कर हमे छुडाने की योजना बनाई। जेल के अधिकारियो को मालूम हो गया और उन्होने हमे वहा से पहले ही खिसका दिया।

कुमासी मे हम मोटर बस के द्वारा नार्दर्न टेरीटरीज़ की राजधानी टामाले लाये गए। आठ घटे मे हम वहा पहुचे और रास्ते की धूल तथा धक्को ने हमारे बुरे हाल हो गये। टामाले के लोगो को किसी तरह पहले ही मालूम हो गया कि हम लाये जा रहे है, इसलिए हमे देखने को अच्छी-खासी भीड जमा हो गई। लेकिन वह सीधे-सादे लोगो की निष्क्रिय भीड थी और हमे देखकर भीड के समस्त नर-नारी इस तरह रो रहे थे मानो हम फासी पर लटकाने के लिए ले जाये जा रहे हो।

टामाले मे हमे तीन दिन शहर के बाहर एक बगले मे रखा और फिर छहो को अलग-अलग स्थानो मे भेज दिया गया। मै वहा से लावरा नामक स्थान पर ले जाया गया। यहा पुलिस के कडे चौकी-पहरे मे मुझे एक छोटी-सी झोपडी मे रख दिया गया। यहा मै बिलकुल अकेला था और निरा एकात, लेकिन फिर भी वह मुझे सुखद ही लगा। एक तो अपने साथियो के तानो से तग आ गया था और फिर पूरे तेरह वर्ष के बाद एकात और शाति मिली थी। कम-से-कम यहा मेरी हर बात और हर योजना का विरोध करने के लिए पाच आदमियो का प्रचड बहुमत तो नही था। समाचार-पत्र नही दिये जाते थे, परन्तु पुस्तके और चिट्ठी-पत्री मिल जाती थी, जिन्हे पहले जिला आयुक्त से सेंसर करवाना आवश्यक था।

यहा आने पर पता चला कि हाल के दगो की जाच-पडताल के लिए एक जाच-आयोग नियुक्त हुआ है, हमे उसके आगे वयान देना होगा और कार्यसमिति के जो सदस्य वाहर रह गये थे, उन्होने हमारी सहायता के लिए एक अग्रेज वकील श्री डिगले फुट को नियुक्त कर लिया है। आयोग के अध्यक्ष श्री आइकेन वाट्सन के सी सहित, चार सदस्य थे।

आयोग अप्रैल १९४८ मे आया और सवसे पहला काम यह किया कि हमारी रिहाई का हुक्म दे दिया, जिसमे हम आयोग के सामने उपस्थित हो सके। आयोग ने गवाही देने और जिरह करने के लिए हममे से प्रत्येक को अलग-अलग बुलाया। वहा सवसे मजेदार वात यह रही कि यूनाइटेड गोल्ड कोस्ट कनवेशन की कार्यसमिति के समक्ष मैने जो कार्यक्रम रक्खा था और सगठन बनाने के लिए जो सुझाव दिये थे, उनका उत्तरदायित्व लेने से, एक श्री एस ई अका को छोड, सभीने इनकार कर दिया। हा, जिरह मे अवश्य कइयो ने यह स्वीकार किया कि मैने कार्यक्रम और सुझाव रखे जरूर थे। आयोग के समक्ष मेरे वारे मे उन सवका रुख यही था कि मै कनवेशन का वेतनभोगी नौकर था, अतएव मेरे सभी कार्यो के लिए उन्हे उत्तरदायी नही ठहराया जा सकता।

आयोग ने जून महीने मे सरकार को अपना प्रतिवेदन भेजा और सुझाव दिया कि वर्न्स-विधान को रद्द कर देना चाहिए और कोई ऐसा नया जनवादी विधान लागू करना चाहिए, जो स्वय अफ्रीकियो द्वारा वनाया गया हो। आयोग जनता को राजनैतिक अधिकार देने के पक्ष मे था और इसीलिए उसने नया विधान वनाने के लिए शीघ्र ही एक समिति स्थापित करने की सलाह सरकार को दी थी।

मेरे सवध मे भी आयोग ने अपने प्रतिवेदन मे काफी विस्तार से लिखा। जब मेरी वारी आई तो आयोग के अध्यक्ष ने सबसे पहले तो यह पूछा कि इग्लैड और अमरीका मे मै क्या पढता रहा हू। जब मैने उन्हे अपने अध्ययन के सवध मे सब-कुछ वता दिया तो उन्होने अपनी भौहे चढाकर आयोग के अन्य सदस्यो से कहा, "बधुओ, अव हमे कुछ गहरे पैठना होगा।" और आयोग ने गहरे पैठकर मेरे सवध मे जो जानकारी प्राप्त की, वह उन्हीके प्रतिवेदन के अनुसार इस प्रकार थी

"श्री एन्क्रूमा ने इग्लैड और अमरीका मे रहते हुए अनेक विषयो का अध्ययन किया और दोनो देशो के प्राय सभी राजनैतिक सगठनो मे प्रमुख रूप से भाग लिया, जिससे स्वदेश लौटकर वह अग्रगामी अफ्रीकी नीति का निर्माण और प्रचार कर सके। स्वयं उनकी विनम्र स्वीकृति के अनुसार

ब्रिटेन के कम्यूनिस्टो से उनके सबध रहे है और वह वहा के पश्चिम अफ्रीकी राष्ट्रीय सचिवालय के प्रमुख कार्यकर्ता थे। इस सगठन का उद्देश्य पश्चिमी अफ्रीका के उपनिवेशो की एकता रहा है, जो वास्तव मे पश्चिम अफ्रीकी सोवियत समाजवादी गणतन्त्रो के सघ की स्थापना का ही अग्रिम चरण है।

"श्री एन्क्रूमा की कोटि का एक भी वक्ता अफ्रीकियो मे नही, परतु वह हमारे सामने इस तरह उपस्थित हुए मानो कनवेशन के 'विनम्र और आज्ञाकारी सेवक' हो, जबकि सत्य यह है कि उनके आगमन पर कनवेशन की कार्यसमिति ने बडे उत्साह से स्वागत किया और एक सदस्य ने तो निमत्रण मे ही लिख दिया था कि 'तुम सारे सगठन को अपना निजी समझकर उसका उपयोग करना'। इस सबसे यही सिद्ध होता है कि कनवेशन मे उनका पद सर्वाधिकारी सगठनो के सचिवो की ही भाति व्यापक और पूर्ण अधिकारो से युक्त है।

"श्री एन्क्रूमा के कागज-पत्रो मे 'सर्कल' नामक किसी गुप्त सगठन के विधान का एक दस्तावेज भी बरामद हुआ है। इस सगठन के सदस्यो को व्यक्तिगत रूप से श्री एन्क्रूमा मे आस्था रखने का अभिवचन देना होता है और विश्वासघात करने पर भयकर परिणामो की धमकिया दी गई है।

"दगो के पहले जो कार्यक्रम प्रसारित किया गया, उसमे श्री एन्क्रूमा ने ठीक वही बात उसी ढग से कही है, जो कम्यूनिस्टो की गुलामी मे फसनेवाले देशो मे कही जाती है। कार्यसमिति के सदस्यो का यह कथन कि उन्होने उस कार्यक्रम को पढा नही, हम कभी स्वीकार नही कर सकते। पढा उन्होने अवश्य है, परतु ध्यान नही दिया, क्योकि राजनैतिक सत्ता को हस्तगत करने के लिए वे इतने उत्सुक और व्यग्र हो उठे थे कि उसके लिए अपनाये जानेवाले साधनो की ओर उनका ध्यान ही नही जाने पाया।

"श्री एन्क्रूमा का लक्ष्य अब भी पश्चिम अफ्रीकी सोवियत समाजवादी गणतन्त्रो के सघ की स्थापना करना है और वह आज भी इसपर अडिग है और इसीलिए उन्होने इस उद्देश्य से सबधित विदेशी सपर्को से नाता नही तोडा है। और इस तथ्य से अवगत होते हुए भी कनवेशन की कार्यसमिति श्री एन्क्रूमा से अपना सबध-विच्छेद नही करती।"

यहा इस बात का उल्लेख आवश्यक है कि 'सोवियत' शब्द का प्रयोग मैने अपने किसी भी दस्तावेज मे, यहातक कि 'सर्कल' वाले दस्तावेज मे

भी, नही किया था। यह शब्द केवल आयोग के अधिकारियो के दिमाग की उपज थी। वे मुझे 'खतरनाक' और 'निगरानीशुदा' करार दे देना चाहते थे, इसलिए उन्होने सोचा कि 'सोवियत' शब्द का प्रतिवेदन मे दो-चार वार उपयोग कर देने से काम चल जायगा। उनका विचार ठीक भी था। उन दिनो सोवियत शब्द का अर्थ था गोल्ड कोस्ट और समस्त अफ्रीका महाद्वीप के लिए चरम कोटि का कम्यूनिस्ट खतरा!

सरकार ने वाट्सन-आयोग के सुझावो को मान लिया और फलस्वरूप १९४८ के दिसवर महीने मे गवर्नर ने सविधान बनाने के लिए एक समिति नियुक्त कर दी, जिसे उसके सभापति न्यायाधीश कौसी के नाम पर कौसी-विधान-समिति कहा जाता है। इस समिति के कुल चालीस सदस्य थे और प्रत्येक की नियुक्ति गवर्नर ने स्वय की थी। लेकिन समिति के सदस्यो मे मजदूरो, किसानो, खनको, छोटे दुकानदारो और ट्रेड यूनियन आदोलन से एक भी व्यक्ति नही लिया गया था। इसलिए समिति के प्रति लोगो का असतोष और रोष उचित ही था। कौसी-समिति जनता की वास्तविक राजनैतिक आकाक्षाओ की पूर्ति कभी नही कर सकती थी। जनता का यह असतोष दिनोदिन उग्र होता चला गया।

: ८

मत-भेदों में वृद्धि

लौटकर साल्टपोंड आया तो मैंने कनवेंशन के दफ्तर की व्यवस्था को खासा गडबड पाया। इसपर मैंने कार्यसमिति से जाच-पडताल करने और काम मे सुधार और उन्नति के लिए अपने ही सदस्यो मे से एक समिति नियुक्त करने की माग की। कार्यसमिति ने इस माग को अविलंब स्वीकार कर लिया और ओवेत्सेवी लापटी तथा विलियम ओफोरी अत्ता की एक द्वि-सदस्यीय समिति नियुक्त कर दी गई।

समिति के सदस्य दफ्तर के काम की जाच-पडताल के लिए उस समय आये जब मै पार्टी की एक रैली के लिए बाहर गया हुआ था। बाद मे मुझे दफ्तर के मुख्य क्लर्क से पता चला कि आते ही उन्होंने फाइले मागी और एक-एक कागज को ध्यान से देखने के बाद कुछ पत्र जब्त करके चले गए। दफ्तर के काम करने के तरीके और कठिनाइयो के बारे मे उन्होंने कुछ भी नही पूछा, शायद उसमे उनकी दिलचस्पी थी ही नही। जब्त किये जाने-वाले पत्रो मे कुछ तो ऐसे थे, जिन्हे भेजने के लिए टाइप किया गया था और अभी जिनपर मेरे दस्तखत होने शेष थे। उन पत्रो मे आपत्तिजनक बात उन लोगो को यही लगी कि वे पानेवालो को 'कामरेड' शब्द से संबोधित किये गए थे। यह उनके विचार मे मेरे कम्यूनिस्ट होने का पक्का प्रमाण था।

एक दूसरा पत्र, जो आपत्तिजनक समझा गया, उसमे कनवेंशन के किसी सदस्य ने मुझे लिखकर यह सूचित किया था कि उसे ऐसा ढग मालूम है या वह ऐसा विधान जानता है, जिसके अपनाये जाने से कनवेंशन दैवी शक्तियो से संपन्न हो सकता है। मैंने उसे उत्तर दे दिया था कि यदि आपको वास्तव मे ऐसा कोई विधान मालूम है तो कनवेंशन की कार्यसमिति के समक्ष उपस्थित होकर वहा अपनी बात रखिये।

थोड़े ही दिनो के बाद मुझे अपने ऊपर लगाये गए आरोपो की एक चार्ज-शीट प्राप्त हुई और सफाई पेश करने के लिए कहा गया

मुझसे पूछा गया, 'तुमने 'कामरेड' शब्द का प्रयोग किया तो क्या यह तुम्हारे 'कम्यूनिस्ट' होने का पक्का प्रमाण नही है ?"

उसके इस घोर अज्ञान का मै भला क्या उत्तर देता ? चुप रह गया।

मेरा दूसरा अपराध यह था कि मैंने वह दैवी शक्ति से सपन्न करने के सुझाववाला पत्र कार्यसमिति के सामने क्यो नही रक्खा, स्वय उत्तर देकर अपने अधिकार-क्षेत्र के वाहर का काम क्यो किया ?

तीसरा आरोप मेरे निजी सचिव के वेतन के सवध मे था कि उसे चार पौड मासिक वेतन देकर मैंने कनवेशन के धन का अनुचित और अनधिकृत व्यय क्यो किया ?

अभी तक मै चुपचाप सुनता रहा था, क्योकि यह स्पप्ट हो गया था कि वे लोग मुझे महासचिव वनाये रखना नही चाहते थे, लेकिन जव उन्होंने घाना महाविद्यालय की स्थापना को भी मेरा एक अपराध घोपित कर दिया तो मुझसे चुप न रहा गया।

यह विद्यालय उन विद्यार्थियो एव शिक्षको के सहायतार्थ स्थापित किया गया था, जिन्होंने हमारी गिरफ्तारी और नजरवदी के विरोध मे हड-ताल की थी और परिणामस्वरूप अपनी-अपनी शिक्षण-सस्थाओ से निर्वा-सित कर दिये गए थे। हमारे लौट आने पर छात्रो के अभिभावको ने इस सवध मे कुछ करने के लिए मुझसे खासतौर पर माग की थी। मैंने मामला कार्यसमिति मे रक्खा और कार्यसमिति ने एक समिति नियुक्त कर दी, जिसका एक सदस्य मै भी था। इस समिति ने उन छात्रो के लिए नया विद्या-लय स्थापित करने का सुझाव रक्खा, जिसपर कार्यसमिति ने कोई ध्यान नही दिया। तव मैंने स्वय अपने उत्तरदायित्व पर २० जुलाई १९४८ के दिन महाविद्यालय की स्थापना कर डाली। तीन शिक्षको का प्रवध भी किया ओर अपने पच्चीस पौड मासिक वेतन मे से पूरे दस पौड विद्यालय को जमाने मे खर्च कर दिये। शीघ्र ही घाना कालेज चल निकला और साल-भर मे उसके छात्रो की सख्या वढकर २३० हो गई। भर्ती के प्रत्याशी विद्या-र्थियो की सख्या तो हजार से भी ऊपर रही होगी। इससे प्रोत्साहित होकर मैंने लगभग एक दर्जन से भी अधिक शिक्षण-सस्थाओ की देश मे स्थापना की।

लेकिन यह सब बाद की वात है। उस समय तो मैंने कार्य-समिति को घाना महाविद्यालय की स्थापना से सवधित तथ्यो और परिस्थिति से अवगत करते हुए वुरी तरह फटकारा। मैंने कहा कि आप लोगो ने तो अपनी घोर उपेक्षा के कारण उन वेचारो की ओर कोई ध्यान नही दिया, तव कनवेशन के सम्मान की रक्षा के लिए मुझे ही आगे आना पडा। इसमें मेरा कोई व्यक्तिगत लाभ नही था। जो कार्यसमिति का कर्त्तव्य था, उसे मुझे पूरा करना पडा।

इन तर्को का कार्यसमिति के पास कोई जवाब तो था नही, परतु वे लोग अपनी जिद पर अडे रहे और मेरे सामने यह सुझाव रक्खा कि मैं महासचिव-पद से इस्तीफा देकर सौ पौड लू और इग्लैड का टिकट कटाऊ।

मैने इसका भी डटकर विरोध किया। एक-एक कर उनके [illegible] की धज्जिया मैंने उडा दी। इसका अच्छा ही प्रभाव पडा। कुछ [illegible] घबरा ही गये। उनकी घबराहट उचित भी थी। देश मे मेरे [illegible] और अनुयायी थे। कार्यसमिति के सदस्य इस बात को जानते थे [illegible] कि यदि मुझ-जैसे प्रमुख व्यक्ति को हटा दिया तो कनवेंशन [illegible] खतरे मे पड जायगा। अत मे यह सुझाव रक्खा गया कि मैं [illegible] बदले सस्था के कोषाध्यक्ष के रूप मे कार्य करू। इसे मैंने [illegible] मेरे काम मे इससे कोई बाधा नही पडती थी और [illegible] भी पूरा नही होने पाता था। परतु कनवेंशन के [illegible] वर्तन का कडा विरोध किया। कार्यालय मे तारो [illegible] गई। यह तर्क लोगो की समझ मे ही नही आया कि जो [illegible] सचिव के पद पर काम करने की योग्यता नहीं [illegible] कोषाध्यक्ष बनाये जाने के योग्य कैसे हो गया?

समिति ने मुझे महासचिव-पद से अलग किया उसी दिन मेरे पत्र का पहला अक प्रकाशित हुआ ।

'अकरा इवनिग न्यूज' पहले ही दिन से देश के स्वाधीनता-आदोलन का नेतृत्व, प्रचार, सगठन और राजनैतिक शिक्षा का कार्य करने लगा । हर अक मे जनता को स्वाधीनता-सग्राम मे जुटने के लिए अनुप्राणित और उद्वोधित किया जाता था । पतनोन्मुख औपनिवेशिक व्यवस्था एव साम्राज्यवाद की भीपण वुराइयो का भडाफोड करने का एक भी अवसर गवाया नही जाता था । आरभ मे, पैसो की कमी के कारण, केवल एक ही पन्ने का अखवार निकाला जा सका, परतु शीघ्र ही पृष्ठ-सख्या वढा दी गई । हमारे दो स्तभ वहुत ही लोकप्रिय थे —'एजीटेटर्स कालम' और 'रैवलर का कालम' । 'रैवलर' की स्पष्ट, निर्भीक वाणी और व्यग्य की वौछारो से तो शायद ही कोई वच पाता था । कही कोई घटना हो, कोई वात हो, 'रैवलर' से कुछ भी छिपने नही पाता था और वह अपनी लाक्षणिक शैली मे किसीपर भी प्रहार करने से चूकता नही था । एक डाक्टर ने तो यहा तक कहा वताते है कि 'रैवलर' के मारे कोई अपनी पत्नी से शयनकक्ष मे भी कुछ नही कह सकता और एक अमरीकी पत्रकार, जो उन दिनो गोल्ड कोस्ट आया था, केवल 'रैवलर' से मिलने के लिए एक हजार पौंड देने को तैयार हो गया था ।

देखते-देखते हमारा पत्र इतना लोकप्रिय हो गया कि सारी प्रतिया छपते ही विक जाती थी और खरीदार उसे पढकर पुन छ-छ पेनियो मे वेच दिया करते थे । जो पढ न पाते, वे टोलिया वनाकर वैठ जाते और अथ से इति तक एक-एक अक्षर सुनकर ही उठते थे । 'हमे भी मनुष्यो की भाति रहने का अधिकार है ।' 'अपना शासन आप करने का अधिकार हमे भी है ।' आदि हमारे पत्र के उद्देश्य वाक्य थे, जो शीघ्र ही लोगो की जवान पर चढ गये ।

लेकिन पत्र से लाभ एक कौडी का भी न होता, उल्टे घाटा ही होता और आर्थिक कठिनाइया वढती जाती थी । विज्ञापन हम एक धेले का भी नही लेते थे । जो विज्ञापन दे सकते थे, वे सभी साम्राज्यवादी-पूजीवादी व्यवसायी थे, जो विज्ञापन देकर पत्र की नीति को प्रभावित करने का प्रयत्न करते । फिर हमारी स्पष्टवादिता के कारण दुश्मनो की भी कमी नही थी और हमपर मानहानि के वीसियो मुकदमे चल गये थे । हिसाव लगाकर देखा तो दस हजार पौड के दावे तो मानहानि के ही थे । सभी दावे, पुलिस कमिश्नर सहित, सरकारी कर्मचारियो के थे । मेरी कोई व्यक्तिगत

सपत्ति तो थी नही—कुल जमा दो सूट, कुछ कमीजें और एक जोडा जूतो को छोड मेरा अपना कुछ भी नही था। इसलिए मुझसे तो क्या वसूला जाता, पर चकि देश मे दिवाला कानून नही था, इसलिए हाथ भी ऊचे नही किये जा सकते थे। ऐसे समय पत्र के पाठको ने हमारी बडी सहायता की। लोगो ने पाई-पाई कर चदा जमा किया और पुलिस कमिश्नर तथा कुछ अन्य लोगो के दावो की भरपाई की जा सकी। तभी कनवेशन की कार्य-समिति के एक सदस्य दानका ने हमारे ऊपर मानहानि का मुकदमा दायर किया। वह जीते और बदले मे पत्र के अधिकार ही खरीद लिये। परन्तु हम अपना प्रबध पहले ही कर चुके थे। पत्र को एक दिन भी बद नही होने दिया। नाम बदलकर 'घाना इवनिंग न्यूज' के नाम से निकालना आरभ कर दिया।

प्रधानमत्री बन जाने के बाद ही मुझे पता चला कि सरकारी कर्म-चारियो ने कई सामान्य लोगो को भी हमारे पत्र पर मानहानि के मुकदमे चलाने को उकसाया था। उद्देश्य यही था कि हम आर्थिक सकट की दलदल मे फस जाय और पत्र का प्रकाशन स्थगित कर देना पडे। लेकिन हमारा

उद्देश्य यह था कि देश के युवक-समुदाय को इस मच पर सगठित करके कनवेशन के आन्दोलनो मे सम्मिलित और सक्रिय किया जा सके। लेकिन कनवेशन का लक्ष्य था 'कम-से-कम समय मे स्वराज्य' और युवक-सगठन का लक्ष्य था 'स्वराज्य अभी और इसी समय'। वास्तव मे कार्यसमिति के अन्य सभी सदस्य नरम नीति के पृष्ठ-पोषक थे और अकेला मै ही प्रगतिशील नीति का समर्थक और जनता की वास्तविक आकाक्षा का प्रतिनिधि था और इसीसे वे लोग मुझसे घबराते और पीछा छुडाना चाहते थे।

जब मुझे महासचिव के पद से हटाया गया तो युवक-सगठन की समिति ने कनवेशन की कार्यसमिति के सदस्यो की नाक मे दम कर दिया।

उन्ही दिनो की बात है। कार्यसमिति के सदस्यो के साथ अपने झगडे-टटो से तग आकर मै कुछ समय के लिए एन्जिमा चला गया था। इस बीच ग्बेदेमा ने युवक-सगठन की समिति की ओर से एक सार्वजनिक सभा का आयोजन कर यह घोषणा की कि क्वामे एन्क्रूमा उसमे भाषण करनेवाले है। मुझे कुछ पता न था। इधर दिन समीप आते जा रहे थे। जब केवल एक दिन शेप रह गया तो ग्बेदेमा बडे चिंतित हुए और अपनी खटारा मोटर मे मुझे लेने के लिए एन्जिमा की ओर चल पडे। सयोग की बात कि उसी दिन मै भी अकरा लौट रहा था। अनकोबरा नदी पार करते समय मल्लाहो ने मुझे बताया कि जाने कौन अपरिचित इस पार आने के लिए उतावला होकर पुकार रहा है। मैने कान लगाकर सुना तो आवाज पहचान ली और मझधार से ही पुकारकर आश्वासन दिया कि 'रुको भाई, मै पहुच रहा हू।' मल्लाहो ने जरूर हम दोनो को पागल समझा होगा।

पार आते ही ग्बेदेमा ने घसीटकर मोटर मे बिठाया और लगे तेजी से दौडाने। रास्ते मे उन्होने मुझे सार्वजनिक सभा के बारे मे बताया। यह कुशल हुई कि हम लोग ठीक समय पर पहुच गये और मार्ग मे कोई दुर्घटना नही हुई। उस सभा मे मैने 'औपनिवेशिक जनता की मुक्ति' पर भाषण किया। उपस्थिति बहुत अच्छी थी। हमने श्रोताओ से प्रवेश-शुल्क वसूल किया था और पूरे दो सौ पौड की धनराशि जमा हो गई थी।

उस सभा के बाद ही हमने कुमासी मे २३ से २६ सितबर (१९४८) तक एक युवक-कान्फ्रेंस करने का निश्चय किया। लेकिन सरकार ने ऐन दिन उसपर रोक लगा दी। तब हमने जितने लोग आ सके, उन्हीको जोड-बटोरकर एक गुप्त अधिवेशन किया। उसमे दो महत्त्वपूर्ण काम हुए—एक तो 'स्वराज्य की ओर' शीर्षक से घाना के युवको का घोषणापत्र तैयार किया गया, दूसरे, युवक-सगठन-समिति की ओर से देश के लिए

एक सविधान प्रस्तुत कर उसकी प्रतिलिपि कौसी-समिति को विचारार्थ प्रेपित की गई ।

कोलोनियल दफ्तर को अधिवेशन पर रोक लगाने के विरोध मे तार भेजने का भी निर्णय हुआ, परतु अधिवेशन पर रोक लग जाने के कारण कुमासी से या गोल्ड कोस्ट मे किसी भी स्थान से तार किया नही जा सकता था । तव हम फ्रेच टोगोलैंड के लोम शहर गये । परतु हमारे वहा पहुचने की खवर हमसे भी पहले पहुच चुकी थी, इसलिए तार नही किया जा सका, केवल हवाई डाक से विरोध-पत्र भेजकर सतोप करना पडा । लौटते समय रास्ते मे मोटर खराव हो गई और हम वडी मुश्किलो से अकरा पहुच सके ।

युवक-सगठन-समिति की दूसरी काफ्रेस हमने अप्रैल के महीने मे ईस्टर के दिनो मे रक्खी । उन्ही दिनो कनवेशन का वार्पिक अधिवेशन भी हुआ । उसमे कार्यसमिति ने सारे काम और सभी समस्याओ को तो ताक मे रख दिया और मुझे महासचिव-पद से हटाये जाने को ही सर्वाधिक महत्त्व दे डाला । कनवेशन के इस वार्पिक अधिवेशन के कई प्रतिनिधि युवक-सगठन-समिति के सदस्य थे । स्वाभाविक ही था कि इस प्रश्न पर खूव चखचख होती । वह हुई और अधिवेशन को भग करना पडा और पारस्परिक कटुता और भी अधिक वढ गई ।

१९४९ के जून महीने मे हमने युवक-सगठन-समिति की एक विशेप काफ्रेस की, जिसमे देश के सभी युवक-सगठनो ने भाग लिया । इसमे दो प्रश्नो पर विशेप रूप से विचार किया गया—क्या महासचिव-पद से मेरे हटाये जाने को स्वीकार कर लेना चाहिए और क्या युवक-सगठन-समिति को एक राजनैतिक दल मे परिवर्तित करने की परिस्थितिया परिपक्व हो चुकी है ? पहले प्रश्न का निर्णय तो अपेक्षाकृत सरल था । यही निश्चय किया गया कि विरोध करना चाहिए । लेकिन दूसरे प्रश्न पर स्पप्ट ही दो विचार-धाराए थी । एक पक्ष का कहना था कि हमे कनवेशन के अदर ही वने रहकर उसपर कब्जा करने की कोशिश करनी चाहिए । दूसरे पक्ष का कहना था कि नही, हमे एक स्वतत्र राजनैतिक दल के रूप मे सग-ठित होकर देश का नेतृत्व अपने हाथ मे लेना चाहिए । अत मे मेरी सलाह पर एक स्वतत्र पार्टी के ही निर्माण का निश्चय किया गया ।

पार्टी के नामकरण पर भी काफी वहस-मुवाहसा हुआ । अत में 'घाना पीपुल्स पार्टी' नाम सवको पसद आया । लेकिन मेरा सुझाव था कि अभी तक हम लोग यूनाइटेड गोल्ड कोस्ट कनवेशन के नाम से काम

करते आये है, इसलिए पार्टी के नाम के साथ 'कनवेशन' शब्द भी अवश्य रखना चाहिए, नही तो जनता इसे बिलकुल नया सगठन समझकर भ्रम मे पड जायगी । यह सुझाव सभीने स्वीकार किया और इस प्रकार १२ जून १९४९ को 'कनवेशन पीपुल्स पार्टी' का विधिवत् उद्घाटन किया गया ।

पार्टी के उद्घाटन के साथ-ही-साथ हमने उसका एक छ-सूत्री कार्यक्रम भी बनाया

१ 'पूर्ण स्वराज्य अभी और इसी समय' के लिए सभी वैधानिक उपायो से निरतर सघर्ष करना ।

२ दमन और आतक के सभी रूपो का अत करके एक जनवादी सरकार की स्थापना के लिए सशक्त और जागरुक राजनैतिक हरावल के रूप मे काम करना ।

३ गोल्ड कोस्ट के चारो प्रदेशो—कालोनी, अशाटी, नार्दर्न टेरिटरीज एव ट्रास-वोल्टा की समस्त जनता और सरदारो (मुखियो) की अखड एकता स्थापित करना ।

४ देश के श्रमिको के हित-साधन के लिए ट्रेड यूनियन आदोलन मे काम करना ।

५ देश का इस तरह पुनर्निर्माण करना कि सब लोग स्वतत्रता से रह सके और स्वराज्य का उपयोग कर सके ।

६ सयुक्त और स्वशासित पश्चिमी अफ्रीका की उपलब्धि के लिए हर सभव प्रयत्न करना ।

: ९ :

मेरी पार्टी का जन्म

काफ्रेस के तुरत बाद, युवक-सगठन-समिति के सदस्य, अकरा मे एक विशाल आम सभा करने के लिए दौडे आये। १२ जून, १९४९ का दिन इस काम के लिए पहले ही निश्चित कर दिया गया था। हम जल्दी-से-जल्दी सभा करके अपने निर्णयो की सूचना जनता को दे देना चाहते थे, क्योकि यूनाइटेड गोल्ड कोस्ट कनवेशन की कार्यसमिति ने अपनी काफ्रेस मे मुझे कनवेशन की साधारण सदस्यता से ही निष्कासित करने का फैसला कर डाला था और वे भी जनता को अपने इस निर्णय से सूचित करना चाहते थे। कार्यसमिति की ओर से समाचारपत्रो के लिए एक वक्तव्य भी प्रसारित हो चुका था, जो सोमवार के अको मे छपने को था। परतु हमने वडी फुर्ती से काम किया, उन्हे मौका ही नही दिया और हमारी पहल के कारण उनके सारे इरादे रक्खे रह गए।

युवक-सगठन-समिति की ओर से बुलाई गई। अकरा की वह सभा हमारे देश के इतिहास की सबसे विशाल और महत्त्वपूर्ण आमसभा थी। साठ हजार से भी अधिक लोग उस सभा मे उपस्थित थे। जब मै बोलने को खडा हुआ तो लोगो ने इतनी तुमुल हर्षध्वनि की कि उन्हे चुप करना एक समस्या हो गई।

अपने भाषण मे मैने जनता को मेरे गोल्ड कोस्ट आने से लेकर अबतक की राजनैतिक प्रगति से अवगत किया। घाना महाविद्यालयो और पाठशालाओ की स्थापनाए, 'इवनिंग न्यूज' का प्रकाशन, युवक-सगठन-समिति का निर्माण आदि सब बाते बतलाकर मै असल मुद्दे पर आया। मैने कहा कि वास्तव मे देखा जाय तो युवक-सगठन-समिति और यूनाइटेड गोल्ड कोस्ट कनवेशन मे कोई झगडा, कोई लडाई, नही है। युवक-सगठन-समिति का सदस्य बनने के पहले कनवेशन का सदस्य बनना आवश्यक होता है। अगर कोई झगडा है तो वह कनवेशन की कार्यसमिति से है और उस झगडे का कारण भी यह है कि कार्यसमिति कहती है, 'स्वराज्य जल्दी-से-जल्दी' और हम कहते है, 'स्वराज्य अभी और इसी समय।' हम 'स्वराज्य अभी और इसी समय' इसलिए मागते है कि यह देश हमारा है और अपने ही देश मे हम पराधीन बनकर एक क्षण भी रहना नही चाहते। हम 'स्वराज्य

अभी और इसी समय' इसलिए मागते है कि देश की जनता के कष्ट मिटे और आधुनिक सभ्यता के समस्त आनदो का सभी लोग उपभोग कर सके। जनता को पूर्ण स्वराज्य की हमारी माग का, उस माग की पूर्ति के लिए की जानेवाली सीधी कार्रवाई का, जिसके अतर्गत प्रचार, अखबारो का प्रकाशन, लोगो की राजनैतिक शिक्षा, हडताले, वहिष्कार, असहयोग आदोलन आदि आते है, समर्थन करना चाहिए। हम ये सव काम अहिसक ढग से ही करना चाहते है। सहयोग और समझौते से कभी स्वराज्य नही मिलता। सारा झगडा सहयोग-समझौते की ढिलमिल नीति और क्राति-कारी कदम के बीच ही है। यह झगडा मिटना चाहिए। और 'अगर देश का साम्राज्यवादी शोषण-दमन' से उद्धार करना है तो युवक-सगठन-समिति और कनवेशन की कार्यसमिति के वीच का यह झगडा भी खत्म किया जाना चाहिए। युवक-सगठन स्वराज्य प्राप्त करने के लिए सघर्ष, अवश्य ही अहिसक सघर्ष—करना चाहता है और कनवेशन की कार्यसमिति साम्राज्यवाद से लडने के बदले इस प्रगतिशील युवक-सगठन से ही लडने पर आमादा है। स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए देर कैसी और समझौता कैसा ? अगर हम सव मिलकर, एक होकर, सघर्ष मे कूद पडे तो दुनिया की कौन-सी ताकत हमे रोक सकती ह ?

इसपर लोगो ने इतने जोर की हर्षध्वनि की कि आसमान गूज गया।

अव मैने जरा गभीर होकर कहा, "आज के इस राजनैतिक सकट मे मेरे सामने तीन विकट प्रश्न आ खडे हुए है। मै आपसे यही और अभी उनका उत्तर चाहता हू। पहला प्रश्न यह है कि क्या इस घडी मे अपनी प्यारी मातृभूमि को छोडकर मुझे चला जाना चाहिए ?"

"नही-नही, विलकुल नही।" श्रोताओ ने जोर से चिल्लाकर कहा।

"तो क्या मै यही रहू, परतु अपना मुह वद रक्खू ?"

"नही-नही, बोलो। यही रहो और अपने विचार प्रकट करो।" श्रोताओ ने फिर कहा।

"या फिर मै साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद के सामने घुटने झुकानेवाली नेताशाही से सदा के लिए अपना नाता तोडकर पूर्ण स्वाधीनता की उपलब्धि के लिए अभी और इसी समय अपने देश की जनता और सरदारो के साथ आकर खडा हो जाऊ ?"

"हा-हा, जरूर-जरूर !" के गगनभेदी स्वर से श्रोताओ ने जिस

उत्साह के साथ मेरी बात का समर्थन किया, उससे मुझे विश्वास हो गया कि कुछ भी क्यो न हो जाय, ये लोग सदैव मेरा साथ देगे।

तब मैंने उनसे कहा, "इसीलिए वर्तमान राजनैतिक सकट और गतिरोध को हल करने के लिए युवक-सगठन-समिति ने अपने-आपको एक राजनैतिक दल मे परिवर्तित करने का निश्चय किया है, ताकि स्वराज्य और पूर्ण स्वाधीनता का सघर्ष अभी और इसी समय छेडा जा सके।"

इतना कहकर मैंने युवक-सगठन-समिति की ओर से देश की जनता और सरदारो को, कनवेंशन के आम सदस्यो को, मजदूर आदोलन को, हमारे भूतपूर्व वीर सैनिको को, देशव्यापी युवक-आदोलन को, सामान्य-जन को, अपनी वर्तमान और भावी पीढी को, १९४८ के दगो मे शहीद हो जानेवाले वीर सार्जेंट अज्जेती और उनके साथियो को, नये सिरे से निर्मित होनेवाले घाना देश और ईश्वर को साक्षी करके कनवेंशन पीपुल्स पार्टी के जन्म की घोषणा की और कहा कि आज से यही पार्टी हमारी प्यारी मातृभूमि की स्वाधीनता के सघर्ष मे जनता का नेतृत्व करेगी।

पहले तो लोग हर्षोन्माद से उछल पडे और देर तक हर्षध्वनि करते रहे, फिर सब-के-सब चुप हो गये। आनेवाले उत्तरदायित्वो के गहन बोझ के ज्ञान ने सबको कुछ क्षणो के लिए मौन कर दिया था। मैंने उस मौन गभीर जन-समुदाय की ओर देखा। एक-एक चेहरे पर दृढ निश्चय की रेखाए उभरी हुई थी—सदेह और असमजस का कही नाम भी न था।

इस आम सभा के जवाब मे कनवेंशन की कार्यसमिति ने १६ जून को एक सभा का आयोजन किया। उसमे ओबेत्सेबी लापटी ने जब मेरे बारे मे यह वाक्य कहा कि "एक 'वाहरी' आदमी अकरा की वहुसख्यक जनता या जाति का नेतृत्व कर ही कैसे सकता है और लोगो ने उसकी बातो को सुना ही कैसे ?" तो वहा शोर मच गया और सभा भग हो गई। वह जातीयवाद को उभारने की प्रतिक्रिया की एक अत्यत निम्न और घृणित चाल थी, जिसमे उन्हे मुह की खानी पडी और भविष्य के लिए उनका यह शस्त्र कुण्ठित हो गया।

परतु कार्यसमिति ने जब देखा कि नेतृत्व उनके हाथो से निकला जा रहा है तो कुछ सदस्यो ने समझौते के प्रयत्न शुरू किये। तीन सदस्यो का एक पचमडल नियुक्त किया गया, जिसने यह निर्णय दिया कि मुझे पुन महासचिव बना देना चाहिए और कनवेंशन पीपुल्स पार्टी कनवेंशन के ही अतर्गत एक राजनैतिक दल के रूप मे काम करती रहे।

मैंने तो इसे स्वीकार कर लिया, परतु कार्यसमिति स्वीकार न कर सकी, उल्टे इसके विरोध मे समिति के अध्यक्ष श्री जार्ज ग्राट को छोड शेष सभी सदस्यो ने त्यागपत्र दे दिये। इससे उत्पन्न स्थिति पर विचार करने के लिए मैंने ग्राट दादा को विशिष्ट प्रतिनिधियो की एक काफ्रेस बुलाने के लिए कहा।

काफ्रेस साल्टपोड मे हुई और कार्यसमिति के सदस्यो एव त्यागपत्र देनेवालो के अतिरिक्त कोई चालीस-पचास हजार लोग भी उसमे हिस्सा लेने के लिए आ जुटे। इस काफ्रेस ने पचफैसले की पुष्टि की और कार्यसमिति के नये चुनावो की माग की। त्यागपत्र देनेवालो ने इसका विरोध किया और यह बचकाना दलील दी कि पहले उनकी नियुक्ति की जानी चाहिए। जब झगडा किसी भी तरह सुलझता नही दिखाई दिया तो वही दो नये पच नियुक्त किये गए। उन्होने फैसला किया कि मुझे महा-सचिव बहाल कर देना चाहिए और कनवेशन पार्टी को भग कर देना चाहिए।

यह जानते हुए भी कि मेरे समर्थक और अनुयायी विरोध करेंगे, मैंने यह सुझाव इस शर्त पर मान लिया कि काफ्रेस मे उपस्थित प्रतिनिधिगण मेरे साथ काम करने के लिए नई कार्यसमिति का चुनाव अभी यही कर दे। यह शर्त कार्यसमिति के सदस्यो को स्वीकार नही हुई।

इसी समय बाहर खडे चालीस-पचास हजार के जन-समुदाय ने मुझे बाहर बुलाकर आदेश दिया कि "तुम कनवेशन की सदस्यता से त्यागपत्र देकर हमारा नेतृत्व करो। हम तुम्हारे साथ है और साथ मिलकर सघर्ष करेंगे।"

मैंने उसी समय त्यागपत्र लिखकर दे दिया। मेरे समर्थको और अनुयायियो की खुशी का पार न रहा। एक महिला समर्थक उसी समय मच पर चढ आई और 'लीड काइडिली लाइट' नामक भजन गाने लगी। तभी से यह भजन कनवेशन पीपुल्स पार्टी की प्रत्येक सभा और सम्मेलन में गाने का रिवाज चल पडा।

लोगो का जोश, भजन के बोल और उस समय की सारी परिस्थिति ने मेरी भावनाओ को इतना झकझोर डाला कि मै अपने आसुओ को न रोक सका। लेकिन वे आसू विषाद के नही, हर्ष, कृतज्ञता और समर्पण के आसू थे। मैंने उस मानव-समुदाय के आगे खडे होकर गद्‌गद स्वर से प्रतिज्ञा की—"आज मै अपना यह जीवन और अपने जीवन-रक्त की अतिम बूद तक प्यारी मातृभूमि के लिए समर्पित करता हू।"

अब गोल्ड कोस्ट का राष्ट्रवाद स्पष्टत वाम पथ और दक्षिण पथ मे विभाजित हो गया। एक धारा प्रगतिशीलो की थी, जो जनता की नई राजनैतिक चेतना और आकाक्षा के प्रतिनिधि थे। दूसरी धारा समझौता-वादियो की, जो प्रतिक्रिया के पृष्ठपोषक थे। अब हमारी मुक्ति का सघर्ष भी त्रिकोणात्मक हो गया था—एक ओर था ब्रिटिश साम्राज्य, दूसरी ओर प्रतिक्रियावादी बुद्धिजीवी और सरदार तथा तीसरी ओर देश की जाग्रत जनता, जिसका नारा था 'स्वराज्य अभी और इसी समय'।

कनवेशन पीपुल्स पार्टी की स्थापना के ही साथ देश मे दलगत राज-नीति और स्वस्थ पार्लमिटरी जनतत्रात्मक पद्धति का भी श्रीगणेश हुआ। परिश्रम तो हमे खूब करना पडा और दौरे भी खूब किये गए, पर कार्यकर्ताओ के अथक परिश्रम और अभिनदनीय उत्साह तथा जनता के सहयोग के परिणामस्वरूप सारे देश मे हमारी पार्टी का लाल, सफेद और हरा झडा लहराने लगा।

पार्टी की पहली केद्रीय समिति का मै अध्यक्ष और दूसरे आठ साथी सदस्य निर्वाचित हुए। केद्रीय समिति मे दूसरे प्रमुख पार्टी-सदस्यो को को-आप्ट करने की पद्धति हमने आरभ से ही रक्खी। लेकिन कोई भी को-आप्ट सदस्य दो वर्ष से पहले समिति का पूरा सदस्य नही वन सकता और वह भी केवल तभी जब कोई जगह खाली हो।

कनवेशन पीपुल्स पार्टी की सफलता का वहुत-कुछ श्रेय हमारी महिला कार्यकर्ताओ को है। हमारे अधिकाश सगठनकर्ता और प्रचारक महिलाए ही है। पार्टी की एकता को अक्षुण्ण रखने में भी उनका योगदान प्रशस-नीय रहा है। जव मै जेल मे था और पार्टी-सगठन की स्थिति डावाडोल होने लगी तो एक महिला ने ही अपने अदम्य उत्साह और अनुपम आस्था से उसे वारह-वाट होने से बचाया। कुमासी नगर की एक सभा मे वह देवी मच पर चढ आई, वडा जोशीला भाषण दिया और हजामत की पत्ती से अपना चेहरा चीरकर सारे वदन पर खून छिडकती हुई वोली, "है किसी मर्द मे इतनी हिम्मत, जो मेरी तरह करके यह दिखा दे कि स्वाधीनता के इस सयुक्त सघर्ष मे वह किसी भी वलिदान को वडा नही समझता ?" इस महिला ने अपना नाम ही अमा एन्क्रूमा रख लिया था। (अमा क्वामे का स्त्री पर्यायवाची है।)

हम अपने प्रचार-कार्यो मे सभी साधनो का प्रयोग करते थे। कुछ मोटरे मिल गई थी, जिनपर ध्वनि-विस्तारक यत्र लगा लिये गए थे। मेरे तीनो अखवार तो थे ही। विरोधी हमे 'कम्यूनिस्ट' और 'दगई' और न जाने

क्या-क्या कहते, पर हमने कभी उनकी परवा न की। हम अपने उद्देश्य और कार्य मे सफल हुए, क्योकि हम जनता से उन्हीकी भाषा मे बोलते थे और इस प्रकार हमे उनके कष्टो, शिकायतो एव आशा-आकाक्षाओ की सतत जानकारी रहती थी। फिर हमने किसीको भी आने से रोका नही, किसीको छाटा नही, क्योकि कोई भी राष्ट्रीय आदोलन तभी सफल हो सकता है जबकि सभी नेक इरादो के स्त्री-पुरुषो को उसमे भाग लेने दिया जाय।

: १० :

सीधी कार्रवाही

देश मे असतोष और बेचैनी दिनोदिन बढती जाती थी । बेचैनी सामान्य जनता मे ही नही, सरकारी कर्मचारियो, सरदारो और बुद्धिजीवी वर्ग मे भी थी । जनता के असतोष और व्यग्रता का कारण था वे अपार कष्ट, जो उसे साम्राज्यवादी व्यवस्था के कारण सहने पड रहे थे । परतु सरकारी कर्मचारियो आदि की बेचैनी का कारण कुछ और ही था । उनकी सारी घबराहट इस बात को लेकर थी कि यदि जनता के जागरण को रोकने के लिए तत्काल कुछ नही किया गया तो जाने क्या हो जायगा । १२ जून की सभा मे मैने अकरा मे, 'सीधी कार्रवाही' शब्दो का उल्लेख अपने भाषण मे किया था । ये शब्द हौवा बनकर सरकार और मेरे विरोधियो को डराये हुए थे, और जब उनको यह पता चला कि मै अपनी पार्टी के द्वारा 'अहिसक ढग से सीधी कार्रवाही' आरभ करने जा रहा हू तो उनकी घबराहट और भी बढ गई और चारो ओर यह अफवाह फैल गई कि मुझे अकरा से निर्वासित करने की तैयारिया की जा रही है । गोल्ड कोस्ट रेडियो ने तो यह घोषणा तक कर दी कि मै राजधानी से निर्वासित भी कर दिया गया हू । तभी मुझे गा स्टेट कौसिल की ओर से एक पत्र मिला । कौसिल ने मुझे 'देश की निरतर विषम होती जा रही परिस्थिति और उसके सभावित हल पर' विचार-विनिमय करने के लिए बुलाया था ।

मै अपने दो सहयोगियो के साथ वहा गया । गा स्टेट कौसिल एक परपरागत सस्था है और उसमे विचार करने के लिए प्राय गण्यमान्य सरदारगण और जाति के वडे-बूढे ही बैठा करते है । लेकिन इस वार वहा यनाइटेड गोल्ड कोस्ट कनवेशन की कार्यकारिणी के भूतपूर्व सदस्यो मे से भी कई सज्जन विराजमान थे । यह देखकर मुझे बडा विस्मय हुआ । वहा जितने भी भाषण हुए, उन सबका एक ही स्वर और एक ही ध्वनि थी । सबने मुझे देश मे 'सीधी कार्रवाही' जैसे खतरनाक शब्द प्रचलित करने और इस प्रकार देश की शाति को खतरे मे डाल देने का अपराधी करार देकर जी भरकर कोसा । अत मे मुझसे पूछा गया, "इस 'सीधी कार्रवाही' शब्द से तुम्हारा ठीक-ठीक अभिप्राय क्या है ?"

मैने काफी विस्तार मे उन्हे इस शब्द का अर्थ और अपना पूरा कार्य-

क्रम समझाया, लेकिन मेरे राजनैतिक विरोधियो ने तो कुछ भी न समझने की कसम खा रक्खी थी, इसलिए उन्होने समझकर भी न समझने का ढोग किया और अत तक असतोषपूर्वक अपना सिर हिलाते रहे। तव गा स्टेट के सबसे बडे और सर्वोच्च सरदार गा माचे ने, जो उस दिन कौसिल के अध्यक्ष-पद पर थे, मुझे आदेश दिया कि यदि 'सीधी कार्रवाही' शव्द का ठीक-ठीक वही अर्थ है, जो तुमने हमे वताया है तो जाओ, एक सभा करके अपने अनुयायियो को विलकुल इन्ही शव्दो मे और इसी तरह इस शव्द का अर्थ समझाओ। मै उनके इस आदेश को शिरोधार्य कर वहा से चला आया।

फिर मैने सोचा कि केवल सभा करने से तो वात वनेगी नही, लोगो की समझ मे वात ठीक ढग से आ जाय और वे मेरे सारे कार्यक्रम को सही-सही समझ ले, इसलिए एक पुस्तिका ही लिखना उचित होगा। मैने उसी समय बैठकर 'सीधी कार्रवाही से मेरा क्या अभिप्राय है?' शीर्पक पुस्तिका लिख डाली। फिर सारी रात प्रेस मे लगकर दूसरे दिन सवेरे नौ बजे तक उसकी पाच हजार प्रतिया छपवा डाली। उसी दिन शाम को सभा की और उसमे उपस्थित जन-समुदाय को वह पुस्तिका पढकर सुना दी। उसके वाद गा स्टेट कौसिल को सूचित कर दिया कि उनके आदेशो की पूर्ति कर दी गई है।

इस पुस्तिका मे सबसे पहले तो मैने यह स्पष्टीकरण किया कि 'सीधी कार्रवाही' शव्दो के अर्थ को किस प्रकार तोड-मरोडकर साम्राज्यवादी और उनके एजेट इन्हे अशाति, हिसा और विद्रोह का पर्याय वनाये दे रहे है। फिर मैने पूर्ण स्वराज्य के उद्देश्य को समझाते हुए उसे प्राप्त करने की कार्यनीतियो पर प्रकाश डाला। मैने सशस्त्र क्राति और अहिसक उपायो की विस्तार से चर्चा की और इस वात पर जोर दिया कि हम लोग केवल अहिसक उपायो का ही अवलवन करना चाहते है। आगे मैने लिखा कि मेरा अहिसक ढग ही, जैसा कि भारत मे गाधीजी ने अपनाया, 'सीधी कार्रवाही' है और इसके अतर्गत राजनैतिक प्रचार, अखवार निकालना, जनता का राजनैतिक शिक्षण आदि वैधानिक तरीके आते है। इसकी अगली मजिल हडतालो, वहिष्कारो और असहयोग का अवलवन है, जो पूर्णत अहिसक और वैधानिक ढग से और शातिवादी तरीको से ही चलाये जायगे। मैने यह वात बिलकुल खोलकर लिख दी कि किसी प्रकार के षड्यत्र और दुराव-छिपाव मे हमारा जरा भी विश्वास नही, और न हम ऐसे किसी ढग को अपनाना ही चाहते है। अत मे मैने यह लिखा कि 'सीधी

कार्रवाही' की अतिम मजिल हम तभी अपनायगे जब और सब उपाय बेकार हो जायगे। अभी हम कौसी-समिति के प्रतिवेदन की प्रतीक्षा करेंगे, अगर प्रतिवेदन अनुकूल हुआ तो बहुत ही अच्छा, न हुआ तो हम अपनी ओर से सुझाव देगे। सरकार ने उन सुझावो को अस्वीकार किया तभी 'सीधी कार्रवाही' आरभ की जायगी। सबसे अत मे मैंने जनता से अपील की कि वह कौसी-समिति का प्रतिवेदन प्रकाशित होने तक शाति और धैर्य से काम ले।

कौसी-समिति का प्रतिवेदन १९४९ के अक्तूबर महीने के अत मे प्रकाशित हुआ। वह प्रतिवेदन बिलकुल ही लचर, नाकाफी और अत्यत असतोषजनक था। जो वैधानिक सुधार इसमे सुझाये गए थे, वे तो किसी भी काम के न थे। इससे लोगो के असतोष मे और वृद्धि ही हुई। तब मैंने २० नवबर को परिस्थिति पर विचार करने और अपनी ओर से नये सुझाव सरकार को भेजने के लिए एक जन-सम्मेलन 'घाना पीपुल्स रिप्रेजेंटेटिव असेबली' के नाम से बुलाया। यह अपने ढग का अभूतपूर्व सम्मेलन था। देश मे जितने भी सगठन थे, सबको इसमे बुलाया गया था। पचास से अधिक सगठनो ने मेरा निमत्रण स्वीकार कर अपने प्रतिनिधि भेजे थे। केवल दो सगठनो ने निमत्रण ठुकराया, जिनमे एक था 'यूनाइटेड गोल्ड कोस्ट कन-वेंशन' और दूसरा था 'अबार्जिनीज राइटस प्रोटेक्शन सोसाइटी'।

सम्मेलन मे प्रस्ताव पास किया गया कि 'कौसी-प्रतिवेदन और उस पर सरकार का वक्तव्य देश की जनता को कतई स्वीकार नही है।' और यह घोषणा की गई कि 'गोल्ड कोस्ट को अविलब पूर्ण स्वशासन यानी ब्रिटिश राष्ट्रमडल के अतर्गत पूर्ण डोमीनियन स्टेटस प्रदान किया जाय।' साथ ही सम्मेलन ने केंद्रीय और स्थानीय शासन की एक रूपरेखा तैयार की और उस रूपरेखा को नये विधान मे समाविष्ट किये जाने की माग भी।

अब सरकार पर जनता की मागो को स्वीकार करने और विधान-परिषद् बुलाने के लिए दबाव डालना आवश्यक हो गया था। इसके लिए मैंने कनवेंशन पीपुल्स पार्टी की कार्यकारिणी की बैठक बुलाई और उसकी ओर से १५ दिसबर को गवर्नर के नाम एक पत्र लिखकर अल्टीमेटम दे दिया कि यदि सरकार ने जनता की मागो को मजूर नही किया तो कनवेंशन पीपुल्स पार्टी सीधी कार्रवाही आरभ कर देगी। वही अल्टीमेटम हमारे अखबारो के मुखपृष्ठ पर छापा गया और उसी दिन शाम को एक विशाल सार्वजनिक सभा मे दुहराया गया। मैंने सरकार को दो सप्ताह की अवधि दी थी और साथ ही यह भी कह दिया था कि 'सीधी कार्रवाही' तुरत चालू

रक्खी जायगी जवतक कि जनता की मागे पूरी नही हो जायगी। इधर जनता को मैंने सचेत कर दिया कि कही भी शाति-भग, लूट-पाट, दगा-फसाद आगजनी आदि की घटना नही होनी चाहिए। सारे सघर्ष के अहिसक और शातिपूर्ण रहने पर ही हमारी सफलता निर्भर करेगी।

सरकार कब चूकनेवाली थी। अल्टीमेटम मिलते ही वह दमन पर उतर आई। पहला वार हुआ हमारे अखबारो पर। सभी अखबारो के सपादको पर मुकदमे चल गये और कइयो को जेल भेज दिया गया। स्वय मेरे ऊपर मानहानि का एक मुकदमा दायर हो गया। जिस दिन मुकदमे की सुनवाई हुई, कोर्ट मे तिल रखने को जगह न थी। मुझे तीन सौ पौड जुर्माना या चार महीने कैद की सजा सुनाई गई। अकरा की जनता ने वही चदा करके तीन सौ पौड जमा कर दिये और जुर्माना अदा हो गया, ताकि मै साम्राज्यवाद के खिलाफ अपना प्रचार और सघर्ष जारी रख सकू।

इसके बाद फिर मैंने एक देशव्यापी दौरा किया। लौटकर आया तो मिटिओरालाजिकल (अतरिक्ष विद्या-सबधी) एम्प्लाइज यूनियन (कर्मचारी-सघ) और सरकार के बीच कोई विवाद उठ खडा हुआ था। जब दोनो पक्षो मे समझौते के सारे प्रयत्न विफल हो गये तो मजदूरो ने ट्रेड यूनियन कौसिल से अपील की। ट्रेड यूनियन कौसिल ने घोषणा कर दी कि यदि मजदूरो की मागे स्वीकार नही की गई तो आम हडताल की जायगी। मैंने लौट आकर इस विवाद मे मध्यस्थता करनी चाही, परतु सरकार ने मेरी मध्यस्थता को स्वीकार नही किया। लेकिन इससे हडताल कुछ समय के लिए अवश्य टल गई और यही मै चाहता भी था। यदि उस समय हडताल हो जाती तो उससे हमारे 'सीधी कार्रवाही' के कार्यक्रम को काफी धक्का पहुचता।

उन्ही दिनो मुझे उपनिवेश-सचिव श्री आर एच सालोवे का एक पत्र मिला। यह सज्जन बडे खुर्राट नौकरशाह थे और भारत मे कभी रह चुके थे। पुलिस ने कोई आधी रात के समय पत्र लाकर दिया। औपनिवेशिक सचिव ने मुझे अपने दफ्तर मे मिलने के लिए बुलाया था। मैंने उसी समय पार्टी की कार्यकारिणी की बैठक बुलाई। सर्वानुमति से तय पाया गया कि जाना चाहिए। मै दूसरे ही दिन सवेरे अपने तीन सहकर्मियो के साथ मिलने चला गया।

देखते ही श्री सालोवे ने कहा, "देखो मिस्टर एन्क्रूमा, मै हालतो को ज्यादा बिगडने नही दे सकता। व्यवस्था और कानून की स्थापना के लिए कुछ-न-कुछ तो करना ही होगा।"

मैंने कहा, "व्यवस्था और कानून की स्थापना से आप सरकारी कर्मचारियो का अभिप्राय सदा यही होता है कि जनता का दमन किया जाय, उन्हे उठने न दिया जाय और जहा-का-तहा पडा रहने दिया जाय। परतु जब सारा देश राजनैतिक दृष्टि से जाग्रत हो जाता है तो उसे पुन सुलाना असभव है। जनता अपने कष्टो से निस्तार पाना चाहती है।"

"लेकिन तुम्हारी 'सीधी कार्रवाही' की बात ने तो कहर ही बरपा कर रक्खा है। उससे देश मे अव्यवस्था और अराजकता और भी बढेगी। मै तुम्हे सचेत करना अपना कर्त्तव्य समझता हू कि यदि 'सीधी कार्रवाही' के दौरान मे कोई मारा गया तो उसकी पूरी जिम्मेदारी तुमपर होगी। कुछ करने से पहले अच्छी तरह सोच-समझ लो। भारत के उदाहरण पर मत जाओ। वहा के लोग कष्ट-सहिष्णु है और शिकायत नही करते। यहा तीन दिन मे ही लोग टे बोल जायगे और तुम्हे छोड-छाडकर चलते बनेगे।"

मैंने उनकी बात काटते हुए कहा, "लेकिन बताइये, हम क्या करे? सरकार विधान-परिषद् बुलाने की जनता की न्यायोचित और वैधानिक माग को ठुकराती जाती है तो लोगो के पास 'सीधी कार्रवाही' के अतिरिक्त और उपाय भी क्या है? आप विधान-परिषद् बुलाइये, सारे देश को चुनाव क्षेत्रो मे बाटिये, आम चुनाव होने दीजिए और जनता को स्वय फैसला करने दीजिये कि वह कौसी-प्रतिवेदन को चाहती है या नही।"

उन्होने सहानुभूतिपूर्वक विचार करने का आश्वासन दिया। हम एक बार और उनसे मिले, लेकिन कोई परिणाम नही निकला। इधर सरकारी रेडियो ने झूठा प्रचार आरभ कर दिया कि समझौता हो गया है और अब 'सीधी कार्रवाही' नही होगी। सरकार के इस झूठ का पर्दाफाश करना जरूरी था, इसलिए मैंने एक सार्वजनिक सभा बुलाकर लोगो को सचेत किया कि वे सरकारी प्रचार के भुलावे मे न पडे। 'सीधी कार्रवाही' अवश्य होगी और शीघ्र ही निश्चित तिथि की घोषणा की जायगी।

इसपर सरकार ने दमन और आतक के अपने सारे हथियारो को सभाल लिया। स्थिति एकदम विषम और तनावपूर्ण हो उठी। उधर ट्रेड यूनियन काग्रेस ने ६ जनवरी से आम हडताल का ऐलान कर दिया था। मैंने भी शाम को पाच बजे एक आम सभा का आयोजन कर उसमे ६ जनवरी से 'सीधी कार्रवाही' के आरभ किये जाने की घोषणा कर दी। मैंने कहा, "केवल अस्पताल के कर्मचारियो, जल-विभाग के कार्यकर्ताओ और जनहित एव जन-उपयोग के दूसरे विभागो तथा पुलिस महकमे को छोड शेष समस्त

जनता और कर्मचारी ६ जनवरी के बारह बजे रात से आम हडताल करेगे।"

इस प्रकार घाना मे राजनैतिक और सामाजिक क्राति का प्रारभ हुआ।

अकरा मे यह घोषणा करके मै 'सीधी कार्रवाही' के प्रचार और सगठन के लिए खान मजदूरो के क्षेत्र केप कोस्ट, सेकोडी और टाक्वा की ओर चला गया। वहा से १० जनवरी को लौटा तो अकरा की स्थिति को बहुत ही खराब पाया। चारो ओर निराशा एव अनुत्साह का वातावरण था। मुझे उपनिवेश-सचिव के शब्द याद आये, "यहा तीन दिन मे ही लोग टे बोल जायगे " वास्तव मे लोग सरकार के झूठे प्रचार और फूट डालने की नीति के शिकार हो गये थे। सरकारी रेडियो रात-दिन चिल्ला रहा था, "वहा हडताल टूट गई, लोग काम पर हाजिर हो गये, आप भी काम पर जाइये," आदि-आदि।

अकरा मे कुछ दुकाने खुल गई, कुछ खुलने की तैयारी मे थी। सरकार के इस सफेद झूठ का भडाफोड नितांत आवश्यक था। मै ११ जनवरी को सवेरे पार्टी कार्यालय से 'इवनिग न्यूज़' के दफ्तर की ओर पैदल ही चल पडा। लोग मेरे साथ होने लगे। धीरे-धीरे अच्छा-खासा जलूस बन गया। 'इवनिग न्यूज' के दफ्तर तक पहुच भी नही पाया था कि हजारो की भीड जमा हो गई और सारा यातायात ही रुक गया। तब मैने लोगो को एरीना की ओर, जहा सार्वजनिक सभाए हुआ करती थी, जाने के लिए कहा। भीड का बहुत बडा हिस्सा उस ओर मुड गया। कुछ लोग फिर भी मुझे घेरे रहे। मै स्वय भी बहुत उत्तेजित हो रहा था और लोगो को समझाने से पहले कुछ देर शातिपूर्वक विचार करना चाहता था। इसलिए पहले टैक्सी मे एक मित्र के यहा गया और वहा से घटे-भर बाद एरीना पहुचा। वहा सारा नगर ही उमड आया था। मै पूरे दो घटे तक लोगो को झूठ, फरेब और फूट डालने के साम्राज्यवादी हथकडो के बारे मे समझाता रहा। सुनकर लोगो का जोश उमड आया और खून खौलने लगा। अब उनको कोई मशीनरी झुठलावे मे नही डाल सकती थी। देखते-ही-देखते आम हडताल इतनी मुकम्मिल हो गई कि उसी दिन शाम को सात बजत-बजते सरकार को सकटापन्न स्थिति की घोषणा के साथ कर्फ्यू भी लगाना पडा।

अब 'सीधी कार्रवाही' पूरे ज़ोर-शोर के साथ हो रही थी और सरकार भी दमन और आतक के नगे रूप पर उतर आई थी।

सब दुकाने बद, रेल के पहिये जाम सरकारी दफ्तरो मे सन्नाटा।

मजदूर-मात्र अपने घर मे बैठा था। उधर आम सभाओ पर पाबदी, जलूस पर रोक, पार्टी के पत्र-व्यवहार पर कडा सेसर। हमारे तीनो अखबार अब भी लोगो का जोश बढा रहे थे और एकता बनाये रखने का उद्बोधन कर रहे थे। सरकार ने इनपर वार किया। 'इवनिग न्यूज' के दफ्तर पर छापा मारा गया, प्रेस और कार्यालय सील कर दिया गया और पत्र के प्रकाशन पर रोक लगा दी गई। फिर बाकी दोनो अखबारो का भी यही हश्र हुआ। उसके बाद गिरफ्तारियो का सिलसिला शुरू हुआ। सबसे पहले कुमासी के पार्टी नेता पकडे गए, फिर सेकोडी के और सपादक तो तीनो ही पत्रो के पकडकर जेल भेज दिये गए थे।

पर आदोलन का वेग निरतर बढता ही गया। जब 'सीधी कार्रवाही' का सघर्ष अपनी चरमसीमा को पहुच गया तो सरदारो की सयुक्त सूबाई कौसिल ने कनवेशन पीपुल्स पार्टी के नेताओ, भूतपूर्व सैनिको और ट्रेड यूनियन कौसिल को सरकार से शातिपूर्ण समझौते का कोई हल निकालने के लिए दोदोवा नामक स्थान पर आने के लिए कहा। असल मे यह सरकार और सूबाई कौसिल की आदोलन का दमन करने की एक चाल थी। नेताओ को समझौते के बहाने वहा बुलाकर सरकार गिरफ्तार कर लेना चाहती थी। ट्रेड यूनियन कौसिल को इस बात का पता पहले ही लग गया था, इसलिए उन्होने तो अपना कोई प्रतिनिधि भेजा नही। भूतपूर्व सैनिको का प्रतिनिधिमण्डल दोदोवा पहुचने के पहले ही गिरफ्तार कर लिया गया। मै अपने तीन सहकर्मियो के साथ अवश्य पहुच गया, लेकिन हमारी कोई बात नही सुनी गई और बदले मे हमको खूब गालिया सुनाई गई।

दमन का चक्र अब और भी जोरो से चलने लगा। मेरी पार्टी के केद्रीय कार्यालय पर तो पुलिस बिला नागा रोज ही छापा मारती और जो भी नेता या कार्यकर्ता मिल जाता, उसे पकडकर ले जाती थी। सरकार ने अभी तक मेरे ऊपर हाथ नही डाला था। मुझे सबके बाद मे गिरफ्तार करने का इरादा था। पहले मेरे साथियो को पकडकर निहत्था कर दे, मेरा मनोबल तोड दे तो शायद मै आप ही घुटने टेक दू ! लेकिन मै उतना कच्चा और कमजोर नही था, जितना सरकार ने समझ रक्खा था।

कोजो बोत्सियो को १७ जनवरी के दिन गिरफ्तार किया गया। पार्टी के महासचिव वही थे। उनके दफ्तर की पुलिस ने खूब जमकर तलाशी ली और एक-एक कागज उठाकर ले गई। बहुत दिनो तक वह पुलिस की ही हवालात मे रक्खे गए।

अकरा के बाजारो मे सीरियाई, लेबानी और ब्रिटिश लोगो की विशेष

पुलिस सगठित करके उनका पहरा लगा दिया गया। इन लोगो के हाथो मे लाठिया भी थमा दी गई। 'कानून और व्यवस्था की रक्षा करनेवाले ये नये सिपाही' असली पुलिस से भी वाजी मारने लगे। जो भी इन्हे मिल जाता या समीप से गुजरता दिखाई दे जाता, ये लोग लाठिया तानकर उसीपर पिल पडते थे। उन दिनो जाने कितने आदमी 'गायव' हुए, जिनका फिर कभी पता न चला और घायल होनेवालो की तो कोई गिनती ही न थी।

परिस्थिति उस समय और भी विपम हो गई जव भूतपूर्व सैनिको के एक प्रदर्शन को रोकने के सिलसिले मे पुलिस से उसकी भिडत हो गई। दो अफ्रीकी पुलिसमैन मारे गए। अव तो सरकार का शिकजा और भी कस गया। चारो ओर अधाधुध गिरफ्तारिया की जाने लगी।

२१ जनवरी, शुक्रवार की रात दमन की सवसे भयकर और काली रात थी। उसी रात मेरे वाकी वचे साथियो मे से अधिकाश को घेर लिया गया। उस रात सरकार के दात तो मुझपर भी थे, पर मै सयोग से वच गया। यदि पकड मे आ जाता तो अवश्य ही मेरी वोटी-वोटी नोच ली जाती, क्योकि दो पुलिसमैनो की हत्या के कारण सरकार खूख्वार हो उठी थी।

हुआ यह कि उस दिन मै पार्टी कार्यालय से कोई चार वजे निकल गया था। मुझे लावाडी मे एक पार्टी सदस्य से मिलना था। उनके यहा पहुचा तो वह अपने फार्म पर चले गए थे और फार्म वहा से काफी दूर था। मिलना वहुत जरुरी था, इसलिए वही बैठकर प्रतीक्षा करने लगा। जव वह लौटे तो छ वज गये थे और छ वजे से कर्फ्यू लग जाता था, इसलिए मुझे वही रुक जाना पडा। घरवालो से कवल लेकर मै वही जमीन पर सो गया। रात मे मुझे एक बहुत ही वुरा सपना आया। ऊपर से एक वडी-सी काली छतरी मुझपर उतरती दिखाई दी और शीघ्र ही उसने मुझे पूरा-पूरा ढक लिया। मेरा दम घुटने लगा। पाच मिनट तक यही हालत रही और मै सास लेने के लिए छटपटाता रहा। फिर वह छतरी उड गई और मै जाग पडा, परतु ऐसा लग रहा था मानो छतरी अभी-अभी थी और अभी कही दूर अदृश्य हुई है। अफ्रीकियो के विश्वास के अनुसार इस दु स्वप्न का अर्थ होता है कि जिसे ऐसा सपना आये, उसके लिए समझना चाहिए कि वह मौत से वाल-वाल वचा है।

दूसरे दिन सवेरे आठ वजे मै मित्र के घर से पार्टी-कार्यालय के लिए चला। जव वहा पहुचा तो उस जगह की हालत देखकर दग रह गया। पुलिस ने सारी जगह को रौद डाला था और अव बैठी मेरे लौट आने की प्रतीक्षा कर रही थी। उन्होने मेरे निजी भृत्य न्यामेके और उसके कुछ

साथियो को भी गिरफ्तार कर लिया था। थाने मे ले जाकर उन बेचारो की बहुत पिटाई की गई। पुलिस का यह खयाल था कि उन्होने मुझे कही छिपा दिया था, या कम-से-कम मेरे छिपने की जगह तो वे जानते ही थे। परतु उन बेचारो को कुछ भी मालूम नही था।

मुझे देखते ही एक पुलिस अफसर लपककर मेरी ओर आया। उसने सोचा था कि मै भागने का प्रयत्न करूगा। लेकिन मै शातिपूर्वक उसी गति से और उसी दिशा मे बढता चला आ रहा था। पुलिस अफसर ने मेरा हाथ पकडकर इस तरह कहा मानो माफी माग रहा हो, "आप गिरफ्तार किये जाते है।"

"बहुत अच्छा!" मैने जवाब दिया, "लेकिन पहले मुझे अदर जाकर अपना सामान तो ले आने दीजिये।"

उसके बाद मुझे पुलिस की एक वायरलेस गाडी मे बिठाकर थाने ले चले। चलने से पहले ट्रासमीटर से सदेश भेजा गया, "गिरफ्तारी मे कोई बाधा नही हुई। सारा काम शातिपूर्वक निपट गया।" मै सोचने लगा, क्या पुलिस भूल गई कि हमारा 'सीधी कार्रवाही' का आदोलन शातिपूर्ण और अहिसक था?

जब थाने पर पहुचा तो मुझे देखने के लिए वहा एक अच्छी-खासी भीड जमा हो गई थी। अधिकाश अग्रेज ही थे, पर कुछ अफ्रीकी भी आ जुटे थे। उन्होने किसी तमाशे की उम्मीद लगा रक्खी थी। सोचा होगा, चकमा देने-वाले क्रातिकारी को बडी सावधानी से लाया जायगा। पर बेचारो को निराश होना पडा। एक साधारण-सा अफ्रीकी पुलिस की मोटर से उतरा और बिना प्रतिरोध के, बगैर हाथा-पाई किये, चुपचाप थाने मे दाखिल हो गया। उन घूरती हुई असख्य आखो से छुट्टी पाकर थाने मे पहुचा तो मुझे मन-ही-मन बडी शाति मिली। पहले मेरी तलाशी ली गई। फिर पुलिस मैजिस्ट्रेट ने मुझे आरोप पढकर सुनाये और तब जेम्स फोर्ट के जेलखाने मे ले जाकर बद कर दिया गया और मै वहा मुकदमा चलाये जाने की प्रतीक्षा करने लगा।

यह बात तो मै जानता था कि सरकार मुझे देर-अबेर गिरफ्तार करेगी ही, इसलिए पहले से मैने जनता को सचेत कर दिया था कि मेरी गिरफ्तारी पर कोई प्रदर्शन न किया जाय और सब लोग शाति बनाये रहे। लोगो ने मेरी बात को मान लिया और किसी भी प्रकार की उत्तेजना प्रदर्शित नही की गई।

इससे मैने बडे सतोष का अनुभव किया और मुझे विश्वास हो गया कि जनता मेरे साथ है और अत तक मेरा साथ देगी। मैने अपने अतर्देवता के आगे प्रतिज्ञा की—'मै भी कभी अपनी जनता का साथ नही छोडूगा।'

११ :

मुकदमा और जेल

मुकदमा कुल मिलाकर लगभग एक सप्ताह चला होगा और उस सारे समय मैं हवालात मे रक्खा गया। इन दिनो मैं अपने साथियो से मिल सकता था और हम लोग अपने मुकदमे और उससे सबधित अन्य समस्याओ पर विचार-विनिमय भी करते थे। केवल एक बात बुरी लगती थी और वह थी अदालत की रोज-रोज की पेशी और हाजिरी। कुछ वार्डर भी बडे बेहूदे ढग से पेश आते थे। देश के एक साथ इतने प्रमुख व्यक्तियो को उन्होंने पहले कभी जेल मे नही देखा था, इसलिए हम लोगो पर रोब जमाने और अपनी हुकूमत जतलाने का कोई भी मौका वे छोडते नही थे।

मुकदमे के फैसले की मुझे कोई चिता और उत्सुकता भी नही थी। मैं जानता था कि सजा अवश्य होगी। यह भी समझे हुए था कि जो सघर्ष छेडा है, उसमे मुकदमा और जेल होते ही है। यह सोचकर जरूर बुरा लगता था कि इससे काम मे हानि होगी, पर इस विचार से मन बहला लिया करता था कि छूटते ही रुके काम को शुरू करके देर और हानि को पूरा करने का प्रयत्न किया जायगा।

औपनिवेशिक स्वाधीनता के सग्राम मे मुकदमा लडने, अपना बचाव करने और शासको से न्याय पाने की बात तो कभी सोचनी भी नही चाहिए। साम्राज्यवादी शासन मे न्याय-विभाग सदैव शासको के सकेत पर काम करता और उनकी मुट्ठी मे ही रहता है। इसीलिए मुकदमा लडने और अपना बचाव करने का विचार तक मेरे मन मे नही उठता था। परन्तु मेरे कई सहकर्मी चाहते थे कि मुकदमा लडा जाय। उन्हे समझाने से कोई लाभ नही था। बहुत-सी बाते आदमी अनुभव से ही सीखता है। यदि मुकदमा न लडने की अपनी बात पर मैं अड जाता तो उन्हे बहुत बुरा लगता और सारे जेल-जीवन के दौरान मे उन्हे शिकायत बनी रहती। यह मैं बिलकुल नही चाहता था। इसलिए यह जानते हुए भी कि मुकदमा लडने मे धन और समय का अपव्यय ही है, मैंने मुकदमा लडने का निश्चय किया।

मुकदमे के लिए किसी अफ्रीकी वकील को करने का तो प्रश्न ही नही उठता था, इसलिए मैंने इग्लैड से दो नामी वकीलो को बुलवाया। वे भी जानते थे कि होना-जाना कुछ नही है, फिर भी बेचारो ने पूरी लगन से

काम किया। इसमे कुल दो हजार पौंड खर्च हुए, जिनके भुगतान के लिए मुझे कई लोगो से कर्ज लेना पडा।

मेरे ऊपर एक साथ कई मुकदमे चलाये गए। सबसे सगीन मुकदमा था उन दो अफ्रीकी पुलिसमैनो की हत्या का। सरकार ने सारा अपराध मेरे मत्थे मढने की कोशिश की। 'सीधी कार्रवाही' की घोषणा मैने की थी, उस कार्रवाही के दौरान मे ही वे पुलिसमैन मारे गए थे, इसलिए उनकी हत्या का अपराधी भी मै ही हुआ—यह था सरकार का तर्क। अगर इस तर्क से मै फसाया जा सकता तो सरकार मुझे फासी चढाकर छुट्टी पा लेती, लेकिन किसी भी तरह इस हत्या के लिए मुझे जिम्मेदार नही ठहराया जा सका और मै बाल-बाल बच गया।

दूसरा मुकदमा था लोगो को 'सीधी कार्रवाही' के नाम पर गैर-कानूनी हडताल के लिए उकसाना। ट्रेड यूनियन कौसिल और मिटिओरोलाजिकल एम्प्लायिज यूनियन की हडतालो के लिए भी मुझको ही दोषी ठहराया गया। उपनिवेश-सचिव श्री सालोवे सरकार की ओर से मुख्य गवाह थे। उन्होने बडे विस्तारपूर्वक मेरे सारे 'गुनाहो' का बयान किया। इन दोनो अपराधो के लिए मुझे अलग-अलग एक-एक साल की सजाए दी गई। कानून का पेट इतने मे ही नही भरा। केप कोस्ट के मेरे अखबार 'डेली मेल' मे एक लेख छपा था, उसके लिए पत्र के सपादक को पहले ही सजा दी जा चुकी थी, परतु मै प्रकाशक था और मुझे भी सजा मिलनी चाहिए थी, इसलिए राज-द्रोह का एक मुकदमा केप कोस्ट मे भी चला।

अब मैं सरकार बहादुर का मेहमान था, इसलिए पूरे इन्तजाम के साथ मुझे मुकदमे की सुनवाई के लिए केप कोस्ट ले जाया गया। रास्ते मे कही भाग न जाऊ, इसलिए हाथो मे हथकडिया कस दी गई। फिर बाबा आदम के जमाने की एक पुलिस-गाडी मे बधे हाथो ही चढने का हुक्म दिया गया। कलाबाजी का कोई कुशल बाजीगर भी दोनो हाथ बाधकर शायद ही उस ऊची मोटर में चढ पाता, पर मैं किसी तरह चढ गया। वह मोटर इतनी खस्ता हाल थी कि अकरा से केप कोस्ट पहुचते-पहुचते मेरे अजर-पजर ढीले हो गये। किसी तरह बधे हाथो से एक लोहे की सलाख को पकडकर अपने-आपको थामे रहा। अगर पकड जरा-सी भी ढीली हो जाती तो अपने राम सडक पर नजर आते।

और कीडे-मकोडो का तो उस मोटर पर मानो साम्राज्य ही था। सबने मिलकर मुझपर हमला बोल दिया। हाथ बधे रहने के कारण मैं न तो उन्हें अपने बदन पर से हटा सकता था, न खुजला ही सकता था। उन्होंने

भी उस दिन मेरी खूब खबर ली। लेकिन सब कष्ट-ही-कष्ट नही था। किसी वार्डर ने करुणा से उद्वेलित होकर मुझे एक चाकलेट भी ला दिया था। मानवी करुणा और दया के उस प्रदर्शन ने मुझे हर्षविभोर कर दिया।

केप कोस्ट की जेल पर पहुचने के बाद मुझे एक बार फिर बधे हाथो मोटर से उतरने की कलाबाजी दिखानी पड़ी। फिर जेल की कोठरी में बद कर दिया गया और इतनी गहरी नीद सोया, जो इधर कई दिनो से नसीब न हो सकी थी।

केप कोस्ट वाले मुकदमे मे भी मुझे एक साल की सजा दी गई। तीनो सजाए एक-के-बाद एक भुगती जाने को थी। वहा से फिर उसी तरह जेम्स फोर्ट लाया गया और जेल के ग्यारह नबर कमरे मे पहुचा दिया गया। मेरे दसो साथी भी उसी कमरे मे रक्खे गए थे।

अब ग्यारह नबर के कमरे मे हम ग्यारह आदमी थे। अपराध हमारा राजनैतिक था, लेकिन हमारे साथ व्यवहार राजनैतिक कैदियो-सा नही, सामान्य अपराधियो-जैसा ही किया जाता था। ग्यारह आदमियो के बीच हाजत रफा करने के लिए सिर्फ एक बाल्टी थी, और वह भी उसी कमरे के एक कोने में रक्खी गई थी। ऊपर से मजा यह कि कोई आड नही। पिंजरे मे बद पशुओ की तरह सबके सामने, सबके द्वारा देखे जाते हुए ही हाजत रफा करनी होती थी और हम लोगो को ही रोज बारी-बारी से उस गन्दगी को साफ भी करना पडता था। जेल के रद्दी खाने की वजह से सबके पेट खराब हो रहे थे, इसलिए वह गदा काम और भी घिनौना हो जाता था।

खाना बहुत ही कम और खराब दिया जाता था। नाश्ते मे मक्का का एक प्याला फीका दलिया—चीनी उसमे नाम को भी न होती और दुपहर तथा शाम के भोजन मे उबला हुआ कसावा (एक प्रकार का अन्न, जिससे अरारूट अथवा टपोइका बनाया जाता है), केंके नामक अनाज की खिचडी या कसावा की कढी। सबमे खूब लाल मिर्च झोकी जाती थी। रवि और बुध को गोश्त का शोरबा देते थे, जिसमे बोटी ढूढे न मिलती और अगर मिल भी जाती तो वह पत्थर की गोली से भी सख्त होती थी। कभी भुनी मछली और काली मिर्च भी मिल जाती थी, लेकिन कभी-कभी ही। चावल केवल बीमारो को दिया जाता था और वह भी जेल के डाक्टर की सिफारिश पर।

मेरे साथियो ने इस रद्दी खाने के खिलाफ भूख-हडताल का निश्चय किया और मेरे बहुत समझाने-बुझाने पर भी कइयो ने हडताल कर ही दी। मै जेल मे भूख-हडताल के जरा भी पक्ष मे नही था। वहा भूख-हडताल

करने का अर्थ था सदा के लिए कमजोर, अक्षम और पगु हो जाना और मै नही चाहता था कि रिहा होने पर कोई काम से बेकार हो जाय। आखिर बहुत समझाने-बुझाने के बाद लोगो ने भूख-हडताल वापस ली।

मै सप्ताह मे दो दिन उपवास किया करता था। यह मेरी पुरानी आदत थी। इससे आध्यात्मिक लाभ के अतिरिक्त शारीरिक लाभ भी था। पेट यदि गडबडाने लगता तो लघन से विश्राम पाकर ठीक हो जाता था। खाने के सबध मे किसी प्रकार की दुर्बलता न होने के कारण मुझे जेल मे कोई मानसिक कष्ट नही हुआ। मेरे कई साथी, जो अच्छा खाने के शौकीन थे, अवश्य बहुत कष्ट मे रहे।

हमे सवेरे सात बजे कमरे मे से निकाला जाता और ग्यारह बजे तक बाहर रक्खा जाता था। इस बीच कुछ वर्जिश और मेहनत-मजदूरी करवाई जाती थी। आम तौर पर मछली-जाल बुनना या टोकरियो के लिए बेत साफ करने का काम लिया जाता था। फिर एक बजे तक कमरे मे बद कर दिये जाते थे। चार बजे तक बाहर रखने के बाद फिर सारी रात और दूसरे दिन सवेरे सात बजे तक बद रहना पडता था। शाम का खाना चार बजे खिला दिया जाता था। प्राय शाम का भोजन हमे कमरे मे बद करके ही खिलाया जाता था।

जेल मे पढने-लिखने की कडी मनाही थी। अखबार नही दिया जाता और कागज-पेन्सिल तो देखने को भी नही मिलते थे। माता-पिता अथवा निकट के रिश्तेदारो को महीने मे सिर्फ एक पत्र लिखने की अनुमति थी। पत्र लिखते समय कोई-न-कोई वार्डर सिर पर खडा रहता और एक-एक अक्षर पढता जाता था। फिर जेल के अधिकारी उसे सेसर करते। केवल कुशल-समाचारो के अतिरिक्त और कुछ भी लिखा होता तो काट दिया जाता था।

मुझे बाहर के समाचारो की बडी चिता लगी रहती थी। पार्टी सगठन और आदोलन के बारे मे जानने को भी उत्सुक रहता था, परतु शुरू-शुरू मे तो बडी ही परेशानी रही। जिस दिन मै जेल मे आया, उसी दिन मेरे एक साथी ग्वेदेमा अपनी सजा पूरी करके रिहा हो रहे थे। मुझे उनसे बाते करने का मौका मिल गया और पार्टी सगठन एव 'इवनिंग न्यूज़' चलाने का सारा उत्तरदायित्व मैने उन्हे सौप दिया। जाते-जाते वह कहते गए थे, "मै आपसे सपर्क बनाये रहूगा।"

जेल से बाहर की दुनिया के साथ मै केवल पत्र-व्यवहार के ही द्वारा अपना सपर्क बनाये रख सकता था। इसके लिए कागज और पेसिल की

आवश्यकता थी। वहुत कोशिशो के वाद दो-एक इच का पेसिल का एक टुकडा मिल गया। मै उसे अपनी पतलून के ऊपरी मोड मे छिपाये रहता। कागज की समस्या भी अनायास ही हल हो गई। हम लोग भारतीयो की भाति शौच के वाद पानी का उपयोग तो करते नही थे। जेल मे इस काम के लिए कागज दिया जाता था, जिसे 'टायलेट पेपर' कहते है। मै पत्र-व्यवहार के लिए इसी कागज का उपयोग करने लगा। दूसरे कैदियो से भी अपने खाने या और किसी जरूरी चीज के वदले मे कागज ले लिया करता था। पता नही, वे मन मे क्या सोचते थे, परतु जो भी सोचते रहे हो, मुझे कागज़ अवश्य दे जाया करते थे। सारा कागज मै अपने विस्तरे के नीचे छिपाकर रखता था।

लिखने के लिए समय रात मे ही मिल पाता था। हमारे कमरे मे तो वत्ती जलाई नही जाती थी। वाहर की विजली की वत्ती का थोडा-सा उजाला कमरे के फर्श और दीवार पर पडता था। मै फर्श के उजाले मे लेटा-लेटा लिखता और जव थक जाता तो खडा होकर दीवार पर पडनेवाले उजाले मे लिखा करता। एक वार तो इसी तरह मैने टायलेट कागज के पचास ताव लिखे थे। ग्वेदेमा ने तिकडम से अपने पत्र भेजने और मेरे पत्र पाने का प्रवध कर दिया था। वडे मजे से हमारा पत्र-व्यवहार चल जाता था। वह समय-समय पर वाहर की पूरी रिपोर्ट भेज देते थे और मै अपनी सलाह, सुझाव और सूचनाए भेज दिया करता था।

ग्वेदेमा की तिकडम एजेसी का वडा लाभ रहा। जेल से लिखे मेरे सदेशो को वे वाहरवालो को पढकर सुनाते और उनके मनोवल को वनाये रखते और आदोलन मे शिथिलता नही आने देते थे। सप्ताह मे दो-एक वार हम भी वाहर की हलचल सुन लिया करते थे। काफी वडी सख्या मे लोगो की भीड जेल के आगे आ जमा होती, नारे लगाती और पार्टी के गीत और भजन गाती थी। सुनकर स्वय मेरा मनोवल वढता और इस विचार से मन कृतज्ञ हो उठता था कि जनता ने मेरा विस्मरण और परित्याग नही किया है।

जेल मे मैने दाढी वढा ली थी। इसका कारण यह था कि हम ग्यारहो आदमियो को हजामत वनाने के-लिए सिर्फ एक ही उस्तरा दिया गया था और सावुन भी एक ही था। मैने और मामलो मे तो मन को काफी समझा लिया था, परतु चर्म रोग की आशका के कारण एक ही उस्तरे से हजामत वनाने को किसी भी तरह प्रस्तुत न हो सका।

रविवार के दिन हमारी छुट्टी रहती, हम कपडे धोते और जेल के

गिरजाघर मे प्रार्थना भी करने जाया करते थे । दूसरे सभी कैदी इसमे बडे उत्साह से भाग लेते, कई बच्चो की तरह रोने लगते और प्रण करते कि आगे से कोई अपराध नही करेगे । परतु अपराध उनके स्वभाव का अग बन गया था, क्योकि रिहाई के तुरत बाद ही वे पुन उन्ही अपराधो के लिए जेल मे होते थे ।

हमने जेल मे अपनी दो समितिया भी बना ली थी, जिनकी बैठक रविवार के सवेरे किया करते । एक समिति का अध्यक्ष मै था और दूसरे के कोजो बोत्सियो । इन समितियो मे हम अपनी जेल की समस्याओ पर विचार करते थे । जेल के अधिकारियो को हमारी इन समितियो के बारे मे अत तक पता नही चल सका ।

लेकिन जेल के कष्टो और वहा की एकढर्रा जिदगी से हम सबमे कटुता भी उत्पन्न हो गई और दूसरा महीना बीतते-बीतते तो आपस मे लडाई-झगडे और कहा-सुनी भी होने लगी । मुझे प्राय मध्यस्थता करनी पडती और बडी कठिनाई से लोगो को समझा-बुझाकर शात कर पाता था । कटुता के साथ-साथ लोगो मे स्वार्थ और प्रतिशोध की भावना भी घर करने लगी । एक बार मुझे 'इवनिंग न्यूज' की एक प्रति मिल गई । कमरा बद होने के बाद पढने लगा तो हमारे ही साथियो मे से एक दिलजले ने शिकायत कर दी । उसी समय सबकी तलाशी हुई और अखबार को बरामद कर उसके टुकडे-टुकडे कर दिये गए । यह तो गनीमत हुई कि मेरा पेसिल का टुकडा और लिखने के कागज उनके हाथ नही पडे । दडस्वरूप मेरा राशन कम कर दिया गया । भरपेट तो पहले भी नही मिलता था, इस सजा ने जुल्म ढा दिया, परन्तु भुगतने के अतिरिक्त चारा ही क्या था ! चुपचाप सहता रहा ।

जेल मे थोडा मनोविनोद भी हो जाता था । रविवार को गिरजे की प्रार्थना के अतिरिक्त सभी कैदी और हम भी जूआ खेला करते थे । दाव पर रुपया-पैसा नही लगाया जाता था । रुपया वहा बेकार ही था । टायलेट कागज, साबुन और फलो की मीगी दाव पर लगाते थे, क्योकि इन्ही तीन चीजो की वहा माग थी और मूल्य भी । फलो की मीगी को मुह मे चबाकर लोग हथेलियो मे ले लेते और उसकी बदन पर मालिश करते । जेल के रूखे खाने से होनेवाली खारिश मे इनसे बडा लाभ होता था । मै टायलेट कागज पाने के ही लिए जूआ खेलता और इसके लिए खूब बढ-बढ कर दाव लगाता था ।

जिस दिन किसीको फासी लगती, वह सारा दिन हमारा बहुत बुरी तरह बीतता था और महीने मे कम-से-कम एक फासी तो जरूर ही हो जाती थी ।

फासी के कैदियो को सबसे अलग काल कोठरियो मे रक्खा जाता था। उन्हे सदैव हथकडी-वेडी मे लाया जाता। फासीवाले दिन हमे सवेरे छ वजे ही ऊपरवाले कमरे मे भेज दिया जाता, जो हमारे कमरे के ठीक ऊपर ही वना था। कुछ लोग खिडकियो और जगलो से झाक-झाककर देखने की कोशिश करते, पर उन्हे कुछ भी दिखाई न देता था। दस वजने के वाद ही हमे नीचे लाया जाता। फासी की जगह स्नानघर के ठीक पीछे थी, इसलिए स्नानघर के आसपास खून के धव्वे उस दिन अवश्य देखने को मिलते थे। हमारे ही नही, प्राय सभी कैदियो के मन उस दिन उदास रहते।

जितने दिनो मै जेल मे रहा, प्राय सभी फासिया या तो पत्नियो की अथवा पत्नी के प्रेमियो की हत्या के अपराध मे दी गई। मुझे वहुधा यह विचार आता कि आखिर इस तरह फासी की सजा देने से लाभ क्या! इससे अपराधियो का सुधार तो होता नही और न अपराध मे कमी ही होने पाती है। प्राणदड कभी हत्या का इलाज हो भी नही सकता। अपराधी भी आखिर मनुष्य ही है और कोई आदमी जन्म से अपराधी नही होता। समाज ही उसे अपराधी वनाता या वनने पर मजबूर करता है। इसलिए सच्चा हल तो यही है कि समाज को वदला जाय। अपराध और दड का निराकरण सामाजिक दृष्टिकोण से ही किया जाना चाहिए। प्राणदड के तो मै सदव ही विरुद्ध रहा हू और इसे वर्वरता का प्रतीक मानता आया हू। दड का उद्देश्य कभी भी प्रतिशोध नही होना चाहिए, सहानुभूति और सुधार ही दड के वास्तविक उद्देश्य है।

मेरा लालन-पालन एक आदिम समाज मे हुआ और पूरा वचपन भी वही वीता। अपनी अट्ठारह वर्ष की उम्र तक मुझे एन्जीमा मे एक भी हत्या की घटना याद नही पडती। केवल एक पगले ने किसीको मार डाला था। अपराधो की वाढ हमारे यहा पश्चिमी सस्कृति के सपर्क से ही आई। दगा और फरेव, घूस और भ्रष्टाचार-जैसे दुर्गुण हमारे समाज मे पहले थे ही नही।

चौदह महीने के अपने जेल-जीवन से मै इसी निष्कर्ष पर पहुचा हू कि वहा कैदी अपना व्यक्तित्व और आत्मसम्मान पूरी तरह से गवा देता है। उसका सारा आत्मविश्वास नष्ट हो जाता है और उसमे वाहरी दुनिया से सामजस्य की सामर्थ्य विलकुल ही नही रह जाती। यही कारण है कि मुक्ति के वाद वह फिर जेल मे ही आकर रहना पसद करता है।

जेल के निष्क्रिय जीवन से कष्ट तो मुझे भी कम नही हुआ, परतु एकदम ऊव नही गया, उसका एकमात्र कारण यही था कि मेरा सारा समय वाहर की पार्टी को चलाने और उसकी योजनाओ मे वीतता था।

मै जेल मे ही था और आम चुनाव सिर पर आ गये । ८ फरवरी १९५१ को सारे देश मे चुनाव होने को थे । मैने वाहर के पार्टी सदस्यो को सलाह दी कि वे एक-एक सीट पर चुनाव लडे और नई धारा-सभा मे प्रचड वहुमत प्राप्त करे । मै स्वय खडा नही होना चाहता था, परतु कुछ मित्रो ने सुझाया कि यदि मै लडू और जीत जाऊ तो सरकार को मुझे अवधि से पहले ही रिहा करने को वाध्य होना पडेगा । इस तर्क मे काफी वजन था, मुझे वात पसद आ गई और मै चुनाव लडने को तैयार हो गया ।

हमारे यहा के कानून के अनुसार किसी भी व्यक्ति को, यदि उसकी सजा एक वर्ष से अधिक की नही है, तो मतदान से वचित नही किया जा सकता । मुझे कुल मिलाकर तीन वर्ष की सजा दी गई थी, लेकिन वे एक-एक कर तीन सजाए थी और एक के वाद एक भुगती जाने को थी, इसलिए मै मतदाता तो वना ही रह सकता था और जो मतदाता हो, वह चुनाव भी लड ही सकता है । सवसे पहले मैने अपना नाम मतदाता-सूची मे दर्ज करवाया । फिर जेल के अधिकारियो को अपने चुनाव लडने के निश्चय से सूचित किया । उधर कुछ पार्टी-सदस्यो ने मेरे चुनाव लडने के निश्चय का घोर विरोध किया, पर मैने एक न सुनी । मै अकरा सेट्रल से खडा हुआ । पहले पार्टी की ओर से इस क्षेत्र से ग्वेदेमा ने अपना नामजदगी पत्र पेश किया था, परतु मेरा निश्चय मालूम होते ही वह हट गये और केरा क्षेत्र से खडे हुए । जेल के अधीक्षक के ही द्वारा मैने नामजदगी पत्र और जमानत का रुपया दाखिल करवाया । जेल मे ही मैने पार्टी का नया चुनाव घोषणा-पत्र लिखा और तिकडम से उसे वाहर भेजा । जव लोगो को पता चला कि मै भी चुनाव लड रहा हू तो उनके उत्साह की सीमा न रही ।

चुनाव की रात मै स्वय वडा उत्तेजित रहा और जेल के अधिकारियो को भी वहुत व्यस्त रहना पडा । जाने कैसे यह अफवाह फैल गई कि मतदाता मुझे छुडाने के लिए जेल पर हमला करनेवाले है । लेकिन इस तरह की कोई दुर्घटना नही हुई । जेल-अधीक्षक मुझे घटे-घटे पर चुनाव की प्रगति से सूचित करते रहे । सवेरे चार वजे मुझे अपनी जीत के समाचार दिये गए । मैने कुल २३,१२२ मतो मे से २२,७८० मत प्राप्त किये थे । इतने अधिक मत आजतक देश के इतिहास मे किसीको भी प्राप्त नही हुए थे । अव तो लोगो के उत्साह को रोकना सचमुच मुश्किल हो गया । हजारो की भीड जत्थे वनाकर मेरी रिहाई के लिए जेम्स फोर्ट की ओर वढने लगी । यदि उस दिन ग्वेदेमा ने उन्हे रोकने मे अपनी पूरी शक्ति न लगा दी होती तो जाने क्या अनर्थ हो जाता ।

'जीतने का विश्वास तो मुझे था ही, फिर भी विजय के समाचार सुनकर मन प्रसन्न हो गया और दूसरे ही क्षण जनता के अगाध विश्वास और प्रेम के प्रति कृतज्ञता और विनम्रता से नत मस्तक हो उठा। थोडी देर मै इन्ही भावनाओ मे डूवा वैठा रहा। तभी मुझे वताया गया कि कुछ विदेशी सवाददाता मुझसे मिलना चाहते है और जेल के दफ्तर मे प्रतीक्षा कर रहे है। लेकिन मैने मिलने से साफ इन्कार कर दिया, क्योकि मै जानता था कि ये सज्जनगण आपके दिये वक्तव्य को कभी छपने के लिए नही भेजते, एक मनगढत सनसनीखेज खवर वनाकर उसीको छपवाते है।

चुनाव-परिणाम की घोषणा के दूसरे ही दिन कनवेशन पीपुल्स पार्टी की कार्यकारिणी समिति के सदस्यो का एक प्रतिनिधि-मडल मेरी रिहाई के सवध मे गवर्नर महोदय से मिला। गवर्नर ने मुझे रिहा करना स्वीकार कर लिया, लेकिन इस वात को विलकुल गुप्त रक्खा गया।

१२ फरवरी १९५१ के दिन कोई ग्यारह और वारह वजे के वीच जेल-अधीक्षक ने मुझे वुला भेजा और कहा कि रिहाई का आदेश आ गया है, घटे-भर मे चलने के लिए तैयार हो जाऊ। तैयारी मुझे करनी ही क्या थी। अपनी कुल जमा सपत्ति मे पेंसिल का वह टुकडा और थोडे-से टायलेट कागज थे, जिनकी अव कोई कीमत नही रह गई थी। मैने कहा, "मै अभी ही तैयार हू।"

लेकिन वहुत गुप्त रखे जाने पर भी मेरी रिहाई का समाचार सारे शहर मे विद्युत् वेग से फैल गया। जव एक वजे मै जेल के फाटक से वाहर हुआ तो जहातक दृष्टि जाती थी, नरमुड-ही-नरमुड दिखाई दे रहे थे। अव मेरी समझ मे आया कि गवर्नर ने रिहाई के आदेश को इतना गुप्त क्यो रखा था।

वैसा जन-समुदाय मैने अपने जीवन मे पहले कभी नही देखा था। समझ मे ही नही आया कि इस समय क्या करना उचित है। वस, खडा एकटक देखता ही रहा। विलकुल समाधि की-सी अवस्था हो गई थी। फिर मैने किसीको अपने कान के पास नाम लेकर पुकारते सुना। वह मेरे मित्र ग्वेदेमा की प्यारी और परिचित आवाज थी। अव कही जाकर समाधि टूटी, परतु तवतक तो लोगो ने मुझे कधो पर उठा लिया था और हर्षविभोर होकर नृत्य करते हुए समीप ही एक मोटर मे ले जाकर खडा कर दिया था। मोटर चीटी की चाल से आगे वढने लगी। उस समय की अपनी भावनाओ का मै आज भी वर्णन नही कर सकता। चारो ओर तरगित होते हुए महा-समुद्र की भाति जन-समुदाय उमड रहा था, नारे लगा रहा था, हर्ष-ध्वनिया

कर रहा था। अगर मैं सहारे के लिए बीच-बीच में नीले आसमान की ओर ताकने न लगता तो शायद चक्कर खाकर गिर ही पड़ता। जनता की श्रद्धा सम्मान और विश्वास ने मुझे पूरी तरह अभिभूत कर लिया था।

ताजी और मुक्त हवा के झोकों ने मुझे धीरे-धीरे प्रकृतिस्थ किया। मैं अपने अंदर नये जीवन और नये जोश की अनुभूति करने लगा। आज का दिन मेरे जीवन का सबसे महान और स्मरणीय दिन था। आज का दिन मेरी विजय का और मेरे योद्धाओं की विजय का ऐतिहासिक दिन था। आजतक किसी भी सेनानायक को अपनी सेना पर इतना गर्व नहीं हुआ होगा और किन्हीं भी सैनिकों ने अपने सेनापति के प्रति इतना प्रेम और स्नेह नहीं प्रदर्शित किया होगा।

· १२ ·

सरकार के संचालन का नेतृत्व

जेल से मेरी रिहाई के दूसरे दिन, सवेरे नौ वजे गवर्नर ने मुझे मिलने के लिए वुलाया। मै ठीक समय पर क्रिश्चियनवोर्ग केसल पहुच गया। पहली ही वार मैने गवर्नर हाउस की उस भव्य इमारत को देखा और देखता ही रह गया। उसकी विशालता, सुदरता और ऊचाई का मुझपर काफी गहरा प्रभाव पडा। उन दिनो सर चार्ल्स आर्डेन क्लार्क गवर्नर थे। हम दोनो एक-दूसरे का विरोध करते आये थे, परतु मै उनसे कभी मिला नही था। मै सोचता जा रहा था, पता नही किस किस्म के आदमी हो और पता नही कैसा व्यवहार करे।

वह डौल मे लवे, चौडे कधो और सूरज-तपे रग के आदमी थे। देखने मे वडे ही दृढ और अनुशासित, परतु नेत्रो मे दयालुता की आभा। मेरे स्वागत को हाथ वढाये हुए आये—पजा काफी वडा और योग्यता एव कार्यक्षमता का सूचक था। पारस्परिक अभिवादन के वाद हम वैठ गये और वाते करने लगे। जितना मै उनके प्रति सशक था, वह भी मेरे प्रति उतने ही सशक लग रहे थे। मैने आरभ से ही यह वात उनपर स्पष्ट कर दी कि मै दुराव-छिपाव मे नही, सीधी-सच्ची वात मे विश्वास करता हू, क्योकि स्पष्टवादिता से ही पारस्परिक विश्वास उत्पन्न होता है। उन्होने वडे तपाक से मेरी इस वात का समर्थन किया और मैने पाया कि उनके शब्दो मे भी सचाई कूट-कूटकर भरी हुई थी। वह मुझे वडे ही सच्चे, भले, ईमानदार और न्यायनिष्ठ व्यक्ति लगे और यद्यपि मेरे देश मे वह व्रिटिश साम्राज्यवाद के प्रतिनिधि और प्रतीक के रूप मे थे, फिर भी वह मझे एक मित्र की ही तरह प्रतीत हुए।

मै जेल की कोठरी से चला ही आ रहा था और वहा व्रिटिश साम्राज्यवाद के हाथो जो कप्ट और अपमान सहने पडे थे, उनके कारण मन मे रोप और कटुता का होना स्वाभाविक भी था, लेकिन मैने उन सव वातो को विलकुल ही भुला दिया था। प्रतिहिसा, घृणा और कटुता का मेरे स्वभाव से कोई मेल नही। अपने रिहाई के वक्तव्य मे भी मैने यही वात कही थी कि 'आज जव मै जेल से धारा-सभा मे जा रहा हू, व्रिटेन के प्रति मेरे मन मे ज़रा-सी भी कटुता नही है। मै व्यक्तियो एव जातियो के प्रति किसी भी

प्रकार के भेदभाव का कट्टर विरोधी हू और साम्राज्यवाद का भी, वह किसी भी रूप मे क्यो न हो, उतना ही विरोधी हू ।

गवर्नर ने मुझे इस बात पर विचार-विनिमय करने के लिए बुलाया था कि मै अपना मन्त्रिमडल बनाऊ । जब गवर्नर हाउस से चला तो यह सब मुझे स्वप्नवत लग रहा था । सोचता जा रहा था कि अभी नीद खुलेगी तो अपने को जेल की कोठरी मे मक्का के दलिये का प्याला हाथ मे लिये बैठा पाऊगा ।

यहा उस समय के विधान और धारा-सभा के बारे मे कुछ बतला देना आवश्यक है। कौसी-प्रतिवेदन ने यह सुझाव दिया था कि धारा-सभा एक स्पीकर (अध्यक्ष) और चौहत्तर निर्वाचित सदस्यो की रहेगी । स्पीकर का चुनाव धारा-सभा अपने सदस्यो मे से या बाहर से भी करने को स्वतत्र होगी । सार्वजनिक क्षेत्र से कुल अडतीस सीटो पर चुनाव लडा गया था, जिनमे पाच सीटे नगरपालिकाओ के क्षेत्र मे और शेष तैतीस देहाती क्षेत्रो मे थी । नार्दर्न टेरिटरीज के निवासियो को उन्नीस सीटे दी गई थी, जिनके चुनाव का अधिकार कालोनी, अशाटी और ट्रास-वोल्टा, टोगोलैड की क्षेत्रीय कौसिलो को था । चैबर ऑव कामर्स और चैबर ऑव माइन्स को अपने छ -छ विशेष सदस्य भेजने का अधिकार दिया गया था । तीन पदेन सदस्यो की नियुक्ति गवर्नर के हाथ मे थी । इन पदेन सदस्यो मे से एक सुरक्षा और विदेशी मामलो का, दूसरा वित्त-विभाग का और तीसरा न्याय-विभाग का मत्री था । मेरी पार्टी ने सार्वजनिक चुनाव-क्षेत्र की अडतीस सीटो मे से तैतीस पर कब्जा किया था, और धारा-सभा की सबसे बडी निर्वाचित पार्टी होने के नाते गवर्नर ने मुझे अपना मन्त्रिमडल गठित करने के लिए आमन्त्रित किया था ।

अगर मै अपने मन्त्रिमडल के सभी सदस्यो का पार्टी सदस्यो मे से ही चुनाव करता तो क्षेत्रीय सदस्यो और अन्य स्वतत्र सदस्यो से हमेशा टक्करे होते रहने का भय था । इसलिए मैने पार्टी की केद्रीय समिति मे यह सुझाव रक्खा कि सात मे से पाच मत्री पार्टी के हो और एक नार्दर्न टेरिटरीज का और एक अशाटी का । केद्रीय समिति ने इस प्रस्ताव का कडा विरोध किया, लेकिन काफी बहस-मुबाहसे के बाद मेरा सुझाव मान लिया गया ।

पार्टी के पाच सदस्यो मे कोजो बोत्सियो—शिक्षा और समाज-कल्याण, ग्बेदेमा—स्वास्थ्य और श्रम, कैस्ली-हे फोर्ड—कृषि और नैसर्गिक साधन, टी० हट्टन-मिल्स—व्यवसाय, उद्योग और खनिज तथा डाक्टर अनसाकोई—यातायात और जनकार्य के मत्री नियुक्त किये गए । दो गैर-

पार्टी मन्त्रियो मे एक स्थानीय शासन के और दूसरे विना किसी विभाग के मत्री वनाए गये। विधान के अनुसार धारा-सभा मे निर्वाचित वहुमत दल का नेता होने के नाते सरकार के सचालन का भार मुझे ग्रहण करना पडा।

कनवेशन पीपुल्स पार्टी की यह प्रचड विजय वहुतो के लिए अप्रत्याशित ही थी। विरोधी दल का तो पक्का विश्वास था कि सरकार के सचालन का नेतृत्व अटर्नी-जनरल को ही प्रदान किया जायगा। कुछ सदस्यो की नियुक्ति गवर्नर के हाथ मे रहने के कारण मत्री-पद के आकाक्षी भी कई थे ओर उन वेचारो ने तो अवसर और पद के उपयुक्त नये सूट ही नही सिलवा लिये थे, अपनी पत्नियो को उच्च पदस्थो के स्वागत-सत्कार के तौर-तरीके सीखाने के लिए विलायत भी भेज दिया था। परतु पार्टी की जीत ने उन सवके इरादो पर पानी फेर दिया।

पार्टी के निर्वाचित सदस्यो को धारा-सभा मे पार्टी-नीति समझाने, वहा की समस्याओ से अवगत करने और भविष्य मे उपस्थित होनेवाले खतरो से सचेत करने के लिए मैंने एक सभा का आयोजन कर उसमे भाषण दिया और वाद मे उसी भाषण को पुस्तकाकार छपवा भी डाला।

पहली वात तो मैंने यह कही कि धारा-सभा मे पहुच जाने से हमारी 'स्वराज्य अभी और इसी समय' की लडाई वद नही हो जाती। धारा-सभा-प्रवेश उस लडाई का ही एक अग है। अव वाहर और भीतर दोनो जगहो से लडा जायगा। जो इस उद्देश्य के विरोधी होगे, उनके साथ मिलकर हम काम नही कर सकेगें।

दूसरी वात मैंने यह समझाई कि जनवादी व्यवस्था मे कोई राजनैतिक दल अल्पमत मे होता है तो विरोधी दल का काम करता है और वहुमत मे होता है तो सरकार वनाता है। इस प्रश्न पर कोई समझौता सभव नही और देश मे दूसरे राजनैतिक गुटो की जो स्थिति इस समय है, उसमे उनसे मेल-जोल या सयुक्त मोर्चा खतरनाक ही होगा।

फिर मैंने इस वात पर जोर दिया कि जनवादी सरकार की स्थापना के अपने सघर्ष को हमे एक क्षण के लिए भी शिथिल नही होने देना चाहिए। दमन, कठोर दड और भीपण यत्रणाओ की अवहेलना करते हुए जो दुर्दमनीय सघर्ष किया जायगा, वही साम्राज्यवादियो को स्वराज्य देने के लिए विवश कर सकेगा।

आगे मैंने पार्टी के प्रत्येक विधायक को व्यक्तिगत लाभ-लोभ से वचने और जनता के हितो को सर्वोच्च और सर्वोपरि समझने की सलाह दी।

मैन उन्हे सचेत किया कि पार्टी मे जनता का विश्वास ही हमारा सबसे बडा धन है और उसे कभी न गवाया जाय। असल मे वास्तविक सत्ता तो जनता मे ही निहित है और राजनैतिक अधिकार भी जनता को ही चाहिए, लेकिन अगर हम वर्तमान विधान के अनुसार अफ्रीकी मत्रियो की नियुक्ति कर देते है और उनपर जनता का नियत्रण नही रखते तो वे जल्दी ही ब्रिटिश शासको के हाथ के कठपुतले बन जायगे। इसकी रोकथाम का एक ही उपाय है और वह यह कि नई धारा-सभा मे पार्टी-पद्धति को आरभ किया जाय। इस पद्धति के अपनाये जाने से प्रत्येक मत्री अपने-आपको नौकरशाहो के प्रति उत्तरदायी समझने के स्थान पर जनता के प्रति उत्तरदायी समझेगा।

मैंने उन्हे इस बात से भी सचेत किया कि धारा-सभा के सदस्य बन जाने का यह अर्थ कदापि नही कि जनता से सारा सबध ही तोड लिया जाय। जनता ने ही हमारी पार्टी को जन्म दिया और उसका पालन-पोषण किया। जनता से जीवित सपर्क बनाये रखना नितात आवश्यक है। इसके लिए सभाए करनी चाहिए, जनता से सलाह-मशविरा करते रहना चाहिए और जनता की मागो को धारा-सभा मे रखना चाहिए। जनता से सपर्क बनाये रखकर ही पार्टी अजेय है। लेकिन जनता से सपर्क का यह अर्थ नही कि केवल उनकी मागो को बुलन्द किया जाय और उन्हे पार्टी की नीति न समझाई जाय।

फिर मैंने धारा-सभा मे किये जानेवाले खास-खास कामो को गिनाते हुए उन्हे तत्काल पूरा करने पर जोर दिया। ये काम थे—बोलने, लिखने और सभा करने की आजादी, ट्रेड यूनियन और राजद्रोह के कानूनो मे सुधार, जनता की प्रगति और आजादी मे बाधक सभी औपनिवेशिक कानूनो का रद्द किया जाना। मैंने इस बात पर विशेष जोर दिया कि फौजदारी के सभी अपराधो मे न्याय-निर्णय का काम असेसरो के बदले जूरियो से करवाना चाहिए।

असहयोग आदोलन से सीधे धारा-सभा मे पहुचने के कारण बडा भ्रम फैल रहा था और कई सदस्य अभी भी असहयोग के ही पक्ष मे थे। इसका निवारण करते हुए मैने बतलाया कि चुनाव में प्रचड बहुमत से विजयी होने के बाद भी यदि असहयोग करते रहते तो वह नकारात्मक रुख होता। धारा-सभा मे सम्मिलित होकर हमने साम्राज्यवाद के कठ-पुतलो और प्रतिक्रियावादियो को अवसर से लाभ उठाने से रोक दिया है। सरकार के सचालन को अपने हाथ मे लेकर हम पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति के लिए परिस्थितियो को और भी अपने अनुकूल बना सकते है और यदि

ब्रिटिश नोकरशाही ने हमारे उद्देश्य मे बाधा पहुचाने की कोशिश की तो हम पुन सीधी कार्रवाही आरभ कर सकते है।

सदस्यो और मत्रियो की आचार-सहिता निश्चित करते हुए मैने कहा कि कोई भी पार्टी-सदस्य गोरे हाकिमो से मेल-जोल न बढाये। उनसे केवल दफ्तरी सबध रक्खा जाय। कोई भी मत्री सरकारी बगलो मे न रहे और मत्री हो या विधायक, प्रत्येक पार्टी-सदस्य अपना पूरा वेतन पार्टी को देगा और पार्टी द्वारा निर्धारित वेतन ही पार्टी-फड से लेगा। पद-लिप्सा को रोकने का यही एकमात्र उपाय है।

अत मे मैने कहा, सीधी कार्रवाही ने ही पार्टी को आज इस पद पर पहुचाया है और सीधी कार्रवाही ही उसे यहा बनाये रख सकती है—इस तथ्य को कभी भी न भुलाया जाय।

२० फरवरी १९५१ को धारा-सभा का पहला अधिवेशन हुआ। उसमे सदस्यो की शपथ-ग्रहण-विधि के अतिरिक्त स्पीकर का चुनाव भी किया गया। स्पीकर पद के लिए मैने एक गैर-पार्टी व्यक्ति और प्रमुख वकील श्री ई सी क्विस्ट का नाम पेश किया। यह सज्जन पुरानी लेजिस्लेटिव कौसिल के भी अध्यक्ष थे। उपाध्यक्ष पद के लिए डाक्टर फिआपू का नाम भी मैने ही सुझाया। दोनो नाम स्वीकार कर लिये गए। गवर्नर ने अपने तीनो पदेन सदस्यो को भी नामजद कर दिया।

अब गवर्नर की अध्यक्षता मे कनवेशन पीपुल्स पार्टी के मत्रियो और सरकारी नामजद मत्रियो को मिलाकर एक एक्जीक्यूटिव कौसिल (व्यवस्थापिका) बना दी गई। स्वतत्र सदस्य अपनी मति और बुद्धि के अनुसार गवर्नर का समर्थन करते थे और कभी विरोधियो का। चौहत्तर सदस्यो की धारा-सभा मे पार्टी सदस्य केवल चोतीस थे, लेकिन नीति के प्रश्नो पर हमे स्वतत्र सदस्यो का समर्थन प्राप्त कर बहुमत बनाने मे कभी किसी विशेष कठिनाई का सामना नही करना पडा।

उन दिनो इतना काम किया जाता था कि आज सोचता हू तो चकित रह जाना पडता है। धारा-सभा के सारे काम को नये सिरे से जमाना पडा। विधेयको का प्रारूप क्या हो और उन्हे कैसे प्रस्तुत किया जाय, प्रश्न पूछने और उत्तर देने की पद्धति, स्थायी आदेश, विधान सभा की कार्रवाहियो के प्रतिवेदन आदि सभी निश्चित करने पडे। फिर स्पीकर का दफ्तर और मेरा अपना दफ्तर सगठित करना पडा।

और पार्टी का सारा काम-काज तो था ही। रोज सैकडो सदस्य आते थे। कोई जरूरी समस्याए लेकर आता तो कोई बिलकुल निजी काम से,

और कोई केवल मिलने-भेटने की ही गरज से चला आता। टाला भी किसी-को नही जा सकता था, सभीसे मिलना पडता था। ठीक सवेरे चार बजे उठता और सबसे पहले फाइलो से निपटता, फिर भाषणो और चर्चा के नोट तैयार करता और अभी इन कामो से छुट्टी भी न होने पाती कि मिलने-वालो की भीड जुटने लग जाती थी। उनकी बाते सुनने और उनसे बोलने-चालने मे अकसर चाय पीने का भी मौका नही मिल पाता था। कई बार तो चाय रक्खी-रक्खी ही ठडी हो जाती थी।

आठ बजे दफ्तर पहुचता और मेज पर जो जरूरी कागज-पत्र होते उन्हे निपटाता। यदि धारा-सभा का अधिवेशन हो रहा होता तो वहा जाना पडता, अन्यथा पार्टी के केद्रीय दफ्तर पहुच जाता। वहा कई घटे लग जाते। दिन मे शायद ही कभी खाने का अवसर मिल पाता। तीसरे पहर के बाद घर पहुचकर ही भोजन करता। लेकिन प्राय ऐसा होता कि मेरे भोजन करते मे ही कोई-न-कोई अपनी किसी समस्या को लेकर आ जाता और खाते-खाते ही मुझे उन लोगो की बाते सुननी पडती।

शाम का समय तो और भी व्यस्त रहता। पार्टी की बैठके, भेट-मुलाकाते, मिलनेवालो का ताता—बस, आदमी और आदमी, जनता और जनता। दम मारने की फुर्सत न मिलती। उन दिनो आधी रात के पहले शायद ही कभी सोया होऊगा और वह भी चार घटे से अधिक कभी नही।

जैसे-जैसे समय बीतता गया, मेरे राजनैतिक विरोधी अधिकाधिक चिढते गए और अत मे उन्होने यह शिगूफा छोडा कि हम लोग और हमारी पार्टी सारे वादो से मुह मोडकर हुकूमत के मजे लूटने लगे है और 'स्वराज्य अभी और इसी समय' को तिलाजलि दे दी है। उन्होने जनता मे काफी भ्रम फैलाया और विदेशी समाचार-पत्रो मे भी बहुत-सी उल्टी-सीधी बाते लिखी।

विरोधियो की इन खुराफातो का मुहतोड जवाब देना आवश्यक था, इसलिए मैने कुमासी मे एक आम सभा की और उसमे चुनौती दी कि "आओ, हम तुम्हारे साथ मिलकर पूर्ण स्वराज्य के लिए सीधी कार्र-वाही का एक देशव्यापी आन्दोलन छेड़ने को तैयार है। मै और मेरे सभी साथी धारा-सभा से इस्तीफा दे देगे। बोलो, तैयार हो? आज से चौदह दिन की अवधि रखता हू। चौदहवे दिन कनवेशन पीपुल्स पार्टी के महा-सचिव की हैसियत से इस सबध मे योजना बनाने के लिए मुझसे आकर मिलो। यदि सरकार हमारी पूर्ण स्वराज्य की माग को ठुकराती है तो हम सीधी कार्रवाही शुरू करेगे।"

लेकिन युनाइटेड गोल्ड कोस्ट कनवेंशनसहित मैंने जितने भी सगठनो और उनके प्रमुख कार्यकर्ताओ का नाम ले-लेकर यह सार्वजनिक चुनौती दी थी, उनमे से एक भी नही आया। इस तरह जनता ने देख लिया कि कौन कितने पानी मे है और इसका एक शुभ परिणाम यह भी हुआ कि विरोधियो की बकवास बद हो गई।

डा एन्क्रूमा : चिन्तन के क्षणो में
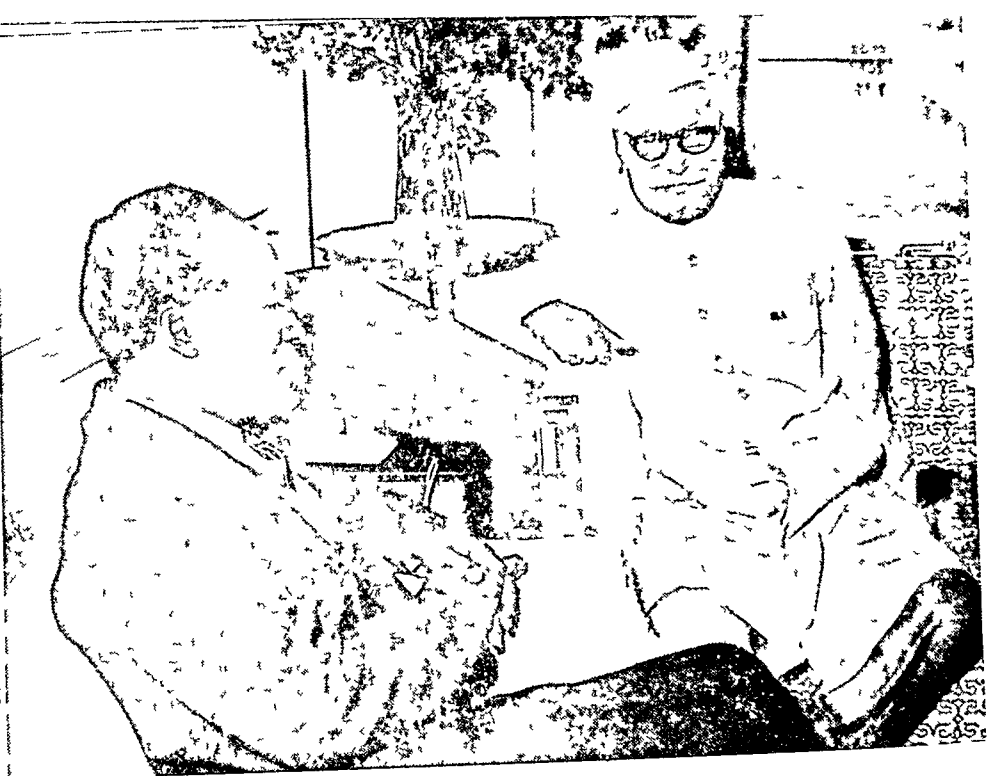
राष्ट्रपति डॉ राजेन्द्रप्रसाद के साथ
उपराष्ट्रपति डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन् से बातचीत मे सलग्न
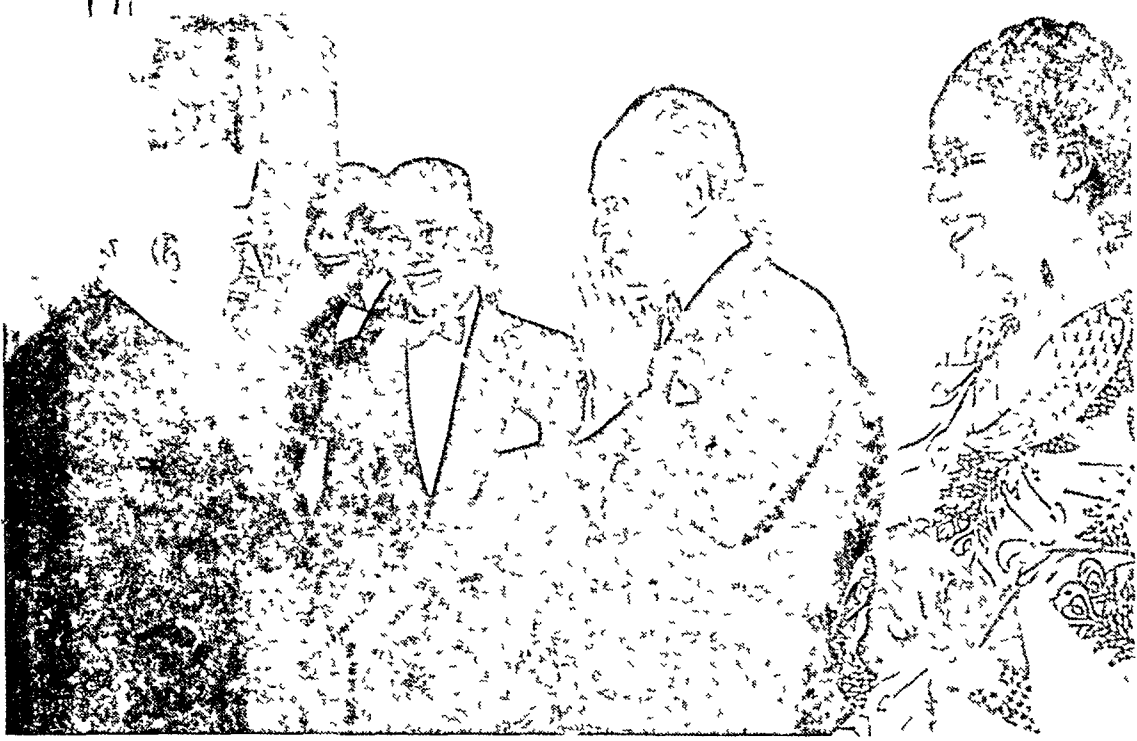
प्रधानमत्री प० जवाहरलाल नेहरू का अभिवादन करते हुए

दिल्ली विश्व-विद्यालय मे भाषण देते हुए

घाना के उद्योगी युवक

अनुशासन-प्रिय तरुण

: १३ :

शासन-संचालन की मेरी नीति

मै सदा से इस बात को दृढतापूर्वक मानता आया हू कि किसी भी राजनैतिक क्राति के बाद, चाहे वह क्राति अहिसक हो या रक्तरजित, आनेवाली नई सरकार को सत्ता हाथ मे लेते ही सरकारी सेवा मे से सभी पुराने अफसरो और विभागाध्यक्षो को तत्काल अलग कर देना चाहिए। जो सरकार ऐसा नही करती, वह स्वय अपने विनाश का कारण बनती है। लेकिन मेरे लिए इस नीति को अपनाना असभव था। उस समय राजकीय सेवाओ मे लगभग अस्सी प्रतिशत अग्रेज भरे हुए थे और वे देश की सरकार के हाथ के नीचे नही, सीधे इग्लैड के उपनिवेश-मत्री के अतर्गत थे। बेचारो को दोहरी स्वामिभक्ति निभानी पडती थी—सरकार के साथ भी और औपनिवेशिक दफ्तर के प्रति भी।

जनता के चुने हुए मत्रियो के हाथ मे आतरिक सुरक्षा का विभाग भी नही था। पुलिस, न्याय, सुरक्षा, राजकीय सेवाए और वैदेशिक मामले, सभी कुछ गवर्नर के हाथ मे था, यहातक कि पूरी गृह-नीति और आतरिक सुरक्षा लदन से सचालित होती थी। इससे प्राय निर्वाचित मत्रियो एव गवर्नर तथा पदेन मत्रियो के बीच तीव्र विवाद खडे हो जाया करते थे। इन विवादो को निपटाने मे मुझे बडा परिश्रम करना पडता था। यदि गवर्नर और मेरे बीच पारस्परिक सद्भावन और समझ न होती तो सभवत वह कौसी-विधान चार दिन भी न चल पाता और हम सब गहरे राजनैतिक गतिरोध मे फस जाते।

देश के विकास के लिए बनाये गए पचवर्षीय कार्यक्रम और आतरिक मामलो मे पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करने की योजनाओ को कार्यान्वित करने के लिए मुझे उसी पुराने नौकरशाही ढाचे पर निर्भर करना पडता था। किसपर कितना विश्वास किया जाय, यही समझ पाना मुश्किल हो जाता था। पारस्परिक सदेह और अविश्वास मेरे ही मन मे नही, उन लोगो के भी मन मे थे। पुलिस कमिश्नर वही व्यक्ति था, जिसने मुझपर मानहानि का मुकदमा चलाकर जुर्माना वसूल किया था, सरकारी वकील भी वही व्यक्ति था, जिसने मुझपर आरोप लगाये और मुकदमा लडा था और मेरे खिलाफ सरकार का मुख्य गवाह, जो उन दिनो उपनिवेश-सचिव था, अब सुरक्षा

विभाग एव वैदेशिक मामलो का पदेन मत्री था। और ये तीन-चार ही नही, इनके सैकडो सहकर्मी सब वही-के-वही लोग थे। यदि उन्होने तन से नही तो मन से तो अवश्य ही मेरे खिलाफ काम किये थे। परतु मैंने सारी पुरानी वातो और पुराने शिकवो को भुला देने मे ही लाभ समझा और यह प्रसन्नता की वात है कि राजकीय कर्मचारियो मे से भी अधिकाश उन वातो को भुलाने मे सफल हुए। हा, कुछ थोडे-से लोग अवश्य अत तक मन मे कीना रखते रहे।

१९५१ मे राजकीय सेवाओ मे अफ्रीकियो की सख्या का अनुपात मुश्किल से वीस प्रतिशत रहा होगा और प्राय सभी छोटे दर्जे के नौकर थे। सारी राजकीय सेवा का अफ्रीकीकरण एकदम सभव नही था। एक तो लोग इतनी जल्दी तैयार नही हो सकते थे और दूसरे गोरे नौकरशाहो को यह वर्दाश्त भी नही था कि कोई काला आदमी चपरासी या मामूली क्लर्क की हैसियत से ऊपर उठे। वे या तो उसे हटाने पर जोर देते या स्वय त्याग-पत्र देकर चले जाते थे।

समस्या वास्तव मे वडी जटिल थी। यदि अफ्रीकीकरण की गति जरा-सी भी तेज की जाती तो सभी अनुभवी कर्मचारियो के चले जाने की आशका थी और विना अफ्रीकीकरण के निस्तार भी नही था। साथ ही काफी समय तक अनुभवी अग्रेज अधिकारियो की सक्रिय सहायता की भी आवश्यकता थी। इसके लिए मैंने एक चारवर्षीय योजना वनाई। एक ओर तो अफ्रीकी लोक सेवा और गोल्ड कोस्ट स्थानीय सेवा आरभ की गई, दूसरी ओर अग्रेज कर्मचारियो को यह आश्वासन दिया गया कि किसीको भी सेवा-मुक्त करने का सरकार का कोई इरादा नही है। अनुभवी कर्मचारियो की आवश्यकता है, रहेगी और वढती जायगी। पद-वृद्धि रग अथवा जातीयता के आधार पर नही, कार्यकुशलता के ही आधार पर की जायगी। अग्रेज अधिकारियो के भविष्य की सुरक्षा की गारटी कर दी गई और जाने-वालो के लिए मुआवजे का प्रावधान भी। सारी योजना यह थी कि चार वर्षो की अवधि मे क्रमश गोल्ड कोस्ट स्थानीय सेवा को व्यवस्थित कर लिया जाय, इस वीच जो अग्रेज अधिकारी रुकना चाहे, वे कम-से-कम चार वर्ष तक रहे और उसके वाद चाहे तो मुआवजा लेकर चले जाय।

जव नये सुधार लागू किये गए तो कुल आठ सौ अग्रेज अफसरो मे से पहले केवल एक सौ चालीस और वाद मे तिरासी ने जाना और शेष ने रुकना पसद किया। इसके वाद सेवाओ के अफ्रीकीकरण की गति तेज कर दी गई।

लेकिन रुकनेवालो मे कुछ ऐसे भी थे, जो केवल तोड-फोड करने के ही लिए रहे थे। वे हर मामले मे अडगे डालते, जान-बूझकर देर करते, काम होने ही न देते और हर कदम पर उलझने खडी कर दिया करते थे। अनेक बार छोटी-छोटी बातो के लिए व्यक्तिगत रूप से स्वय मुझे हस्तक्षेप करना पडता था। उनका सारा उद्देश्य यही होता था कि जैसे बने, सरकार के खिलाफ वातावरण बनाया जाय और लोगो के असतोष को भडकाया जाय।

मुख्य आयुक्तो और जिला आयुक्तो को लेकर भी बडी कठिनाइयो का सामना करना पडा। ये सरकारी कर्मचारी अपने-आपको अपने-अपने हलको का गवर्नर ही समझते थे। देहाती क्षेत्रो मे इनका एकछत्र राज्य था। लोगो के जान, माल और कानून इनकी मुट्ठी मे रहते थे। अपने देश-व्यापी दौरो मे मै इनके आतक और अत्याचारो से काफी परिचित हो चुका था। लेकिन परिस्थितिया ऐसी थी कि इनको हटाया भी नही जा सकता था। देहाती क्षेत्रो मे किसी तरह का नियत्रण और व्यवस्था भी तो आवश्यक थी। मैने सबसे पहले इनके नाम बदले। प्रधान आयुक्त क्षेत्रीय अधिकारी और जिला आयुक्त राजकीय एजेट कहे जाने लगे। इस नाम-परिवर्तन का लोगो पर बहुत अच्छा प्रभाव पडा। पुराने नामो को वे साम्राज्यवादी औपनिवेशिक दफ्तर से जोडते आये थे, जो दमन और आतक का प्रतीक था। नये नामो को वे नई सरकार से सबद्ध करने लगे, जो आशा और न्याय की प्रतीक थी। फिर मैने सभी क्षेत्रीय अधिकारियो के मासिक सम्मेलन आरभ किये, जिनमे मै स्वय उपस्थित रहता, घटनाओ के विवरण सुनता, चर्चा करता और सलाह-मशविरा दिया करता था।

जनवादीकरण की प्रक्रिया को नीचे से भी आरभ करना आवश्यक था। मेरी पार्टी के अधिकारारूढ होने से पहले स्थानीय शासन यानी पचायते और जिला-परिषदे पूरी तरह जिला आयुक्त एव विभिन्न सरदारो तथा उनकी कौसिलो के हाथ मे थी। ये ही लोग उनके कर्ता-धर्ता हुआ करते थे और इनके बिना वहा पत्ती भी नही हिल सकती थी। मैने एक राज्यादेश निकालकर सारे देश मे तीन प्रकार की परिषदे स्थापित की—जिला-परिषदे, नगर-परिषदे और स्थानीय परिषदे। सरदारो का सदस्य बनना और मत देने का अधिकार एकदम रोक दिया गया। जिला आयुक्तो के अधिकार भी बिलकुल कम कर दिये गए। अब वे सरकार और परिषदो के बीच सबध बनाये रखने का काम करते और सिर्फ इतना देखते कि सरकारी नीति का पालन ठीक-ठीक हो रहा है या नही। परिषदो को अपना खर्च चलाने के लिए

कर लगाने और चन्दा उगाहने के अधिकार दे दिये गए और सरकार भी आर्थिक सहायता देने लगी।

इस नये विधान के अतर्गत देश मे दो सौ सत्तर नई परिपदे स्थापित की गई और १९५२ मे जो पहले परिषद्-चुनाव हुए उनमे कनवेशन पीपुल्स पार्टी ने नव्वे प्रतिशत स्थानो पर कब्जा किया। इससे हमारी स्थिति वहुत ही दृढ हो गई। सामतवाद के किले को ध्वस करके जनवाद अपनी जडे लोकजीवन मे मजबूती से जमा सका।

उन्ही दिनो कोका वृक्षो मे वीमारी फूट निकली और उसकी रोकथाम के लिए भी कार्रवाही आवश्यक हो गई। कोका हमारे देश की मुख्य उपज है। इसका भारी परिमाण मे निर्यात किया जाता और विदेशी मुद्रा कमाई जाती है। रोग सक्रामक था और वडी जल्दी दूसरे स्वस्थ वृक्षो को छूत लग जाती थी। रोगग्रस्त वृक्ष को काटना ही एकमात्र उपाय था। लेकिन पेड के मालिको की ओर से इसका विरोध किये जाने की पूरी आशका थी, क्योकि रोगग्रस्त पेड भी कई वर्षो तक फल देता था, इसलिए यह वात उन्हे समझाई नही जा सकती थी कि अगले कुछ वर्षो मे उन्हीकी नही, उनके पडोसियो की भी फसल चौपट हो जायगी।

तव न्यायाधीश कोरसा की अध्यक्षता मे एक कोका-जाच-समिति बिठाई गई। उस समिति ने सुझाव दिया कि रोगग्रस्त पेडो को अनिवार्य रूप से काट गिराने की अभी तक जो पद्धति चली आती है, उसे एकदम वद कर दिया जाय और इस काम मे किसानो की सहमति और सहयोग प्राप्त किया जाय। सरकार ने इस सिफारिश को मान लिया। अभी तक कोका-उद्योग पुनर्वास-विभाग के पास था। अव उसे कृषि-विभाग को सौप दिया गया। इस उद्योग के विकास और वृद्धि के लिए एक केद्रीय सलाहकार मडल, एक किसान सघ और कोका-उत्पादको की क्षेत्रीय परिषद् वनाई गई।

वीमारी की रोकथाम के लिए एक सप्तवर्पीय योजना वनी। किसानो को सलाह दी गई कि कोका वृक्ष के रोगग्रस्त होते ही वे कृषि-विभाग के समीपस्थ क्षेत्रीय अधिकारी से जाच-पडताल और सलाह-मशविरे के लिए संपर्क करे। यदि क्षेत्रीय अधिकारी वृक्ष को काटने की सलाह दे और किसान भी इसके लिए सहमत हो जाय तो सरकार की ओर से बीमार वृक्षो को कटवाने और स्वस्थ वृक्षो की रक्षा के लिए पूरी-पूरी सहायता की जाती थी। प्रत्येक वडे कोका वृक्ष के काटे जाने पर चार शिलिग के कटाई मुआवजे की और उसके स्थान पर नया वृक्ष उगाने पर तीन वर्ष तक प्रति वर्ष दो शिलिग

की आरोपण-सहायता की व्यवस्था की गई थी। किसान को ये दोनो रकमे कोका-विक्रय-मडल (कोका मारकेटिंग वोर्ड) की ओर से सरकार की सिफारिश पर प्रदान की जाती थी।

पूरे आठ सप्ताह तक कोका-किसानो मे इन बातो का धुआंधार प्रचार किया गया। अधिकाश किसानो ने सरकार की नीति की सराहना की और साथ देने को राजी हो गये। लेकिन कुछ लोग, जिनकी सख्या बहुत थोडी थी, अपनी जिद पर अडे रहे। उन्हे एक बार और समझाया गया कि रोगी पेड कटवाने से इन्कार कर वे किस प्रकार एक लोकहितकारी कानून को तोड रहे है। थोडे-से लोगो की जिद के लिए समूचे कोका-उद्योग के भविष्य को तो खतरे मे डाला नही जा सकता था, इसलिए मैने रोगी कोका पेडो का काटा जाना अनिवार्य कर दिया। इस काम मे घाना किसान परिपद् ने मेरी सराहनीय सहायता की।

देश के औद्योगिक विकास के लिए भी कुछ करना बहुत आवश्यक था। उस समय सरकार के सामने वोल्टा वाध और विद्युत परियोजना, एल्युमीनियम गलाने का एक भारी कारखाना और ऐसी ही एक और परियोजना थी और उनपर विचार हो रहा था। मैने उद्योग के अन्य क्षेत्रो की ओर भी ध्यान देना जरूरी समझा। १ मार्च १९५४ को धारा-सभा मे वक्तव्य देकर मैने सरकार की औद्योगिक नीति का स्पष्टीकरण किया। उस नीति की बुनियादी बात थी देश मे विदेशी पूजी को नये उद्योग आरभ करने के लिए आमन्त्रित और प्रोत्साहित करना। इसके लिए विदेशी पूजी को लाभ और सुरक्षा की गारटी देना आवश्यक था और वह दी गई। परन्तु मैने यह भी स्पष्ट कर दिया कि औद्योगिक विकास के लिए विदेशी पूजी को आमन्त्रित करने का मुख्य हेतु यह है कि अफ्रीकियो के तकनीकी और औद्योगिक ज्ञान को इतना विकसित और उन्नत किया जाय, जिससे आगे चलकर वे स्वय नये-नये और प्रचलित उद्योगो का सचालन और व्यवस्था कर सके। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए जो भी विदेशी प्रतिष्ठान पूजी लगाने को राजी हुआ, उसे सरकार की ओर से सब प्रकार की, यहातक कि पूजी की भी, सहायता प्रदान की गई। सरकार ने कई विदेशी प्रतिष्ठानो के साथ भागीदारी की। केवल सार्वजनिक हित के उद्योगो मे विदेशी पूजी लगाये जाने पर प्रतिबध आवश्यक समझा गया। नये उद्योगो को कच्चे माल के आयात पर छूट-कर आदि मे कुछ सुविधाए भी प्रदान की गई।

उद्योग और वाणिज्य मत्रालय के अतर्गत एक विशेष उद्योग-विभाग

की स्थापना की गई, जहा पूजी लगाने के सबध मे उचित सलाह देने के अतिरिक्त स्थान प्राप्त करने, यातायात की सुविधाए प्रदान करवाने और अन्य समस्याओ को हल किये जाने मे भी सहायता दी जाती थी ।

मैने सभी उद्योगपतियो को यह खुला आश्वासन दे दिया था कि जो भी देश के औद्योगिक विकास मे पूजी लगायगा, वह देश के साधनो को सपन्न और विकसित करने मे बराबरी का हिस्सेदार समझा जायगा ।

: १४ :

अमरीका-यात्रा

अपने नये जीवन की व्यस्तताओ के बीच मुझे एक दिन लिंकन विश्व-विद्यालय के अध्यक्ष का पत्र मिला, जिसे पाकर मै विस्मय-विमुग्ध रह गया। लिंकन विश्वविद्यालय के ट्रस्टी मडल ने उस वर्ष (१९५१) जून महीने मे मुझे 'डाक्टर ऑव ला' की सम्मानित पदवी से विभूषित करने का निश्चय किया था। अमरीका से लौटकर आये मुझे कुल जमा छ वर्ष ही हुए थे और इस छोटी-सी अवधि मे इतना बडा सम्मान अर्जित करने योग्य मैंने कुछ भी नही किया था, इसलिए पत्र पाकर भी सहसा उसपर विश्वास नही हुआ। पहला विचार तो यही आया कि मना कर दू, क्योकि अपनी उस समय की व्यस्तताओ मे अमरीका की यात्रा सभव भी नही लग रही थी। परतु मित्रो ने आग्रह किया कि जाना चाहिए और डिग्री स्वीकार कर लेनी चाहिए। मैंने लिंकन विश्वविद्यालय के अध्यक्ष डाक्टर होरेस एम वाड को स्वीकृति-पत्र भेज दिया।

३० मई को मैं अपने शिक्षा-मत्री कोजो बोत्सियो के साथ अकरा के हवाई अड्डे से लदन के लिए रवाना हुआ। हजारो की भीड हमे विदा करने आई और पुलिस के लिए उन्हे नियत्रण मे रखना मुश्किल हो गया। यह मेरी पहली लबी उडान थी। केवल वायुयान की रवानगी और धरती पर उतरना मुझे अच्छा नही लगता, वाकी हवाई यात्रा मे वडा आनन्द आता है। किसी भी तरह यह विश्वास नही हो रहा था कि अट्ठारह या उन्नीस घटो मे अकरा से लदन पहुच जायगे। मुझे रह-रहकर अपनी लदन से अकरा तक की समुद्री यात्रा याद आ रही थी। कितना समय लग गया था और परेशानिया भी कितनी हुई थी? और मै सोच रहा था कि क्या वह और यह क्वामे एन्क्रूमा एक ही व्यक्ति है? विचारो मे ऐसा खोया कि हवाई वैठक की पेटी बाधने का भी ध्यान न रहा। जब कोजो ने बताया तो कही जाकर मैंने पेटी बाधी।

लदन के हवाई अड्डे पर हम सवेरे-सवेरे पहुच गये। मौसम वडा साफ था। मेरे पुराने मित्र जार्ज पैडमोर हमे लेने आये थे। मै देखते ही उनसे लिपट गया। लग रहा था जैसे अभी कल ही उनसे विदा हुआ था। हम उनके घर गये और उसी रसोईघर मे, उसी परिचित मेज के आगे वैठे घटो वाते करते रहे। छ-सात वर्ष की अपनी-अपनी दास्ताने दोनो दोस्तो ने सुनी और

सुनाई। लदन पहुचकर मै अपने पिछले कुछ महीनो की सारी परेशानिया, चिन्ताओ और व्यस्तताओ को जैसे भूल ही गया। मन वडा प्रसन्न और हलका-फुलका लग रहा था। उसी झोक मे हम लदन टावर, केन्सिग्टन, वकिघम और सेट जेम्स के महल भी देख आये। अपने कितने ही जोशीले भाषणो मे मैने इन इमारतो की साम्राज्यवाद के सडे-गले स्मारक कहकर कडी भर्त्सना की थी।

दो दिन वाद हम अमरीका के लिए चले और दूसरे दिन वडे सवेरे न्यूयार्क पहुच गये। कोजो पहली वार अमरीका आ रहे थे, इसलिए मै उन्हे एक-एक चीज वडी उमग और उत्साह से वताता जा रहा था। मै यह भूल ही गया था कि इस वार मै खस्ता हाल विद्यार्थी के रूप मे नही आया था—एक ऐसा विद्यार्थी जो जेव मे किराया न होने के कारण वार-वार कमरो से खदेड दिया जाता था।

इसीलिए जव मैने लोगो की एक भीड-सी अपनी ओर वढते हुए देखी तो विस्मित होकर कोजो से पूछ वैठा, "ये लोग कौन है और क्या चाहते है?" कोजो ने वताया कि सभवत प्रोटोकोल के लोग हो और हमारा राजकीय स्वागत करने आ रहे हो। उनका अनुमान सच ही था। उस भीड मे अमरीकी विदेश-विभाग के उच्च पदस्थ अधिकारियो के अतिरिक्त लिंकन विश्वविद्यालय का प्रतिनिधिमडल, गोल्ड कोस्ट के विद्यार्थियो के सपर्क (लायसा) अधिकारी और वहुत-से छात्र भी थे। मेरा गौरवान्वित होना स्वाभाविक ही था।

सवाददाताओ के कैमरे खटखटाये और हम पुलिस के सुरक्षा-प्रवध मे मोटर द्वारा होटल पहुचा दिये गए। होटल मे पहुचते ही मैने एक प्रेस कान्फ्रेंस करके सवाददाताओ को वताया कि मेरी वर्तमान अमरीकी यात्रा का उद्देश्य दुहरा है। मै डिग्री लेने तो आया ही हू, साथ ही अमरीका से अपने देश के विकास मे तकनीकी सहायता भी प्राप्त करना चाहता हू।

उस दिन मैने और कोजो ने दुपहर का भोजन तो गोल्ड कोस्ट के एक व्यापारी के यहा किया और फिर दानियल चैपमेन के यहा चले गए। वह उन दिनो सयुक्त राष्ट्र सघ के उस विभाग मे काम करते थे, जो उन देशो की देखभाल के लिए था, जहा अभी तक स्वाधीन सरकारो की स्थापना नही हो पाई थी। वहा गोल्ड कोस्ट के कई छात्र और व्यवसायी भी मिलने के लिए आ गये। सवने वडे उत्साह से हमारा स्वागत किया। मैने सवको स्वदेश की परिस्थितियो से अवगत कराया। छात्रो से कहा कि वे खूव मन लगाकर पढे और अधिक-से-अधिक ज्ञान प्राप्त कर तकनीकी दक्षता अर्जित करे, जिससे स्वदेश लौटने पर देशवासियो की ज्यादा-से-ज्यादा सेवा कर सके। वहा

बिलकुल घर-जैसा ही लग रहा था। यह मालूम ही नही पडता था कि अमरीका मे बैठे है और जब दानियल की पत्नी इफुआ ने चावल और मूगफली की खिचडी का कटोरा मेरे आगे रखा तो रही-सही कसर भी पूरी हो गई। वही कुछ हबशी पत्रकार भी मिलने आ गये और उन्होंने हमे हमारे उद्देश्य मे हर प्रकार की सहायता करने का अभिवचन दिया।

दूसरे दिन हम फिलाडेलफिया गये। वहा के मेयर ने मुझे नगर की कुजिया प्रदान की, अर्थात् मै उस नगर का सम्मानित नागरिक बना लिया गया। उस नगर के साथ मेरे कई भले और बुरे सस्मरण जुडे हुए थे। एक क्षण के लिए यह विचार भी आया कि आज अगर वह पुलिसमैन देखे तो मन मे क्या सोचेगा? एक रात इसी नगर के स्टेशन पर उसने मुझे सोते से खदेड दिया था और बरसते पानी मे दुकानो के सायबानो के नीचे खडे रहकर रात काटनी पडी थी! परतु आज तो वह मुझे पहचान भी न पाता। कहा वह उस समय का फटेहाल ऊघता-सा युवक और कहा आज का इस नगर का सम्मानित नागरिक!

फिलाडेल्फिया के मेयर के स्वागत के बाद मैने अमरीकी जनता के नाम एक रेडियो सदेश प्रसारित किया। अपने स्वागत के लिए अमरीकी जनता के प्रति कृतज्ञता प्रदर्शित करते हुए इस बात का विश्वास दिलाया कि गोल्ड कोस्ट अपने अमरीकी और अग्रेज मित्रो की सहायता से एक जनवादी राज्य बनने के निश्चय पर अटिग है।

भविष्य मे और भी वैधानिक सुधार होगे और हम पूर्ण स्वराज्य के अपने लक्ष्य के और भी समीप पहुच जायगे। अपनी विकास-योजनाओ के लिए अमरीकी एव ब्रिटिश तकनीकी सहायता की माग को हमने यहा पुन दुहराया और हमे कई आश्वासन भी प्राप्त हुए।

भोज के बाद हम टेपल विश्वविद्यालय का डाक टिकटो का सुप्रसिद्ध सग्रहालय देखने चले गए। मै स्वय डाक टिकटो के सग्रह का बडा शौकीन हू और सग्रहालय किसी भी प्रकार का क्यो न हो, मुझे वहा जाना और चीजो के सग्रह को देखना अच्छा लगता है।

इन सब कामो मे दिन कब बीत गया, कुछ पता ही न चला। होटल लौट आकर मैने कल के अवसर के लिए अपना भाषण लिखा और कोजो को पढने के लिए दिया। दस बज गये थे। कोजो ने सलाह दी कि अब सो जाना चाहिए, क्योकि कल तो सारे दिन दम मारने की भी फुर्सत नही मिलेगी।

हठात् मुझे कुछ याद आ गया और मैने कोजो का हाथ पकडकर कहा, "दोस्त, दो व्यक्तियो से तो मिलना रह ही गया! पता नही फिर अवसर मिले, न मिले। चलो, अभी हो आये। एक तो है मेरी मकान मालकिन श्रीमती बोरूम और दूसरी है पोर्टिया।"

कोजो ने परिहास किया, "अकेले-अकेले ही या मै भी चल सकता हू ?"

"वाह यार, यह तुमने एक ही कही। तुम्हारे बगैर भी भला मै जा सकता हू। चलो–चलो!"

जब श्रीमती बोरूम के घर के आगे पहुचा तो ऐसा लग रहा था मानो यहा से कभी गया ही नही था। कुछ भी नही बदला था, सब बिलकुल वैसा ही था, केवल दरवाजे की चाभी मेरे पास नही थी। आशका हुई कि श्रीमती बोरूम कही चली न गई हो। मैने छ वर्षो मे उन्हे एक भी पत्र नही लिखा था और बूढी तो वह उस समय ही हो गई थी। धडकते हुए दिल से दरवाजे पर दस्तक दी। थोडी देर बाद हलचल सुनाई दी और किवाड की सेध से एक तद्रिल चेहरा झाकने लगा। उन्होने मुझे पहचाना नही। जब मै बोला और अदर आने की इजाजत चाही तो उन्होने पहचाना।

मारे खुशी के वह चिल्ला उठी, "ओह क्वामे! मेरा प्यारा बच्चा क्वामे!" और वह मुझसे लिपट गई। वह मेरी अमरीकी माता थी। मुझे और उनको भी ऐसा ही लगा मानो मै घर लौट आया हू।

समय बहुत थोडा था, इसलिए अधिक देर रुक न सके। कुशल-मगल और दोस्तो के हाल-चाल पूछकर उठ खडा हुआ। चलते-चलते मैने सौ

डालर का नोट उनकी मुट्ठी मे थमा दिया और बोला, "आपकी कृपा से उऋण तो कभी हो न सकूगा। उन दिनो आपने जिस उदारता और विशाल हृदयता का परिचय दिया, उसके कृतज्ञतास्वरूप मेरी इस तुच्छ भेट को स्वीकार कीजिये।"

उनकी आखो से आसू बहने लगे और कठ अवरुद्ध हो गया। मैंने उन्हे गले लगाया और फिर किसी दिन मिलने आने का वादा कर लौट पडा।

हाथ हिलाकर मुझे विदा देती हुई वह कह रही थी, "मेरा दिल बोलता था कि तुम एक दिन आओगे मेरे बेटे, जरूर आओगे।"

कोजो ने अपनी घडी की ओर देखा तो रात आधी से अधिक बीत चुकी थी। वह बोले, "अब तो होटल लौट चलना चाहिए। पोर्टिया से मिलने का फिर किसी और समय पर क्यो न रक्खा जाय?"

"हर्गिज नही, मेरे भाई! यह अमरीका है। यहा तुम लोगो का दरवाजा कभी भी खटखटा सकते हो। कोई बुरा नही मानता।" मैंने कहा।

पोर्टिया के यहा पहुचकर दरवाजा खटखटाते ही वह भडाक्-से खुल गया। मुझे देखा तो पोर्टिया चकित रह गई। दूसरे ही क्षण वह मुझसे लिपट गई। मेरे आगमन के बारे मे वह सुन चुकी थी, लेकिन यह आशा उसने नही की थी कि इतनी रात गये मिलने आऊगा। वह हमे अदर ले गई और हम तीनो बैठकर बाते करने लगे।

पोर्टिया से मिलने और उसे देखने के अतिरिक्त वहा जाने का मेरा एक उद्देश्य और भी था। अमरीका से चलते समय मैं अपनी पुस्तके उसीको सौप आया था। कही भद्दा न लगे, इसलिए बडी देर तक उधर से आखे चुराये रहा, परतु पोर्टिया से मेरा आशय छिपा न रहा। उसने हाथ के सकेत से किताबो की अलमारी को दिखलाते हुए कहा, "ये रही तुम्हारी किताबे। मैंने इन्हे बहुत सभालकर रक्खा है। जब जरूरत हो बता देना, मैं लौटा दूगी।"

"मेरी किताबे!" मैंने इस तरह चौककर कहा, मानो बिलकुल भूल ही गया था। फिर अलमारी के पास पहुच गया और एक-एक किताब को हाथ मे लेकर देखने लगा। बडे परिश्रम से मैं उन किताबो को जमा कर पाया था। किसीको खरीदने के लिए पेट काटकर पैसा बचाया था तो किसीके लिए एक या दो रातो की नीद का बलिदान करना पडा था। लेकिन फिर यह खयाल आया कि दो मित्रो को अकेला छोड पुस्तको पर इतना अधिक ध्यान देना उचित नही। मै मन-ही-मन लज्जित होता हुआ पोर्टिया के समीप आ बैठा। मैंने उनसे कहा, 'कुछ अपने बारे मे तो बताओ!"

तव पता चला कि उसकी शादी हो गई थी और पति रात की पाली मे काम करते थे ।

उसने चुटकी ली, "तुम्हे पहले ही पता होगा, इसीलिए तो आधी रात वीते आये हो !"

मै मुस्कराकर रह गया । फिर मैने कहा, "चलो, उसी होटल मे चलकर खाना खाया जाय, जहा किसी जमाने मे हम-तुम जाया करते थे । लेकिन आज तुम्हे अपना वटुआ लेने की जरूरत नही । इस रात मुझको ही मेजवानी करने दो ।"

कई घटे वाद थके परतु प्रसन्न, देश और दुनिया की सारी झझटो से मुक्त गोल्ड कोस्ट की सरकार के सचालन का नेतृत्व करनेवाले अपने शिक्षा-मत्री के साथ होटल के कमरो मे लौटकर विस्तरो पर पडते ही ऐसे सोये कि कपडे उतारने की भी सुध न रही ।

दूसरा दिन मेरे जीवन का सवसे महत्वपूर्ण दिन था । मैने सवेरे का नाश्ता लिकन विश्वविद्यालय की फेकल्टी के सदस्यो के साथ किया । उसके वाद विश्वविद्यालय के पश्चिम अफ्रीकी छात्रो के साथ चर्चा करता रहा । दुपहर को विश्वविद्यालय के ट्रस्टी मडल के भोज मे सम्मिलित हुआ और तव दो वजे से होनेवाले पदवी-दान समारभ की तैयारियो मे लग गया । परतु साफ कमीज तो मेरे पास एक भी नही थी । सूटकेस ऐसा खोया कि अभी तक पता नही चल सका था । मै विश्वविद्यालय के अध्यक्ष डाक्टर वाड के पास गया और उन्हे अपनी मुसीवत वताई । उन्होने उसी समय एक कमीज उधार देकर मेरी मुसीवत हल कर दी ।

सव कुछ स्वप्नवत् लग रहा था । लिकन विश्वविद्यालय के अनेक पदवी-दान समारभो मे सम्मिलित हो चुका था, लेकिन आज का समारोह तो कुछ निराला ही था । वातावरण मे वडा उत्साह और वडी उमग थी । मागे की कमीज पहने मै अकादमी के जलूस मे चल रहा था और सोचता जा रहा था कि इस सम्मान के लिए मैने क्या किया है ? १९३५ मे जिस क्वामे एन्क्रूमा की जेव मे एक सत्र का भी शुल्क चुकाने लायक पैसा नही था और जिसने डीन से यह कहने का हौसला किया था कि आप मुझे एक वार अवसर तो दीजिये, वही आज, सोलह साल वाद, 'सरकार के सचालन का नेता' वन गया और अपनी अल्मा मातेर (विश्वविद्यालय रूपी माता) से सर्वोच्च सम्मान प्राप्त करने जा रहा था । मैने मन-ही-मन कहा, 'महत्व इस वात का नही है कि आदमी कितनी ऊचाई पर पहुच गया । असल मे महत्व इस वात का है कि वह कितने नीचे से उठकर आया है ।' और वार-

बार मेरी आखो के आगे उस छोटे ग्रामीण स्कूल मास्टर की तस्वीर नाचने लगी, जिसके पुस्तकालय मे केवल तीन ही पुस्तके थी—एक बाइबल, दूसरी शेक्सपीयर का सकलन और तीसरी अलकाक की व्याकरण।

सहसा मेरी विचार-तद्रा भग हो गई और मैने अपने-आपको मच पर आदरणीय व्यक्ति के रूप मे बैठा पाया। सामने के जन-समुदाय मे मेरे कितने ही शिक्षक, साथी और सहपाठी-गण बैठे हुए थे। विश्वविद्यालय के डीन, अध्यापक हिल, उन्हे बता रहे थे कि मेरे किन गुणो और कार्यो के लिए मुझे यह सम्मानित पदवी प्रदान की जा रही है। अपने भाषण के अत मे उन्होने कहा, "मुझे याद है, विश्वविद्यालय के अपने प्रवेश-पत्र मे श्री एन्क्रूमा ने टेनीसन की 'स्मृति मे' नामक कविता से ये पक्तिया उद्धृत की थी—

. 'करने को है कितना, पर किया जा सका केवल नही वत ..

लेकिन आज मै उनके बारे मे कहूगा कि 'कर दिखाया कितना अधिक इतने थोडे काल मे।'

उनके भाषण के वाद विश्वविद्यालय के अध्यक्ष डाक्टर बाड ने मुझे कानून के डाक्टर की पदवी से विभूषित किया और तब मुझसे बोलने के लिए कहा गया।

अपने भाषण मे मैने अमरीका के विद्यार्थी-जीवन से आरभ करके लदन की राजनैतिक कार्रवाहियो का विशद वर्णन करते हुए गोल्ड कोस्ट लौटने, वहा युनाइटेड गोल्ड कोस्ट कनवेशन के सगठन, गिरफ्तारी, नजर-बदी, कनवेशन से मतभेद, कनवेशन पीपुल्स पार्टी की स्थापना, सीधी कार्रवाही, जेल-यात्रा, कौसी-विधान, आम चुनाव, पार्टी की विजय, सरकार के सचालन का नेतत्व आदि सभी बाते एक-एक करके बताई।

जब मैने कनवेशन पीपुल्स पार्टी के ध्येय 'सुख और शाति की दासता से हम स्वराज्य को कही अच्छा समझते है' और उसकी नीति 'पहले अपने लिए राजनैतिक अधिकार और स्वतत्रता प्राप्त करे, शेप वस्तुए स्वयमेव चली आयेगी' की घोपणा की तो श्रोता उछल पडे और देर तक हर्ष-ध्वनि करते रहे।

अपने भूतकाल और वर्तमान का पूरा इतिहास सुनाने के बाद मैने श्रोताओ को भविष्य की आशा-आकाक्षाओ के बारे मे बतलाया। मैने कहा, "अपने देश मे हम भी अमरीका और ब्रिटेन की भाति जनवादी समाज और राज्य की स्थापना करना चाहते है। हम केवल स्व-राज्य का अधिकार चाहते है, फिर चाहे वह कुराज्य ही क्यो न हो।" तकनीकी सहायता की माग को मैने यहा फिर दुहराया और यह भी कहा कि यदि यह सहायता

ब्रिटेन और अमरीका से न मिली तो मुझे विवश होकर दूसरो के आगे हाथ पसारने होगे। अमरीका मे रहनेवाले हवशी नागरिको से मैने अपील की कि अपनी मातृभूमि अफ्रीका के प्रति आज और भविष्य मे भी उनका कुछ कर्त्तव्य है, जिसे उन्हे भुलाना नही, पूरा करना चाहिए। मैने यह भी बता दिया कि पूर्ण स्वाधीनता की प्राप्ति के बाद हमारा इरादा देश का नाम बदलकर घाना कर देने का है। कानून के डाक्टर की सम्मानित पदवी के प्रति आभार प्रदर्शित करते हुए मैने अत मे कहा, "यह सम्मान मेरा उतना नही है, जितना गोल्ड कोस्ट और अफ्रीका की जनता का, जिसने अपने गहन आत्मसम्मान और उत्तरदायित्व की भावना से मेरे लिए काम करना सभव बनाया। आज के ऐतिहासिक अवसर की बडी सुखद स्मृतिया मै अपने मन मे सजोकर स्वदेश लौट रहा हू।"

पदवी-दान समारभ के बाद डाक्टर बाड की ओर से चाय-पान का कार्यक्रम रक्खा गया था, जो उन्ही के निवास-स्थान पर सपन्न हुआ। मैने हवशी नागरिको से जो अपील की थी, उसके प्रत्युत्तर मे अनेक अफ्रीकी स्नातक अपनी सेवाए समर्पित करने के लिए आये। मैने कहा कि अभी तो हमारा देश औपनिवेगिक अवस्था मे है, इसलिए विशेष कुछ कर नही सकते, परतु स्वाधीन होते ही आप सबकी सेवाओ से अवश्य लाभ उठाया जायगा। जब मै गोल्ड कोस्ट पहुच जाऊ तो आप लोग पत्र-व्यवहार कीजिये।

दूसरे दिन हम न्यूयार्क लौट आये। वहा सयुक्त राष्ट्र सघ मे ब्रिटिश प्रतिनिधि सर गाल्डविन जेब से मै सरकारी तौर पर मिला और न्यूयार्क शहर के मेयर से भी भेट की। मेरे कल के भाषण की बहुत अच्छी प्रतिक्रिया हुई थी, क्योकि दुपहर को मैने जो प्रेस-कान्फ्रेस की उसमे एक के बाद एक, कई प्रश्न पूछे गए। सबका सार यही था कि हमे विकास-कार्यो के लिए कितने डालर चाहिए और तकनीकी लोग वहा जाना चाहे तो उनके लिए क्या शर्त और सुविधाए होगी ? मै भी सफाई से जवाब देता चला गया। फिर मैने और कोजो ने एक टेलीविजन वार्ता मे भी भाग लिया।

दुपहर का भोजन हमने सयुक्त राष्ट्रसघ के कार्यालय मे ही किया और ट्रस्टीशिप कौसिल की कार्रवाही को देखा। उस दिन सर अलन बर्न्स, जो गोल्ड कोस्ट के गवर्नर भी रह चुके थे, ट्रस्टीशिप कौसिल की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होने मेरे बारे मे काफी कुछ-सुन रक्खा था, इसलिए मिलकर दोनो को प्रसन्नता हुई और जो बाते हुई वे तो काम की थी ही। वहा मै सयुक्त राष्ट्र सघ के महासचिव श्री त्रिग्वेली और डॉ० राल्फ बच, श्री विल्फ्रेड बेन्सन आदि कई अधिकारियो से भी मिला। इन लोगो से मैने

वोल्टा नदी घाटी योजना, गोल्ड कोस्ट के छात्रो को छात्रवृत्तिया दिये जाने और तकनीकी सहायता प्राप्त करने के सबध मे चर्चाए की, जो काफी उत्साहवर्द्धक रही।

दूसरे दिन हम ट्रेन से वाशिंगटन आये। स्टेट डिपार्टमेंट के चार अधिकारियो ने स्टेशन पर हमारा स्वागत किया। फिर हम स्टेट डिपार्टमेंट मे गये, कई सरकारी महकमो के अधिकारियो से मिले और उनकी कार्य-प्रणाली को समझने का प्रयत्न किया। लिकन की समाधि पर जाकर हमने माला चढाई और जेफरसन स्मारक को भी देख आये। वहा हमारे सम्मान मे दो स्वागत-समारोह भी आयोजित किये गए थे—एक ब्रिटिश दूतावास की ओर से तथा दूसरा अमरीका के स्टेट डिपार्टमेंट की ओर से।

वहा से दूसरे दिन हम न्यूयार्क लौटे। यहा शाम को न्यूयार्क के मेयर की ओर से एक शानदार भोज दिया गया, जिसमे कई प्रमुख हवशी नागरिक और अधिकारी भी उपस्थित थे। मैने उन्हे सबोधित करते हुए कहा कि गोल्ड कोस्ट की स्वाधीनता के वाद जो भी हमारी सहायतार्थ आना चाहेगे, हम सबका खुले दिल से स्वागत करेगे। अत मे अमरीकी जनता के सौजन्य और स्वागत-आयोजन के लिए मैने कृतज्ञता प्रदर्शित की।

१० जन को कोजो और मै लदन के लिए वायुयान मे सवार हुए। कई अफसर, विद्यार्थी और शुभेच्छु हमे विदा करने आये। जो बाते हुई और जो आश्वासन मिले, उनसे हम दोनो के हृदय उमगित और मन प्रसन्न थे, परतु दोनो ही थककर चूर हो गये थे। मैने जमुहाई लेते हुए कहा, "अमरीका मे हमे सोना भी मिला था ?" लेकिन कोजो ने कोई उत्तर नही दिया। मैने देखा तो वह हवाई सीट पर पसरे हुए खर्राटे भर रहे थे!

लदन पहुचने मे हमारे वायुयान को कुछ देर हो गई थी, लेकिन पैडमोर और कुछ विद्यार्थी तव भी वैठे प्रतीक्षा कर रहे थे। इस वार की लदन-यात्रा मे मै मजदूर दल के प्रमुख सदस्य श्री एटली से भी मिला और गोल्ड कोस्ट को जल्दी-से-जल्दी स्वराज्य दिये जाने की आवश्यकता पर उनके साथ वडी विशद चर्चा की। पार्लमेंट के एक अनुदार दलीय सदस्य श्री लेनोक्स बायड ने हमारे सम्मान मे एक भोज दिया। पाच वर्ष वाद जव गोल्ड कोस्ट की स्वाधीनता के सवध मे चर्चाओ और पत्र-व्यवहार का दौर चला और स्वाधीनता देने का निश्चय किया गया तो यही सज्जन इग्लैड के उपनिवेश-मत्री थे और मेरी सरकार तथा ब्रिटिश सरकार के बीच मध्यस्थता का कर्त्तव्य इन्होने निभाया था। लार्ड और लेडी

माउटवेटन ने भी मुझे अपने यहा निमत्रित किया और उनसे भारत के सवध मे वहुत-कुछ जानने को मिला।

गोल्ड कोस्ट के गवर्नर सर चार्ल्स आर्डेन क्लार्क से भी यहा भेट हो गई। वह उन दिनो छुट्टी मे थे। उनसे और उपनिवेश-मत्री से काफी विचार-विमर्श हुआ। मैं हाउस आव कामन्स मे भी गया। वहा के दो सदस्यो के साथ भोजन किया और पार्लमेंट मे रात भर हुई वहस के कुछ अश भी सुने।

लदन से जव चार इजनोवाला वायुयान हमे लेकर अकरा की ओर उडा तो मैंने निश्चित होकर शाति की सास ली। रास्ते मे तीन पडाव थे—त्रिपोली, कानो और लागोस। उसके वाद अकरा। मै सोचने लगा, पता नही इतने दिनो मे क्या हुआ होगा ? काफी दिन वाहर लगा दिये थे। सचमुच कही कुछ हो न गया हो ? मुझे थोडी-थोडी चिन्ता होने लगी थी।

दूसरे दिन सवेरे जहाज कानो उतरा। हवाई अड्डे पर कनवेंशन पीपुल्स पार्टी की स्थानीय शाखा के सदस्य और कार्यकर्ता स्वागत के लिए आये हुए थे। उन्होने मुझे अपने यहा की वनी हुई एक तलवार भेट की।

कुछ ही घटो के वाद हमारा वायुयान अकरा पर मडरा रहा था। मैंने झुककर देखा तो हवाई अड्डे के सारे मैदान की रगत ही वदली हुई मालूम पडी। धूसर तारकोल के वदले वह गहरा कत्थई और एकदम काला दिखाई दे रहा था। लोग हजारो की सख्या मे आ जुटे थे और लगातार स्वागत के नारे लगाये जा रहे थे। मेरे लिए इतना सवूत काफी था और मै समझ गया कि सव कुशल-मगल है। और चाहे जो हो, परतु जनता मेरे साथ थी—मेरे भी साथ और मेरी पार्टी के भी साथ।

जैसे ही मै जहाज से निकलकर सीढियो पर आया, लोगो के धीरज का सारा वाध टूट गया और उन्होने मुझे चारो ओर से घेर लिया। दूसरे ही क्षण मै उनके कधो पर था और वे उमग-उमगकर नारे लगा रहे थे—'एन्क्रूमा—डाक्टर एन्क्रूमा !' पार्टी-गीत गाये जाने लगे और चारो ओर हिलोरे लेता हुआ मानव-समुदाय हर्ष-ध्वनियो से दिग-दिगत को गुजाने लगा। उस स्मरणीय यात्रा का वह कितना सुखद अत था !

वाद मे उसी दिन मैंने ओवुसु मेमोरियल पार्क मे सभा करके जनता को अपनी अमरीका यात्रा के सस्मरण सुनाने चाहे। जीवन मे पहली और अतिम वार फौजी वर्दी मे लैस होकर मै उस सभा मे गया, लेकिन भीड इतनी जवर्दस्त थी कि मेरा मच तक पहुचना ही मुश्किल हो गया। वडी कठिनाई से इच-इच कर रास्ता वनाता हुआ पूरे एक घटे मे मच तक पहुच पाया।

लोग इस तरह ठसे हुए थे कि किसीका एक कदम भी इधर-उधर हटना असभव हो गया था। मच पर चढकर देखा तो चारो ओर आदमी-ही-आदमी भरे हुए थे। कही तिल रखने की भी जगह नही थी। उस जबर्दस्त भीड मे कुछ भी कहना और हाफते हुए उस मानव-समुदाय को सबोधित करना व्यर्थ ही होता। मैंने केवल इतना ही कहा, "आज नही, अगले रविवार को एरीना मे आइये, मै वहीपर आप लोगो को अपनी यात्रा का हाल सुनाऊगा।" इतना कहकर मै चुप हो गया और उस ठसाठस भीड की ओर देखने लगा। वह जनता-जनार्दन-रूपी विराट पुरुष का महाकाय शरीर था, जिसे कोई कष्ट और कोई पीडा अपने उद्देश्य से विचलित नही कर सकती। उनकी वह सघन उपस्थिति ही उनके दृढ बधु-भाव और प्रबल समर्थन का प्रमाण थी। मै हर्षातिरेक से गद्‌गद और कृतज्ञता से नतमस्तक होकर सोचने लगा—कितना बडा सौभाग्य है मेरा कि इस विराट मानवता के नेतृत्व का सुयोग मुझे मिला है।

१५

प्रधानमंत्री और संवैधानिक सुधार

कौसी-सविधान मे कई खराबिया और खामिया थी। मेरी पार्टी की राजनैतिक आकाक्षाओ के अनुरूप तो वह जरा भी नही था। उस सविधान की बुराइयो के कारण मुझे प्राय अनेक कठिनाइयो का सामना करना पडता था। देश की राजनीति मे पार्टी-प्रणाली का श्रीगणेश हो चुका था, लेकिन न तो सविधान मे और न धारा सभा मे ही उस प्रणाली के लिए किसी प्रकार का प्रावधान रक्खा गया था। सरकार का सचालन करनेवाले नेता का पद तो था, परतु उस पद की मर्यादा और महत्व, क्षमता और व्यापकता अफ्रीकी व्यक्ति को ध्यान मे रखकर निर्धारित नही की गई थी। १९५१ मे जब मेरी पार्टी ने प्रचड बहुमत से चुनाव जीता तो एक सर्वथा नई परिस्थिति उत्पन्न हो गई और उसमे वह पद किसी महत्त्व और उपयोगिता का नही रह गया। सब ओर से यह माग की जाने लगी कि परिवर्तित परिस्थितियो मे सरकार के सचालन के नेता का पद उडाकर उसकी जगह प्रधानमत्री का पद निर्मित किया जाना चाहिए। मै जानता था कि केवल पद का नाम-परिवर्तन कर देने से तो बात बनेगी नही, सविधान तो वही-का-वही रहेगा, परतु फिर भी नाम का अपना महत्त्व तो होता ही है। मै धारा-सभा मे सरकार के सचालन का नेता इसीलिए तो था कि निर्वाचित बहुमत दल का नेतृत्व कर रहा था। यही तथ्य मेरे तत्कालीन पद को प्रधानमत्री के पद मे परिवर्तित करने के लिए काफी था।

ब्रिटेन की सरकार को हमारे इस तर्क के आगे झुकना पडा और ५ मार्च १९५२ को गवर्नर ने धारा-सभा मे इग्लैड के उपनिवेश-मत्री का एक वक्तव्य पढकर सुनाया, जिसके अनुसार गोल्ड कोस्ट की धारा-सभा मे सरकार के सचालन के नेता का पद प्रधानमत्री के पद मे परिवर्तित कर दिया गया। अब प्रधानमत्री का पद गवर्नर के बाद पहले नबर पर था और पदेन मत्री उसके बाद आते थे।

इस घोषणा के अनुसार प्रधानमत्री पद पर मेरी नियुक्ति के बाद व्यवस्थापिका समिति ने त्यागपत्र दे दिया और मैंने गवर्नर से परामर्श कर अपनी मत्रिपरिषद् (केबिनट) की घोषणा की। मेरी और मत्रिपरिषद् दोनो की नियुक्ति पर धारा-सभा ने २१ मार्च के अधिवेशन मे अपनी स्वीकृति की मुहर लगा दी।

मन्त्रिपरिषद् के सदस्यो का नाम प्रस्तावित करता था और धारा-सभा अपने प्रस्ताव से उसे मजूरी देती थी । इसके बदले मेरा सुझाव था कि प्रधानमत्री को अपनी मन्त्रिपरिषद् के सदस्यो की नियुक्ति का अधिकार और स्वतन्त्रता होनी चाहिए । प्रधानमत्री की नियुक्ति तो एकमात्र इसी तथ्य पर स्वीकृत मान ली जानी चाहिए कि गवर्नर के निमत्रण पर बहुमत की सरकार बनाने की उसकी तैयारी और योग्यता है ।

५ धारा-सभा के गठन के सबध मे मेरा यह सुझाव था कि वह पूर्णत निर्वाचित एव प्रतिनिधिक हो, और दूसरे सदन की स्थापना पर भी विचार किया जाना चाहिए । इसके लिए एक जाच-आयोग की नियुक्ति पर मैने विशेष रूप से जोर दिया था ।

६ धारा-सभा मे पेश किये जानेवाले विधेयको के नियत्रण का गवर्नर को व्यापक अधिकार था । उसे कम किये जाने-सबधी सुझाव भी मैने जनता के विचारार्थ प्रस्तुत किये थे ।

७ सरकारी कर्मचारियो के सबध मे लोक सेवा आयोग की स्थापना, उस आयोग पर धारा-सभा का नियत्रण, सेवाओ के अफ्रीकीकरण का अनुपात और गति, ब्रिटिश कर्मचारियो के हितो की सुरक्षा, भविष्य मे उनका अनुपात, क्षतिपूर्ति आदि विषय भी सवैधानिक सुधार मे विचारार्थ रक्खे गए थे ।

इस प्रारूप को मुद्रित कर जनता मे वितरित किया गया, सरदारो को एव राजनैतिक सस्थाओ तथा सगठनो को भेजा गया । एक सौ तीस सगठनो ने इस प्रारूप पर अपने विचार प्रेषित किये और सुझाव दिये । इन सुझावो एव विचारो के आधार पर सरकार ने '१९५३ का सवैधानिक सुधारो का राजकीय श्वेतपत्र' तैयार किया । जून के महीने मे इस श्वेतपत्र पर धारा-सभा मे विचार किया गया और तब अतिम सुझाव ब्रिटिश सरकार को भेजे गए । इन्ही सुझावो के आधार पर नया विधान बना, जो 'एन्क्रूमा सविधान' कहलाता है, परतु जिसे मै 'एन्क्रूमा-आर्डेन क्लार्क सविधान' कहता हू । यह नया सविधान पूरे एक वर्ष बाद लागू किया जा सका ।

नया सविधान और उसके अतर्गत होनेवाले आम चुनावो की तैयारी मैने एक वर्ष पहले से ही शुरू कर दी । सवैधानिक सशोधन के सुझावो का प्रारूप प्रसारित करने के तुरत बाद मै देशव्यापी दौरे पर निकल गया । पार्टी सगठन सब जगह बहुत अच्छा काम कर रहे थे और नई कौसिले जनता को राहत पहुचाने के काम मे तन-मन से लगी हुई थी । मै जहा भी गया, जनता की आवश्यकताओ और मागो के बारे मे बराबर पूछता रहा और जब

लौटकर राजधानी आया तो मेरे पास सडको, पाठशालाओ, अस्पतालो, चिकित्सा-केन्द्रो, डाकखानो, मकानो, टेलीफोनो और पीनें के पानी की सुविधा-सबधी मागो की एक बहुत लबी सूची बन गई थी ।

दौरे से लौटकर मैंने पार्टी के कार्यकर्ताओ का एक सम्मेलन किया और उसमे दौरे के अनुभवो की जानकारी देते हुए सगठन के महत्व पर अधिक जोर दिया ।

दुर्भाग्य से हमारे देश मे उस समय दो ट्रेड यूनियन काग्रेसे थी । दोनों ही पार्टी की दृढ समर्थक थी, परतु मजदूर वर्ग विभक्त था । मैंने इस बात पर जोर दिया कि देश मे केवल एक ही सयुक्त ट्रेड यूनियन सगठन होना चाहिए । दोनो सगठनो के सयुक्तिकरण और मजदूर वर्ग की अविच्छिन्न एकता के लिए मैंने एक औद्योगिक सगठन समिति स्थापित कर दी ।

पार्टी की उस काफ्रेस मे ही मैंने पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव रक्खा । प्रस्ताव का आशय यह था कि इस काफ्रेस मे उपस्थित हम सब प्रतिनिधि इग्लैड के उपनिवेश-मत्री के द्वारा मल्का महारानी की सरकार से यह निवेदन करते है कि गोल्ड कोस्ट की समस्त जनता और सरदार देश मे तत्काल पूर्ण स्वराज्य की स्थापना किये जाने की माग करते है, इसके लिए ब्रिटिश पार्लमिट और गोल्ड कोस्ट की धारा-सभा मे एक साथ और एक ही समय स्वाधीनता का विधेयक पारित कर मल्का महारानी एलिजाबेथ द्वितीय की अध्यक्षता मे घाना के नये नाम से गोल्ड कोस्ट का स्वतत्र और सार्वभौम राज्य स्थापित किया जाय ।

१६

लाइबेरिया की राजकीय यात्रा

१९५२ के अत मे मुझे लाइवेरिया के राष्ट्रपति श्री डब्ल्यू वी एस टवमैन की ओर से लाइवेरिया-यात्रा का निमत्रण प्राप्त हुआ। मुझे ले जाने और लौटाने के लिए उन्होने कृपापूर्वक राष्ट्रपति का निजी जलपोत 'प्रेसिडेट एडवर्ड जे रोये' भी भेज दिया था।

उन दिनो मेरे हाथ मे कोई विशेष काम नही था। सवैधानिक सुधारो का प्रारूप प्रसारित किया जा चुका था और जनता की ओर से सुझाव और विचार १९५३ के अप्रैल महीने से पहले प्राप्त होने की कोई आशा नही थी। मेरे सभी साथियो की यही राय हुई कि जाना चाहिए। मैने गवर्नर से सलाह की तो उन्होने भी कहा कि छुट्टी की जरूरत तो आपको अवश्य है।

अत मै १९५३ की मध्य जनवरी मे एक दिन सवेरे टाकोराडी के लिए चल पडा। राष्ट्रपति का जलपोत वही लगर डाले मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। उस यात्रा मे काफी लोग मेरे साथ थे और वहुत से तो स्वय अपने खर्च पर हवाई जहाज से मेरे पहले ही वहा पहुच गए थे। विदा देने के लिए जमा हुई भीड के कारण मेरी मोटर को टाकोराडी नगर के वाहर ही रुक जाना पडा। नगर के छोर से बदरगाह की जेटी तक हजारो नर-नारी रग-विरगे कपडे पहने नाच-गान के साथ मेरी विदाई के उपलक्ष मे उत्सव-सा मना रहे थे। माताए पीठ पर दुधमुहे वच्चो को वाधे नत्य की ताल पर थिरक रही थी। वच्चे अपने वडो का अनुकरण कर रहे थे। ढोल-ढमाको और झाझ-करतालो का समा वध गया था। पग-पग पर मेरी यात्रा के लिए शुभ कामनाए प्रकट की जा रही थी। जव जेटी पर पहुचा तो वहा विदाई के भाषण हुए, शुभ कामनाए व्यक्त की गई, अगणित लोगो ने झकझोर-झकझोर कर हाथ मिलाये, और परपरागत प्रथा के अनुसार देवी-देवताओ को मद्य की अजली समर्पित करने के वाद जलपोत ने प्रस्थान किया।

जलपोत के कप्तान एक हालैड-निवासी सज्जन थे। उन्होने वडे तपाक से मेरा स्वागत किया, एक-एक कर अपने सभी नाविको से मेरा परिचय कराया और वडे मान-सम्मान के साथ मुझे जलपोत के उस कक्ष मे ले गये, जो राष्ट्रपति के उपयोग के लिए सुरक्षित था। उन्होने वताया कि आपको इसी कक्ष मे अपनी यात्रा करनी है।

मैंने अपने अभिन्न साथी कोजो बोत्सियो के साथ उसमे अड्डा [illegible]या । कक्ष बडा ही प्रशस्त, सुरुचिपूर्ण ढग से सज्जित और आरामदेह था । मै एक गुदगुदे बिस्तरे पर लेट गया और सोचने लगा कि अब मनरोविया पहुचने तक इसपर से उठने का नाम न लूगा ।

शीघ्र ही मेरे दूसरे साथी वहा आ पहुचे । अबतक उन्होंने जलपोत का चप्पा-चप्पा देख डाला था और अब मेरी खोज-खबर लेने आये थे । दरवाजा खोलकर जो भी आता मुझे लेटे देखकर यही पूछता, "क्यो, क्या हुआ ? क्या तबीयत ठीक नही है ?" उन्हे विश्वास ही नही होता था कि मै आराम कर रहा हू और आराम की जरूरत मुझ भी हो सकती है । वे सब मुझे आदमी नही, मशीन समझते थे, जिसे न भोजन की जरूरत, न नीद और विश्राम की । बस, सवेरे चाभी भर ली और चौबीस घटे की फुर्सत हो गई । जहा कमानी ढीली हुई कि फिर चाभी भर ली ।

और उस दिन मैंने किया भी यही । झट से चाभी भरी और सबके साथ डेक पर चला आया । देखा तो वहा सभी हॅसी-खुशी और मनोविनोद मे मग्न हो रहे थे । कोई हँस रहा था, कोई पी रहा था और कोई शोर मचाये जा रहा था । वे कही से एक रेडियोग्राम भी उठा लाये थे और उसे सारी यात्रा मे बजाते रहे, एक मिनट को भी बद नही होने दिया ।

मैंने शीघ्र ही कप्तान को जा पकडा और उससे जलपोत और लाइ-बेरिया की जलसेना के बारे मे प्रश्न पूछने लगा ।

कप्तान ने बताया कि इस जलयान का नामकरण लाबेरिया के प्रथम निर्वाचित राष्ट्रपति एडवर्ड जे रोये के नाम पर किया गया था । उनका निर्वाचन १८७० मे हुआ था । जलपोत का निर्माण हालैड मे हुआ और उसका कुल वजन चार सौ तिरेसठ टन है । राष्ट्रपति टबमैन ने इसे दौरो के लिए बनवाया था । लाइबेरिया की सडको की स्थिति बहुत खराब थी और वर्षा-काल मे तो उनका उपयोग किया ही नही जा सकता था । राष्ट्र-पति इस जलपोत के द्वारा समुद्री किनारे से दौरे किया करते थे ।

कप्तान ने मुस्कराकर सलाम करते हुए कहा, "श्रीमान इसे राष्ट्र-पति की जलसेना ही समझे ।"

"लेकिन मेरे जल-सैनिक तो फिलहाल वे बहादुर मछियारे है, जिनके पास बहुत ही मामूली ढग की डोगिया है ।" मैंने जवाब दिया । पर वह जलपोत मेरी निगाहो मे चढ गया था और मैंने हालैड का नाम ही नही नोट कर लिया, यह भी सोचने लगा कि जब मेरा पहला जलपोत बन-कर आ जायगा तो मै उसका क्या नाम रक्खूगा ।

जलपोत पर चहल-पहल तो खूब रहती थी, फिर भी काफी विश्राम मिल गया और जब हम मनरोविया के बदर पर लगे तो मै एकदम तरो-ताजा और प्रफुल्लित था। वहा हमारा जिस शान से स्वागत हुआ, उसकी तो मैने स्वप्न मे भी कल्पना नही की थी। राष्ट्रपति, उप-राष्ट्रपति, उनकी पत्निया, वहा की पार्लमेंट के दोनो सदनो के सदस्य, सरकार के उच्च-पदस्थ अधिकारी, कबीलो के सरदार और हर्षध्वनि करता हुआ अपार जन-समूह, सब-के-सब बदरगाह पर स्वागतार्थ खडे थे। पारस्परिक अभिवादन के बाद एक शाही जलस की शकल मे हमारे काफले ने नगर-प्रवेश किया।

१९४७ मे मैने जिस नगर को देखा था, आज तो उसका कायापलट ही हो गया था। पुराने नगर का कोई चिह्न भी कही दिखाई नही दे रहा था। इस प्रगति के लिए मैने अपनी बगल मे बैठे हुए राष्ट्रपति टबमैन को कोटिश बधाइया दी। अपने पाच वर्ष के कार्यकाल मे उन्होने सारे देश की शकल ही बदल डाली थी। उनके राष्ट्रपति-पद पर आने से पहले पश्चिमी अफ्रीका के अन्य देश लाइबेरिया का नाम लेना भी पसद नही करते थे। आज भी पश्चिमी अफ्रीका के स्वतत्र देशो मे वह कोई आदर्श राज्य नही है। काफी गरीबी और पिछडापन है। आवागमन के साधन अत्यत अविकसित और सडके बहुत ही खराब और कच्ची है। खुद देश की राजधानी मनरोविया मे गरीबी का नग्न चित्र देखा जा सकता है। लेकिन कितना ही दृढ मनोबल और लगन क्यो न हो, प्रगति और विकास को समय तो लग ही जाता है। और यह तो स्वीकार करना ही पडेगा कि राष्ट्रपति टबमैन ने पाच वर्षो की अवधि मे बहुत-कुछ कर डाला था। मुझे विश्वास हो गया कि यदि वह पाच-दस बरस और रह गये तो लाइबेरिया की सारी समस्याए हल कर देगे। साथ ही मुझे यह खयाल भी आया कि यदि बीस लाख पौड वार्षिक की सीमित आयवाला लाइबेरिया स्वाधीन होकर स्वतत्रता-पूर्वक अपना राजकाज चला सकता है तो ३ अरब ६० लाख पौड की वार्षिक आय वाला गोल्ड कोस्ट आजाद होकर अपना काम क्यो नही चला सकता ?

लाइबेरिया का मेरा दौरा बहुत ही कार्य-व्यस्त रहा। देश की समस्त गतिविधियो और पहलुओ से मुझे परिचित कराया गया। मैने वहा के सरकारी दफ्तर और उनकी कार्य-प्रणाली देखी, लोहे की खानो का निरीक्षण किया, लाइबेरिया मे रहनेवाले गोल्डकोस्ट-निवासियो के घरो मे गया और कितने स्वागत-समारोहो, गार्डन पार्टियो, उत्सव भोजो आदि मे सम्मिलित हुआ, उनकी तो कोई गिनती ही नही।

एक दिन राष्ट्रपति ने अपने ग्रामीण आवास टोटोटा मे, जो मनरोविया मे साठ मील दूर बिलकुल देहात मे हैं, मेरी दावत की। उस स्थान का प्राकृतिक सौंदर्य देखते ही बनता था। वहा पहुचा तो धूल-धक्को से भरे ऊबड-खाबड रास्ते की सारी क्लाति मिट गई। यह तो कुशल हुई कि उस दिन पानी नही बरसा, अन्यथा वहा पहुचना ही मुश्किल हो जाता। दावत बहुत बडे पैमाने पर आयोजित की गई थी। लाइबेरिया के तमाम कबीलो के सरदारो को निमत्रित किया गया था और सब मिलाकर कोई हजार अतिथि तो अवश्य हो गये थे। श्रीमती टबमैन की प्रबध-कुशलता और अतिथि-सत्कार की सराहना करनी होगी। बात-की-बात मे वह सब जगह घम लेती थी और जहा जिस चीज की जरूरत होती, तुरत पहुचाने का प्रबध कर देती थी।

ब्रिटिश-दूतावास और प्रवासी गोल्ड कोस्ट-निवासियो की ओर से भी स्वागत-समारोह हुए। वहा कुल मिलाकर मैंने इतने भाषण दिये, जिनकी गिनती कर पाना मुश्किल है। मनरोविया के सेंटेनियल पेविलियन मे जो भाषण दिया, वह मेरे उत्कृष्टतम भाषणो में से था। वहा मै बगैर किसी पूर्व-तैयारी के बोला। लोगो की ठसाठस उपस्थिति को देखकर मेरी वाणी का प्रवाह जैसे वह निकला था। उस दिन जो भी बोला, वह भाषण के निरे शब्द नही, हृदय के वास्तविक उद्गार थे, जिन्हे लोग चाव से सुनते और सुनकर सदैव याद रखते हैं।

"भाग्य और भगवान सदैव अफ्रीकियो की सहायता करता आया है। अमरीका और वेस्ट इडीज मे निर्वासन की भीषणतम यातनाओ के कठोर दिनो मे परमात्मा ने ही हवशियो की रक्षा की और उन्हे नष्ट होने से बचाया। आज अफ्रीका महाद्वीप मे पुन देशवासियो के लिए आजीविका की खोज मे विदेश-गमन की विवशता उत्पन्न हो गई है। एक स्वतत्र, सयुक्त और सार्वभौम पश्चिमी अफ्रीका की स्थापना ही इस विवशता को निर्मूल कर सकती है। जरा देश के मानचित्र को तो देखिये। लाइबेरिया, मिस्र और इथोपिया को छोडकर विदेशी साम्राज्यवादियो ने अपने लोभ और स्वार्थ से प्रेरित होकर सारे देश को टुकडे-टुकडे कर आपस मे बाट लिया है

"अफ्रीका अफ्रीकियो के लिए—आज यही है हमारा नारा। लेकिन, हमारा यह नारा मारकस गार्वे के नारे से एकदम भिन्न है। हम स्वतत्र, सयुक्त और सार्वभौम अफ्रीका चाहते है। अपने देश मे अपना शासन स्वय करने का हम अपना जन्मसिद्ध अधिकार चाहते है और उसे प्राप्त करके रहेगे।

"जिस जनता का अपना राज्य और अपनी सरकार नही होती, उसका कोई स्वाभिमान, कोई गौरव, कोई प्रतिष्ठा यहातक कि अस्तित्व भी नही होता। इसलिए आज का युगधर्म है कि हम अपने-अपने देशो का राजनैतिक एव आर्थिक विकास करे और प्रगति को उस मजिल से भी आगे ले जाय, जहातक लाकर हमारे पूर्वज छोड गये थे। ज़रा अपने पूर्वजो के प्राचीन घाना देश की ओर देखिये। उन्होने अपने समय मे ज्ञान-विज्ञान और वाणिज्य-व्यवसाय के क्षेत्र मे कितनी अधिक उन्नति की थी! उस जमाने मे देश-देशातरो मे घाना-साम्राज्य के नाम का डका बजता था। टिंबकटू का प्राचीन नगर विद्याओ का केद्र था। हमारे पूर्वजो के ग्रथो का यूनानी और हिब्रू भाषा मे अनुवाद किया जाता था। स्पेन के कोरडोवा विश्वविद्यालय मे घाना के अध्यापक अध्यापन-कार्य के लिए सादर आमन्त्रित किये जाते थे। यह है ज्ञान और विद्या के क्षेत्र मे हमारा गौरवशाली उत्तराधिकार। और आज विदेशी हमारे घर मे आकर हमसे ही यह कहने का दुस्साहस करते है कि तुम कुछ नही कर सकते, तुम किसी योग्य नही। हमे जन्म से ही यह उलटी पट्टी पढाई जाती है और इस भ्रात शिक्षा के कारण हम भी मान बैठे है कि वास्तव मे हम किसी योग्य नही और कुछ कर ही नही सकते। लेकिन मत भूलो कि जो हमारे पूर्वजो ने किया वह हम भी कर सकते है, कर दिखायगे और कर रहे है। जो भावनाए, जो आकाक्षाए, जो विचार और जो भावनाए गौरागो मे है, वे ही हममे भी है और हमे भी उन्हे मूर्त करना, रूप देना और कार्यान्वित करना आता है।

"विदेशो मे अफ्रीका का नाम उजागर करनेवाले हवशी विद्वानो और वीर पुरुषो की ओर देखो। एथोनी विलियम आमू बर्लिन विश्वविद्यालय मे दर्शनशास्त्र के प्रधानाध्यापक है और तुसैनी लुवर तुरे ने अपनी अनुपम वीरता से रणशास्त्र की समस्त मान्यताओ को ही बदल डाला है।

"हमारा सघर्ष किसी जाति अथवा रग या वर्ण के विरुद्ध नही, उस व्यवस्था के खिलाफ है, जो शोषण और दमन पर आधारित है, जो मनुष्य को मानवता से च्युत करती है, जो अखिल मानवता के ही पतन और ह्रास का कारण वनती है। हम सभी देशो और समस्त जातियो की पारस्परिक मैत्री, शाति और सहयोग मे विश्वास करते है, परतु साथ ही हम औपनिवेशिकता और साम्राज्यवाद के कट्टर शत्रु भी है।

"हमे आपस मे मिल-जुलकर रहना सीखना चाहिए। आभिजात्यो का युग अव समाप्त हुआ। परमात्मा ने सबको समान वनाया है। उसके राज मे कोई छोटा नही, कोई वडा नही। आप लोगो ने अपना राज्य और अपनी सरकार स्थापित की। अपनी जनता के क्षेम-कुशल की चिता और व्यवस्था आप लोगो का पुनीत कर्त्तव्य है। आपके देशनेता जनता के हित-साधन मे अहर्निश लगे हुए है, थोडे ही समय मे उन्होने जनता के लिए जितना कुछ कर दिखाया, वह अभिनदनीय तो है ही, अनुकरणीय भी है।"

फिर मैने गोल्ड कोस्ट के स्वाधीनता-सग्राम की सक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए वताया कि जव अग्रेजो ने १८४४ के 'वाड' के द्वारा देश पर अपना राजनैतिक शिकजा कसना शुरू किया तो किस प्रकार विरोध करने के लिए 'फाटी कान्फेडरेशन' की स्थापना हुई और उस सगठन के नेताओ को गिरफ्तार कर लवी-लवी सजाए दी गई। लेकिन आजादी की आग वुझी नही। विदेशी सरकार ने जमीन हडपने का कानून वनाया तो सरदार और जनता 'अवार्जिनीज़ राइट्स प्रोटेक्शन सोसाइटी' वनाकर लडी और आज जमीन जनता और सरदारो के ही अधिकार मे है। फिर 'नेशनल काग्रेस आफ ब्रिटिश वेस्ट अफ्रीका' वनी, परतु नेताओ की पारस्परिक फूट के कारण उसे पहले वदनाम और वाद मे खतम हो जाना पडा। तव अग्रे नाम का एक आदमी आया और उसने नई ज्योति जगाई और कहा, 'तुम भविष्य की ओर देखो। क्या हो रहा है और क्या हो चुका है, इसपर ध्यान मत दो। नया सूरज उग रहा है। अफ्रीकी युवक जाग रहा है। उसकी जाग्रति समस्त मानवी सभ्यता को एक चुनौती होगी।'

उसके वाद मैने अपने स्वदेश लौटने से लेकर पार्टी द्वारा स्वाधीनता

के प्रस्ताव को स्वीकार किये जाने तक की घटनाओ का वर्णन किया और कहा कि हम स्वतत्र देश का नाम गोल्ड कगोस्ट इसलिए नही चाहते, क्योकि इस नाम के साथ साम्राज्यवादी शोषण की दु खद स्मृतिया लिपटी हुई है। नया नाम घाना हमारे गौरवशाली अतीत और उज्ज्वल भविष्य का परि-चायक है।

मैने उन्हे यह भी बताया कि एक सयुक्त पश्चिमी अफ्रीका का आदो-लन जोरो पर है। पश्चिमी अफ्रीका के सभी देशो को पारस्परिक एकता और भ्रातृत्व की भावना से अनुप्राणित होकर कार्य करना चाहिए। एकता के बल पर ही हम आज की दुनिया मे खडे रह सकते है और दुनिया के दूसरे राष्ट्रो के सम्मान और प्रतिष्ठा के अधिकारी बन सकते है।

लोगो ने मेरे भाषण के एक-एक शब्द को बडे ध्यान से सुना और बार-बार हर्षध्वनिया करते रहे।

एक पखवारे की सुखद यात्रा के बाद मै अपने देश लौटा। मनरोविया के बदरगाह पर मुझे विदा करने के लिए अपार मानव-समुदाय आ जुटा था। सब लोग आनद-विभोर होकर नाच रहे थे। मै भी उनमे जा मिला और खूब जी भरकर नाचा। नाचते-नाचते मुझे ख्याल आया कि सयोग से हमारी शिक्षा-दीक्षा अग्रेजो के द्वारा हुई, लाइबेरिया की अमरीकियो के द्वारा और हम दोनो के बीच बसे देशवालो की फ्रासीसियो के द्वारा परतु आखिर है तो हम सब एक ही परिवार के लोग और आज पुन एक हो जाने के लिए कितने उत्सुक है।

अपनी पन्द्रह दिनो की उस यात्रा मे मैने लाइबेरियावालो से कितना कुछ सीखा था और बदले मे कितना कुछ सिखाया भी।

जलपोत 'प्रेसिडेट एडवर्ड जे रोये' ने भोपू बजाया, विदा के शब्द और सदेश हवा मे गूजे, हाथ हिलते रहे और लाइबेरिया का किनारा पीछे और क्रमश पीछे छूटता चला गया। साथ चलता रहा लाइबेरिया-वासियो का अमित स्नेह, सौहार्द और दृढ मैत्री।

टाकोराडी पहुचे तो स्वागत का समारोह विदाई के आयोजन से शत-सहस्र गुना बढकर था। लोगो का ऐसा जमघट और इतना उत्साह मैने पहले कभी नही देखा था। बदरगाह की पूरी जेटी और दूर तक का सारा प्रदेश लोगो से भरा हुआ था। नर और नारी, जवान, बूढे और बच्चे उछल-उछलकर, हाथ हिला-हिलाकर, झडे, पताकाए और कपडे फहरा-फहराकर नाच रहे थे। ढोल-ढमाको की आवाज से दिशाए गूज रही थी। गीत के बोल और ताने वातावरण को मुखरित कर रही थी।

जब जेटी पर उतरा तो ऐसा लग रहा था मानो तरगित होते, हिलोरे खाते मानव-महासागर के बीच किसी बेडे पर खडा बहा जा रहा हू ।

उस स्वागत-समारोह का वही अत न हुआ । टाकोराडी से अकरा तक पूरे पैसठ मील का लबा मार्ग तोरण, वदनवारो और पताकाओ से सजाया गया था । रास्ते के दोनो ओर लोगो की भीड खडी थी । दूर-दूर देहात के लोग अपनी रग-बिरगी राष्ट्रीय पोशाको मे आये थे । यहा से वहा तक एक ही समवेत स्वर गूज रहा था—'अकबा ऽ ऽ ऽ बा !' 'आजादी !' 'स्वागत !'

१७

भाग्य-निर्णय का प्रस्ताव

सन् १९५३ के अप्रैल महीने से लेकर जून तक मै सवैधानिक सुधारो के सबध मे विभिन्न सगठनो और प्रतिनिधि-मडलो से भेट और चर्चाए करता रहा। जितने विचार और प्रस्ताव आये थे, उन्हे सकलित और ग्रथित कर सरकार की ओर से जुलाई मे सवैधानिक सुधारो का एक श्वेतपत्र प्रकाशित किया गया। १० जुलाई १९५३ को मैने धारा सभा मे सवैधानिक सुधारो पर अपना स्वाधीनता का प्रस्ताव, जिसे देश के राजनैतिक इतिहास मे 'भाग्य-निर्णय का प्रस्ताव' कहा गया, प्रस्तुत किया ।

उस दिन धारा-सभा का एक-एक सदस्य उपस्थित था। सदन के बाहर भी हज़ारो की भीड थी। लोग इतने खुश नज़र आ रहे थे मानो आजादी मिल ही गई हो। जैसे ही मै खडा हुआ, लोगो ने तुमुल हर्षध्वनि की और फिर एकदम सन्नाटा छा गया। इतनी शाति इतना और मौन कि सुई भी गिरती तो सुनाई दे जाती ।

मैने धारा-सभा के अध्यक्ष को सबोधित कर उनकी अनुमति से सदस्यो के विचारार्थ अपना प्रस्ताव पढकर सुनाया

"धारा-सभा सवैधानिक सुधारो पर सरकार के श्वेतपत्र को अगीकार कर गोल्ड कोस्ट की सरकार को मल्का महारानी की सरकार से यह निवेदन करने का अधिकार प्रदान करती है कि जैसे ही स्वाधीनता के लिए सवैधानिक एव शासकीय प्रबध पूरे हो जाय, गोल्ड कोस्ट को कामनवेल्थ के अतर्गत एक स्वतत्र और सार्वभौम राज्य घोषित किये जाने-सबधी एक स्वाधीनता विधेयक इग्लैड की पार्लमेंट मे उपस्थित किया जाय। और साथ ही, धारा-सभा गोल्ड कोस्ट की सरकार को मल्का महारानी की सरकार से, उपर्युक्त निवेदन को सर्वथा अक्षुण्ण रखते हुए, यह माग करने का भी अधिकार देती है कि अत्यत आवश्यक मान कर १९५० के गोल्ड कोस्ट विधान-सबधी आदेश मे इस प्रकार से परिवर्तन किया जाय कि धारा सभा के सभी सदस्य गुप्त मतदान के आधार पर प्रत्यक्ष विधि से निर्वाचित किये हुए हो और मत्रिपरिषद् के सभी सदस्य धारा-सभा के सदस्यो मे से ही हो और सीधे धारा-सभा के प्रति उत्तरदायी हो।"

इस प्रस्ताव पर बहस का सूत्रपात करते हुए मैने एक बहुत लबा

भाषण दिया। भापण के आरभ मे मैंने धारा-सभा के सदस्यो से कहा कि उन्हे वहुत ही गभीरता से श्वेतपत्र पर विचार करना चाहिए और ठोस रचनात्मक सुझाव देने चाहिए, क्योकि धारा-सभा मे जो वहस होगी, उसी के अनुरूप सरकार सवैधानिक सुधारो-सबधी अतिम सुझावो का मसविदा इग्लैड की सरकार को भेजेगी। मैंने उनसे यह अपील की कि वहस मे हमारा दृष्टिकोण क्षेत्रीय नही, राष्ट्रीय और किसी एक पक्ष तक सीमित नही, देशभक्तिपूर्ण होना चाहिए।

अपने प्रस्ताव को विस्तारपूर्वक समझाते हुए मैंने वताया कि स्वराज्य की हमारी माग कितनी सही और उचित हैं। स्वराज्य प्रत्येक देश की जनता का वुनियादी अधिकार हैं और इस मामले मे किसी भी प्रकार का समझोता सभव नही। वुनियादी सिद्धातो को लेकर समझौता करने का अर्थ है उस सिद्धात को ही तिलाजलि दे देना। वुनियादी सिद्धात को या तो समग्र रूप मे ग्रहण किया जाता है, या समग्र रूप मे उसका परित्याग किया जाता है। समझौता वहा किसी भी रूप मे चल नही पाता। जनता के आत्म-निर्णय और स्वाधीनता के अधिकार की कसौटी, उनके रग अथवा सामाजिक उन्नति को मानना अनुचित होगा। यह तो जनता का जन्मसिद्ध अधिकार है, उससे इस अधिकार को छीनना किसी भी दृष्टि से उचित नही कहा जा सकता और परिस्थितिवश वह इस मौलिक अधिकार से वचित कर ही दी जाय तो जिस दिन भी अपना राज-काज स्वय करने के लिए प्रस्तुत हो जाय उसी घडी उसे स्वराज्य के योग्य मानकर यह अधिकार पुन प्रदान कर दिया जाना चाहिए।

"कौसी-विधान की समस्त खामियो के वावजूद १९५१ के आम चुनावो को लडकर और धारा-सभा मे अपना प्रचड वहुमत स्थापित कर तथा ढाई वर्ष तक राज-काज मे हिस्सा लेकर हमने दिखा दिया कि गोल्ड कोस्ट की जनता सभी तरह से स्वराज्य के उपयुक्त है और जवतक पूर्ण स्वराज्य प्राप्त नही कर लेगी, चैन न लेगी सविधान के सुधार के लिए जितने भी सुझाव आये है, सवका मशा एक ही है, सभीने स्पष्ट और सवल शब्दो मे एक ही वात दुहराई है और वह मशा और वह वात है अभी और इसी समय, विना किसी विलव के पूर्ण स्वराज्य।

"मल्का महारानी की सरकार को गोल्ड कोस्ट की जनता की [illegible] को तत्काल स्वीकार कर लेना चाहिए। ऐसा करना ब्रिटिश [illegible] कामनवेल्थ नीति के सर्वथा अनुरूप ही होगा। अनेक वार ब्रिटिश [illegible] के औपनिवेशिक मन्त्रियो ने, उदाहरणार्थ सर्वश्री [illegible] [illegible], [illegible]

ग्रिफिथ्स, ओलीवर लिटलटन आदि ने कहा भी है कि ब्रिटिश औपनिवेशिक नीति का मूलाधार है उपनिवेशो को कामनवेल्थ के अतर्गत स्वशासन के लिए योग्य करना और स्वराज्य प्रदान करना। १८६७ मे कैनेडा के साथ यही नीति अपनाई गई, बाद मे आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैड और दक्षिण अफ्रीका को भी इसी नीति के अतर्गत स्वतत्र किया गया। दूसरे महायुद्ध के बाद भारत, पाकिस्तान, श्रीलका और बर्मा को भी इसी नीति के अतर्गत कामनवेल्थ के स्वतत्र और सार्वभौम सदस्य स्वीकार किया गया। हमारी पूर्ण स्वराज्य की माग और कामनवेल्थ की बुनियादी औपनिवेशिक नीति मे कही कोई विरोध, कोई सघर्ष नही है। हमारी माग भी कामनवेल्थ के अतर्गत एक स्वतत्र और सार्वभौम गोल्ड कोस्ट की ही माग है।

"इस माग के स्वीकार किये जाने पर ब्रिटेन और हमारे देश के पारस्परिक सबध भी अच्छे और ज्यादा मैत्रीपूर्ण हो जायगे। अहिंसक एव शातिपूर्ण ढग से स्वाधीनता प्राप्त होने पर जो सबध बनेगे, उनमे पारस्परिक विश्वास, मैत्री और सम्मान की भावना अधिक गहरी और अधिक स्थायी होगी। यह तो मानी हुई बात है कि शासक और शासितो के बीच कभी समानता, मैत्री और सौहार्द नही हो सकता। और इसे तो सभी स्वीकार करेगे कि हमे थोडे-से स्वतत्र शासन का अवसर मिला तो ब्रिटेन के साथ हमारे सबध पहले से काफी सुधरे है। हमारा ढाई वर्ष का कार्य-काल मेरे इस दावे का साक्षी है। हम अपनी ओर से प्रेम और शाति का सद्भावनापूर्ण हाथ बढा रहे है, ब्रिटेन से हमारी यही अपेक्षा है कि वह हमारा हाथ थामकर प्रेम और शाति, मैत्री और समता के क्षेत्र मे हमारा सरक्षण और मार्गदर्शन करेगा।

"स्वाधीनता के बाद हम अपने देश को घाना के नाम से पुकारना चाहते है। यह नाम हमारे गौरवमय अतीत और समुज्ज्वल भविष्य का परिचायक है। जिस प्रकार भविष्य वर्तमान के गर्भ से उत्पन्न होता है, उसी प्रकार भूत वर्तमान की अमूल्य धरोहर है। हमारे पूर्वजो ने अपने अथक परिश्रम से उस समय एक महान और सपन्न घाना साम्राज्य की स्थापना की थी जब इग्लैड मे सभ्यता का विकास आरभ हुआ ही था और वहा के निवासी एक राष्ट्र और एक जाति के रूप मे सगठित होने भी नही पाये थे। हमारे पूर्वजो का वह घाना साम्राज्य और उसकी सस्कृति ग्यारहवी शताब्दी तक अपने पूर्ण वैभव के साथ जीवित रही। बाद मे उत्तर के मूरो के दुर्दात आक्रमणो के आगे उसे छिन्न-भिन्न हो जाना पडा, क्योकि प्राचीन घाना-निवासी युद्ध-प्रिय नही शाति-प्रेमी लोग थे। यह साम्राज्य टिंबकटू

से वामाको और ठेठ अतलातक महासागर तक व्याप्त था। कहा जाता है कि उस साम्राज्य मे विद्वानो, तर्कशास्त्रियो एव विधि-विधान के जानकारो का बडा सम्मान था और घाना के नागरिक ऊन, सूत, रेशम और मखमल के परिधान धारण करते थे। वे तावे, सोना, सूती वस्त्रो, हीरा-माणिक और चादी-सोने के शस्त्रास्त्रो का व्यापार करते थे। हम घाना का नाम भूतकाल के अहकारपूर्ण गौरव के रूप मे नही, भविष्य की महान आशा और प्रेरणा के रूप मे ही ग्रहण कर रहे है। हमारे पूर्वजो ने अपनी समसामयिक परिस्थितियो मे जो कर दिखाया, वही हम भी अपनी वर्तमान परिस्थितियो मे करने को इच्छुक है। और यह सब हम शान्ति तथा अहिसा का अवलबन करके करना चाहते है। युद्ध, हिसा और रक्तपात से हमे घृणा है और हम कभी अहिसा के अपने मार्ग से विचलित न होगे। हम युद्ध करेगे उन पुराने विचारो और पुरानी मान्यताओ—धारणाओ के विरुद्ध, जो आदमी मे दूसरो का शोषण करने, दूसरो के स्वत्वो का अपहरण करने का लोभ जाग्रत करती है, हम सघर्ष करेगे उन सब दुर्गुणो के विरुद्ध, जो मनुष्यो और जातियो मे पारस्परिक घृणा, द्वेष और भय का कारण होते है, हम लडेगे उन सभी वृत्तियो से, जो मनुष्य को उसकी मनुष्यता से गिराकर अमानव बना देती है। हमारे आदर्श है भविष्य के वे योद्धा जो हमारे देश और हमारी जनता को दासता के अज्ञानान्धकार से निकालकर मुक्ति और स्वाधीनता के ऐसे आलोक मे ले जायगे, जहा दृढ उद्देश्य, दृढ प्रयत्न और दृढ निश्चय के बल पर उस भ्रातृत्व का निर्माण किया जायगा जिसकी घोषणा ईसा ने दो हजार वर्ष पूर्व की थी और जिसका आजतक इतना अधिक गुण-गान किया जाता रहा है, लेकिन जिसे चरितार्थ करने के लिए विशेष कुछ भी नही किया गया।

स्वाधीनता-सग्राम के पहले वहादुर लडाके थे, जिन्हे अग्रेजो ने पकडकर सीकेले द्वीप-समूह मे निर्वासित कर दिया था। १८४४ के कुख्यात वाड के खिलाफ १८६८ मे स्थापित फाटी काफेडरेशन हमारे देश का प्रथम राष्ट्रीय नवजागरण था। साम्राज्यशाही ने उसे भयकर षडयन्त्र करार देकर उसके नेताओ को कालकोठरियो मे ठूस दिया था। उसके वाद हमारी धरती और हमारी जमीन की रक्षा के लिए 'अवार्जिनीज राइट्स प्रोटेक्शन सोसाइटी' ने जो गौरवमय सघर्ष किया उसके लिए हम उनके चिरकृतज्ञ है। यदि वे मैदान मे न उतरे होते तो आज अपनी ही धरती पर हम प्रकृति-प्रदत्त अधिकार से भी वचित हो जाते। इस सघर्ष के महान सेनानियो—मेनसा-सारबा, अत्ता अहुमा, सी और वुड आदि का जितना भी गुणगान किया जाय कम ही होगा। प्रथम विश्व-युद्ध के वाद 'नेशनल काग्रेस ऑव ब्रिटिश वेस्ट अफ्रीका' के यत्किचित् प्रयत्नो और केसली-हेफोर्ड एव हट्टन मिल्स जैसे महान राष्ट्रभक्तो के कार्यो का योगदान भी स्वीकार करना ही चाहिए। दूसरे महायुद्ध के वाद युनाइटेड गोल्ड कोस्ट कनवेशन की स्थापना और उसके छ प्रमुख नेताओ की ब्रिटिश सरकार द्वारा नजरवदी भी हमारे स्वाधीनता सग्राम की एक उल्लेखनीय घटना है। उनकी मुक्ति के लिए ट्रेड यूनियन काग्रेस, किसानो, विद्यार्थियो एव मा-वहनो ने जो गौरवशाली सघर्ष किया, वह तो स्वर्णाक्षरो से लिखा जायगा। १९४९ के जून महीने मे कनवेशन पीपुल्स पार्टी का आविर्भाव हुआ और वह देश की जाग्रत जनता का हरावल बनकर रणक्षेत्र मे उतरी और हम अपने लक्ष्य के इतना समीप पहुच सके।

"यहा देश के सवैधानिक विकास पर भी एक विहगम दृष्टि डाल लेना उचित होगा। पहली लेजिस्लेटिव कौसिल सन् १८५० मे बनी, अडतीस वर्ष वाद पहला अफ्रीकी उसमे लिया गया। वह थे श्री जान सारवा। १९१० मे अफ्रीकी सदस्यो की सख्या चार थी, जो १९१६ मे बढाकर छ कर दी गई। १९१५ के गुगिस वर्ग विधान के अनुसार सरकार और जनता के प्रतिनिधियो की सख्या वरावर-वरावर हो गई। १९४६ के सुधारो के कारण गैर-सरकारी सदस्यो की सख्या सरकारी सदस्यो की अपेक्षा वढा दी गई। १९५१ के कौसी-विधान मे कुछ अधिक जनतान्त्रिक अधिकार मिले और आज पहली बार इस सदन को पूर्णत निर्वाचित धारा-सभा का रूप दिये जाने की माग की जा रही है। कौसी-विधान के पहले तक सभी सदस्य नियुक्त किये जाते थे, कौसी-विधान मे निर्वाचन का कुछ अधिकार मिला और अव हम पूर्ण वयस्क मताधिकार की माग कर रहे है।

"यह सारा इतिहास दुहराने का मेरा एकमात्र उद्देश्य यह बतलाना

है कि प्राचीन काल से ही हम स्वतत्रता के लिए किस प्रकार निरतर सघर्ष करते रहे है, स्वतत्रता की हमारी चाह कितनी वलवती है और आज सवैधानिक सुधारो के लिए जनमत-सग्रह ने यह दिखा दिया है कि वह कितनी उत्कट और तीव्र हो गई है।

"स्वराज्य-प्राप्ति के वाद हम भूले भी कर सकते है और अवश्य करेगे, लेकिन विश्व के सभी राष्ट्रो की भाति हम भी भूलो से सीखेगे। यदि भूल करने का अवसर ही नही मिलेगा तो भूलो को सुधारेगे कैसे और सीखेगे कहा से ? आखिर वे भूले हमारी होगी और हम उन्हे सुधारेगे। जवतक हमपर कोई शासन करता रहेगा, अपनी भूले हम उसके सिर थोपकर उत्तरदायित्व से मुह चुराते रहेगे। स्वतत्रता के साथ उत्तरदायित्व की भावना भी आती है और उत्तरदायित्व को स्वीकार करके ही तो अपने अनुभवो को सपन्न किया जा सकता है।

"ढाई वर्ष के कार्य-काल मे हमारी प्रातिनिधिक सरकार ने यह दिखा दिया कि वह सव तरह से अपने उत्तरदायित्वो के भार को वहन करने मे समर्थ और उसके लिए प्रस्तुत है। लेकिन स्वराज्य हमारा साध्य ही नही साधन भी है। हमारा उद्देश्य तो है ऐसे नागरिको के देश का निर्माण, जो साधारणत सारी दुनिया के लिए और विशेषत अफ्रीका महाद्वीप के लिए आलोक किरण वन सके और अपने-आपको मानवता की नि स्वार्थ सेवा के लिए समर्पित कर सके। स्वराज्य हमारा ऐसा साधन होगा, जिसके द्वारा हम अपनी जनता के जीवन को ज्यादा अच्छा, ज्यादा सुखी और ज्यादा उन्नत वना सके, जिससे वह एक सुखी, सपन्न और शातिपूर्ण विश्व के निर्माण मे अपने ऐतिहासिक कर्त्तव्य को पूरा कर सके।

"सहयोग आज का युग-सत्य है। शाति, सौहार्द और स्नेह सहयोग से ही सभव है। लेकिन सहयोग के लिए समता पहली शर्त है। शासक और शासित मे, शोपक और शोपित मे सहयोग हो ही नही सकता। यह तो अनुभूत सत्य है कि जो दूसरो का दमन करता है, दूसरो को दास वनाये रखता है, वह स्वय भी कभी स्वतत्र नही हो सकता। हम स्वराज्य इसीलिए चाहते है कि हमारे शासक भी स्वतत्र हो सके और उनके साथ हमारे सवध शासित के नही, उनसे हमारा सहयोग समान स्तर के मित्रो का हो।

"हमने ब्रिटिश जनता से वहुत-कुछ सीखा है, आगे भी वरावर सीखते रहेगे और उन्हे भी हममे अनेक अनुकरणीय गुण मिलेगे। यह सच है कि हमारे पास उनकी तरह भौतिक सुख के साधन नही है। जिसे आधुनिक सभ्यता का उन्नत स्तर कहा जाता है हम उससे भी वचित है, परतु हमें मुक्त

हँसी और अमित आनद का, सगीत-प्रेम का, निर्व्याज स्नेह और क्षमा का एव द्वेषातीत रह सकने का सात्विक वरदान प्राप्त है। अन्याय और अनाचार, प्रतिशोध एव प्रतिहिंसा तथा भय और दैन्य-दारिद्र्य से प्रपीडित आज के जग मे इस सात्विक वरदान को प्रभु का चिर-कल्याणमय आशीर्वाद ही समझना चाहिए। भौतिक प्रगति की दौड मे हम इन गुणो से कही हाथ न धो बैठे, यही सावधानी हमको रखनी है। प्रकृति की शक्तियो को नियत्रित करने के प्रयत्न मे मनुष्य अपने ही लोभ और यत्रो का दास बन बैठा है। अगर हमने भी यही भूल की तो इतिहास हमे कभी क्षमा नही करेगा। मनुष्य के प्रकृत सद्‌गुणो की रक्षा ही नही, उनका निरतर विकास करते हुए उसके लिए भौतिक सुख-साधन सुलभ करना आज के युग की सबसे बडी माग और सबसे बडी समस्या है। हमे ऐसी जीवन-कला का विकास करना है, अपने देश के आर्थिक और सास्कृतिक विकास को इस प्रकार से सपन्न करना है कि जन-जीवन के भौतिक स्तर की उन्नति के साथ-साथ जन-मन का चिर आनद और परितोष भी अक्षुण्ण रहे। अपने युग की इस चुनौती को स्वीकार करने के लिए, युगानुरूप एक नये जीवन-दर्शन का निर्माण करने के लिए हम पूर्ण-स्वराज्य चाहते है।"

अत मे मैने धारा-सभा के सदस्यो से पुन यह अपील की कि इतिहास ने उनके कन्धो पर महान उत्तरदायित्व का जो बोझा डाला है, उसे वे पुनीत कर्त्तव्य-भावना से वहन करे। देश की लाखो-करोडो आखें उनकी ओर टकी लगाये देख रही है, कही उन्हे निराश न होना पडे।

और एक महान विचारक के इन शब्दो को दुहराकर मैंने अपना भाषण समाप्त किया

'मनुष्य की सबसे प्रिय सपदा उसका अपना जीवन है, जो केवल एक ही बार मिलता है, इसलिए जीवन की चादर पर लज्जा, कायरता और ओछेपन का दाग कभी न लगने दे और अत समय मे यह गौरवानुभूति कर सके कि मै अपने जीवन के क्षण-क्षण को और जीवन की समस्त सामर्थ्य को विश्व के श्रेष्ठतम कार्य—मानव-जाति की मुक्ति के लिए—समर्पित कर सका हू।'

भाषण की समाप्ति पर जो हर्षध्वनि हुई, उससे ऐसा लगता था मानो सदन की छत और दीवारे ढह जायगी। और जब बाहर खडे जन-समुदाय ने सुना तो उनके हर्ष-उल्लास के तो सारे बाध ही टूट गये। पूरे पद्रह मिनट तक सदन की कार्रवाही को स्थगित रखना पडा। फिर सचार एव जन-कार्यो के मत्री श्री जे ए ब्राहमा ने मेरे प्रस्ताव का अनुमोदन किया और तब

विधिवत् वहस आरभ हुई। वहस कई दिनो तक चलती रही और अत मे प्रस्ताव सर्वानुमति से पारित हो गया।

इस सशोधित विधान को कार्यान्वित करने के लिए आम चुनाव आवश्यक हो गये।

चुनावो मे कोई भी पार्टी दृढ सगठन और फौलादी अनुशासन के विना पूरी सफलता प्राप्त नही कर सकती। इसलिए अगस्त के महीने मे उत्तरी प्रदेश के टामाले नामक स्थान मे पार्टी प्रतिनिधियो का जो वार्षिक सम्मेलन हुआ, उसमे मैने सगठन और अनुशासन पर पूरा-पूरा ज़ोर दिया। प्रतिनिधियो को मैने समझाया कि पार्टी उम्मीदवारो के चुनाव मे पूरी-पूरी सावधानी वरती जाय। हाल के उपचुनावो मे पार्टी के अधिकृत उम्मीदवारो का जिस प्रकार चार चुनाव-क्षेत्रो मे पार्टी सदस्यो द्वारा ही खुला विरोध किया गया, वैसा तो कदापि नही होना चाहिए। यदि सगठन को मजवूत नही किया गया और अनुशासन का दृढता से पालन नही हुआ तो पूरी पार्टी ही पिट जायगी। नई धारा-सभा मे पार्टी की सारी सफलता वहा भेजे जानेवाले स्त्री-पुरुषो की निष्ठा, आस्था, विश्वसनीयता और लगन पर ही निर्भर थी। उम्मीदवारो के चुनाव के लिए मैने यह पद्धति सुझाई कि प्रत्येक क्षेत्र के लिए उस क्षेत्र की पार्टी समिति एक उम्मीदवार का नाम केद्रीय समिति को भेजेगी। केद्रीय समिति पार्टी की राष्ट्रीय व्यवस्थापिका समिति की ओर से उन उम्मीदवारो की जाच-पडताल, अतिम स्वीकृति अथवा अस्वीकृति के लिए अधिकृत की जायगी। उम्मीदवारो के चयन के सवध में केद्रीय समिति का फैसला अतिम और मान्य होगा।

अत मे मैने उन्हे सचेत करते हुए कहा, "सयोग और भाग्य पर कुछ भी न छोडा जाय और आत्म-परितोष को तो पास भी न फटकने दिया जाय।"

१८ :

१९५४ के आम चुनाव

सवैधानिक सुधारो के अनुसार धारा-सभा की सदस्य-सख्या मे वृद्धि करने के लिए न्यायाधीश डब्ल्यू वी वानलारे की अध्यक्षता मे एक आयोग नियुक्त किया गया। आयोग ने सारे देश को एक सौ चार चुनाव-क्षेत्रो मे विभाजित करने की सलाह दी। १९५४ के आम चुनाव मे कनवेंशन पीपुल्स पार्टी इन सभी सीटो पर लडी ।

किसी एक महीने मे इतने अधिक भाषण दिये हो, ऐसा मुझे याद नही पडता । उसी एक महीने मे मैंने सारे देश का दौरा किया और एक-एक चुनाव-क्षेत्र मे पहुचा । हर जगह मै जोशीला भाषण देता और लोगो से कहता, "अब तुम्हारी बारी है । इसी दिन के लिए तो हमने इतना परिश्रम किया, इतने कष्ट उठाये और इतनी योजनाए बनाई थी । 'स्वतत्रता अभी और इसी समय' का वादा बस अब पूरा होने को ही है । लेकिन सब-कुछ तुम्हारे हाथ मे है ।" शाम होते-होते तो आवाज डूबने लग जाती थी, परतु गला कभी नही बैठा । सार्वजनिक भाषणो के अतिरिक्त जो समय बचता, वह पार्टी-समर्थको को समझाने, किसीको सलाह-मशविरा देने तो किसीको उत्साह दिलाने मे लग जाता था। दम मारने की भी फुर्सत नही मिलती थी ।

इसी बीच मुझे पता चला कि कोई इक्यासी पार्टी सदस्यो ने पार्टी द्वारा स्वीकृत उम्मीदवारो के खिलाफ चुनाव लडने का फैसला किया है । मेरे क्रोध और मेरी झुझलाहट का पार न रहा । पार्टी की ओर से यह नियम पहले ही बना दिया गया था कि कोई पार्टी सदस्य पार्टी के स्वीकृत उम्मीद-वार का विरोध नही करेगा । मैने इन 'गद्दारो' के खिलाफ कडी कार्रवाही करने का निश्चय किया । कुमासी मे उसी समय एक पार्टी सभा की और सभी 'गद्दारो' को पार्टी से निकाल बाहर किया । मैंने कोई बहाना और कोई सफाई नही सुनी । नियम उनको पहले से ही मालूम था, परतु उन्होने अपने व्यक्तिगत हितो को पार्टी के हित से ज्यादा माना । उनपर अनुशासन की कार्रवाही करना सर्वथा उचित ही था ।

मै जानता था कि वे गद्दार पार्टी से निष्कासित किये जाते ही दूसरी पार्टियो के साथ जा मिलेगे । यही उन्होने किया, बल्कि उनमे से अधिकाश ने तो 'नार्दर्न पीपुल्स पार्टी' के नाम से एक नई पार्टी ही बना ली और इसी

पार्टी की ओर से चुनाव लडे। उत्तर की इक्कीस सीटो मे से प्रत्येक पर उन्होने पार्टी के उम्मीदवार का कडा मुकाबला किया। इस काम मे एक उम्मीदवार के रूप मे उन्हे सचार और जन-कार्यो के मेरे भूतपूर्व मत्री का सहयोग भी प्राप्त हो गया।

लोग बडी उत्सुकता से चुनाव के परिणामो की प्रतीक्षा करने लगे। यूरोपियन डर रहे थे कि कही दगा-फसाद और लूट-मार न हो जाय। सेना और पुलिस स्थिति का मुकावला करने के लिए तैयार थी। लेकिन सौभाग्य से कुछ हुआ नही।

१५ जून १९५४ के दिन अकरा ने तो चुनावकालीन शाति का आदर्श ही उपस्थित कर दिया। लोग कतार बनाकर मतदान-केद्रो पर आ खडे हुए—व्यापारी और मजदूर, सिर पर डलिया लिये साधारण फेरीवाले और पीठ पर बच्चे बाधे हुए महिलाए सब एक साथ खडे अपनी बारी की प्रतीक्षा कर रहे थे। गुमाश्ते और दफ्तर के कर्मचारी लोग भी उन पातो मे खडे थे। बारी आने पर लोग अदर जाते और अपनी पसद के चुनाव-चिह्नवाली मत-पेटी मे अपना मत-पत्रक डाल आते थे। कनवेशन पीपुल्स पार्टी का चुनाव-चिन्ह था लाल रग का छोटा मुर्गा। शोर-गुल, तनातनी और उत्तेजना का कही नाम भी नही था। आज की अपेक्षा तो रोजाना दफ्तर के समय बस-केद्रो पर कही ज्यादा हगामा रहता था।

शहर के ठीक मध्य मे एक मच पर बडा-सा बोर्ड रख दिया गया था और उसपर लिख-लिखकर चुनाव-परिणाम घोषित किये जाने को थे। तीसरे पहर से ही अकरा का प्रत्येक अफ्रीकी उसी ओर को चल पडा, जहा वह सारी रात जागता रहकर विजयी उम्मीदवारो को बधाई देना चाहता था।

शाम होते ही मेरी व्यग्रता भी बाध तोडने लगी। मिलनेवालो का ताता लगा रहा और टेलीफोन की घटी तो एक क्षण के भी लिए बद नही हुई। धीरे-धीरे रात हो गई, मै अकेला रह गया और समय जैसे स्थिर हो गया। खाने का समय हुआ, पर खाया नही गया; सोने का समय हुआ पर नीद नही आई। अकेलापन दूभर हो गया तो मै टेलीफोन करके अपने एक मित्र के यहा चला गया।

उनके यहा रेडियो भी था। एक से दो हो जाने के कारण समय भी ज़रा जल्दी कटने लगा। कान हमारे रेडियो की ओर तथा आखे घडी की सुइयो की ओर लगी हुई थी। दिल उत्सुकता से धडक रहे थे। आखिर रेडियो पर चुनाव-परिणाम का आखो देखा हाल सुनाया जाने लगा। सफल

उम्मीदवारो के नामो की घोषणा के बीच जन-समुदाय की हर्ष-ध्वनि और सामूहिक गीत के स्वर भी सुनाई दे जाते थे।

सहसा मैने कहा, "काश, मै भी उन हजारो लोगो में से एक होता!"

मेरे मित्र ने पूछा, "इससे आपका मतलब क्या है ?"

"यही कि सामान्य व्यक्ति की भाति मै आज के आनद और उछाह में हिस्सा ले पाता, परतु अपने ऊचे माथे के कारण तुरत पहचान लिया जाऊगा और लोग मुझे घर लेगे।"

मित्र ने कुछ सोचा और अपनी लाल टोपी ले आये। मुझे पहनाकर बोले, "जरा आइने मे अपनी सूरत तो देखिये।" सचमुच, शकल काफी बदल गई थी और मुझे आसानी से पहचाना नही जा सकता था। फिर मित्र ने अपनी छोटी फियाट मोटर निकाली। मुझे उसके पिछले अधेरे हिस्से मे बिठाया और मोटर शहर के मध्य भाग की ओर ले चले। जैसे-जैसे हम आगे बढते गए, हमारी चाल धीमी होती गई और मध्य भाग के निकट पहुचते-पहुचते तो हम चीटी की चाल से रेग रहे थे। शहर की सारी मोटरे इसी ओर चली आ रही थी। लोगो की भीड और शोर-गुल का तो कोई ठिकाना ही नही था।

मित्र ने एक स्थान पर मोटर को खडा करना चाहा तो पहरे पर तैनात पुलिसमैन ने रोकते हुए कहा, "माफ कीजिये, यहा गाडी खडी करने का हुक्म नही है।" लेकिन अब वहा रुकने की कोई जरूरत भी नही थी। मुझे जो देखना था, वह मै देख चुका था। चुनाव की रात के उल्लास और आनद को मैने प्रत्यक्ष देख लिया था। मै घर लौट आया और मुदित मन से बिस्तरे पर लेट गया।

अभी झपकी आई ही थी कि दरवाजा खटखटाया जाने लगा और बाहर बधाई के नारे बुलद होने लगे। सहसा झुड-के-झुड लोग कमरे मे घुस आये।

'आप जीत गये!' 'आप जीत गये!' 'मुबारक हो!' 'मुबारक हो!' सब कोई चिल्लाये जा रहे थे। मै आखे मलकर परिस्थिति को समझने का प्रयत्न कर ही रहा था कि उन्होने मुझे उठा लिया, कधो पर बिठाया और नाचते-कूदते नगर के मध्य भाग मे ले आये। वहा लाखो नर-नारी मेरा ही नाम पुकार रहे थे। सारा नगर मुझे देखने को उत्सुक हो उठा था। बडी देर तक तो मुझे ऐसा अनुभव होता रहा मानो स्वप्न देख रहा हू। एक बार तो मैने अपनी चिकोटी भी काटी। सच ही, स्वप्न

नही, वास्तविकता थी। मच पर मेरे साथ कोजो बोत्सियो, कोमेला ग्बेदेमा और दूसरे बहुत-से विजयी उम्मीदवार खडे थे। कितनी मधुर और मनोरम रात थी वह।

जब सारे चुनाव-परिणाम घोषित हो गये तो पता चला कि पार्टी ने कुल एक सौ चार मे से बहत्तर स्थानो पर कब्जा किया था। उत्तरी प्रदेशो मे हमे इक्यासी सदस्यो को निष्कासित करना पडा था। उन्होने नार्दर्न पीपुल्स पार्टी बनाकर हमारा मुकाबला किया था, फिर भी उस क्षेत्र की इक्कीस सीटो मे से पार्टी ने नौ पर कब्जा किया था।

चुनाव-परिणाम के दूसरे दिन गवर्नर ने मुझे धारा-सभा मे बहुमत दल के नेता की हैसियत से अपनी सरकार बनाने के लिए आमत्रित किया। मुझे १९५१ के चुनाव के बादवाला दिन याद आ गया। उस दिन मे और आज मे कितना अतर हो गया था। उस दिन हम एक-दूसरे के प्रति सशक थे। आज हमारा परिचय बहुत ही गहरा और आत्मीयतापूर्ण हो गया था। दोनो को अनेक मुसीबतो का सामना करना पडा था; लेकिन हम दोनो ने ही अपने-अपने ढग से उनपर विजय पाई और दोनो ही टिके रहे थे।

इस बार मैने एक श्री असाफू अजये को छोड शेष सभी मन्त्रियो को पार्टी सदस्यो मे से ही नियुक्त किया। इस बार का मेरा मन्त्रिमडल इस प्रकार था ·

कोजो बोत्सियो	राज मत्री (बिना विभाग के)
के० ए० ग्बेदेमा	वित्त-मत्री
आई० इगाला	स्वास्थ्य-मत्री
जे० एच० अल्लासानी	शिक्षा-मत्री
ए० केसली हेफोर्ड	स्वदेश-मत्री
ए० ई० ए० ओफोरी अत्ता	सचार-मत्री
अको अज्जी	व्यवसाय और श्रम मत्री
एच० ए० वेलबेक	लोक-कार्य मत्री
जे० ई० जानतुआ	कृपि-मत्री
ई० ओ० असाफू अजये	स्थानीय शासन-मत्री

२८ जुलाई को नई धारा-सभा के सदस्यो की शपथ-ग्रहण विधि सपन्न हुई और उसी दिन अध्यक्ष का चुनाव भी किया गया। सर एमानुएल क्विस्ट को ही दुबारा अध्यक्ष चुना गया।

दूसरे दिन गवर्नर ने अपना उद्घाटन भाषण किया, जो हमारे द्वारा तैयार किया गया था। अपने भाषण के पहले उन्होने दो सदेश पढकर

सुनाये—एक महारानी एलिजावेथ द्वितीय का और दूसरा इग्लैंड के उपनिवेश मत्री का। धारा-सभा का पूरा सदन और दर्शक गैलरिया खचाखच भरी हुई थी। आज के दिन सभी सदस्य अपनी रग-विरगी राष्ट्रीय पोशाक पहनकर आये थे। गवर्नर के भाषण के वाद सदन की कार्रवाही दूसरे दिन के लिए स्थगित कर दी गई।

नई धारा-सभा के क सौ चार सदस्यो मे कनवेशन पीपुल्स पार्टी के वहत्तर, नार्दर्न पीपुल्स पार्टी के वारह और शेप वीस स्वतत्र सदस्य थे। लेकिन स्वतत्र सदस्य शीघ्र ही इस या उस पार्टी से सयुक्त होते गए, जिससे १९५६ के मध्य तक हमारा सख्या-वल उनासी हो गया। सरकार-विरोधी वडे-से-वडा गुट नार्दर्न पीपुल्स पार्टी का था। इसीलिए उस पार्टी के नेता अपना और अपने साथियो का विरोधी दल के रूप मे परिचय देने को उठे। परतु मैंने उन्हे यह कहकर रोक दिया कि सामान्य पार्लमिंटरी परिभापा के अनुसार विरोधी दल वह है, जो सरकार के पराजित किये जाने पर तत्काल नई सरकार वनाने की स्थिति मे हो। परतु कथित विरोधी सदस्य अपनी स्थिति और सख्या-वल के कारण ऐसी स्थिति मे नही है। सरकार की स्वस्थ समालोचना और रचनात्मक सुझावो के लिए विरोधी दल की आवश्यकता स्वीकार करते हुए भी हम नार्दर्न पीपुल्स पार्टी को अधिकृत विरोधी दल के रूप मे मान्यता नही दे सकते। दूसरी वात यह भी है कि केवल क्षेत्रीय आधार पर सगठित पार्टी अखिल देशीय विरोधी दल कैसे स्वीकार की जा सकती है। हम नार्दर्न पीपुल्स पार्टी को सरकार-विरोधी कतिपय सदस्यो का एक गुट भले ही कह ले, जिसे पार्लमिंटरी शव्दावली मे अनधिकृत विरोधी दल कहा जा सकता है।

इस महत्त्वपूर्ण वैधानिक प्रश्न पर विरोधियो की ओर से खूब टीका-टिप्पणी हुई और कइयो ने तो मुझे तानाशाह की पदवी भी दे डाली। लेकिन यह वात उन्होने समझने की कोशिश नही की कि मै एक सैद्धातिक प्रश्न पर अडा हुआ था।

कनवेशन पीपुल्स पार्टी का विरोध करनेवाले जितने भी दल देश मे थे, जनता उन्हे 'डोमो' के नाम से पुकारती थी। इसका कारण यह था कि हमारा विरोध करनेवाली पहली पार्टी ने अपना नाम डेमोक्रेटिक पार्टी रक्खा था। जनता डेमोक्रेटिक शव्द का उच्चारण कठिनाई से कर पाती थी, इसलिए 'डोमो' कहने का रिवाज चल पडा। त्वी भाषा मे 'डोमो' शव्द का अर्थ होता है कुकुरमुत्ता। इसी प्रकार विरोधियो के लिए एक दूसरा शव्द भी चल पडा था। वह था गोपा (Gopa)। जव कई विरोधी पार्टिया

हो गई तो सबने मिलकर 'घाना अपोजीशन पार्टीज अमल्गामेटेड' के नाम से एक सघ बनाया, परतु नेताओ की पद-लिप्सा और अवसरवादिता के कारण यह सघ शीघ्र ही बारह-बाट हो गया।

दूसरे उपनिवेशो मे पार्टीबदी की यह बीमारी बडे व्यापक रूप मे देखने को मिलती है। पद-लोलुप मध्यमवर्गी बुद्धिजीवी बडी फुर्ती से अपनी पार्टी बना लेते है, लेकिन जनता के लडाकू सहयोग के बिना साम्राज्यवाद को परास्त करना असभव है। एक अनुशासनबद्ध राजनैतिक पार्टी और उस पार्टी के नेतृत्व मे देश की जनता का सयुक्त सगठन ही साम्राज्यवाद पर जनता की विजय की एकमात्र गारटी है।

औपनिवेशिक देशो मे साम्राज्यवाद राष्ट्रीय आदोलन को कमजोर और विभक्त करने के लिए साप्रदायिकता और जातिवाद का सहारा भी लेता है। अफ्रीका मे नाइजीरिया इसका एक ज्वलत उदाहरण है। १९५१ तक वहा सब सप्रदायो और जातियो (कबीलो) मे पूर्ण एकता थी, लेकिन साम्राज्यवादी वहा फूट डालने मे सफल हो गये। उन्होने एक कबीले को दूसरे और दूसरे को तीसरे के खिलाफ भडका दिया और इस तरह देश की एकता और आजादी का मूल उद्देश्य ही खटाई मे पड गया।

: १९ :

अशांटी की समस्या

इन्ही दिनो विदेशी मडियो मे कोका की माग वेतहाशा वढ गई और साथ ही उसके मूल्य मे भी आशातीत वृद्धि हुई। कोका हमारे देश की राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था का मुख्य आधार है। १९५५ मे देश के कुल निर्यात मे कोका का अनुपात ६८ प्रतिशत था। यदि कोका-उत्पादको को तत्कालीन वृद्धि के हिसाब से ऊचे दाम चुकाये जाते तो मुद्रा-स्फीति के कारण सारे देश की अर्थ-व्यवस्था ही गडवडा जाती। वाजार मे सभी वस्तुओ के दाम वढ जाते और तब मजदूरी तथा तनख्वाहो मे भी वृद्धि करनी पडती। कीमतो मे वृद्धि हो जाने के कारण दूसरी विकास-योजना के लक्ष्यो को पूरा करना कठिन हो जाता, सभवत वह सारी योजना ही खटाई मे पड जाती।

कोका-किसानो को उनकी फसल के लिए जो दाम चुकाये जा रहे थे, वे मेरे विचार मे सर्वथा उचित ही थे और विदेशी मडियो मे कोका की माग और भाव वढ जाने के वावजूद यहा उपर्युक्त कारणो से मै दाम वढाने के पक्ष मे विलकुल नही था। अतएव १० अगस्त १९५४ को धारा-सभा मे 'कोका राजस्व एव विकास निधि (सशोधन) विधेयक' प्रस्तुत किया गया, जो तीन दिन वाद विरोधी सदस्यो के आशीर्वादसहित पारित हो गया। इस विधेयक के द्वारा आगामी चार वर्षो तक कोका का मूल्य-निर्धारण कर दिया गया। विश्व-मडी मे जो भी भाव रहे, कोका-उत्पादको को चार वर्षो तक साठ पौड के प्रति वोझ पर वहत्तर शिलिग मिलते रहने की सरकार ने गारटी कर दी। इस मद से होनेवाली अतिरिक्त आय का उपयोग सरकार ने देश की अर्थ-व्यवस्था और विशेष रूप से कृषि के विकास मे करने का निश्चय किया।

कोका-किसानो ने तो सामान्यत इस विधेयक का समर्थन ही किया, परतु विरोधियो को एक वहुत अच्छा अवसर अनायास ही मिल गया। कनवेशन पीपुल्स पार्टी का विरोध करनेवाले जितने भी छोटे-मोटे दल थे, उन्होने वडी फुर्ती से 'कोका उच्चतर मूल्य समिति' के नाम से एक सगठन वना डाला। लेकिन यह सगठन ज्यादा दिन नही चला और इसके स्थान पर एक नई सस्था 'राष्ट्रीय मुक्ति परिषद' स्थापित की गई।

राष्ट्रीय मुक्ति परिषद का मुख्य नारा था—देश मे सघ सरकार की

स्थापना। कोका के मूल्य-निर्वारण को लेकर उन्होने अशाटी के लोगो मे सरकार के विरुद्ध असतोष के बीज बोना शुरू किया। वे कहते, अशाटी के कृपको के साथ कितना बडा अन्याय हुआ है। सारा मुनाफा सरकार बटोर ले गई और जिस धन का उपयोग अशाटी के विकास-कार्यो मे होना चाहिए था, वह तटीय प्रदेशो एव कोलानी की उन्नति मे खर्च किया जा रहा है। अगर हमे आत्मनिर्णय का अधिकार होता, हमारी स्वतत्र प्रादेशिक सरकार होती तो यह अन्याय कदापि न होने पाता। अपने सकुचित स्वार्थों के कारण राष्ट्रीय मुक्ति परिपदवाले इतने अधे हो गये थे कि अशाटी मे चल रहे विकास-कार्य उन्हे दीखते तक न थे। कुमासी का विशाल अस्पताल, नया पुस्तकालय-भवन, राष्ट्रीय बैंक की आलीशान इमारत और दूसरे पचीसो काम तथा कुमासी से अकरा तक की पक्की सडक, जिसके बन जाने से दो दिन-रात की यात्रा कुछ ही घटो मे बडे आराम से तय हो जाती थी—सब-कुछ उनकी आँखो से ओझल हो गया था। उन्हे यह भी ख्याल नही रहा कि यदि उत्तरी प्रदेशो के मजदूर अपनी श्रम-शक्ति न लगाये और दक्षिणवाले निर्यात न करे तो उनके कोका की कीमत दो कौडी की भी न रह जायगी।

राष्ट्रीय मुक्ति परिषद के साथ असातेमान परिषद भी मिल गई और दोनो सरकार के खिलाफ धुआधार प्रचार करने लगी। जब देखा कि राजनैतिक प्रचार से तो बात बनती नही तो ये लोग आतकवादी कार्रवाहियो पर उतर आये। बडे पैमाने पर पार्टी सदस्यो और समर्थको के साथ मार-पीट की जाने लगी। हमारे सैकडो समर्थको को घर-द्वार छोडकर अन्यत्र आश्रय लेने के लिए विवश होना पडा।

देने का मनचाहा अवसर मिल जाता। दुनिया की निगाहो से भी हम गिर जाते। ब्रिटेन के सारे अखबार उन दिनो खुले आम हमारे विरोधियो का समथन कर रहे थे। साम्राज्यवादी शत्रुओ ने उस अवसर का पूरा उपयोग हमारी लक्ष्य-प्राप्ति मे वाधा डालने मे किया। यदि आतरिक सुरक्षा का सम्पूर्ण प्रवध मेरी सरकार के हाथ मे होता और सेना तथा पुलिस पर पूरा-पूरा नियत्रण होता तो अशाटी मे इतनी घोर अव्यवस्था और अराजकता कभी भी न फैलने पाती।

अशाटी मे असतोष का एक कारण उन्ही दिनो और भी हो गया था। सरकार के समर्थक कुछ सरदारो को असातेमान परिषद ने पदच्युत कर दिया था। उन दिनो के कानून के अनुसार यदि असातेमान परिषद, जो सरदारो की राज्य परिषद भी थी, किसी सरदार को पदच्युत कर देती तो वह कही अपील भी नही कर सकता था। इस स्थिति को रोकना आवश्यक समझ मैने १९५५ के नववर महीने मे राज्य परिषद (अशाटी) अध्यादेश मे सशोधनार्थ एक विधेयक प्रस्तुत किया, जिसमे सरदारो को राज्य परिषद के फैसले के खिलाफ गवर्नर के आगे अपील करने का अधिकार प्रदान किया गया था।

असातेमान अथवा राज्य परिषद मे उन दिनो आतक, भ्रष्टाचार और घूमखोरी का वोलवाला था। सरदारो मे सपत्ति, भूमि अथवा उत्तराधिकार के प्रश्न को लेकर जव भी कोई झगडा उठ खडा होता, दोनो पक्ष अपनी थैलियो के मुह खोल देते थे। परिषद से जिसका भी थोडा-वहुत सबध होता उसीको घूस देकर अपने पक्ष मे करने का प्रयत्न किया जाता था। कुमासी मे तो वहुत-से लोगो का यह पेशा ही हो गया था। प्रभावशाली सरदारो ने इस काम के लिए विशेष एजेटो को नियुक्त कर रक्खा था। जहा सरदारो के ऐसे हाल हो, वहा सामान्यजन की भला क्या पूछ। उन बेचारो की तो कोई सुनवाई ही नही होती थी। जिसके जो मन मे आता, फैसला करके उनके सिर पर थोप देता था। एक किसान ने ठीक ही कहा था कि 'जव भी सरदार कौसिल की बैठक मे जाते है तो जरूर कोई-न-कोई नया कानून लेकर लौटते है। कभी आकर कहते है—मरण-उत्सव मत करो, कानूनन रोक लगा दी गई है, कभी लौटकर कहते है—कोका के पेड मत लगाओ, कभी आकर सुनाते है—लेवी दो, आदि। हम किस-किसकी सुने ? इतने सारे तो मालिक हो गये है— जिला आयुक्त अलग, सरदार अलग, असाते हेने अलग, राज्य परिषद अलग, और सभी हमारे लिए कानून वनानेवाले। कानून क्या हुए, जी का जजाल हो गये!'

वास्तव मे हालत इतनी बुरी थी कि कोई सरदार भी विरोध मे चू तक नही कर सकता था। यदि कोई साहस कर भी लेता तो राज्य परिषद उसे तत्काल पदच्युत कर देती थी, जिसकी न कही अपील थी, न कोई फरियाद। अकेले कनवेशन पीपुल्स पार्टी ने राज्य परिषद की धाधलियो का भडाफोड करने का साहस किया। उसीने अशाटी के लोगो को वास्तविक स्वतत्रता का अर्थ समझाया और इसीलिए अशाटी मे पार्टी को आरभ से ही इतना जन-समर्थन और जन-सहयोग प्राप्त हुआ। पार्टी के ही प्रयत्नो से सरदारो को राज्य परिषद के फैसले के खिलाफ गवर्नर के आगे अपील करने का अधिकार भी प्राप्त हुआ।

लेकिन विरोधी इससे और भी अधिक चिढ गये और उन्होने इस बार मुझको अपने आक्रमण का लक्ष्य बनाया। १० नवबर का दिन था। मुझे बहुत जोर का जकाम हो गया था। लेकिन कई जरूरी काम निपटाने थे, इसलिए उस दिन मैने अपने सचिव, निजी एकाउटेट और दूसरे कुछ लोगो को घर पर बुला लिया था। हम दिन-भर काम करते रहे और शाम तक काफी काम निपट गया। फिर बरामदे मे बैठकर गप-शप करने लग गये। रात मे आठ बजे के लगभग कही गधक के जलने की-सी बू आई। सबने यही सोचा कि पास-पडोस मे कोई कूडा जला रहा होगा। फिर धुआ भरने लगा। सचिव ने कहा, "यह तो पटाखो का धुआ मालूम पडता है।" मेरे एकाउटेट ने भी समर्थन करते हुए कहा, "हा, आतिशबाजी का ही धुआ है।" और वह तथा एक पार्टी सदस्य, जो उस समय वहा थे, सीढिया उतरकर नीचे देखने चले गए। इतने मे तो सारा बरामदा धुए से भर गया। मेरे सचिव ने चितित होकर पूछा, "क्या बात हो सकती है?" मैने कहा, "कुछ पता नही, पर इस धुए के कारण मेरा जुकाम और भी दुखदायी हो गया है।"

वाहर आया तो मैने अपनी मन्त्रि परिपद के सभी सदस्यो को खडे पाया। सब-के-सब भागे आये थे और वडे ही चिंतित और परेशान थे। कुछ शोर-गुल-सा भी इसी ओर को आता सुनाई दे रहा था। मैने समीप खडे कोजो वीत्सियो से पूछा, "यह शोर किसका है ?"

वह वोले, "लोग झुड-के-झुड चले आ रहे हैं। सडक पर चलना भी मुश्किल हो गया है।"

सचमुच लोग सैकडो की सख्या मे आ जुटे थे। सव मुझे देखने को आकुल और यह जानने को व्यग्र थे कि मुझे चोट तो नही आई। उसके वाद भी कई दिनो तक लोग मेरी कुशलता पूछने के लिए आते रहे और तार-चिट्ठियो का तो सप्ताहो तक ताता लगा रहा। सवने मुझे वधाई दी और उस आतक-वादी कार्रवाही की घोर निंदा की।

कुछ दिनो के वाद मेरा सशोधन स्वीकार कर लिया गया और वह '१९५६ का राज्य परिखद विधेयक' कहलाया। सरदारो के लिए अपील करने के अधिकार का कानून तो वन गया, परतु अशाटी के उपद्रवो का फिर भी अत नही हुआ। वहा अव्यवस्था और अराजकता उसके वाद भी कई दिनो तक वनी रही।

२० :

विश्रांति की खोज में

आधी रात हो चली थी। पार्टी के कार्य और नीति पर चर्चा करने के लिए प्रत्येक मगलवार की शाम को मेरे घर पर नियमित रूप से होनेवाली केंद्रीय समिति की वैठक अभी-अभी ही समाप्त हुई थी। टाप्सी, मेरी काली कुतिया, जो अभी तक कोने मे दुवकी पडी थी दुम फटकारकर उठ वैठी। पिछले वारह महीनो से आधी रात के वाद वही मेरे अगरक्षक और प्रहरी का काम कर रही थी। जीने पर खडे होकर उसने नीचे की अतिम सीढी तक देखकर इत्मीनान कर लिया कि सव लोग चले गए है। मै दरवाजा वद कर ही रहा था कि किवाडो की सेध मे से वह भीतर आ गई। फिर वह प्रत्येक कमरे मे घूम गई, यह देखने के लिए कि कही कोई नही है और सारे घर मे मै अकेला ही हू। भोजन करने के कमरे मे मै भी उसके साथ-साथ गया, क्योकि पानी पीना चाहता था। यहा आकर पता चला कि मेरा खाना अब भी मेज पर ढका रक्खा है।

मै तश्तरी उघाडकर ठडी मछली खाने वैठ गया, जो अवतक वेस्वाद और वेमजा हो गई थी। रोटी मे चीटिया लग गई थी। मै खाते हुए चीटियो को देखता रहा और सोचने लगा, 'छोटी-सी जान होते हुए भी कितनी उद्योगी है। अपना अभीप्ट लाभ करके ही रहती है। आखिर क्यो न हो, है भी कितनी सगठित और अनुशासित!' सव-की-सव फुर्ती से आ रही थी और जा रही थी। कामचोर और आलसी तो उनमे कोई थी ही नही।

टाप्सी ने दुम हिलाई तो मेरा ध्यान चीटियो से उसकी ओर वट गया। उसकी उदास आखो को देखकर मै मुस्करा उठा। अपना नियम तोडकर मैंने मछली का एक टुकडा उसकी ओर उछाल दिया। उसने इस तरह खाया मानो कडवी गोली निगल रही हो।

मै वैठकर दिन-भर की घटनाओ और कार्यो के वारे मे सोचने लगा। चौवीस घटो मे मैं वीस घटे काम करता रहा था। पहले मन्त्रिपरिपद की वैठक हुई, फिर प्रमुख क्षेत्रीय अधिकारियो की, दफ्तर मे कई लोगो से भेट-मुलाकात की, रोजमर्रा का काम जो दफ्तर का था, वह भी निपटाया। पार्टी दफ्तर और घर पर भी अपनी-अपनी समस्याएं लेकर जितने लोग आये थे, उनसे मिला और सलाह-मशविरा दिया। अत में आधी रात तक केंद्रीय

समिति की बैठक करता रहा। और यह कोई आज की ही वात नही थी। रोज इतना ही काम रहता था—किसी-किसी दिन तो इससे भी अधिक।

मै भगवान का नाम लेकर उठा और अपने विस्तरे की ओर चला कि कम-से-कम अव तो सो ही सकता हू। सहसा टाप्सी सदर दरवाजे की ओर लपक गई और जोर-जोर से भौकने लगी। नही, मुझे कोई आश्चर्य नही हुआ। उसने किसी अजनवी की पदचाप सुन ली थी और भौक रही थी। उसके भौकने के ढग से ही मै समझ गया और शर्त वद कर कह सकता था कि जरूर कोई औरत होनी चाहिए। जाने क्यो टाप्सी को अजनवी औरतो से वडी चिढ थी। उनका मेरे यहा आना वह किसी भी तरह सह नही सकती थी। हा, परिचित महिलाओ से वह कुछ नही कहती थी। तभी दरवाजे पर किसीने दस्तक दी।

"इतनी रात वीते कौन आया है?" मैने दरवाजा खोलते हुए विस्मित होकर सोचा। आगतुक टाप्सी को भौकते देख मारे भय के आधी सीढिया उतरे खडा था। मैने पुचकारकर टाप्सी को चुप किया। वह आदमी ऊपर आया और पाव से जूते निकालकर लगा मुझे साष्टाग दडवत् करने।

मैने धीरे से कहा, "जूते पहन लो, यहा आकर वैठो और अपने आने का कारण वताओ।" मैने एक कुर्सी की ओर सकेत किया और सामनेवाली दूसरी पर स्वय बैठ गया।

"मै अपनी बीवी के कारण आया हू क्वामे एन्क्रूमा[1]।" वह वोला, "हम कोई सवा सौ मील चलकर तुमसे मिलने आये है। कल शायद वहुत देर हो जाती, इसलिए अभी आधी रात मे ही आ पहुचे है।"

मैने पूछा, "तुम्हारी वीवी कहा है और मामला क्या है?"

"वह नीचे खडी है।" उसने कहा और बताया कि उसके बच्चा होनेवाला है, मगर कई सप्ताह ऊपर चढ गये है, इसलिए वे मेरे पास आये है, क्योकि सारे देश मे अकेला मै ही उनकी सहायता कर सकता हू।

मै चकित होकर सोचता रह गया। कुछ समझ मे नही आया कि

---

[1] बूढे और जवान सभी मुझे क्वामे एन्क्रूमा कहकर पुकारते है। श्री, मिस्टर या डाक्टर कोई मेरे नाम के आगे नहीं लगाता। मुझे भी नाम के आगे कुछ आदरणीय शब्द लगाकर औपचारिक ढग से पुकारा जाना अच्छा नहीं लगता। सीधे नाम लेना ज्यादा आत्मीय और समतासूचक लगता है। —लेखक

क्या सहायता कर सकता हू और ये लोग चाहते क्या है। अत मे मैने कहा कि अच्छा जाओ, अपनी वीवी को यहा वुला लाओ।

जव वह गर्भवती स्त्री ऊपर आकर मेरे सामने खडी हो गई तो मैने स्नेहपूर्वक उसकी पीठ पर हाथ रखकर मृदु स्वर मे कहा, "चिंता मत करो। वच्चा जल्दी ही हो जायगा। तुम्हे कोई कष्ट न होगा। विश्वास रक्खो।"

यह दिलासा पाकर वे दोनो सतुष्ट, प्रसन्न और कृतज्ञ लौट गये। थोडे दिनो वाद मुझे उसी आदमी का पत्र मिला कि उसके घर मे वेटा जन्मा है और वह उसका नाम क्वामे एन्क्रूमा रखना चाहते है।

मै सोच मे पड गया कि देश मे आखिर कितनो का नाम क्वामे एन्क्रूमा रक्खा जायगा? पचीसो तो अभी तक हो ही गये होगे। उनमे से एक भी मेरा रिश्तेदार नही और कइयो को तो मैने देखा तक भी नही। यदि गोल्ड कोस्ट का इतिहास जल्दी नही लिखा गया तो आगे आनेवाले इतिहासकार मुझे घोर विपयासक्त और अगणित पुत्रो का पिता ही मान वैठेगे।

उस रात, उन पति-पत्नी के जाने के वाद ही सोने का अवसर मिला और मैने इत्मीनान की सास ली। कपडे ठीक से उतारने भी नही पाया था कि नीद आ गई। ो-एक घटो के वाद जोर की छीक आई और मै जाग पडा। जव भी इस तरह, ठीक से कपडे उतारे विना, सो जाता तो सर्दी लग जाती और जुकाम हो जाता था। अमरीका मे निमोनिया होने के सिवा मुझे कभी कोई वीमारी नही हुई, परतु जुकाम वहुत जल्दी, सास लेने मे ही हो जाया करता है।

चार वजे सवेरे सिरहाने रक्खे टेलीफोन की घटी टुनटुनाई और म जाग पडा। एक मत्री महोदय किसी अत्यावश्यक कार्य से उसी समय मिलना चाहते थे।

"तो चले आइये। दरवाजा आपको खुला मिलेगा।" मैने कहा और टेलीफोन का चोगा रख दिया।

जब वह गये तो पाच वज चुके थे और मै दफ्तर से लाई हुई फाइलो और कागज-पत्तरो को पढने जा ही रहा था कि नौकर ने आकर सूचना दी, "कोई मिलने के लिए वैठे है।"

बाहर आकर देखा तो एक युवक और युवती एक दूसरे से तने और रूठकर दूर-दूर वैठे थे। मै समझ गया कि आपस मे अनवन हो गई है। [illegible] । [illegible] का ही यह मामला था। मुझे देखते ही दोनो ने एक साथ अपनी-अपनी शिकायतो का दफ्तर खोल दिया। मैने

हाथ के सकेत से उन्हे चुप किया और ऐमे पेचीदा मामले में एक क्वा
कुछ भी सलाह दे सकता था, वह दी। शीघ्र ही दोनो शात हो ग
मेरी सलाह पर अमल करने का वादा कर वहा से विदा हुए।

वे गये ही थे कि सीढिया चढकर एक बुढिया ऊपर आ पहुची।
एन्क्रूमा, तेरी बलिहारी, मेरा तन-मन सब-कुछ ले ले और मुझे खाने व
पैसा दे।" आते ही उसने माग पेश कर दी। मैंने हँसकर कहा, "
तन-मन को लेकर मैं क्या करूगा ? यह लो, इस समय जेब मे कुल
इतना ही है।"

मैं अदर चला आया और साढे सात बजे तक काम करता रहा
उठा कि नहा लू और दफ्तर चलने की तैयारी करु। स्नानघर मे बैठा
को रगड-मसल रहा था कि सहसा स्नानघर के दरवाजे पर किसी
"माफ करना अजी, माफ करना "

बडा बुरा लगा। झुझलाहट भी हुई कि यह तो हद हो गई ! स्
मे भी आराम और एकात नही। पर जब्त करके रह गया और यथास
को मृदु करके बोला, "मैं स्नान करके बाहर निकलू तबतक कृपया
कीजिये न।"

"नही क्वामे एन्क्रूमा, तबतक भला कैसे रुका जा सकता है ? वा
है कि " और वह सज्जन वही दरवाजे की ओट मे खड़े अपन
दास्तान सुनाने लगे। इतनी खैर की कि एकदम सामने नही आ खडे
वह सुनाते रहे, मै नहाता रहा और उन्हे सलाह भी देता रहा। वह च
हुए। इसी बीच मुझे भनक पड गई थी कि कुछ और मिलनेवाले
है। मैंने उन सज्जन से कहा, "आप दरवाजा बद करते जाइयेगा औ
मुलाकातियो से कह दीजियेगा कि मै नहाकर दस मिनट मे आता हू।"

बाहर आकर सबकी सब तरह की समस्याओ को सुनता रहा अ
जल्दी-जल्दी दफ्तर भागा। वहापर भी तो लोग और काम प्रतीक्षा
थे। दफ्तर पहुचते ही सबसे पहले अपनी निजी सचिव एरिका पावेल
पीने के लिए एक गिलास पानी मागा।

"मालूम पडता है, आज भी आपने कलेवा नही किया।" वह बोली

"बड़ा काम था, वक्त ही नही मिला और याद भी नही आई।"

उस भलीमानस ने शरीर और स्वास्थ्य के साथ खाने के सबध
भाषण दे डाला और बोली, "तन-मन पर ही नही, मस्तिष्क पर भी
प्रभाव पडता है। अच्छा रुकिये, मैं आपके लिए काफी और कुछ
ले आती हू।"

इन दिनो वडा अवसाद और वडी क्लाति अनुभव करने लगा था। शारीरिक थकान तो अवश्य नही थी, परतु लगता था जैसे मस्तिष्क थक गया हो। भोजन मे अनियमितता भी इसका कारण हो सकती थी, परतु साथ ही सव काम-काज छोडकर कुछ समय के लिए कही चले जाने की वडी इच्छा हो रही थी। जी चाहता था कि इस रोज की झझट से कुछ छुट्टी मिले और कही एकात मे बैठकर थोडा सोच-विचार सकू।

सितवर मे मत्रिपरिषद की छुट्टिया हो रही थी और कई मत्रियो ने अपने विदेश अथवा छुट्टियो पर जाने के कार्यक्रम अभी से निश्चित कर लिये थे। कोई किसी मिशन पर जा रहा था तो कोई कही छुट्टी मनाने। मै भी सोचने लगा कि इस बार मै भी क्यो न छुट्टी मना लू ? यह बात सोची तो पहले भी कई वार थी, लेकिन कार्यान्वित नही कर सका था। अभी सोच ही रहा था कि मत्रिपरिपद के सचिव दानियल चेपमेन किसी काम से मेरे पास आये। मैने उन्हे अपना यह विचार बताया तो वह उछल पडे। उसी समय सव-कुछ तय कर डाला। 'नाइजर स्ट्रूम' नामक एक डच जहाज से फ्रेच कैमेरून मे दौआला तक जाने और लौट आने की पन्द्रह दिन की समुद्री यात्रा का कार्यक्रम वन गया। यह भी निश्चित हो गया कि पहली सितबर को चलेगे और साथ मे एरिका पावेल, दानियल चेपमेन और उनकी पत्नी इफुआ भी रहेगी।

मै तो चुपचाप खिसक जाना चाहता था। लेकिन किसी भी देश का प्रधानमत्री लोगो को बताये बिना चुपके से छुट्टी भी कैसे जा सकता था ? अखबारवाले तरह-तरह की अटकले लगाकर उल्टा-सीधा न जाने क्या लिख मारते। साल-भर पहले ऐसी ही गलती कर चुका था। अकरा से सौ मील दूर एक सुनसान जगह चुपचाप चला गया था। केवल पुलिस कमिश्नर और गवर्नर को मालूम थी यह बात। वस फिर क्या था ? अखबारवाले ले ही उडे। इग्लैड के अखवारो ने वडे-वडे शीर्षक देकर छापा था, 'गोल्ड कोस्ट के प्रधानमत्री गायब !' 'एन्क्रूमा अलोप हुए' आदि-आदि। एक अखवारवाले ने तो यहातक लिख मारा कि मै किसी जादूगर से मिलने और टोना-टोटका कराने गया था !

इसलिए इस बार बाकायदा प्रेस-विज्ञप्ति निकालकर जाने का निश्चय किया गया। मैने यह अवश्य कह दिया था कि विज्ञप्ति मे जहाज का नाम और गन्तव्य स्थल का उल्लेख न किया जाय। बस, गोलमोल शब्दो मे केवल इतना लिखना काफी होगा कि प्रधानमत्री छुट्टिया विताने समुद्री यात्रा पर जा रहे है।

परतु जाने कैसे पत्रकारो को सारी वात मालूम हो गई। मै किस जहाज

से, किस दिन और कितने वजे कहा से कहा जानेवाला हू, यह उन्होने देश की सारी जनता को वता दिया। फलत टाकोराडी के वदरगाह पर लोगो की ऐसी भीड जमा हुई कि मुझे जहाज पर जेटी की ओर से चढने के वदले समुद्र की ओर से एक अगनवोट के द्वारा चढना पडा।

कोई तीसेक पार्टी सदस्य मुझे जहाज पर चढाने के लिए टाकोराडी तक साथ आये थे। जव जहाज के कप्तान ने एक साथ इतने आदमियो को ऊपर चढते देखा तो घवरा उठा। उसने सोचा, शायद ये सभी प्रधानमत्री के साथ चलेगे। जव मैने वताया कि ये सव तो मुझे पहुचाने और जहाज को देखने आये है तो कप्तान की जान-मे-जान आई। उन्होने अपने प्रथम सहायक को बुलाकर हुक्म दे दिया कि जाओ जी, इन साहवान को जहाज दिखा लाओ। उन लोगो ने घूम-फिरकर सारा जहाज देखा और मेरे केविन मे गये तो एक साथ वाह-वाह कर उठे। इसपर मै भी अदर गया तो मालूम हुआ कि 'हालड वेस्ट-अफ्रीका लीन' नामक जिस जहाजी कपनी का वह जहाज था, उसने मेरी यात्रा के लिए शुभकामनाए प्रकट करते हुए फूलो का एक सुदर गुलदस्ता भेजा था।

दूसरे दिन सवेरे पाच वजे हमारा जहाज अपनी निर्दिष्ट यात्रा पर रवाना हुआ। मै कपडे पहनकर डेक पर आया तो कप्तान ने अपने पास बुला लिया और टाकोराडी के वदर मे से जहाज को किस होशियारी से निकाला जाता ह, यह दिखाते-समझाते रहे। जहा वह खडे थे वहा से टाकोराडी का पूरा वदरगाह भी वहुत अच्छी तरह दीख रहा था। अभी हम खडे वाते कर ही रहे थे कि पास ही कही घटी वजने लगी।

"यह घटी कैसी है ?" मैने पूछा।

"नाश्ते की सूचना है। मै अपना नाश्ता यहा ऊपर ही करता हू। सवेरे-सवेरे फुर्सत नही मिलती, इसलिए सवके साथ नही करता, यही मगवा लेता हू।" कहते-कहते कप्तान का स्वर क्षमा-याचनापूर्ण हो उठा।

"आप वडे भाग्यशाली है कि अकेले ही सही, सवेरे नाश्ता तो मिल जाता है। मुझे तो प्राय भूखे पेट ही रह जाना पडता है। वेचारे एक प्रधानमत्री को भी वहुत काम करना पडता है। वरसो मे जाकर यह पहली छुट्टी मिली है।" मैने कहा।

इतने मे खानसामा ट्रे मे उनका नाश्ता ले आया और मै कलेवा करने के लिए अपने साथियो के पास लौट गया। भोजन के कमरे मे दानियल, इफुआ और एरिका मेज के चारो ओर बैठे मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। खाद्य पदार्थों से सारी मेज पटी पडी थी। मैने सोचा, इतना खाना तो पूरी

यात्रा के लिए काफी होगा। लेकिन डेक पर समुद्र की ताजी हवा के कारण मेरी भूख कुछ खुल गई थी। खाने मे खूब मजा आया और स्वादिष्ट भी लगा।

नाश्ते के बाद मैं फिर डेक पर चला गया। रोज जमकर काम करने का अभ्यस्त था। यहा कुछ भी नही—न मिलने-जुलनेवाले और न टेलीफोन की टुनटुनाहट। समझ मे नही आ रहा था कि समय कैसे काटा जाय। यो कुछ पुस्तके पढने को साथ लेता आया था और जहाज पर ही इस आत्मकथा को लिखने का विचार था। पर सोचा कि लाओ, आज तो आराम ही कर ले। सो आधी दर्जन बार डेक का चक्कर लगाया, देर तक कोर्निस पर झुककर समुद्र के पानी को देखता रहा, पचीसो बार अपनी मातृभूमि, आसमान और क्षितिज को देखा, जहाज के सब कमरो और दरवाजो को गिन डाला, उसके बाद कुछ भी करने को नही रह गया। अब तो घबराहट होने लगी कि चौदह दिन किस तरह कटेगे।

इतने मे एरिका वहा आ पहुची। वह भी शायद मेरी ही तरह ऊब उठी थी। उन्होने कहा, "आप कहा चले गए थे?"

मैने कहा, "डेक पर घूम रहा था। अब सोचता हू कि केबिन मे जाकर लेटू रहूँ और कोई किताब पढू।"

"वहा तो अभी सफाई हो रही है। यही बैठकर पढिये। मै किताब और कुर्सी दोनो ले आती हू।"

किताब और कुर्सी आ जाने के बाद मैं वही बैठकर पढने लगा। किसी तरह सवेरा बीता और दुपहर हुई। कप्तान ने आकर पूछा, "कहिये, छुट्टी कैसी बीत रही है? खूब आराम कर रहे है न?"

जहाज के लगर डालते ही नाइजीरिया के गवर्नर-जनरल के ए० डी० सी० और प्रधान सचिव मेरे स्वागत और अभिवादन के लिए आये। मै दुपहर को उनके यहा चाय पीने गया और लौटती यात्रा मे उनके साथ खाना भी खाने गया। दोनो बार हमने बहुत काम की बाते की।

हमारा जहाज व्यापारी जहाज था और उसे लागोस मे माल लादना और उतारना था, इसलिए पाच दिन वही रुके रहे। जैसे ही लोगो को मालूम हुआ कि मै आया हू, बदरगाह पर भीड लग गई। बहुतो ने जहाज पर आने की भी कोशिश की, इसलिए पुलिस का पहरा लगाना पडा। सब यही चाहते थे कि मै कुछ भाषण करू और स्वय मेरी भी बडी इच्छा थी, परतु यह मेरी राजकीय यात्रा तो थी नही, इसलिए चुप रहना पडा।

बदरगाह के अधिकारियो ने मुझे एक नाव मे बिठाकर पूरा बदरगाह और उसके गोदाम आदि दिखाये। मैने वहा एक जापानी जहाज भी देखा, जिसके दरवाजे इतने नीचे थे कि यदि जरा-सा भी ध्यान चूकता तो सिर ही फूट जाता।

नाइजीरिया मे मेरे एक सबधी श्री डब्ल्यू० बिनी रहते थे। बीस वर्ष पहले मेरी अमरीका-यात्रा के लिए उन्होने अपने पास से किराये का प्रबध किया था। उनसे अवश्य मिलना चाहता था। लेकिन सार्वजनिक रूप से तो जा नही सकता था। इसलिए एक रात उनके पुत्र आये और अपनी मोटर मे हम चारो को याबा ले गये, जहा बिनी महाशय रहते थे। अब वह काफी बूढे हो गये थे और स्वास्थ्य भी खराब हो चला था। मुझे देखकर बडे प्रसन्न हुए और हम दोनो बडी देर तक बैठे बाते करते रहे। उनके बगीचे मे एक छोटा-सा चिडियाघर था। उसमे एक शिपाजी बन्दर को देखकर मजा आ गया। वह एक पेड के नीचे बैठा बूढे आदमी की तरह भक-भक धुआ निकालता बडे आराम से सिगरेट पी रहा था। लौटाते मे जब हमारा जहाज फिर लागोस मे रुका तो म एक बार और बिनी महाशय से मिलने गया। इस बार उन्होने अपने कई मित्रो को भी बुला लिया था। हम सब काफी देर तक गोल्ड कोस्ट का एक नाच नाचते रहे और वह बैठे उल्लास-पूर्वक देखते रहे।

पाचवे दिन लगभग पाच बजे जहाज ने लागोस से लगर उठाया और हम दौआला के लिए चल पडे। विदा करने के लिए बदरगाह पर भारी भीड आ जमी थी। सबने 'स्वतत्रता' का नारा लगाया और हाथ उठाकर हमे कनवेशन पीपुल्स पार्टी की सलामी—स्वतत्रता की सलामी दी।

दौआला पहुचने के पहले ही फ्रेच कैमेरून के गवर्नर का समुद्री तार मिल गया। उन्होने मुझे मेरे साथियोसहित भोज पर आमन्त्रित किया था। मैने तार से ही दूसरे दिन के लिए स्वीकृति दे दी।

१२ सितवर को हमारा जहाज फरनाडो पो नामक द्वीप के समीप से गुजरा। इस समय यह द्वीप स्पेनवासियो के अधिकार मे है। यही से हमारे देश मे कोका वृक्ष का पहला बीज गया था। अकरा के क्रिश्चियनवोर्ग का एक निवासी, जिसका नाम टेट्टे कारशी था, फरनाडो पो के साओटोम नामक स्थान मे रहता था। १८७९ मे जब वह देश लौटा तो अपने साथ कोका वृक्ष का एक वीज भी लेता आया। उसने उस वीज को मामपोग मे वो दिया। उसी वीज के वृक्ष से हमारे देश मे कोका की फसल उगाई जाने लगी।

दो घटे वाद हम दौआला पहुच गये। यहा के वदरगाह की चहल-पहल देखते ही वनती थी। लदाई-उतराई का प्राय सारा काम यन्त्रो की सहायता मे किया जा रहा था। जहाज लगने की देर थी कि यात्रिक क्रेनो ने अपना काम आरभ कर दिया। रात-दिन एक करके जल्दी-से-जल्दी माल उतारा और लाद दिया जाता था। पूरे पश्चिमी अफ्रीका मे इसी वदरगाह मे काम इतनी जल्दी किया जाता था। यहा के अधिकारियो ने हमे पूरे वदरगाह की सैर कराई और विभिन्न यत्रो की कार्य-प्रणालिया भी समझाई।

यहा के ब्रिटिश राजदूत मुझसे मिलने आये तो मैने घुमा-फिराकर उनसे देश की राजनैतिक अवस्था की जानकारी प्राप्त करनी चाही। मेरे पास यहा की दुरवस्था के सबध मे बहुत-सी शिकायते पहुची थी। लेकिन ब्रिटिश राजदूत कुछ अधिक नही बता सके। वह शायद नये ही आये थे। वदरगाह के फ्रेच अधिकारी ने एक किस्सा बताया, जिसे सुनकर मेरे रोगटे खडे हो गये। कोई एक गोदी मजदूर कुछ दिन पहले समुद्र मे जा गिरा था। उसे तैरना नही आता था। वेचारा डूवने लगा। सहायता के लिए चिल्लाता रहा, परन्तु पास खडे लोग तमाशा देखते रहे। किसीने उसकी सहायता नही की, क्योकि वह उनकी जाति का नही था। अन्त मे एक आदमी को जवर्दस्ती उतारा गया तब कही जाकर उस अभागे प्राण बचे। यह तो देश की दुर्दशा की हद थी! मैने सोचा, शायद प्र० महोदय से इस सबध मे और भी अधिक जानने को मिलेगा।

रहा था। चार-छ आदमी तो कुचले जाने से बाल-बाल बचे। हमने कहा, 'जरा धीमे चलाओ', तो उसने सुना ही नही और उसी तरह गाडी को भगाता रहा। यह सोचकर कि शायद ऊचा सुनता हो, इस बार मैंने चिल्लाकर कहा, "इतना तेज नही, आहिस्ते से चलाओ!" उसने निमिष-भर को जरा-सी गर्दन मोडकर मेरी ओर देखा और फिर दृष्टि सामने कर ली। तब दानियल ने सुझाया कि हो सकता है, यह अग्रेजी न समझता हो। फ्रासीसी जो है। मुझे उनकी बात सही लगी और मै अपनी बात फ्रेंच जबान मे दुहराने जा ही रहा था कि एक बार फिर जोर से ब्रेक लगाये गए और मोटर दन से गवर्नर हाउस के अदर दाखिल हो गई। पानी बरस रहा था, फिर भी हमे 'गार्ड ऑव आनर' दिया गया।

राजभवन की सीढियो पर ही गवर्नर अपनी पत्नी के साथ हमारे स्वागतार्थ खडे थे। दोनो अग्रेजी बहुत अच्छी बोलते थे, इसलिए खूब देर तक वार्तालाप होता रहा। मैंने एक-आध बार देश की राजनैतिक स्थिति का प्रसग छेडा, परतु वह बडी चतुराई से टाल गये।

लेकिन यह तो स्वीकार करना ही पडेगा कि भोज बहुत शानदार था। तरह-तरह की चीजे परोसी गई थी और कुछ चीजे तो बहुत ही स्वादिष्ट थी।

रात के समय दो सवाददाता जाने कैसे हमारे जहाज पर चढ आये। वह मुझसे भेट करना और मेरा वक्तव्य लेना चाहते थे। पहले वह एरिका के पास गये। उन्होने साफ टाल दिया तो उन्होने दानियल को जा पकडा। दानियल को उनपर दया आ गई तो लाउज मे बिठाकर कुछ पीने-पिलाने का प्रबध कर दिया। अब एरिका को मेरी फिक्र पडी। किसी तरह नीचे से बचाकर वह मुझे ऊपर डेक पर ले गई और तबतक नीचे नही उतरने दिया जबतक वे सज्जन चले नही गये। मै तो अवश्य उनसे मिलना चाहता था, क्योकि उनसे देश की वास्तविक स्थिति की कुछ तो जानकारी मिल ही जाती, परतु न मिलना एक तरह से अच्छा ही हुआ। यदि मेरे जनवादी विचारो की जरा-सी भी भनक उनको पड जाती तो वे खूब ढोल पीटते और फ्रास तथा इग्लैड दोनो ही स्थानो की सरकारे उस बात का गलत अर्थ लगाती।

दूसरे दिन सवेरे हम जहाज के कप्तान, कैमेरुन के फ्रासीसी प्रधान अभियता और डच राजदूत के साथ एक पन-विद्युत-गृह देखने गये। दो घटे तो वहा तक पहुचने मे ही लग गये। मौसम बडा गरम था और दिखानेवालो के उत्साह का कोई पार न था। मारे प्यास के गला सूखने लगा। हमने

मुह खोलकर बीयर खरीदने की बात तक कह दी, परतु यही जवाब मिला कि बीयर यहा कहा ? तब देखना-समझना अधूरा ही छोडकर हम लौट पडे। वापसी मे भी पूरे दो घटे लग गये। वहा की एक बात का मुझपर बडा गहरा प्रभाव पडा। जैसे ही दुपहर के खाने का भोपू बजा, अफ्रीकी और यूरोपियन श्रमिक बिना किसी रग और जाति-भेद के साथ-साथ लारियो मे सवार हो गये। यूरोपियन श्रमिको के इस व्यवहार ने मुझे चकित कर दिया।

समय बीतते देर नही लगी और अब हम पुन टाकोराडी की ओर लौट रहे थे। अकरा मे बहुत-सा कोका लादने को था, इसलिए वहा रुकना पडा। भारी परिश्रम कर कोका की लदाई कर रहे अपने देशवासियो को मैंने यहा देखा तो मन करुणा से भर आया। जेटी से कोई मील-भर का फासला समुद्र मे चलकर उन्हे भारी-भारी बोरे नावो पर लादने पडते थे। कभी कोई बोरा पानी मे जा गिरता, परतु नावे उसे तुरत उठा लेती थी। एक आदमी रस्सी के सहारे जहाज पर आता और अपनी-अपनी नाव की लदाई की रसीद लिखा जाता था। यह देखकर आश्चर्य हुआ कि खाने को इतना कम पाकर भी वे लोग इतनी फुर्ती से और ऐसा कठोर परिश्रम कैसे कर पाते है।

"इन आदमियो को विटामिन दिया जाना चाहिए।" मैंने दानियल से कहा, जो मेरे ही समीप खडे देख रहे थे।

"आपका कहना सच है। मेरे एक डाक्टर दोस्त की भी यही राय है। यो दीखने को तो ये हृष्ट-पुष्ट लगते है, परतु रोग के प्रतिरोध और निवारण की शक्ति इनमे नाम को भी नही होती।" दानियल ने मेरी बात का समर्थन किया।

"इन लोगो के लिए कुछ-न-कुछ जल्दी ही करना चाहिए।" मैंने कहा। स्कूल, अस्पताल, शिशु-कल्याण, पुस्तकालय—सभी काम जरूरी है, परतु इनके बारे मे सोचता ही कौन है! भारी बोझा ढोते है, लहरो से लोहा लेते है, रग-पट्ठे भी मजबूत है, लेकिन यह सारी ताकत ऊपरी ही है। जरा-सी बीमारी आई नही कि भरी जवानी मे मक्खियो की तरह मर जाते है। फिर दूसरे लोग उनकी जगह आ खडे होते है और यह क्रम इसी तरह चलता रहता है। इन गरीबो के बारे मे कोई सोचता तक नहीं। ऐसे लोगो के लिए सामाजिक सुरक्षा बीमा की योजना को जारी करना, उनके आर्थिक स्तर को ऊचा उठाना और काम करने की दशाओ मे सुधार करना बहुत जरूरी है। पार्टी ने इस सबध मे जो योजना बनाई है, वह

अविलव लागू की जानी चाहिए—मै देर तक इसी तरह की बाते सोचता रहा ।

अगर अकरा मे एक दिन ज्यादा न लग जाता तो हम पूर्व-निर्धारित समय के अनुसार, मेरी वर्षगाठ के दिन, टाकोराडी पहुच जाते । लेकिन जोर की वर्षा के कारण लदाई वद रही और हम दिन-भर अकरा वदर से मील-डेढ मील समुद्र के अदर लगर डाले पडे रहे ।

दुपहर को वरसते पानी मे मछुआरे अपनी डोगियो के पाले ताने समुद्र मे मछली के शिकार के लिए निकल पडे । उस काफले का अनत समुद्र की ओर वढना वडा ही सुदर दृश्य था । मै खडा देख रहा था कि कप्तान भी आ पहुचे और बोले, "एन्क्रूमा की नौ-सेना जा रही है ।"

मैने कहा, "हा, मेरी नौ-सेना जा रही है । उनकी यात्रा सफल और मगलमय हो ।"

दूसरे दिन वर्षा थमी और लदाई फिर जोर-शोर से होने लगी । आज मेरा जन्म-दिवस था, इसलिए मैने जहाज के कप्तान और अन्य अधिकारियो को भोजन से पहले शैम्पेन पार्टी दी । लेकिन जहाज पर वह हमारा अतिम दिन होने के कारण सभीके मन भारी और उदास थे । शैम्पेन का मद भी लोगो को उल्लसित न कर सका । उस दिन डार्ट के खेल मे मुझे भी कुछ मजा नही आया । वह जहाज पर मेरा अतिम खेल जो था ।

उस रात जहाज के मुख्य रसोइये ने वडे ही शानदार भोज का आयोजन किया था । भोज मे मै डिनर कोट पहनकर सम्मिलित हुआ था । डिनर कोट के लिए दानियल को फिर से सदूक खोलकर सारे कपडे उलटने-पलटने पडे थे । आज भोजनगृह मे सिर्फ एक वडी लबोतरी मेज वीचोवीच रक्खी गई थी । तरह-तरह के खाद्य पदार्थ उसपर वडे ही कलात्मक ढग से सजाये हुए थे । कुछ तश्तरियो का खाद्य पदार्थ तो इतना रग-विरगा और नयनाभिराम था कि छूकर क्षत-विक्षत करने के वदले देखकर सराहते रहने को जी चाहता था । सवके वीच एक शानदार 'वर्थडे केक' थी, जो मेरे काटने के लिए रक्खी गई थी ।

मेज के एक छोर पर मुझे प्रमुख स्थान दिया गया और सामनेवाले छोर पर कप्तानसाहव वैठे । भोजन के अत मे उन्होने एक छोटा-सा सारगर्भित भाषण दिया, जिसका आशय यह था कि पहले तो यह सुनकर कि प्रधानमत्री अपने दल-वल के साथ उनके जहाज से यात्रा करनेवाले है उन्हे वहुत वुरा लगा, लेकिन व्यक्तिगत सपर्क के वाद उन्हे वडी प्रसन्नता

हुई और आगे भी छुट्टिया विताने के लिए सदैव 'नाइगरस्ट्रूम' की सेवाए प्रस्तुत रहेगी।

उनके भापण के बाद स्वास्थ्य, सफलता और शुभकामनाए प्रकट करते हुए प्यालिया खाली की गई और तब मैंने सबको धन्यवाद दिया। अत मे मेरी ओर से कप्तान और जहाज के प्रत्येक अफसर को चादी के मदिरा-चषक भेट किये गए। इफुआ और एरिका को लागोस के वाजार मे भेजकर ये चषक मैंने पहले ही मगवा रक्खे थे। केवल समयाभाव के कारण उनपर उपहार देनेवाले का नाम खुदवाने से रह गया था। जहाज पर अपनी यात्रा और डार्ट के खेल की इससे अच्छी और क्या भेट मै उन्हे दे सकता था!

टाकोराडी हमारा जहाज रात मे दो बजे पहुचा। सवेरे उठकर मैंने पूरे बदरगाह का निरीक्षण और दौरा किया और तब जहाज, उसके कर्म-चारियो और कप्तान से भावभीनी विदा ग्रहण की। इन पद्रह दिनो मे मेरा वजन कई पौड बढ गया था। जब हमारी नौका किनारे की ओर चली तो जहाज और उसके नाविको ने तीन बार तोप दागकर हमे विदाई की सलामी दी। उनका यह स्नेह-सम्मान देखकर मेरे लिए अपने आसू रोकना कठिन हो गया।

बदरगाह की जेटी और पूरे घाट पर लोगो की इतनी भीड थी कि नीचे उतरना मुश्किल हो गया। और जब किसी तरह मोटर मे बैठकर चले तो लग रहा था कि जनता मोटर को ही उठाये चल रही है। अत मे मुझे एक खुली जीप मे खडा होना पडा, जिससे लोग अच्छी तरह देख सके और मै उनके अभिवादनो को ग्रहण कर सकू। लोगो ने कई स्वागत-समारोहो, तीसरे पहर विशाल आम सभा और रात मे भी एक स्वागत-उत्सव का आयोजन किया था। मुझे जल्दी अकरा पहुचना था, इसलिए एक बालकनी मे खडे होकर सक्षिप्त-सा भापण किया, पूरे समय ठहर न पाने की विवशता के लिए लोगो से माफी मागी और राजधानी के लिए चल पडा। कोजो बोत्सियो मुझे लेने आये थे। वह पास बैठे पूरे पद्रह दिनो का हालचाल सुनाते जा रहे थे। मेरा पुराना उत्साह और उमग लौट आये थे और मैंने उनकी बात काटकर कहा, "सुनो कोजो, हमे भी अब अपने एक जोलपोत का प्रबध कर लेना चाहिए।"

: २१ :

'फेडरेशन'-प्रकरण

विरोधियो ने देश मे सघ (फेडरल) सरकार की स्थापना के लिए अपना पूरा जोर लगा रक्खा था। यह बात वे समझना ही नही चाहते थे कि ९२ हजार वर्गमील क्षेत्रफल और ५० लाख की जनसख्यावाले देश के लिए शासन की यह पद्धति कितनी अव्यावहारिक और खर्चीली है।

फेडरेशन के प्रश्न पर विचार-विनिमय करने और मतभेदो को सुलझाने के लिए धारा-सभा के चार सरकारी सदस्यो का एक प्रतिनिधि-मडल राष्ट्रीय मुक्ति परिषद से मिलने के लिए भेजा गया। इन चार सदस्यो मे से दो कुमासी-क्षेत्र से निर्वाचित थे। लेकिन राष्ट्रीय मुक्ति परिषद ने यह कहकर प्रतिनिधि-मडल से भेट करना अस्वीकार कर दिया कि उन्हे विचार-विनिमय के लिए सरकार की ओर से बाकायदा निमत्रण नही भेजा गया। तब मैने सरकार के प्रधानमत्री की हैसियत से बाकायदा निमत्रण भेजा। उन्होने इसे भी अस्वीकार कर दिया।

इसपर मैने धारा-सभा मे फेडरेशन के प्रश्न और दूसरे सदन की स्थापना पर विचार करने के लिए एक सिलेक्ट कमेटी नियुक्त करने-सवधी प्रस्ताव ५ अप्रैल १९५५ को पेश किया। विरोधी दल के नेता ने मुझे यह आश्वासन दिया कि वह विधान सभा के नाम से दूसरे सदन की स्थापना के समर्थन मे एक सशोधन पेश करेगे और मैने यह स्वीकार कर लिया था कि सिलेक्ट कमेटी मे सात सरकारी सदस्यो के अनुपात मे केवल दो विरोधी सदस्यो के बदले उनके पाच सदस्य रख लिये जायगे।

लेकिन धारा-सभा की बैठक मे उन्होने अपना सशोधन वापस ले लिया और अपने बीसो समर्थको के साथ बहिर्गमन कर गये।

उनकी अनुपस्थिति मे मेरा प्रस्ताव स्वीकार हो गया और क्योकि वे बहिर्गमन कर गये थे, इसलिये सिलेक्ट कमेटी मे उनका एक भी आदमी नही रक्खा गया और बारह आदमियो की एक समिति बना दी गई।

सिलेक्ट कमेटी की कुल बाईस बैठके हुई। दो सौ उन्नीस स्मरण-पत्रो पर एव साठ लिखित सुझावो पर उसने विचार किया। समिति ने सघ सरकार की स्थापना का सुझाव तो नही दिया, पर यह सिफारिश अवश्य की कि ऐसी क्षेत्रीय परिषदे स्थापित की जानी चाहिए, जो अपनी

विकास-योजनाए बनाने मे स्वतत्र हो और सरकार के सहयोग से उन्हे पूरा करे। सदन की स्थापना पर विचार उन्होने आगे किसी उपयुक्त समय के लिए स्थगित कर दिया।

राष्ट्रीय मुक्ति परिषद ने इस समिति को महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मामलो पर विचार करने के लिए उपयुक्त और सक्षम ही नही स्वीकार किया। उधर इग्लैड के उपनिवेश मत्री ने यह वक्तव्य दे मारा कि जबतक गोल्ड कोस्ट का वातावरण शात और स्थिर नही हो जाता, सत्ता के हस्तातरण का प्रश्न ही नही उठता और विरोधियो ने वातावरण को विक्षुब्ध बनाये रखने का पूरा-पूरा प्रयत्न किया। कुमासी मे आतकवादी कार्रवाहिया बदस्तूर चलती रही। इधर धारा-सभा मे जब भी किसी वैधानिक प्रश्न पर चर्चा छिडती, विरोधी दल के सदस्य अपना पोथी-पत्रा लेकर चले जाते।

ब्रिटिश सरकार चाहती तो परिस्थिति को सभाल सकती थी, लेकिन वह हाथ-पर-हाथ रक्खे बैठी ही नही रही, पार्लमेंट के दोनो सदनो मे अशाटी की स्थिति पर प्रकाश डालकर उसको खूब प्रचारित किया। इग्लैड के अखबारो ने भी इस प्रकरण को खूब उछाला। कुमासी मे गवर्नर की मोटर पर हुल्लडबाजो ने जमकर पत्थर बरसाये, परतु न तो ब्रिटिश सरकार ने और न इग्लैड के उपनिवेश-मत्री ने ही इस कृत्य की भर्त्सना की। ब्रिटिश सरकार का यह रुख विरोधियो के हाथ मजबूत करनेवाला सिद्ध हुआ।

पर मै भी अपनी बात पर अडा रहा। मैने अपनी सरकार की ओर से एक वैधानिक मामलो का सलाहकार गोल्ड कोस्ट भेजे जाने की माग ब्रिटिश सरकार से की। यह माग स्वीकार कर ली गई और २६ सितबर को सर फ्रेडरिक बौर्न गोल्ड कोस्ट आये। उन्होने सारे देश का दौरा किया, कई सगठनो और व्यक्तियो से मिले। राष्ट्रीय मुक्ति परिषद के नेताओ और समर्थको से मिलने स्वय कुमासी गये, पर उन लोगो ने यह कहकर मिलने से इन्कार कर दिया कि सरकार ने 'राज्य परिषद (अशाटी) सशोधन विधेयक' स्वीकार कर ऐसा पक्षपात किया है, जिसमे वैधानिक सलाहकार निष्पक्ष कार्य कर ही नही सकता।

सर फ्रेडरिक बौर्न ने अपना काम समाप्त कर १७ दिसबर को गवर्नर को प्रतिवेदन प्रस्तुत कर दिया। उन्होने क्षेत्रीय परिषदो को स्वतत्र रूप से अपनी विकास-योजनाए बनाने और सरकार से उन योजनाओ की पूर्ति के लिए आर्थिक सहायता मागने के अधिकार दिये जाने की सिफारिश की। उनके सुझावो के अनुसार क्षेत्रीय परिषदो का रूप सलाहकार-मडलो का

था, जो स्वय कानून नही बना सकती थी, परतु उनके क्षेत्रो से सबधित काननो के निर्माण मे उनसे तथा परपरागत परिषदो से सलाह और सुझाव लेना सरकार के लिए अनिवार्य कर दिया गया था।

इसके पहले, सितबर के अत मे, मुझे इग्लैड के उपनिवेश-मत्री ने गोल्ड कोस्ट के मामलो पर और विशेष रूप से स्वतत्रता प्रदान किये जाने के कार्यक्रम पर विचार करने के लिए लदन आमन्त्रित किया।

मैंने उत्तर मे लिखा कि यदि ब्रिटिश सरकार अतिम रूप से सत्ता के हस्तातरण की तिथि निश्चित कर देने का आश्वासन प्रदान करे तब तो मेरा वहा आना उपयोगी होगा अन्यथा देश मे भ्रम, कटुता और दुर्भावना ही फैलेगी।

मेरे देश की जनता इस समय तक पूर्ण स्वाधीनता के लिए उतावली हो उठी थी और अगर मै लदन जाता तो लोगो की यही अपेक्षा थी कि आजादी का परवाना जेब मे रखकर ही वहा से लौटूगा। इसलिए बगैर निश्चित आश्वासन के लदन जाकर मै जनता को निराश नही करना चाहता था।

इग्लैड के उपनिवेश-मत्री श्री ए० टी० लेनोक्स-बाइड से, जिनसे मैं १९५१ मे अमरीका से लौटते समय मिल चुका था, मुझे इसका उत्तर यह मिला कि जबतक जनता का उचित बहुमत यह प्रदर्शित न कर दे कि लोग आजादी चाहते है और देश के विधान के सबध मे मतैक्य नही हो जाता, सत्ता का हस्तातरण निकट भविष्य मे सभव प्रतीत नही होता। वैधानिक मामलो के सलाहकार के सुझावो को बहुमत स्वीकार कर ले तब तो ठीक, अन्यथा आम चुनाव के द्वारा जनमत-सग्रह के अतिरिक्त और कोई उपाय नही रह जाता है।

इग्लैड के उपनिवेश-मत्री की पहली दो शर्तो—आजादी के लिए जनता की इच्छा और विधान पर मतैक्य—के लिए मैंने गोल्ड कोस्ट लोक सेवा आयोग के एक सदस्य की अध्यक्षता मे देश के समस्त प्रतिनिधि सगठनो एव दलो की एक काफ्रेस बुलाई। राष्ट्रीय मुक्ति परिषद को इस सम्मेलन मे लाने के कई प्रयत्न किये गए, यहातक कि सम्मेलन की कार्रवाही को दो बार स्थगित भी किया गया, परतु उन्हे आना ही नही था, इसलिए वह नही आये।

इस सम्मेलन ने मुख्य रूप से सर फ्रेडरिक बौर्न के सुझावो पर विचार किया। मार्ग-दर्शन के लिए मैंने स्वय उन्हे भी सम्मेलन मे उपस्थित रहने के लिए लदन से बुला लिया था। सम्मेलन ने उनके सभी सुझावो पर अपनी

स्वीकृति की मुहर लगा दी और साथ ही यह सिफारिश भी की कि प्रत्येक क्षेत्र मे सामाजिक एव सास्कृतिक मामलो मे सलाह देने के लिए 'सरदारो का सदन' (House of chiefs) भी स्थापित किया जाय ।

परतु राष्ट्रीय मुक्ति परिषद के बहिष्कार के कारण इग्लैड के उपनिवेश-मत्री द्वारा लगाई गई मतैक्य और 'उचित बहुमत' की शर्त फिर भी पूरी नही हो पाई । तब मै स्वय 'गोल्ड कोस्ट की स्वाधीनता के लिए वैधानिक सुझावो' का एक मसविदा तैयार करने मे लग गया, जिसे मेरा विचार एक श्वेतपत्र के रूप मे धारा सभा के बजट अधिवेशन मे मई के महीने मे सदन के पटल पर रखने का था ।

नये आम चुनावो के पक्ष मे न मै था, न मेरी पार्टी । अशाटी क्षेत्र में अराजकता और अव्यवस्था की जो स्थिति थी, उसे देखते हुए आम चुनाव मे शाति भग होने और सारे देश मे व्यापक रूप से दगे और हिंसात्मक कार्रवाइयो के भडक उठने की आशका थी । मुझे आशा थी कि ब्रिटिश सरकार आम चुनावो पर ज़ोर नही देगी, परन्तु ब्रिटेन के उपनिवेश-मत्री आम चुनाव के द्वारा मत-सग्रह करने की अपनी बात पर अडे रहे ।

कोई चारा न देख मैने कोजो बोत्सियो को अपने विशेष दूत के रूप मे लदन जाकर इग्लैड के उपनिवेश-मत्री को देश की परिस्थिति समझाने, आम चुनाव के विचार का परित्याग करने और सत्ता-हस्तातरण की तिथि निश्चित करने को राजी करने के लिए भेजा ।

वह २३ मार्च को रवाना हुए और एक सप्ताह तक प्रयत्न करके लौट आये । उन्होने इग्लैड के उपनिवेश-मत्री से जो विचार बनाये और बाद मे स्वय उपनिवेश-मत्री से मुझे जो पत्र मिला, उससे तीन विकल्प सामने आये एक तो यह कि स्वाधीनता की एकतरफा घोषणा कर दूँ, जो बडा ही क्रातिकारी कदम होता और जिसे मै निरुपाय होकर ही उठाना चाहता था, दूसरे वर्तमान धारा-सभा के कार्यकाल को समाप्त होने दू जो १९५८ मे होना था, लेकिन इसका अर्थ होता, देश को असतोष और अविश्वास की भट्ठी मे झोक देना, और तीसरा विकल्प था निकट भविष्य मे आम

भेट मे भी दिया गया और सरकारी तौर पर यह घोपणा की गई कि चुनावो के बाद नई धारा सभा अच्छे (उचित) वहुमत से कामनवेल्थ के अतर्गत पूर्ण स्वाधीनता का जो प्रस्ताव करेगी, उसे स्वीकार कर सत्ता के हस्तातरण की निश्चित तिथि घोपित कर दी जायगी।

इस घोषणा के दो दिन बाद मैंने पार्टी की राष्ट्रीय महासमिति की बैठक बुलाई। वहा सबने आम चुनाव की बात स्वीकार कर ली। परतु शाति-भग, हिंसा और उपद्रव की आशका सबको थी। इसके लिए अलग से एक प्रस्ताव पास करके गवर्नर से कहा गया कि वह व्यक्तिगत रूप से सभी दलो के नेता और विशेप रूप से असातेहेने से सपर्क कर प्रत्येक से शाति-भग न होने देने की गारटी ले। उस प्रस्ताव मे यह भी कहा गया कि चुनाव के दौरान मे शाति बनाये रखने की प्रत्यक्ष जिम्मेदारी गवर्नर की है, क्योकि सेना और पुलिस का विभाग पूर्णरूपेण उन्हीके अतर्गत और नियत्रण मे है। एक प्रस्ताव द्वारा ब्रिटिश सरकार से यह कहा गया कि यदि किन्ही कारणो से चुनाव के दौरान मे शाति-भग हो ही जाय तो उसे बहाना बनाकर स्वराज्य प्रदान करने मे किसी भी प्रकार का विलब नही किया जाना चाहिए। फ्रासीसी कासल-जनरल को विशेष रूप से सतर्क कर दिया गया कि वह फ्रासीसी नागरिको को आम चुनाव मे किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप न करने दे।

इस प्रस्ताव के बाद कनवेंशन पीपुल्स पार्टी और उसके समर्थक अपनी पूरी शक्ति से आम चुनाव की तैयारियो मे लग गये। परतु राष्ट्रीय मुक्ति परिपद और उसके सगी-साथियो की तो सारी बाजी ही उलट गई। नये आम चुनाव के लिए वे इतना शोर मचा रहे थे। अब चुनाव की बात पक्की हो गई तो उन्होने बिलकुल चुप्पी साधली। एक बार भी इस बात का कही उल्लेख नही किया। बाद मे कुमासी से प्राप्त समाचारो से पता चला कि न उन्हे ऐसी आशा थी और न वे इस बात को चाहते ही थे कि फिर से आम चनाव किये जाय।

: २२

जांच-आयोग

विश्व के स्वतत्र देशो के मध्य अपना स्थान ग्रहण करने से पूर्व कोका-क्रय कपनी को लेकर मेरी पार्टी पर जो आरोप लगाये जा रहे थे, उन सबसे मुक्ति पा लेना हमारे लिए नितात आवश्यक हो गया था। अपनी पार्टी के लिए तो मेरा विशेष आग्रह था कि वह देश के स्वाधीन होने के पहले ही ऐसे सभी आरोपो-अभियोगो से मुक्ति प्राप्त कर ले।

१९४८ मे जब मैंने पहले-पहल देश मे राजनैतिक सगठन का कार्य प्रारभ किया था तो कोका-कृषको की दुरवस्था को देखकर चकित रह जाना पडा था। अधिकाश कोका-कृषक कोका खरीदनेवाली विदेशी कपनियो एव अफ्रीकी दलालो और बिचौलियो के इतने कर्जदार हो गये थे कि बेचारो को अपने फार्मो से ही हाथ धोना पडा था। इस सबध मे कुछ करने के लिए वे मुझसे बराबर कहा करते थे, परतु उस समय कुछ भी कर पाना आसान नही था। सारा वाणिज्य-व्यवसाय, यहातक कि फुटकर कारबार और उद्योग-धधे भी, गैर-अफ्रीकियो के ही हाथ मे थे। अफ्रीकियो के पास एक तो आवश्यक पूजी नही थी, दूसरे व्यावसायिक एव औद्योगिक सचालन के शिक्षण की समुचित सुविधाए भी उन्हे प्राप्त नही थी। यह सच है कि विभिन्न विदेशी व्यावसायिक कपनियो ने अनेक अफ्रीकी युवको को अपनी सेवाओ मे रक्खा था और उन्होने अपने मालिको को काफी लाभ भी पहुचाया था, लेकिन वे कभी भी इतना धन और इतनी योग्यता अर्जित नही कर पाये कि अपना स्वतत्र कारबार आरभ कर सके। यदि किसी तरह आवश्यक पूजी का ही प्रबध हो जाता तो मेरा विश्वास है कि अफ्रीकियो को स्वतत्र रूप से व्यवसाय चलाने की योग्यता और अनुभव प्राप्त करने मे जरा भी समय न लगता। समुचित जमानत के अभाव मे उन्हे बैंको से कर्ज भी नही मिल सकता था। सरकार के कुछ किये बगैर न तो किसानो को कर्ज से राहत मिल सकती थी और न अफ्रीकियो को स्वतत्र व्यवसाय के लिए प्रोत्साहन ही। सरकारी स्तर पर कुछ किये जाने की आवश्यकता को लोग मुझसे पहले भी अनुभव कर चुके थे। १९५८ मे प्राध्यापक शेफर्ड ने अपनी रिपोर्ट मे ऐसे सगठनो की स्थापना पर बल दिया था, जो कोका का क्रय-विक्रय करने के साथ ही किसानो को कर्ज से मुक्त करने के लिए आसान किस्तो पर रुपया उधार भी दे।

लेकिन देश की परिस्थितियो को देखते हुए मै सीधे किसानो के हाथ मे रुपया देने के पक्ष मे नही था। मेरी राय मे यह काम सस्थाओ और सगठनो के मार्फत किया जाना चाहिए था। सरकार सीधे किसानो को रुपया देती तो उसकी वसूली एक समस्या वन जाती। सगठन का किसानो से सीधा सवध और नियत्रण भी रहता, इसलिए उसे किश्तो की वसूली मे कोई कठिनाई न होती। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए कोका-विक्रय-मडल के अतर्गत उसकी सहायक सस्था के रूप मे कोका-क्रय-कपनी की स्थापना की गई।

कोका-क्रय-कपनी की स्थापना के एक ही वर्ष के अदर हजारो किसानो ने अपने फार्म छुडा लिये और तीन वर्ष मे तो यह कपनी अपनी सभी विदेशी प्रतिद्वद्वी कपनियो को पीछे छोडकर देश की प्रमुख कोका-क्रय-एजेसी वन गई। परतु शीघ्र ही इसके कामकाज और हिसाव-किताव मे गोलमाल की अफवाहे भी सुनी जाने लगी। १९५३ मे कोका-विक्रय-मडल के अध्यक्ष ने कपनी की कुछ अनियमितताओ का अपने वार्षिक विवरण मे उल्लेख किया। लेकिन मडल ने उन्हे ठीक करने की दिशा मे कोई कार्रवाही नही की। मुझे वहुत वुरा लगा और १९५५ के दिसवर महीने मे मैने यह मामला पुलिस-जाच के लिए दे दिया। मेरे द्वारा इस कदम के उठाये जाते ही राजभवन मे कपनी के खिलाफ शिकायतो और उनकी जाच-पडताल के लिए जाच-आयोग की स्थापना की माग का ताता लग गया। सरकार ने शिकायतो की पुलिस-जाच करवाकर उन्हे प्रमाणित करने का वहुतेरा प्रयत्न किया, परतु कपनी के किसी भी अधिकारी के खिलाफ कोई ऐसा ठोस प्रमाण न मिला कि मुकदमा चलाया जा सकता।

अत मे मैने दो सदस्यो की एक जाच-समिति नियुक्त कर दी और उस समिति की सिफारिश पर एक जाच-आयोग विठाया गया, जिसके सम्मुख लोग शपथ लेकर अपने बयान दे सके। आयोग ने १९५६ के अगस्त महीने मे सरकार को अपना प्रतिवेदन दिया। दूसरे वहुत-से सुझावो के साथ-साथ आयोग ने एक सुझाव यह भी दिया कि कोका-क्रय-कपनी का पुनर्गठन किया जाना चाहिए और उसके सचालक-मडल मे विरोधी दल के तीन सदस्य, सरकार के तीन सदस्य और अध्यक्ष गवर्नर द्वारा नियुक्त किये हुए हो। हमने इस सुझाव को इसलिए मानने से इन्कार कर दिया कि इस तरह तो कपनी पर सरकार का रहा-सहा नियत्रण ही समाप्त हो जाता।

जाच-आयोग ने अपने प्रतिवेदन मे यह आरोप लगाया था कि कोका-

क्रय-कपनी पर कनवेशन पीपुल्स पार्टी का पूरा-पूरा नियत्रण है। कारण यह बताया गया कि पार्टी की केंद्रीय समिति मे कपनी के काम-काज को लेकर चर्चा और विचार-विमर्श किया जाता है। यदि पार्टी के सदस्यो का सार्वजनिक रूप से किसी कपनी से सबध हो और वे अपनी केंद्रीय समिति मे उसके काम-काज पर चर्चा और बहस-मुबाहसा करे तो मेरी समझ मे नही आता कि उसमे एतराज की क्या बात है। मै तो इसे बिलकुल ठीक ही समझता हू।

आयोग ने सरकार पर भी यह आरोप लगाया कि कपनी की अनियमितताओ को जानते हुए भी उसके खिलाफ कोई कार्रवाही नही की गई। यह आरोप कितना निस्सार था यह इसी बात से सिद्ध हो जाता है कि प्रधानमत्री की हैसियत से मैने ही कपनी का मामला पुलिस-जाच के लिए दिया था और सरकार की ओर से लोगो से बार-बार कहा गया था कि कपनी के सबध मे उनकी जो भी शिकायते हो, उन्हे पुलिस मे दर्ज कराये। रही मुकदमा चलाने की बात, सो यह मामला पूरी तरह अटर्नी-जनरल के हाथ मे था, जो मेरी सरकार के नही, सीधे ब्रिटिश सरकार के मातहत थे।

वास्तव मे कपनी के काम-काज की सारी कमजोरी, जिसे जाच-आयोग ने भी बताया, यह थी कि उसके विधि-विधान और नियमो पर धारा-सभा अथवा सरकार का कोई कारगर नियत्रण नही था।

मैने तत्काल कोको-क्रय-कपनी के विधि-विधानो, नियमो, सगठन और समूची कार्य-प्रणाली मे ही परिवर्तन किये जाने के सुझाव पेश कर दिये और साथ ही इस प्रकार के सभी मडलो, निगमो और न्यासो के विधि-विधानो और कार्यप्रणाली मे ऐसे परिवर्तन करने का निश्चय किया, जिससे सार्वजनिक धन का दुरुपयोग रोका जा सके।

इस जाच-आयोग ने मुझे १९५३ के दिसबर महीने की एक जाच-पडताल की याद दिला दी। उस समय भी मुझे और मेरी सरकार को रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार के आरोपो मे फसाकर बदनाम करने की कोशिश की गई थी।

इससे तो मै इन्कार नही करता कि भौतिक सुख-सपन्नता का प्रलोभन बडा जबर्दस्त होता है। रुपये से यह सारा सुख और सपन्नता प्राप्त की जाती है, इसलिए रुपये के लिए आदमी का मन विचलित हो जाय, यह स्वाभाविक ही है।

१९५३ के दिसबर महीनेवाली जाच-पडताल उस समय के मेरे

सचार और लोक-कार्य मत्री श्री जे० ए० ब्राहमा के खिलाफ हुई थी। उन पर यह आरोप था कि उन्होने एक आरमेनियाई ठेकेदार से नार्दर्न टेरिटरीज़ मे एक प्रशिक्षण महाविद्यालय के निर्माण का ठेका देने के सिलसिले मे दो हजार पौड की घूस खाई थी। ब्राहमा ने स्वीकार भी किया कि उन्हे एक-एक पौड के नोटो के रूप मे चार वार करके यह पूरी रकम दी गई थी। जाच-आयोग ने उन्हे घूस लेने का अपराधी करार भी दिया, परतु मुकदमा चलाना एटर्नी-जनरल के हाथ की वात थी और ब्राहमा पर मुकदमा नही चला। ठेकेदार पर जरूर मुकदमा चला, सजा भी हुई परतु अपील मे वह छूट गया।

उन दिनो मै टोगोलैड मे चुनाव-प्रचार मे व्यस्त था। एक दिन वही समाचार-पत्र मे छपा यह विवरण पढा कि आयोग के समक्ष अपने बयान मे ब्राहमा ने रिश्वतखोरी के सिलसिले मे मेरे नाम का भी उल्लेख किया और कहा कि चार सरकारी ठेको मे प्रधानमत्री के द्वारा भी रिश्वत लिये जाने की अफवाह गरम है। मेरे काटो तो खून नही, पाव तले की धरती ही खिसक गई। मैने उसी समय प्रतिवाद किया और वह उसी समाचारपत्र मे छापा भी गया। परतु मन को इतने से ही सतोष नही हुआ। बात बहुत गभीर थी। मै उसी समय सारा काम छोडकर लौटा और स्वेच्छा से आयोग के समक्ष उपस्थित हुआ।

आयोग ने पूरी छानबीन कर मुझे सर्वथा निर्दोष और निरपराव घोपित किया तब कही जाकर चैन मिला। स्वय आयोग के शब्दो मे ·

"प्रधानमत्री पर चार सरकारी ठेको मे रिश्वत लेने या अनुचित आचरण करने का आरोप लगाया गया। हमारी राय मे, किसी भी मामले मे किसी भी आरोप के लिए कोई सगत आधार नही है।"

यह थी आयोग की राय। परतु मेरे लिए तो मामला बहुत ही गभीर हो गया था। मेरा अनुमान है कि ब्राहमा तो केवल बहाना, महज धोखे की टट्टी थे, शिकारियो का असल उद्देश्य मुझे और मेरी सरकार को बदनाम करना और दुनिया की नज़रो मे गिराना था। वे बताना चाहते थे कि सत्तारूढ लोगो मे रिश्वत और भ्रष्टाचार का बोलबाला है।

इवे जाति के सबध मे यहा चर्चा करने की अनुमति नही दी जा सकती, सयुक्तिकरण के प्रश्न को काफी धक्का पहुचाया।

यह तो मानी हुई बात है कि किसी भी जाति को अतर्राष्ट्रीय सीमाओ मे बाटकर अधिक समय तक शात और सतुष्ट नही रक्खा जा सकता। राजनैतिक विभाजन से सास्कृतिक एकता तो विभक्त हो नही जाती और देर-अबेर एकीकरण की आकाक्षा किसी-न-किसी रूप मे प्रस्फुटित होती ही है। यदि इवे-प्रश्न पर जनमत-सग्रह किया जाता तो निश्चय ही इवे जाति के समस्त लोग ब्रिटिश टोगोलैड और गोल्ड कोस्ट मे ब्रिटिश शासन के अतर्गत रहने के ही पक्ष मे अपना वोट देते। परतु इससे फ्रास रुष्ट हो जाता और स्वय ब्रिटेन खासी उलझन मे पड जाता, इसलिए सयुक्त राष्ट्र सघ मे इस प्रश्न के निर्णय को रोके रखने मे दोनो शक्तिया बराबर प्रयत्न करती और अपना जोर लगाती रही।

सयुक्तिकरण के प्रश्न पर जनमत-सग्रह जितना ही टलता गया स्थिति उतनी ही विषम होती गई और कई विरोधी दल अस्तित्व मे आ गये, जिन्होने और भी नई-नई उलझने खडी कर दी।

टोगोलैड के प्रश्न पर यो तो मेरी दिलचस्पी पहले से ही थी, परतु अब और भी बढ गई थी। ब्रिटिश शासन के अतर्गत टोगोलैड का जो हिस्सा था, मै उसे स्वतत्र गोल्ड कोस्ट का एक प्रदेश बनाने की बात सदा सोचा करता था। स्वतत्र गोल्ड कोस्ट की मेरी कल्पना नार्दर्न टेरिटरीज, अशाटी, कालोनी एव ट्रास-वोल्टा—टोगोलैड सहित चारो प्रदेशो के सयुक्त देश की कल्पना थी। इसीलिए मै सारे प्रश्न को गोल्ड कोस्ट और ब्रिटिश टोगोलैड की जनता के स्वराज्य और स्वाधीनता के दृष्टिकोण से ही देखता और सोचता-विचारता था। मेरी प्रेरणा से ही ब्रिटिश सरकार ने सयुक्त राष्ट्र सघ मे यह वक्तव्य दिया कि गोल्ड कोस्ट शीघ्र ही स्वतत्र होने जा रहा है और ऐसी स्थिति मे टोगोलड का प्रश्न भी गोल्ड कोस्ट की स्वतत्रता को ध्यान मे रखकर ही तय किया जाना चाहिए। ब्रिटिश सरकार के कथन का सार यह था कि गोल्ड कोस्ट के स्वतत्र हो जाने पर इग्लैड के लिए टोगोलैड पर शासन करते रहना सभव न होगा और यदि टोगोलैड को स्वतत्र गोल्ड कोस्ट के एक अविभाज्य अग के रूप मे स्वशासन प्रदान कर दिया जाय तो ट्रस्टीशिप की शर्तो का उद्देश्य भी पूरा हो जाता है।

पता नही, बहुत-से साम्राज्यवाद-विरोधी देशो ने क्या समझकर सयुक्त राष्ट्रसघ मे दोनो टोगोलैड को एक करने वाली इस तजवीज का विरोध किया। उन्होने कहा कि जब गोल्ड कोस्ट स्वतत्र हो रहा है तो

ब्रिटिश टोगोलैड को भी एक अलग देश के रूप मे स्वाधीनता प्रदान कर देनी चाहिए।

इग्लैड ने १९५४ मे अपना वक्तव्य दिया और १९५५ के अगस्त महीने मे सयुक्त राष्ट्रसघ ने परिस्थिति का अध्ययन करने के लिए ब्रिटिश टोगोलैड मे अपना एक प्रेक्षक-मडल भेजा। प्रेक्षक-मडल के प्रतिवेदन पर सयुक्त राष्ट्र सघ मे खूब गरमागरम बहस हुई, जिसके अत मे जनमत-सग्रह की बात तय पाई गई। जनमत-सग्रह इस बात पर किया जाना था कि ब्रिटिश टोगोलैड की जनता गोल्ड कोस्ट के स्वाधीन हो जाने पर उसके साथ रहना पसद करती है अथवा उससे अलग ट्रस्टीशिप के अतर्गत ?

जनमत-सग्रह की सारी पद्धति वैसे तो चुनाव की ही तरह है, परतु केवल इसका परिणाम चुनाव के परिणामो से कही व्यापक और स्थायी होता है। जनता को खास तौर पर यह समझाना आवश्यक था कि वह जो भी निर्णय करेगी, उससे उसके भाग्य का निपटारा सदा-सदा के लिए हो जायगा। काफी सगठनात्मक और प्रचारात्मक काम करने की जरूरत थी। टोगोलैड की हमारी पूरी पार्टी इन्ही कामो मे जुट गई।

जनमत-सग्रह मे परस्पर-विरोधी दलो के रूप मे दो पार्टियो ने हिस्सा लिया। कनवेशन पीपुल्स पार्टी स्वतत्र गोल्ड कोस्ट के साथ ब्रिटिश टोगो-लैड के एकीकरण की समर्थक थी और टोगोलैड काग्रेस, जिसको हमारे सभी विरोधियो का समर्थन प्राप्त था, ब्रिटिश टोगोलैड को गोल्ड कोस्ट से पृथक् रखने के पक्ष मे थी। जनमत-सग्रह के दिनो मे मै जान-बूझकर ब्रिटिश टोगोलैड नही गया, क्योकि मै अपने विरोधियो अथवा किसीको भी यह कहने का अवसर नही देना चाहता था कि अपनी उपस्थिति के कारण मैने लोगो के विचारो को अपने पक्ष मे प्रभावित किया।

९ मई १९५६ को, जनमत-सग्रह के दिन, हिंसा, शाति-भग और रक्तपात की पूरी आशका थी, पर सौभाग्य से ऐसा कुछ भी नही हुआ। जनता ने बिना किसी उत्तेजना का शिकार हुए बहुत ही शातिपूर्ण ढग से मत प्रदान किया। कुल ८२ प्रतिशत मतदान हुआ और कुल मतदान के ५८ प्रतिशत ने गोल्ड कोस्ट से एकीकरण के पक्ष मे मत दिये। हमे ९३,०९५ वोट प्राप्त हुए और विरोधियो को ६७,४९२।

समस्या बहुत ही जटिल थी। परतु भारतीय प्रतिनिधि ने जिस दृढता से नयुक्तिकरण का समर्थन किया, उसके लिए हम उनके सदैव आभारी रहेगे। किसी भी औपनिवेशिक देश की स्वतत्रता का प्रश्न हो, भारत सदैव बडी दृढता और कट्टरता से उसका समर्थन करता है। लेकिन

लैटिन अमरीका और कुछ एशियाई देशो के प्रतिनिधियो ने ट्रस्ट प्रदेशो के स्वतत्र अस्तित्व को अक्षुण्ण बनाये रखना ही महत्वपूर्ण समझा और एक ही जाति के लोगो के तीन-तीन अतर्राष्ट्रीय सीमाओ मे विभक्त होने की वास्तविकता से आखे मूदे रहे।
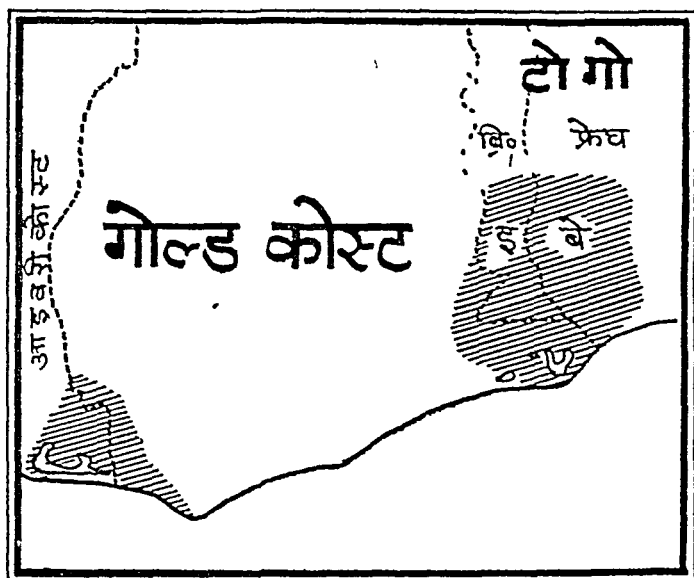
एजिमा तथा इवे को विभक्त करनेवाली राजनैतिक सीमाएं।

इस सयुक्तिकरण से ब्रिटिश टोगोलैंड और गोल्ड कोस्ट मे रहनेवाले इवे जाति के बिछुडे हुए लोग वरसो के वाद गले मिले और हिल-मिलकर रहने लगे। परतु जातियो के विलगाव और पार्थक्य की समस्या अभी भी पूरी तरह हल नही हो पाई है। पूरव मे इवे जाति अब भी गोल्ड कोस्ट और फ्रासीसी टोगोलैंड मे बटी हुई है और पश्चिम मे एन्जिमा जाति के भी यही हाल है। एन्जिमाओ की काफी वडी सख्या गोल्ड कोस्ट मे रहती है तो उधर सीमा के पार फ्रासीसी आइवरी कोस्ट मे भी उतने ही एन्जिमा रहते है। प्रश्न यह है कि इनका सयुक्तिकरण कैसे हो ?

: २४

अंतिम परीक्षा

ब्रिटिश टोगोलैंड मे जनमत-सग्रह के छ दिन वाद, १५ मई को, धारा-सभा का अधिवेशन आरभ हुआ। गवर्नर ने अपने उद्घाटन भाषण मे कहा कि स्वाधीनता के विधान पर विभिन्न दलो और पार्टियो के बीच मतैक्य के बहुत प्रयत्न किये गए, परतु सफलता प्राप्त नही हुई। इस काम के लिए अब और सम्मेलन ओर बैठके करना व्यर्थ होगा। इसलिए सरकार स्वय ही शीघ्रातिशीघ्र स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए अपनी ओर से सवैधानिक सुझावो का मसविदा धारा-सभा के विचारार्थ प्रस्तुत करेगी। वहस-मुवाहसे के बाद मसविदे का अतिम रूप जनता की राय के लिए प्रसारित किया जायगा और जनता से यह आदेश प्राप्त किया जायगा कि वह अविलव स्वतत्रता चाहती है और इन सुझावो को स्वाधीनता के सविधान के आधार के रूप मे स्वीकार करती है। उसके बाद यह धारा-सभा भग हो जायगी और नये चुनाव होगे।

तीन दिन वाद मैंने सरकार की ओर से सवैधानिक सुझावो का मसविदा धारा-सभा के विचारार्थ उपस्थित किया। उस मसविदे की मुख्य-मुख्य वाते यह थी १ स्वाधीनता के वाद देश का नाम घाना कर दिया जाय। २ घाना सरकार के परामर्श पर मल्का महारानी एक गवर्नर-जनरल की नियुक्ति करे। ३ घाना पार्लमेंट देश की सर्वोच्च सस्था हो और कानून बनाने का सारा अधिकार उसीको हो। ४ पार्लमेंट का कार्य-काल पाच वर्ष का रहे, परतु वर्तमान धारा-सभा का चार वर्ष ही रहेगा। ५ घाना पूर्णत स्वतत्र और सार्वभौम राज्य होगा और अपनी सुरक्षा एवं वैदेशिक मामलो का प्रवध स्वय करेगा। ६ देश मे पूर्वी, पश्चिमी, अशाटी, व्रोग, उत्तरी और ट्रास-वाल्टा/टोगोलैंड नामक छ क्षेत्र और अकरा-टेमा का एक स्वतत्र जिला भी होगा। ७ जिस क्षत्र के सव जिलो मे जिला परिषदे होगी, वहा उन परिषदो के वहुमत द्वारा माग किये जाने पर और अन्य क्षेत्रो मे स्थानीय परिषदो के वहुमत की माग पर पार्लमेंट के अधिनियम (एक्ट) द्वारा क्षेत्रीय सभा स्थापित की जा सकेगी। पार्ली-मेंट के सदस्यो के दो-तिहाई मत के विना न तो कोई क्षेत्रीय सभा भग या स्थगित की जायगी और न उसके गठन अथवा अधिकारो मे कमी ही की जा सकेगी।

इस मसविदे पर खूब जमकर बहस होती रही और धारा-सभा द्वारा इसे स्वीकार कर लिया गया। ५ जून को गवर्नर ने दो घोषणाए की एक धारा-सभा को भग करने के सबध मे और दूसरी नये आम चुनाव के सबध मे। नार्दर्न टेरिटरीज के लिए यातायात की कठिनाइयो के कारण १२ और १७ जुलाई तथा शेष सारे देश के लिए १७ जुलाई चुनाव का दिन घोषित किया गया।

नये चुनाव हमारे लिए अतिम कसौटी थी। स्वाधीनता के दिवस को निकट आया देख मेरा मन हर्ष और सतोष से आप्लावित हो उठा। इस दिन को समीप लाने के लिए मैने अपनी शक्ति-भर प्रयत्न किया था। अब सारी बाजी सरदारो और जनता के हाथ थी। उन्ही को तय करना था कि वे स्वाधीनता चाहते है या नही।

पार्टी के चुनाव घोषणापत्र मे भी मैने यही बात कही थी। मैने लिखा कि आज हर आदमी को अपने-आपसे दो प्रश्न पूछने है 'मै अपने जीवन काल मे स्वतत्र होना चाहता हू अथवा सामतवाद और साम्राज्यवाद की जजीरो मे जकडा रहना चाहता हू ?' मैने यह भी बताया कि इस चुनाव के परिणाम देश की स्वाधीनता के लिए कितने निर्णायक होगे और यदि देशवासियो ने स्वाधीनता के पक्ष मे अपना निर्णय असदिग्ध रूप से प्रकट कर दिया तो ब्रिटेन के उपनिवेश-मत्री अपने वादे से कभी मुकरने नही पायगे।

पिछले चुनाव की तरह इस बार भी कही-कही पार्टी सदस्यो ने पार्टी के अधिकृत उम्मीदवारो के खिलाफ चुनाव लडने का फैसला किया। इसका कारण मेरी समझ मे महज गलतफहमी ही थी, क्योकि जहा-जहा भी मैने जाकर समझाया-बुझाया, असतुष्ट सदस्यो ने अपने नाम उसी समय वापस ले लिये और अधिकृत उम्मीदवारो का ही समर्थन किया। इस बार भी खूब यात्राए करनी पडी, खूब भाषण देने पडे और एक बार तो पूरे अडतालीस घटे सोना नसीब न हुआ। बोलते-बोलते गला बैठ जाता था। मारे दर्द के सिर फटने लगता था, जो शिकायत मुझे पहले कभी नही हुई, थी और पेट तो बिलकुल ही गडबडा गया था। प्रौढावस्था और छयालीस वर्ष की उम्र आखिर कितना बर्दाश्त कर पाती! परतु इस सबका पुरस्कार भी तत्काल मिल गया। पूरी १०४ सीटो पर पार्टी के अधिकृत उम्मीदवार खडे थे और पाच सीटे तो पार्टी को निर्विरोध मिल गई थी।

हमने अपने चुनाव-अभियान का श्रीगणेश अकरा मे एरीना से ही किया। उस दिन वहा अपार भीड थी और लोग मुझे मोटर से मच तक अपने

कधो पर उठाकर ले गये थे। अपने चुनाव-भाषण मे मैने जनता से चुनाव के मुख्य नारो को याद रखने और विरोधियो के झूठे प्रचार से सावधान रहने की वात कही। विरोधियो ने चारो ओर फैला रक्खा था कि जो लाल मुर्गवाली पेटी मे अपना वोट नही डालेगा उसका गुप्त रूप से फोटो खीच लिया जायगा और फिर कसकर धुनाई की जायगी। इस गदे प्रचार का भडा-फोड करते हुए मैने अशाटी से डरकर भागे हुए लोगो को वही लौट जाकर अपना वोट देने के लिए समझाया और आश्वस्त किया कि गवर्नर साहव चुनाव के दौरान मे शाति-भग और अहिसक कार्रवाहिया विलकुल न होने देंगे। भाषण के वाद लोगो ने मुझे कुर्सी सहित अपने कधो पर उठा लिया और वडी देर तक उसी तरह लिये हुए नाचते-कूदते रहे।

इसके वाद सारे देश मे चुनाव-अभियान जोरो से चल पडा। एक क्षेत्र का दौरा करके लौटता था और दूसरे क्षेत्र का वुलावा आ जाता था। देश मे सवकी जवान पर चुनाव की ही वात थी। पार्टियो की हार-जीत को लेकर तरह-तरह की अटकले लगाई जा रही थी। राष्ट्रीय मुक्ति-परिषदवाले छाती ठोक-ठोककर कहते थे कि इस वार तो कनवेंशन पीपुल्स पार्टी को चारो खाने चित करके रहेगे।

अभी तक हम अपना सारा ध्यान उन्ही क्षेत्रो मे केंद्रित किये हुए थे, जो हमारे गढ समझे जाते थे। लेकिन अव मैने सोचा कि कमजोर इलाको पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। अशाटी मे विरोधियो की आतक-पूर्ण कार्रवाहियो के कारण पार्टी को छिप जाना पडा था। प्रमुख पार्टी सदस्यो और नेताओ को हम वहा भेजने के पक्ष मे इसलिए नही थे कि कही आग और न भडक उठे और हस्तक्षेप करने का मनचाहा अवसर साम्राज्यवादियो को न मिल जाय। परतु चुनाव के दिनो में यह प्रतिवध चल नही सकता था। एक दिन मैने घोषणा कर ही दी, "आगामी रविवार को हम कुमासी मे एक विशाल आम सभा करेगे।"

यह सुना तो पार्टी सदस्यो के उत्साह और आनद की सीमा नही रह गई। दो दिन पहले से अशाटी के कोने-कोने से लोग मोटरो मे भर-भरकर पहुचने लगे। जव मैने यह सुना तो सोचा कि ऐसी स्थिति मे मेरा कुमासी जाना कहातक उपयुक्त होगा। वहा मेरी उपस्थिति के कारण पार्टी के समर्थक जोश मे आकर कुछ कर वैठे और विरोधी उसे दगा-फसाद का कारण वना ले तो स्थिति वहुत ही भयावह हो सकती थी। मैने पार्टी की केंद्रीय समिति मे इस समस्या पर विचार किया और अत मे यही तय पाया कि मुझे नही जाना चाहिए।

वाकी के सभी पार्टी सदस्य सभावाले दिन सवेरे १० वजे वायुयान से कुमासी जाने को थे। साढे दस वजे सव-के-सव क्रोव से आगववूला होते हुए मेरे पास आये और वताया कि वायुयान कपनी ने ले जाने से मना कर दिया है। हवाई जहाज की पेट्रोल टकी चूने लग गई थी और दूसरा कोई वायुयान उपलब्ध नही था। तव उन्हे मोटरो से जाना पडा और जवतक वे लौट न आये, मुझे वरावर चिता लगी रही।

रात मे ९॥ वजे लौटकर उन्होने वडे उत्साह से वहा का पूरा हाल सुनाया। हजारो लोग आ जुटे थे और सभा वडी सफल रही थी। इससे सिद्ध हो गया कि इतने दमन के वाद भी वहा पार्टी की लोकप्रियता कम नही होने पाई थी। शाति-भग की छोटी-मोटी घटनाए अवश्य हुई थी। दिन मे पुलिस और उपद्रवकारियो मे दो-एक मुठभेडे हो गई थी और सवेरे दो विस्फोट और कुछ फैर भी विरोधियो की ओर से किये गए थे।

ज्यो-ज्यो चुनाव का दिन समीप आता गया, विरोधी दल की वकवास और डीगे भी उतनी ही वढती गई, यहातक कि विरोधी दल के नेता डाक्टर के० ए० वुसिया ने गवर्नर को एक पत्र ही लिख मारा कि राष्ट्रीय मुक्ति परिषद के अतर्गत इतने सगठन सम्मिलित है और सत्रह स्वतत्र उम्मीदवारो ने भी हमारा समर्थन करने का वचन दिया और मुझे अपना पार्लमिटरी नेता स्वीकार किया है, इसलिए अगर हम सवने मिलकर वावन से अधिक सीटो पर कब्जा किया तो जनवादी परपरा के अनुसार हम आशा करते है कि आप मुझको ही नई सरकार वनाने के लिए आमत्रित करेगे।

यह पत्र गवर्नर की ओर से १८ जुलाई के दिन प्रकाशित कर दिया गया और इसको लेकर कई हलको मे खासा मजाक होता रहा, क्योकि जव पत्र छपकर आया उस समय तक चुनाव मे विरोधी दल की हार निश्चित हो चुकी थी।

चुनाव मे कनवेशन पीपुल्स पार्टी ने ७१ सीटो पर विजय प्राप्त की थी। वाद मे एक स्वतत्र सदस्य के मिल जाने से १०४ के सदन मे ४० से हमारा वहुमत हो गया। यह स्थिति इग्लैड के उपनिवेश-मत्री की 'उचित वहुमत' वाली शर्त को वहुत अच्छी तरह पूरा करती थी और मत-प्राप्ति तथा चुनाव-परिणाम के विश्लेषण ने भी यह सिद्ध कर दिया था कि मेरी ही पार्टी एक राष्ट्रीय पार्टी की हैसियत से समूचे देश की ओर से कुछ कहने और करने की सामर्थ्य रखती थी।

कालोनी और अकरा की सभी सीटो पर हमारी जीत हुई थी और

दोनो स्थानो के मतदान का ८२ प्रतिशत हमारे पक्ष मे हुआ था। ट्रास-वाल्टा/टोगोलैड की तेरह सीटो मे से आठ पर हम जीते थे। नार्दन टेरिटरीज की छब्बीस सीटो मे से ग्यारह हमे मिली थी। अशाटी की कुल इक्कीस सीटो मे से केवल आठ सीटे ही हम जीत पाये थे। मेरे दो पुराने मत्री श्री जे० ई० जानतुआ (कृषि) और श्री इमोरु इगाला (स्वास्थ्य) इस चुनाव मे पराजित हुए। जानतुआ अशाटी से खडे हुए थे और इगाला नार्दर्न टेरिटरीज से।

दूसरे दिन गवर्नर ने मुझे सरकार बनाने के लिए निमत्रित किया और पुराने मत्रिमडल के दो सदस्यो की पराजय एव एक मत्री ई० ओ० असाफू अजये के त्यागपत्र दे देने के कारण मैंने सात पुराने और पाच नये, कुल बारह सदस्योवाली मत्रि-परिषद् के नामो की घोषणा कर दी।

धारा-सभा मे हमारा असदिग्ध रूप से स्पष्ट बहुमत था, परतु विरोधी दल को फिर भी सतोप नही हुआ। डा० बुसिया ने कुमासी मे एक प्रेस काफ्रेस बुलाकर कहा कि चुनाव के परिणामो ने देश मे सघ (फेडरेशन) सरकार की स्थापना के औचित्य को पुन सिद्ध कर दिखाया है। इस दावे के समर्थन मे उन्होने यह विचित्र तर्क दिया कि कनवेशन पीपुल्स पार्टी ने अशाटी और नार्दर्न टेरिटरीज मे बहुमत नही प्राप्त किया और यह तथ्य 'फेडरेशन' की आवश्यकता को सिद्ध करता है। उन्होने 'टोगोलैड के ट्रस्टी प्रदेश के दक्षिणी भाग' नामक एक नये क्षेत्र की भी खोज कर डाली और कहा कि वहा की छ सीटो मे से कनवेशन पीपुल्स पार्टी को केवल तीन ही मिल पाई और यह तथ्य भी सघ सरकार की आवश्यकता के उनके दावे की पुष्टि करता है। बस इसी दिन से उनकी अडगेबाजी शुरू हो गई।

नई धारा-सभा मे गवर्नर के उद्घाटन-भाषण के दिन वे लोग आये ही नही, केवल टोगोलैड के दो विरोधी सदस्य किसी तरह पहुच गये थे। बाद मे उन्होने यह बचकाना दलील दी कि आये तो थे, परतु भीड के कारण अदर प्रवेश नही कर सके।

अपने उद्घाटन-भाषण मे ही गवर्नर ने यह घोषणा भी कर दी कि इसी सप्ताह नई सरकार एक प्रस्ताव पास कर इग्लैड की सरकार से अनुरोध करेगी कि वह कामनवेल्थ के अतर्गत गोल्ड कोस्ट की स्वतत्रता और सार्वभौमत्व का विधेयक तत्काल पारित करे। दूसरे ही दिन विरोधी सदस्यो ने गवर्नर की इस घोषणा पर एक कटौती प्रस्ताव पेश कर दिया कि 'ऐसे प्रस्ताव के लिए कोई सबल आधार इसलिए नही है, क्योकि स्वाधीनता के विधान के सबध मे मतैक्य नही हो पाया है' और 'जबतक कोका-क्रय-कपनी की अनियमितताओ पर जाच-आयोग की रिपोर्ट को कार्या-

न्वित कर सार्वजनिक निगमो मे व्याप्त घूसखोरी और भ्रष्टाचार को निर्मूल नही किया जाता, परिस्थिति को अनुकूल नही कहा जा सकता।' लेकिन अपने भापणो मे उन्होने इन दोनो वातो का कही उल्लेख तक नही किया। अत मे उन्होने मत-विभाजन की माग की और सैंतीस के वहुमत से उनका प्रस्ताव रद्द हो गया। तव उन्होने यह घोपणा की कि जिस दिन स्वाधीनता का प्रस्ताव पेश होगा, वे धारा-सभा का वहिष्कार करेगे।

स्वाधीनता के प्रस्ताव को पेश करते हुए मैंने अपने भापण मे मुख्य वात यही कही कि हमारे-जैसा छोटा और गरीव देश न तो सघ-सरकार की प्रणाली के उपयुक्त है और न इतना आर्थिक वोझ उठा ही सकता है। हमारी स्वाधीनता का स्वरूप ऐसा होना चाहिए, जो सरलता से कार्यान्वित किया जा सके। जहातक सत्ता के विकेद्रीकरण की वात है, उसे हम क्षेत्रीय सस्थाओ की स्थापना के रूप मे स्वीकार कर ही चुके है। मै गोल्ड कोस्ट की जनता से औपचारिक रूप से यह कहने को खडा हुआ हू कि सारा देश एक स्वर मे व्रिटिश सरकार से गोल्ड कोस्ट की स्वतत्रता और सार्वभौमत्व की अविलव घोषणा करने का अनुरोध कर यह दिखा दे कि हम अपने राज-काज का दायित्व स्वय ग्रहण करने को विलकुल प्रस्तुत है। शायद ही कोई दुर्वलचित्त व्यक्ति हो, जो इस अनुरोध मे अपना स्वर मिलाना न चाहेगा। इग्लैड के उपनिवेश-मत्री ने वादा किया था कि नये चुनावो के वाद नई धारा-सभा 'उचित वहुमत' से स्वाधीनता की माग का प्रस्ताव करेगी तो सत्ता के हस्तातरण की निश्चित तिथि घोषित कर दी जायगी। आज हमे केवल 'उचित वहुमत' से स्वाधीनता के प्रस्ताव को पारित करना है। मै स्वाधीनता के पक्ष मे अपना मत देता हू और माननीय सदस्यो से विनम्रतापूर्वक अनुरोध करता हू कि वे भी स्वाधीनता के पक्ष मे अपना अमूल्य मत प्रदान करे।

मेरे भाषण के अतिम शब्द सदन के हर्पावेग, उल्लास और जोशीले नारो मे खो गये। सदन का कोना-कोना गूज उठा। मुझे ही नही, इग्लैड और सारी दुनिया को विश्वास हो गया कि गोल्ड कोस्ट के निवासी अपने भाग्य-निर्णय का अधिकार स्वय ग्रहण करने को प्रस्तुत है।

वह दिन हमारे देश के इतिहास की एक चिर-स्मरणीय घडी थी, लेकिन कितने दु ख, खेद और लज्जा की वात है कि विरोधी दल के सदस्यो ने उसमे सम्मिलित होना उचित नही समझा। इतना ही नही, उन्होने अपनी अडगा-नीति के चक्र को और भी तेज़ कर दिया। जव देखा कि वे देश मे मैदान हार चुके है तो डाक्टर वुसिया ने लदन जाकर मोर्चा जमाने की

ठानी। यूरोप के एक भाषण-दौरे के बहाने वह लदन पहुच गये और विरोधी सदस्यो के एक पूरे प्रतिनिधि-मडल को ही अपने नेतृत्व मे घसीट ले गये । 'मैनचेस्टर गार्जियन' ने तो साफ शब्दो मे उन्हे उनके मिशन की व्यर्थता समझाने की कोशिश की, परतु उन्होने घटनाओ के रुख को फिर भी नही पहचाना । एक लबा-चौडा वक्तव्य देकर साम्राज्यवादियो से अपील की कि हमे यो अनाथ और असहाय छोड जाने की जल्दी मत करो, देश पार्लमिंटरी जनतत्र के अभी उपयुक्त नही हो पाया है, तुम्हारे अनुभव की अभी हमे बडी आवश्यकता है, आदि-आदि । अनुदार दल के मुखपत्र 'डेली टेलीग्राफ' ने उनका सारा वक्तव्य तेरह इच जगह मे बडे-बडे शीर्षको से छापा, पर बेचारो की कोई चाल न चली।

उपनिवेश-मत्री ने भी उन्हे बहुत समझाया, पर वे किसीकी सुनना और समझना चाहते ही कब थे ? और मजे की बात यह कि लदन मे जाकर पुकार कर रहे थे, 'अग्रेजो, जाओ मत !' और गोल्ड कोस्ट मे उन्हीके अनुयायी और साथी गवर्नर को हटाये जाने की माग कर रहे थे।

उन वर्षो मे मेरी सरकार ने असहयोग पर उतारू अल्पमत की खाम-खयालियो और झक्कीपने को जितना बर्दाश्त किया और उसके पीछे जितना कीमती समय बिगाडा, वैसा दुनिया की शायद ही किसी सरकार ने किया होगा !

२५

विजय की घड़ी

उपनिवेश-मत्री ने ११ मई को 'हाउस ऑव कामन्स' के अपने वक्तव्य मे जिन दो शर्तो का उल्लेख किया था, उन्हे हमने पूरा कर दिखाया था। नये चुनाव हो गये थे और नव निर्वाचित धारा सभा ने 'उचित वहुमत' से स्वाधीनता के मेरे प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया था। अव तो व्रिटिश सरकार से यही अनुरोध करना शेष रह गया था कि वह गोल्ड कोस्ट की स्वतत्रता की निश्चित तिथि की घोषणा करे। २३ अगस्त के दिन मैंने यह भी कर दिया। औपचारिक ढग से गवर्नर महोदय से निवेदन किया कि वह उपनिवेश-मत्री तक मेरे इस अनुरोध को पहुचा देने की कृपा करे।

इसके वाद मै प्रतीक्षा करने लगा और जीवन मे पहली वार मुझे यह अनुभव हुआ कि जो वात निश्चित हो जाती है, उसके लिए प्रतीक्षा करने मे और जिसकी केवल आशा हो उसकी प्रतीक्षा मे कितना अतर होता है। यह तो मै निश्चयपूर्वक जानता था कि उपनिवेश-मत्री अपने वादे का पालन करेंगे। इस सवध मे मुझे जरा भी सदेह नही था। वस, अव तो सारी वात प्रतीक्षा की ही थी।

सोमवार का दिन और सितवर महीने की १७ तारीख। सवेरा तो सारा घिरा हुआ था और काम भी वहुत-से थे। मै बैठा डायरी देख रहा था। सहसा सीधे गवर्नर से जोडनेवाले टेलीफोन की घटी वज उठी।

"नमस्कार, प्रधानमत्रीजी", सर चार्ल्स वोल रहे थे, "मैंने यह वताने को टेलीफोन किया है कि आपको देने के लिए मेरे पास वहुत वढिया खवरे है। जव भी फुर्सत हो, थोडी देर के लिए आ तो सकते है न ?"

"अवश्य-अवश्य, सर चार्ल्स !" डायरी पर फुर्ती से निगाह दौडाते हुए मैंने जवाव दिया, "सवेरा तो विलकुल घिरा हुआ है। तीसरे पहर, तीन वजे ठीक रहेगा न ?"

मै ठीक समय पर राजभवन पहुच गया। समाचारो के सवध मे यदि कोई सदेह था भी तो वह सर चार्ल्स के आतरिक उल्लास से दमकते हुए चेहरे को देखते ही निर्मूल हो गया। उन्होने वडे तपाक से हाथ मिलाया और उपनिवेश-मत्री का एक लवा-सा खरीता मेरे हाथ मे रख दिया। कई लवे-लवे अवतरण थे। जव मै पाचवे अवतरण पर पहुचा तो अपने हर्षाश्रुओ

को रोकना कठिन हो गया और दस्तावेज की आगे की लिखावट डबडबाई आखो के आसुओ मे डूब गई। थोडी देर बाद मैने गवर्नर की ओर दृष्टि उठाई। कुछ समय तक हम दोनो बिलकुल मौन एक-दूसरे की ओर देखते रहे, किसीसे भी कुछ बोला नही गया। मेरी ही तरह वह भी सभवत पिछले सात वर्षो के पारस्परिक परिचय और सबधो के इतिहास को दुहरा रहे थे, जो आशकाओ, सदेहो और गलतफहमियो के बीच आरभ हुआ था और विश्वास, सचाई तथा मैत्री म पल्लवित होता हुआ आज की विजय मे प्रस्फुटित हो गया था—हम दोनो की विजय का एक ऐसा क्षण, जो वर्णनातीत है और जिसकी पूर्ण अनुभूति जीवन मे केवल एक ही बार की जा सकती है।

"प्रधानमत्रीजी," गवर्नर महोदय ने पुन अपना हाथ मेरी ओर बढाते हुए कहा, "आज आपके जीवन का महान दिन है। जिस उद्देश्य के लिए आप सघर्ष करते रहे, आज उसकी उपलब्धि हुई।"

"यह हम दोनो के ही सघर्षो की उपलब्धि है, सर चार्ल्स!" मैने उनकी बात को सुधारते हुए कहा, "आपका भी इस उपलब्धि मे महान योगदान रहा है। आपकी सहायता और सहयोग के बिना मै शायद ही अपना अभीष्ट-लाभ कर पाता। आज का दिन हम दोनो के ही लिए बडे आनद का दिन है।"

फिर यह तय पाया कि मै दूसरे दिन उस खरीते को यहा से लेकर सीधे धारा-सभा जाऊगा और जाते ही पढकर सुना दूगा।

"सघर्ष राष्ट्रीय रहा है और यह सर्वथा उचित ही है कि स्वाधीनता-दिवस की घोषणा की जाय तो सारा राष्ट्र उसे मेरे मुह से ही सुने।" मैने कहा।

गवर्नर ने मेरी इस बात के समर्थन म अपना सिर हिलाते हुए कहा, "आज के इस महान दिन के उपलक्ष्य में मै आपको अपनी ओर से हार्दिक बधाई देता हू। साथ ही आपके, आपके साथियो और घाना की समस्त जनता के मगल भविष्य की कामना भी करता हू।"

फिर वह मुझे दरवाजे तक छोडने आये और विदा देते हुए बोले, "और यह तो आप जानते ही है कि जबतक मै यहा गवर्नर हू, आपकी हर तरह से पूरी-पूरी सहायता करता रहूगा।"

मैने उन्हे धन्यवाद देते हुए कहा, "आपके इस आश्वासन के लिए कृतज्ञ हू, सर चार्ल्स! आपकी कृपापूर्ण सहायता का तो मै सदैव ही आभारी रहा हू।"

अनेक प्रकार की भावनाओ एव विचारो से भरा कैसल की उन सफेद सीढियो से मै अनेक वार उतरा हू, लेकिन आज जैसा रोमाच और हर्षावेश मुझे कभी नही हुआ था। ऐसा लग रहा था मानो वादलो मे उडा जा रहा हू। मोटर मे जाकर वैठ गया तव भी यही लगता रहा जैसे अपनी सीट पर नही, वादलो की गोद मे वैठा हू। जव ड्राइवर ने मोटर चालू की और प्रश्न-सूचक मुद्रा मे मेरी ओर देखा तव कही जाकर मुझे वास्तविकता का भान हुआ।

"हा, घर चलो।" मैने उससे कहा।

वह रात मै कभी नही भूल सकता। आज सोचकर भी आश्चर्य होता है कि इतनी वडी खवर अपनी छाती मे छिपाये रहा और विस्फोट कैसे नही हुआ ? लोग हस्वमामूल आते रहे, हस्वमामूल वाते करते रहे, परतु मै एक क्षण के भी लिए इस महान खवर को भुला न सका।

सामान्यत मेरी नीद मे कभी विघ्न नही पडता। कैसा ही सकट क्यो न रहे, म हमेशा सो सका हू। तकिये पर सिर रखते ही वास्तविकता के लोक से एकदम स्वप्न-जगत् मे विचरण करने पहुच जाया करता हू। परतु उस रात मुझे वहुत देर तक नीद नही आई। मै विस्तरे मे पडा अपने जीवन की समस्त घटनाओ को चलचित्र की भाति देखता रहा। वचपन से लेकर उस दिन सर चार्ल्स से मिलने तक की सव घटनाए एक-एक कर मेरी आखो के आगे से गुजर गई और मै जपने लगा, छ मार्च, छ मार्च, छ मार्च

दूसरे ही दिन मेरा सैतालीसवा जन्मदिन था। रात ठीक से सो न सका था, फिर भी सवेरे जल्दी ही जाग गया। उठकर शीशे मे अपना मुह देखा तो मन-ही-मन सोचने लगा—'क्या सैतालीसवे जन्म-दिवस पर सभी लोग मेरे जितने ही जवान दिखाई पडते है ?'

कपडे पहनकर नीचे अपनी माताजी को प्रणाम करने गया। इधर उनसे वहुत ही कम मिल पाता था। वह मेरी व्यस्तताओ को जानती थी और उन्होने कभी शिकायत नही की, पर मेरे मन मे तो अपराधी की-सी भावना वनी ही रहती थी। मेरी उस दिन की व्यग्रता उनसे छिपी नही रही। मेरे अदर के उतावलेपन को भी वह लक्ष्य कर सकी। पर उन्होने कुछ नही पूछा और उस सबध मे एक शब्द तक न कहा। मने मन-ही-मन सोचा, 'कितनी आदर्श पत्नी रही होगी यह ! कोई प्रश्न नही, कोई सदेह नही, जरा-सा सकेत तक भी तो नही !'

मै दफ्तर पहुचा और वहा से धारा-सभा मे चला गया। कोई पौने ग्यारह वजे राजभवन मे था। गवर्नर ने जाते ही उपनिवेश-मत्री का खरीता

मेरे हाथो मे थमा दिया। जब मैंने उसे लिया तो मेरे दोनो हाथ काप रहे थे। मैंने गवर्नर की ओर देखा और कुछ कहा, पर केवल होठ हिलकर रह गये, शब्द मुह से बाहर निकल ही न पाये।

गवर्नर महोदय ने ही यह कहकर मेरी सहायता की कि आप अभी ओपचारिकता मे ज़रा-सा भी समय गवाना पसद नही करेगे और अपने देशवासियो को यह शुभ सवाद तत्काल सुनाना चाहेगे।

मेरा विचार ठीक बारह बजे धारा-सभा मे इस घोषणा को पढकर सुनाने का था, क्योकि उसी समय इग्लैंड मे भी इसकी घोषणा की जाने को थी। धारा-सभा के अध्यक्ष से कहकर मैंने यह प्रबध पहले ही कर लिया था कि जब भी खडा हो जाऊ, वह मुझे बोलने देगे। साढे ग्यारह बजे से बारह बजे तक मेरी आखे घडी की सुइयो पर ही लगी रही, यहातक कि बहस मे कोई दिलचस्पी नही रह गई, कुछ सुनाई भी नही पड रहा था, अभी तक का सारा सयम जैसे बाध तोडने लगा था।

जैसे ही घडी के दोनो काटे बारह पर आये मै उठकर खडा हो गया। स्पीकर ने, जो बहस चल रही थी, उसे वही रोक दिया। सारे सदन मे सन्नाटा छा गया। सदस्यो ने यही समझा कि मै किसी वैधानिक नुक्ते पर कुछ कहने या बहस के किसी मुद्दे पर कुछ खुलासा करने को खडा हुआ हू। बोलने से पहले मैंने पुन घडी की ओर देखा। बारह बजकर ऊपर तीन मिनट हो गये थे। मैंने एक गहरी सास ली और अपने जीवन के सबसे महान और विजयी क्षण के लिए तैयार हो गया।

"अध्यक्ष महोदय," मैंने कहा, "आपकी अनुमति से मै सदन के समक्ष एक वक्तव्य देना चाहता हू। आज ठीक बारह बजे हमारे देश के भविष्य से सबधित दो अत्यत महत्वपूर्ण खरीतो के प्रकाशन की अधिकृत व्यवस्था की गई है।" हर्षध्वनि के थम जाने पर मैंने आगे कहा, "एक खरीता तो गवर्नर महोदय का है, जो उन्होने मेरी सरकार के अनुरोध पर उपनिवेश-मत्री को गोल्ड कोस्ट की स्वतत्रता की निश्चित तिथि घोषित करने के सबध मे भेजा था और दूसरा खरीता उपनिवेश-मंत्री का उत्तर है। आज सदन की कार्रवाही समाप्त होने के साथ ही सम्माननीय सदस्यो को दोनो खरीतो की प्रतिलिपिया उपलब्ध कर दी जायगी।

उसके बाद मैंने उपनिवेश-मत्री का पूरा खरीता पढकर सुनाया, जिसका मुख्य अश इस प्रकार था—"सम्राज्ञी महारानी की सरकार तत्काल ही इग्लैंड की पार्लमेंट मे गोल्ड कोस्ट को स्वाधीनता दिये जाने का विधेयक प्रस्तुत करेगी और पार्लमेंट द्वारा उसके स्वीकृत किये जाते ही स्वाधीनता प्रदान कर दी जायगी, जिसकी अतिम तिथि ६ मार्च १९५७ है।"

एक क्षण तो सदन मे सन्नाटा छा गया, परतु दूसरे ही क्षण ऐसा लगा मानो आसमान फट पडेगा। सभी जोर-जोर से हर्षध्वनि कर रहे थे और कुछके नेत्रो से तो आनद के आसू ही वह चले थे।

उस खरीते के शेप अशो मे एक तो सयुक्त राष्ट्र सघ की जनरल असेवली की स्वीकृति मिल जाने पर ब्रिटिश टोगोलैंड को स्वतत्र गोल्ड कोस्ट से सयुक्त कर लेने की वात थी और दूसरी देश का नया नामकरण घाना करने की स्वीकृति। अत मे ब्रिटिश सरकार की ओर से गोल्ड कोस्ट की सरकार और जनता के प्रति भावी सफलताओ के लिए हार्दिक शुभकामनाए प्रकट की गई थी।

अपनी ओर से मैंने सिर्फ इतना ही कहा कि इस ऐतिहासिक क्षण मे हमे गहन आत्म-चितन और आत्म-निरीक्षण करना चाहिए और सरकार की ओर से इस सबध मे कल पुन धारा-सभा की बैठक होने पर वक्तव्य दिया जायगा।

मेरे वाद विरोधी दल के उपनता ने हर्षध्वनियो के बीच खडे होकर विरोधी दल की ओर से इस खरीते का स्वागत किया।

उसके वाद तो सदस्यो के आनद-उल्लास की कोई सीमा ही नही रह गई। धारा-सभा के सदस्य मुझे कधो पर विठाकर वाहर ले आये, जहा जनता हजारो की सख्या मे उमग-उमग कर नृत्य कर रही थी। सडको और गलियो मे आनदोत्सव मनाया जा रहा था और पार्टी का यह गीत 'खडी स्वतत्रता वाह पसारे' सर्वत्र गूज उठा था।

मेरी सलाह पर पूरा मत्रिमडल शाम को लगभग साढे पाच बजे गवर्नर को वधाई देने गया।

सारा देश आज़ादी का उत्सव मना रहा था। एक मित्र ने कुमासी का आखो देखा हाल वर्णन करते हुए कहा, "हमारी पार्टीवालो की खुशी का तो कहना ही क्या, परतु राष्ट्रीय मुक्ति परिषद वाले तो सभीसे वढ गये थे। उन्हे एक हाथ उठाकर सतोष नही हो रहा था, मारे खुशी के दोनो हाथ उठाकर आज़ादी की सलामी दे रहे थे।"

क्या खूव दिन था वह भी! कोई भी व्यक्ति अपना जन्म-दिवस इससे ज्यादा अच्छी तरह भला क्या मनायेगा?

दूसरे दिन, १९ सितवर को, मैंने धारा-सभा मे अपनी सरकार की ओर से वक्तव्य दिया। विरोधी दल के उपनेता ने घोषणा का जो स्वागत किया था, उसके लिए हर्ष प्रकट करते हुए जनता को स्वाधीनता के सघर्ष मे उसके दृढ सहयोग और कनवेशन पीपुल्स पार्टी को उसके अडिग

साहस के लिए मैने वधाई दी। नये विधान के सवध मे मैने कहा कि हम विरोधी दल के प्रतिनिधियो से, यदि वे चाहे तो सदन के वाहर भी उसपर चर्चा करने के लिए प्रस्तुत है। हमारा एकमात्र उद्देश्य केवल इतना ही है कि देश की नि स्वार्थ भाव से सेवा कर सके, उसके अधिकारो और हितो की रक्षा करे और निखिल मानवता के सुख, शाति और प्रगति मे विश्व के विभिन्न राष्ट्रो के साथ अपना भी योगदान कर सके।

नये विधान पर सदन से वाहर चर्चा करने का अवसर दिये जाने के लिए विरोधी दल ने अपना सतोष प्रकट करते हुए कहा कि अव तो सविधान पर मतैक्य की आशा की ही जा सकती है।

मैने उन्हे पुन यह आश्वासन दिया कि विधान की एक-एक धारा को लेकर आपके साथ चर्चा की जायगी और सभी सर्वसम्मत परिवर्तनो अथवा सशोधनो को सरकार विधान मे समाविष्ट कर लेगी। मैने यह सुझाव भी रक्खा कि सविधान पर विचार नववर के प्रथम सप्ताह मे आरभ हो और जिन मतभेदो का आपसी चर्चा के द्वारा निपटारा न किया जा सके, उनपर धारा-सभा मे वाद-विवाद कर मत-विभाजन के द्वारा फैसला किया जाय।

२० सितवर को मैने देश की जनता के नाम रेडियो सदेश प्रसारित किया, परतु उसकी घोषणा करने से पहले मुझे सहसा खयाल आया कि वच्चो को एक पार्टी भी देनी चाहिए। एक ही दिन के समय मे दानियल्स चेपमैन ने मेरे दफ्तर के वाहरवाले मैदान मे खूब शानदार पार्टी का आयोजन कर दिया। रग-विरगी पोशाक मे सैकडो वच्चे आ जुटे और अपनी किल्-कारियो और खेल-तमाशो से उन्होने वातावरण को मुखरित कर दिया। गवर्नर ने भी उसमे हिस्सा लिया और घटे-भर तक वच्चो ने अपना मनोविनोद करते रहे। मै रेडियो स्टेशन जाने से पहले वच्चो को यह खुश-खबरी देता गया कि अगले सोमवार को सबके मदरसो की छुट्टी रहेगी।

देश की जनता के नाम अपने रेडियो सदेश मे मैने पहली बात तो यह कही कि स्वाधीनता का उत्सव हमारे देश के गौरव के अनुरूप होना चाहिए। दूसरी वात मैने यह कही कि नये सविधान को जल्दी-से-जल्दी अतिम रूप देने की आवश्यकता को महत्व देकर मत्रिमडल की छुट्टी रद्द कर दी गई है। सवैधानिक श्वेतपत्र शीघ्र ही प्रकाशित किया जा रहा है।

अन्त मे मैने कहा [illegible] इस पवित्र घडी मे हमे हर्ष [illegible] इसलिए नही मनाना चाहिए कि हम अपने लक्ष्य पर पहुच गये है, न इसलिए ही प्रफुल्लित होना चाहिए कि हमारी सबसे प्यारी आशा पूर्ण हो गई है। इसे सबसे पहले

और सबसे अधिक अपने देश के सर्वोत्तम हित का चिन्तन करना चाहिए। हम क्षुद्र राजनैतिक विवादो और षडयत्रो को तिलाजलि दे और घाना के राजनैतिक भवन की बुनियाद को पक्का और स्थायी बनावे।"

घर लौटते मे शरीर और मन से थका था, पर अकथनीय प्रसन्नता और सतोष का अनुभव हो रहा था। सोचता था कि आजादी की मजिल तक पहुचने के लिए कितने लम्बे और कठिन रास्ते को पार करना पडा है। अफ्रीकी राष्ट्रवाद केवल गोल्ड कोस्ट, नये घाना, तक ही सीमित नही था। अब तो वह समूचे अफ्रीका का राष्ट्रवाद होगा और अफ्रीकी राजनैतिक चेतना तथा अफ्रीकी राजनैतिक स्वाधीनता की विचार-धारा सारे महाद्वीप मे, उसके घर-घर मे, फैलनी चाहिए।

गोल्ड कोस्ट की स्वाधीनता के सघर्ष का मैंने कभी सीमित ध्येय के रूप मे नही माना, बल्कि सदा विश्व की ऐतिहासिक व्यवस्था के अग के रूप मे देखा है। इस विशाल महाद्वीप के हर प्रदेश का अफ्रीकी जाग उठा है और स्वाधीनता का सग्राम आगे चलता रहेगा। अग्रगामी दस्ते के रूप मे हमारा कर्त्तव्य है कि हम उनकी यथासभव सहायता करे, जो अब उस सघर्ष मे रत है, जिसमे हम जूझे और विजयी हुए। जबतक अफ्रीका से उपनिवेशवाद का नामोनिशान नही मिट जाता तबतक हमारा कर्त्तव्य पूर्ण नही होगा और न हमारी सुरक्षा ही स्थायी हो सकेगी।